UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186782

UNIVERSAL
LIBRARY

UP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 301·42 V31P Accession No. H3193

Author वर्मा, सावित्रीदेवी.

Title पारिवारिक समस्याये. 1957.

This book should be returned on or before the date last marked below

पारिवारिक समस्याएँ

लेखिका की अन्य रचनाएँ

१. बाल-प्रौढ़ोपयोगी साहित्य

१. उत्तर भारत की लोक-कथाएँ (सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १.२५
२. शेक्सपियर की कहानियाँ (सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १.२५
(बिहार राज्य द्वारा पुरस्कृत)
३. कथा-भारती (सचित्र) १.५०
४. जंगल-ज्योति (सचित्र) १.५०
(नं० ३ और ४ पुस्तकों में १२-१२ शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं इनका अनुवाद 'इलिस्ट्रेटेड वीकली' में भी छपा था।)
५. कथा-कहानी (पंचतंत्र की कहानियाँ सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १.५०

२. बाल-मनोविज्ञान पर

६. आप का मुन्ना (सचित्र) तीन भाग (पृष्ठ ८००) १३.५०
(प्रस्तावना-लेखिका—राजकुमारी अमृतकौर, स्वास्थ्य-मन्त्री केन्द्रीय सरकार, नई दिल्ली।)
भाग १—बच्चों का पालन-पोषण ३.५०
भाग २—बच्चों की समस्याएँ ५.००
भाग ३—बच्चों का शिक्षण ५.००
(उपरोक्त तीनों भाग उत्तर प्रदेश सरकार, काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा विन्ध्य सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं।)

३. सुखी परिवार माला (सचित्र)

७. आदर्श माता-पिता (केन्द्र तथा दिल्ली राज्य द्वारा पुरस्कृत) १.२५
८. कैसे पकायें क्या खायें ? १.२५
९. बीमार की सेवा १.२५

४. अन्य महिलोपयोगी सचित्र पुस्तकें

१०. नारी का रूप-शृंगार (पृष्ठ २७५) ६.००
११. भारतीय भोजन-विज्ञान (पृष्ठ ४२५) ७.००
१२. दाम्पत्य-मनोविज्ञान (प्रेस में)

नोट—बच्चों के जन्म-दिवस तथा लड़कियों के विवाह आदि शुभ अवसरों पर उपहार देने के लिये यह पुस्तकें बहुत ही उपयुक्त हैं।

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

पारिवारिक समस्याएँ

(सचित्र)

लेखिका

सावित्री देवी वर्मा

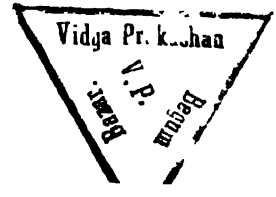
१९५७

आत्माराम एण्ड सन्स

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६



प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड सन्स
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

मूल्य रु० ७.५०

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली-६

दो शब्द

जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिये केवल शिक्षा या धन ही आपेक्षित नहीं है, इसके अतिरिक्त भी कुछ और चाहिये। जीवन को सुखी बनाना एक कला है। जब तक आप इस कला से परिचित नहीं हैं, संसार की अनेक नियामतें भी आपके जीवन को सुखी नहीं बना सकतीं। दिनों-दिन रहन-सहन का माप-दण्ड ऊपर उठ रहा है, उसके साथ ही साथ मनुष्य की तृष्णाएँ भी बढ़ती जा रही हैं। विज्ञान की उन्नति, शिक्षा का प्रचार, रहन-सहन की सुविधाएँ, आर्थिक और सामाजिक सफलता के लिये परस्पर होड़ा-होड़ी आदि भी हमारे पारिवारिक जीवन को अधिक शान्तिमय बनाने में सफल नही हो सकी है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि अधिकांश दम्पति विवाह का सच्चा उद्देश्य क्या है, इसे भूल बैठे है। वे चल-चित्रों के नायक-नायिका के रंगीन सपनों को ही अपने जीवन में सफल होते देखने की कल्पना करते हैं। विवाह के प्रारम्भिक दिनों में दम्पति अपने मीठे सपनों में खोये रहते हैं, पर शीघ्र ही वास्तविकता के धरातल पर उतर कर उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समझदार जोड़े परस्पर सहयोग से भरसक यत्न करके इन समस्याओं को धीरज के साथ सुलझा लेते है, पर अधीर और नासमझ दम्पति अपनी असफलताओं के लिये एक-दूसरे को बुरा-भला कहते हैं, विवाह को एक मुसीबत समझ उससे छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं अथवा किस्मत को दोषी ठहरा कर रोते-कलपते जीवन-यापन करते हैं। इससे उनका पारिवारिक जीवन तो असुरक्षित और किरकिरा होता ही है, पर साथ ही समाज का स्वस्थ वातावरण भी गँदला हुए बिना नहीं रहता।

गृहिणी से घर है। अधिकांश स्त्रियों के जीवन-यापन का साधन ही गृहस्थी है, इसलिये महिलाओं पर इस बात की पूर्ण ज़िम्मेदारी है कि वह पारिवारिक जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिए आदर्श गृहिणी, कर्तव्यपरायणा माता, और योग्य सहचरी बनने की योग्यता प्राप्त करें। बिना योग्यता, सेवा और त्याग तथा अनुभव के सुख व अधिकार प्राप्त करने की आशा करना मूर्खता है। अतएव यह वांछनीय है कि युवतियों को

आदर्श गृहिणी, पत्नी और माता बनने की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाये ताकि वे सच्चे अर्थ में अपने गृहस्थ जीवन को सफल बना सकें। अपने बच्चों की आदर्श गुरु बन कर, वह आने वाले युग की अनेक समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से समूल नष्ट कर सकें। जब बच्चे अपने माता-पिता के उदाहरण से आदर्श नागरिक, पति-पत्नी, माता-पिता बनने का मर्म समझ जायेंगे, तो उनका भविष्य अधिक सुखद बन सकेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। जीने का सलीका सीखे बिना सुखी जीवन बिताना असम्भव है।

देखने में आता है कि जिस परिवार में माँ-बाप ने अपने बाल-बच्चों के संग मित्रतापूर्ण व्यवहार रखा और ज़माने के परिवर्तन के साथ वे भी बदलते गये तथा अपनी सन्तान के नवीन दृष्टिकोण को समझने की उन्होंने कोशिश की, उस परिवार में परस्पर सहयोग और प्रेम बना रहा है। बचपन में जो माँ-बाप अभिभावक के रूप में थे अगर वे ही आगे जाकर परम हितैषी, सलाहकार और मित्र बन जाते हैं, तो इससे अधिक सुन्दर प्राचीन और अर्वाचीन प्रतीकों का सङ्गम भला कहाँ होगा ?

आज घर-घर में इसी सुन्दर सङ्गम को सफल बनाने की चेष्टा की जानी चाहिये। इससे पारिवारिक असुविधाएँ बहुत कुछ हल हो जायेंगी। नवयुवक समाज पहिले आदर्श परिवार स्थापित करने में सफल होने की चेष्टा करे, बाद में आदर्श नगर और देश बनते देर न लगेगी। देश के नव-निर्माण से पहिले गृहस्थी का नव-निर्माण होना अधिक ज़रूरी है। वृद्ध और नवयुवकों का जब परस्पर सहयोग होगा, समाज की बहुत-सी कुरीतियाँ भी दूर हो जायेंगी। नवयुवकों का सहयोग पाकर वृद्ध अपने में नवजीवन की स्फूर्ति अनुभव करेंगे, जबकि अनुभवी वृद्धों के साए में रहकर नवयुवक गुमराह होने से बच जायेंगे। अतएव आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थी का नव-निर्माण तेज़ी के साथ किया जाय। और समस्याओं को सुलझा कर पारिवारिक जीवन को परस्पर सहयोग से सब प्रकार से पूर्ण और सुखी बनाने की भरसक चेष्टा की जाये। सरोवर के कमलों की तरह स्वजनों का भी परस्पर साहाय्य और सहयोग से ही उत्कर्ष होता है।

कहावत है घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं। पारिवारिक समस्याओं से कोई घर अछूता नहीं है। पर बाधाओं से जूझते हुए आगे बढ़ने का नाम ही जिन्दगी है। सुखी परिवार ही, सुखी व समृद्धिशाली समाज का निर्माण करने में सफल

होते हैं, पर पारिवारिक जीवन तभी सफल हो सकता है जब कि दम्पति समझदार हों और वे अपने कर्तव्य को निभाने की भरसक चेष्टा करते रहें। आजकल मध्यम वर्ग में पारिवारिक जीवन की आधारशिला हिली हुई प्रतीत होती है, क्योंकि दुर्बल चरित्र, स्वार्थ, असहनशीलता ने उन्हें पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ सम्भालने के योग्य ही नहीं रहने दिया। ऐसे दम्पति विवाह के पवित्र बन्धन को कोसते हैं, पर देखा जाये तो यह उनके चरित्र की अपनी ही कमज़ोरी है जो कि उनके वैवाहिक जीवन को सफल नहीं बनने देती।

पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए त्याग, सहनशक्ति, मानसिक प्रौढ़त्व और समझदारी की ज़रूरत है। पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के पूरक हैं। इस नैसर्गिक सम्बन्ध को बनाये रखने के लिए समाज ने विवाह प्रणाली को स्वीकार किया। पर इस सम्बन्ध को केवल लोकापवाद के डर से निभाना असम्भव है। दाम्पत्य जीवन की सफलता शारीरिक आकर्षण की अपेक्षा पति-पत्नी के मानसिक और आत्मिक एकरूपता पर अधिक निर्भर है। यदि आप में मानवोचित गुण हैं तो आप जिसे अपनाते हैं, उससे प्रेम करना भी सीख जाते हैं। प्रेम का दीपक लग्न के साथ जलाया जाता है, उसे वासना-रहित प्रेम से सींचा जाता है और स्वार्थ, असहनशीलता, अविवेक आदि के झोंकों से उसे बड़ी साधना से, बड़े यत्नों से बचाया जाता है, तब जाकर कहीं वह गृहस्थाश्रम को प्रकाशपूर्ण और आनन्दमय बना पाता है।

केवल शारीरिक आकर्षण की डोर से बँध कर यह सम्बन्ध स्थायी नहीं हो सकता। ऐसा आकर्षण और प्रेम वासना की क्षणिक चिंगारी ज़रूर पैदा कर देगा, पर आत्मा को आनन्दित नहीं कर सकता। महात्मा गान्धी ने ठीक ही कहा है कि "विवाह का उद्देश्य पति-पत्नी के हृदय को हीन भावनाओं से शुद्ध करके उन्हें भगवान के निकट ले जाना है। विवाह का आदर्श दो हृदयों की प्रेम भावना तक ही सीमित नहीं है, यह तो विश्व प्रेम के मार्ग में एक पड़ाव मात्र है।"

आजकल समाज में विवाह के नाम पर एक प्रकार की बेच-खरीद चल रही है। दहेज और स्वयं को अर्पण करके स्त्री जीने का सहारा पाती है। इतना कुछ करके कई कन्याओं को रोटी, कपड़ा और आश्रय तो मिल जाता है, पर जीवन-साथी तब भी नहीं मिल पाता। मन के मीत के अभाव में उनका जीवन अधूरा, अतृप्त और असन्तुष्ट ही बना रहता है। विवाह के

सच्चे उद्देश्य को भूल कर अर्थ प्रधान दृष्टिकोण अपनाकर लोग भूखे भेड़िये की तरह धन की तलाश में घूम रहे हैं, परिणामस्वरूप गृहस्थाश्रम की सुख-शान्ति, सुरक्षा और पवित्रता नष्ट हो रही है। पुरुष यदि केवल भोग-विलास की तृप्ति के लिये और स्त्री आर्थिक सुरक्षा के लिये ही विवाह करती है तो विवाह का उद्देश्य ही गलत हो जाता है। एक विद्वान् का कथन है कि— "विवाह कर लेने से ही कोई जीवन-साथी नहीं बन जाता। जो पति-पत्नी जीवन-साथी नहीं बनते; केवल अपनी सुविधा के लिये एक दूसरे के शरीर व मन का भोग करते हैं; उनका घर घर नहीं, नरक बन जाता है। घर को स्वर्ग बनाना हो तो पति-पत्नी को परस्पर अनुरूपता प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये।"

गृहस्थाश्रम वही धन्य है जिस आश्रम में आनन्द भरा घर, चतुर सन्तान, प्रियवादिनी स्त्री, अभीष्ट धन, स्त्री में रति, आज्ञापालक सेवक, अतिथि सेवा, ईश्वर पूजा और सत्संग मिले।

जन्म भर जिस-किस तरह से केवल निभा लेने की भावना गृहस्थ जीवन के सौन्दर्य और आनन्द को नष्ट कर देती है। देखने में आता है कि नवीनता मिट जाने पर पति-पत्नी एक-दूसरे से जल्द ऊब जाते हैं। यह शिकायत वे ही दम्पति करते हैं जो कि विवाह के बाद अपने प्रणय और रोमान्स को सजीव रखने में असफल होते हैं। इस विषय में दोनों पर सामान्य रूप से ज़िम्मेदारियाँ हैं। प्रेम की आधारशिला है सदाचार। यदि पुरुष के लिए संसार में अपनी पत्नी के सिवाय दूसरी स्त्री नहीं और स्त्री के लिये पति को छोड़ अन्य पुरुष नहीं तो नर-नारी का यह अमिट आकर्षण उन्हें जीवन भर प्रणय में बाँधे रहेगा।

वैवाहिक जीवन की सफलता पति-पत्नी की मनोस्थिति पर निर्भर है। विवाह को सफल बनाने के लिए यत्न करना पड़ता है, चतुराई से काम लेना पड़ता है और व्यवहार कुशलता प्राप्त करनी पड़ती है। जब जीवन साथी के कदमों के साथ मिलकर अपने कदम स्वयं उठने लगें, तब जीवन में सामंजस्य आ जाता है और जीवन-यात्रा बेताल और बेसुर होने से बच जाती है।

इस पुस्तक में इसी सामंजस्य को प्राप्त करने के लिये मैंने अनेक व्यावहारिक सुझाव दिये हैं, जिन बहिनों और भाइयों ने भरोसा कर, मेरी सहानुभूति और सलाह से लाभ उठाने के विश्वास से, अपने जीवन की दुखद

घटनायें, सुखद अनुभूतियों और समस्याओं से मुझे परिचित कराया और उन्हें हल करने में मेरे सहयोग की सराहना की, उनके प्रति मैं बहुत अनुगृहीत हूँ। सच पूछिये तो उनके जीवन-विवरणों और बहुमुखी समस्याओं के आधार पर ही मुझे इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मिली और जब-जब इस विषय पर मेरे कुछ लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए तो पाठक-पाठिकाओं ने मुझे यह लिखा भी कि लेख पढ़ कर उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि ये तो उनकी अपनी ही समस्याएँ हैं, मानों उन्हीं के गृहस्थ जीवन की झाँकियाँ उन लेखों में सजीव उतार दी गई हैं।

यदि इस पुस्तक को पढ़कर दम्पति, सास-बहू, माता-पिता अपनी-अपनी समस्याओं को सुलझाने में थोड़ा बहुत भी सफल हो सके, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूंगी।

अन्त में मैं उन विद्वानों के प्रति आभार प्रगट करती हूँ जिनके उद्धरणों से मैंने अपने मत की पुष्टि की है। धर्मयुग, सरिता तथा अन्य महिलोपयोगी पत्रिकाओं और पुस्तकों के सम्पादकों, लेखकों के उपयोगी सहयोग के लिये भी मैं अनुगृहीत हूँ।

--सावित्री देवी वर्मा

१४, फ़ैज़ बाज़ार, दरिया गंज
दिल्ली-७
९-४-५७

विषय-सूची

	विषय			पृष्ठ
१.	यह प्रिय बन्धन	...	...	१
२.	एक से दो भले	...	...	१५
३.	हाथ पकड़कर	...	...	२४
४.	एक दूसरे के पूरक	...	...	३४
५.	मिसरी में फाँस	...	...	४४
६.	दुखड़ा मैं कासे कहूँ ...?	...	...	६३
७.	सुनहले सपनों को मिटने न दें	...	...	८१
८.	ज़रा साजन की भी सुनो	...	...	९४
९.	हार में जीत	...	...	१०६
१०.	साँझ भई घर आवो, साजन !	...	...	११५
११.	सहचरी कि कन्धे का बोझ ?	...	...	१२२
१२.	यदि तुम साथ हो...	...	...	१३६
१३.	दावत और प्रीतिभोजो का आयोजन	...	...	१४९
१४.	अब फिर कब दावत उड़ेगी ?	...	...	१६०
१५.	आप गृहलक्ष्मी बनें	...	...	१६७
१६.	घर का बजट और सँभाल	...	...	१७८
१७.	लक्ष्मी की गृहस्थी	...	...	१८७
१८.	क्या आप नौकरों से परेशान हैं ?	...	...	२००
१९.	नारी की अर्थ पराधीनता	...	...	२०६
२०.	स्त्रियाँ और नौकरी	...	...	२१७
२१.	सास-बहू के झगड़े	...	...	२२६
२२.	अपना-अपना दृष्टिकोण	...	...	२४२
२३.	संयुक्त परिवार में बहूरानी का बर्ताव	...	...	२५३
२४.	अपना पूत, पराया ढींगर	...	...	२६०
२५.	सम्मिलित परिवार का नव-निर्माण	...	...	२६६
२६.	हमारी बालिकाएँ और वयःसन्धिकाल	...	...	२७३
२७.	माताएँ पथ-प्रदर्शक बनें	...	...	२८१
२८.	कौन उत्तरदायी है ?	...	...	२९२
२९.	क्या आपका भी ऐसा ही कटु अनुभव है ?	...	...	२९७
३०.	बेचारे ये बच्चे !	...	...	३०५
३१.	ये भूले भटके !	...	...	३३०
३२.	इनकी भी जानकारी रखें	...	...	३४८

पारिवारिक समस्याएँ

१. यह प्रिय बन्धन



विवाह प्रणाली का विकास—

स्त्री और पुरुष परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे के बिना उनका काम नहीं चल सकता। सृष्टि के आरम्भ से ही बच्चों की देख-भाल, गृह-प्रबन्ध आदि का काम स्त्री के जिम्मे ही था। पुरुष अपने बल पर शत्रुओं से लड़ता-भिड़ता, भोजन जुटाता तथा स्त्री और बच्चों की रक्षा करता था।

'जिसकी लाठी उसकी भैंस' इस सिद्धान्त के आधार पर पुरुष का स्त्री पर अधिकार था। सभ्यता के विकास के साथ-साथ सहूलियत से जीवन सहचरी प्राप्त करने तथा सुरक्षित जीवन बिताने के लिए विवाह प्रथा चलाई गई। शनैः शनैः मनुष्य सामाजिक प्राणी बन गया। समाज में अपनी मान-मर्यादा बनाये रखने और रोटी की समस्या को हल करने के लिए यह आवश्यक था कि चार आदमियों को साक्षी बनाकर स्त्री-पुरुष अपना घर बसाते। समाज की व्यवस्था बनाये रखने के लिए वैवाहिक जीवन का उत्तर-दायित्व भी मनुष्य ने अपने सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण के अनुकूल बना लिया। क्योंकि गृहिणी से घर था अतएव घर की व्यवस्था, बच्चों के पालन-पोषण का काम और पति की सेवा का भार उसी के जिम्मे

पड़ा। पुरुष अपने लिए सहूलियत और अधिकार चाहता था, इसलिए उसने नारी पर बहुत कुछ पाबन्दियाँ लगाईं, उसके दायरे को तंग किया। परिणाम स्वरूप जहाँ एक ओर अनमेल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह आदि की स्वाधीनता पुरुषों को मिली, दूसरी ओर कन्या का जन्म तक एक विपत्ति का हेतु समझा जाने लगा। कन्या के माता-पिता की एक मुख्य जिम्मेदारी थी कि किसी तरह इसके हाथ पीले कर दिये जायँ। विवाह के पश्चात् वह अपने पति की सम्पत्ति समझी जाती थी।

शिक्षा के प्रचार के साथ ही साथ स्त्री की दशा भी सुधरी। अब उन्हें अपना साथी पसन्द करने की बहुत कुछ सुविधाएँ हैं। अब पुरुष द्वारा वह एक सम्पत्ति नहीं परन्तु सहचरी और जीवन-संगनि समझी जाने लगी है। पुरुष ने इस बात को भली प्रकार महसूस किया है कि नारी को अब अशिक्षित और पर्दे में रखकर वह स्वयं ही घाटे में रहेगा। प्रगतिशील जमाने में ऐसी संगनि जीवन-पथ पर बराबर कदम उठाकर नहीं चल सकेगी और अशिक्षित माता के संस्कार उसकी सन्तान को भी दबा रखेंगे। स्त्रियों में जागृति हुई। संस्कार तो उनमें छिपे ही थे, उन्नति का मार्ग खुलते ही वे तेजी के साथ पुरुषों के साथ जा मिलीं।

नारी इसकी पवित्रता की रक्षा करे—

अब नारी एक ऐसे स्थान पर आकर खड़ी हो गई है, कि वह प्रतिक्रियावादी होने के लिए मचल रही है। उसकी यह भूल उसे सर्वनाश की ओर ले जायगी। यदि गृहस्थाश्रम की पवित्रता नष्ट हो जायगी तो नारी अपने आदर्श से गिर जायगी। उसके नारीत्व और मातृत्व के दिव्य सौन्दर्य की कवियों ने जो कल्पना की, संसार में उसे परमात्मा की सुन्दर सृष्टि की सर्वोत्तम रचना मानकर जो गुणगान किया है, उस स्वर्गीय सौन्दर्य पर सर्वदा के लिए पर्दा गिर जायगा। संसार मे इस समय कठोरता, पिशाचता और निर्ममता ने हाहाकार मचाया हुआ है। अविश्वास और स्वार्थ, समाज में मनुष्य को निकृष्ट और आदर्शहीन प्रमाणित कर रहा है। फलस्वरूप पारिवारिक सुख अशान्ति और असन्तोष से किरकिरा हो गया है। ऐसे नाजुक समय में कर्त्तव्य नारी को पुकार रहा है। हे देवि! मेरे मुख की लालिमा बनाये रखो, हाथ पकड़कर मुझे उबारो। इस समय मुझे ठुकराना नहीं। समाज का डूबता पोत हूँ मैं, मुझे खेकर भँवर में से तुम्हीं निकाल सकोगी।

पुरुष पतन की ओर बढ़ा है, उसने नारी को कुचला और पंगु भी बनाया, अपनी सम्पत्ति समझ उस पर अत्याचार भी किया। नारी का स्वभाव लचकदार था, वह दबकर भी विद्रोही नहीं बनी, इसी लिए अत्याचारों की आँधी उसके ऊपर से ही बह गई। आज जागरूक होकर नारी कठोर बन रही है। चारों ओर नारी-जागरण का घोष हो रहा है। परन्तु यह जागरूकता रचनात्मक और कल्याणात्मक हो तभी वांछनीय है। आज का नारी-समाज पुरुषों की समानता में स्वत्व की रक्षा के लिए होड़ लगाये हुए हैं। कुछ गैरजिम्मेदार पुरुष भी चहल-पहल पसन्द, विवेकहीन स्त्रियों को उभार कर तमाशा देख रहे हैं। ये अदूरदर्शी स्त्रियाँ भी नर और नारी के संघर्ष को मिटाने के लिए तलाक रूपी घातक अस्त्र को ही ठीक समझ रही हैं।

लड़कर लड़ाई कभी नहीं मिटी है। क्षण भर के लिए अगर शान्ति हो भी जायेगी तब भी ईर्ष्या, द्वेष डाह आदि अन्दर ही अन्दर सुलगते रहेंगे। प्रतिहिंसा की ज्वाला फिर धधकेगी और लपटें फिर उभर आयेंगी। यह अग्नि तो शान्ति, त्याग और प्रेम के शीतल जल से ही ठण्डी होगी। आज तलाक का दुष्परिणाम पाश्चात्य देश भुगत रहे हैं। वैवाहिक जीवन में सब प्रकार से समता, स्वाधीनता और अधिकार पाकर भी पाश्चात्य नारी सुरक्षा और निश्चिन्तता का अनुभव नहीं कर पा रही है। मनचाहा जीवन-साथी ढूंढ़ने के बाद भी उनके सम्बन्ध क्षणिक ही हैं। कोई भी चपल आकर्षक युवति एक प्रौढ़ नारी का पति चुराने में सफल हो जाती है। कोई भी सजीला नवयुवक अपने मित्र की नवोढ़ा को बहका ले जाता है। ऐसों की गृहस्थी में विश्वास, त्याग और स्थिरता भला कहाँ? चाहे तलाक द्वारा उन्हें एक बन्धन से ऊबने पर शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है, परन्तु इसमें उनकी समस्याएँ सुलझती नहीं, उल्टी बढ़ती ही हैं। क्योंकि जहाँ आमरण निभाने की दृढ़ता ही नहीं, वहाँ दम्पत्ति नये-नये बन्धन जोड़कर उन्हें तोड़ते हिचकते नहीं। एक मजबूत पक्का मकान बनाकर उसमें स्थायी रूप से निवास बनाकर रहने से, कच्ची पर हल्की-फुल्की सारहीन सजीली झोंपड़ियाँ बनाकर कुछ दिन रहना और फिर उसे तोड़कर दूसरी अस्थायी झोंपड़ी बनाने लगना कहाँ की बुद्धिमानी है?

तलाक से समस्या नहीं सुलझेगी—

किसी बीमारी का इलाज करने के लिए, कड़वी दवाइयाँ पिलाना और दुविधाजनक ऑपरेशन करवाने से यह लाख दर्जे अक्लमन्दी है कि आप

बीमारी के कारण को ही मिटा दें। दुविधाजनक इलाज की अपेक्षा निश्चित और सरल, सुखद प्रतिकार श्रेष्ठतर है। घर के पास गन्दगी और मच्छरों का निवास-स्थान ही न रहेगा तो मलेरिया के इलाज का प्रबन्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। सेना, शाला, आफिसों, दुकानों, कारखानों और समाज, नगर तथा संसार मे शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए नियमों की पाबन्दी और नीति-चतुरता और व्यावहारिक कुशलता अपनाने का पाठ पढ़ाया जाता है, फिर भला गृहस्थाश्रम जिस पर समाज का दारोमदार है उसमें पति-पत्नी को संयम, नियम, त्याग, प्रेम और चतुराई से निभाने की ताकीद क्यों नहीं की जाये ? इसके विपरीत उन्हें विकास का मार्ग दिखाकर, कोमल बन्धनों को काटने के लिए तलाक की छुरी पकड़ाकर एक कायर के सदृश आघात कर भाग जाने की सुविधा देना क्या उचित है ? विवाह-विषयक गांधी जी के विचार माननीय हैं। वे कहते हैं— विवाह के कारण पुरुष जिस तरह स्वामी बन सकते हैं, उसी तरह स्त्री भी स्वामिनी बन सकती है। विवाह के बाद दोनों के अधिकार समान रहते हैं, यह भावना दोनों को रहनी चाहिये। विवाह के कारण परस्पर का स्वातन्त्र्य मर्यादित होता है। विवाह दो आवश्यकताओं का पूरक है — एकव्यक्ति-विकास तथा दूसरा समाज-स्थैर्य। इन दोनों का समन्वय साधने के लिए विवाह की पवित्रता मन में जागृत रखनी चाहिए। सम्बन्ध-विच्छेद का सार्वजनिक प्रचार करना समाज-स्थैर्य को कम्पित करना है।'

विवाह के असफल होने के मुख्य कारणों में से कुछ कारण हैं— अनमेल विवाह, आर्थिक कठिनाइयाँ, पति-पत्नी में परस्पर असहनशीलता, अदूरदर्शिता, निर्मूल शंका करने की प्रवृत्ति तथा व्यावहारिक बुद्धि की कमी और उतावलापन।

चुनाव में सावधानी बरतें—

पहिले अनमेल विवाह को ही लें। संसार में अपनी-अपनी रुचि और दृष्टिकोण हैं। कोई जीवन-संगी में रूप चाहता है, कोई विवाह करके धन पाने की अपेक्षा करता है। किसी स्त्री को रूपवान पति चाहिये, कोई गुणवान को अधिक महत्व देती है। जबकि तीसरी कलाप्रिय और भावुक पुरुष की कामना करती है। नीतिशास्त्रों का कहना है कि विवाह सम्बन्ध रूप, गुण, और मान-मर्यादा में समानता रखने वाले कुलों में ही करना चाहिए।

कुलीनता की छाप मनुष्य पर अवश्य पड़ी होती है, अतएव उसकी आदतें जो कि स्वभाव का ही दूसरा रूप हैं घर के संस्कारों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहतीं। कुलीनता तथा शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण, आदर्श, विचार तथा ध्येय निर्धारित करने में बहुत हद तक जिम्मेदार होती हैं। आर्थिक स्थिति की दृढ़ता भी घर-घराने की सामाजिक मान-मर्यादा द्वारा ही परखी जाती है, अतएव इन सब बातों को परखने का काम बुजुर्ग और अनुभवी माता-पिता पर ही छोड़ना ठीक होगा। पर एक दूसरे का रूप और अभिरुचि तथा स्वभाव की विशेषता और आकर्षण परखने का मौका वर और कन्या को अवश्य दिया जाना चाहिये। स्वभाव और गुणों में कभी-कभी भिन्नता होने पर भी, कई पति-पत्नी बहुत सफल और सुखी दम्पति पाये गये हैं। कहते हैं, भिन्नता और नवीनता में आकर्षण अधिक तीव्र होता है। अगर कोई पुरुष अधिक उद्यमी तथा चुस्त है, उसमें तात्कालीन व्यवहार बुद्धि अधिक है, तो उसका ऐसी स्त्री के संग, जो अपना भार पति पर डाल, लाड़-दुलार में अपने को भूल, एक आज्ञाकारिणी बालिका के सदृश रहना पसन्द करती है, अधिक सफलतापूर्वक निर्वाह हो सकता है।



इसी प्रकार गृह-कार्य में दक्ष, कर्त्तव्यपरायणा नारी पाकर एक बेपरवाह, काम में भूला रहने वाला पति अपने को धन्य समझता है। ऐसे पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं। पालकों को चाहिए कि लड़के और लड़की का रूप, गुण, आयु, स्वास्थ्य, रुचि, आदर्श तथा ध्येय को ध्यान में रखते हुये तदनुकूल ही जीवन-साथी ढूंढ़ने की चेष्टा करें। संतान का भी यह धर्म है कि माँ-बाप के अनुभव से पूर्ण लाभ उठाकर अपने जीवन-संगी को परखें। केवल प्रथम आकर्षण से जो प्रेम उत्पन्न होता वह क्षणिक और कामनापूर्ण होता है। ऐसी चकाचौंध से अंधे होकर जो साथी ढूंढ़ा जाता है उसकी कटु असफलता जीवन भर खटकती रहती है। याद रखें आपने न केवल

अपने लिए जीवन-संगी चुनना है परन्तु साथ ही अपना एक रक्षक और स्वामी भी चुनना है तथा अपनी होने वाली सन्तान के लिए योग्य पिता और अपने माता-पिता के लिए एक ऐसा जामाता ढूँढ़ना है जिसे वे अपनी घर की लाज, कलेजे का टुकड़ा, अपनी प्यारी बेटी सौंपकर निश्चित हो सकें। अन्यथा चाहे आप तो अपनी भूल से जीवन भर दुखी रहेंगी, परन्तु आपको दुखी देख निर्दोष माँ-बाप का कलेजा भी कसकता रहेगा।

बड़ों का सहयोग प्राप्त करें--

आजकल कई नवयुवक कहते हैं कि साथी चुनने का अधिकार केवल हमारा है। हमें अपना भविष्य स्वयं निर्धारित करना है; हमें जैसा रुचिकर होगा वैसा करने से हमें भला कोई क्यों रोके ? अब जमाना बदल रहा है। बाप-दादों की सलाह से हम भला कैसे चल सकते हैं, हम अब नादान तो हैं नहीं, अपनी बुराई-भलाई स्वयं समझते हैं। एक हद तक उनका कहना ठीक भी है। परन्तु अपने दृष्टिकोण को समझाकर माँ-बाप का सहयोग प्राप्त करने में ही उनकी कुशल है। आखिरकार उनका अनुभव जो उन्होंने इतने



वर्षों में कई ठोकरें खाकर, फिर सँभलकर प्राप्त किया है, बहुत मूल्यवान है। आप पितृकुल के वृक्ष की एक शाखा हैं। शाखा का पेड़ से लगे रहने पर ही आपके जीवन की सरसता और हरियाली बनी रह सकती है। अपने वंश की शान-आन, मान-मर्यादा, शोभा और कुलीनता बनाये रखने में ही आपका गौरव है। उच्छृङ्खलता को स्वाधीनता कहना भूल है। अगर मुख्य नदी से

कोई शाखा मर्यादा तोड़, दोनों कूलों को तोड़ती-फोड़ती, बरसाती जल के उन्माद में अलग बह निकलें, तो थोड़ी दूर जाकर, कुछ काल बाद, वह शीघ्र ही सूख जायगी। माना कि संसार तरक्की कर रहा है, मनुष्य के दृष्टिकोण बदल रहे हैं, परन्तु जीवन को सफल और सुखी बनाने वाले मूल सिद्धान्त और सनातन सद्गुणों की अवहेलना तो कोई समाज किसी काल में भी नहीं कर सकता। सदाचार, शीलता, सभ्यता, सच्चाई, सरलता, कर्तव्यपरायणता तथा त्याग जीवन सर्वदा ही वांछनीय हैं। प्रथम दर्शन के आकर्षण पर ही अगर प्रेम की सार्थकता सिद्ध होती तो आज पाश्चात्य देश में ३ पीछे २ विवाह-विच्छेद न होते।

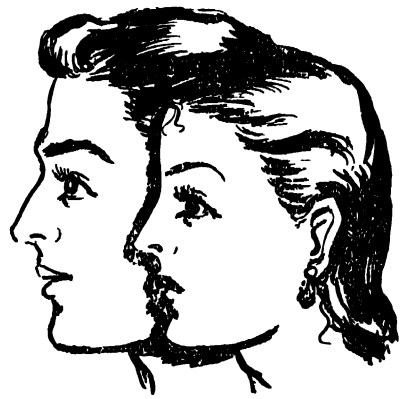
आर्थिक चट्टान—

आर्थिक कठिनाइयाँ आजकल एक समस्या बनी मुँह बाये खड़ी हैं। नव-दम्पति के बहुत से सुनहले स्वप्न, इसी चट्टान पर टूटते हैं। इसी के कारण माता-पिता के अपनी सन्तान को सुशिक्षित बनाने के बहुत से अरमान अधूरे रह जाते हैं। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति करने में असफल रहने का एक मुख्य हेतु धनाभाव भी है। मंहगी की चक्की सब को पीस रही है। अभाव चारों ओर साकार बन कर खड़ा है। रुपये की कीमत आज दो आने के बराबर रह गई है। इसको सुलझाने का बस अब एक ही उपाय है। अगर चादर बड़ी नहीं हो सकती तो लज्जा ढकने के लिए पाँव समेटने ही होंगे। इसके लिये गृहिणी का अपने कर्तव्य की ओर पूर्णरूप से जागरूक रहना होगा। जीवन की आवश्यकताएँ पहले पूरी करनी होंगी, मनोरंजन का साधन बाद में जुटाना होगा। आत्म सन्तुष्टि, परस्पर सहयोग और बच्चों की संख्या नियमित रखकर गृहस्थी चलानी होगी। नौकर रखना आजकल धन का अपव्यय है। उसी घर में नौकर रखना उपयुक्त होगा जहाँ स्त्री भी कम से कम दो सौ रुपया कमा कर लाती हो। अन्यथा घर की सार-सँभाल बच्चों की देखभाल आदि काम ही इतना होता है कि स्त्री अगर उसे स्वयं सँभाले तो कम से कम १५० रु० महीने की बचत हो सकती है। घर का रहन-सहन और कार्यक्रम इस प्रकार बनायें कि गृहिणी को दो घन्टे का दोपहर को विश्राम मिल सके। सब काम समय पर और व्यवस्थापूर्ण ढंग से होने चाहिएँ। अब पुराने रिवाजों में कि गृहिणी दिन भर चूल्हा-चक्की लेकर बैठी रहे, सुधार करना होगा। गृहिणी घर की दासी नहीं अपितु स्वामिनी और

महचरी है। धन और समय की बचत के लिए कोआपरेटिव संस्था के ढंग पर सम्मिलित पारिवारिक जीवन का नव-निर्माण करना ही श्रेयस्कर होगा।

सच्चे सहयोगी बनें--

वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों की ही ओर से प्रयत्न वांछनीय है। परस्पर नीच-ऊँच, शासित और शासक की भावना आनी ही नही चाहिए। वर्तमान को अतीव सुन्दर बनाने की चेष्टा बहुत सी कठिनाइयों को दूर कर देगी। अभावों का रोना रोने से, अभाव कम नही होने, बल्कि अपने प्रयत्नों से उनकी पूर्ति करने से ही आप उन्हे सुलझा सकेंगे। न केवल धन, परन्तु रूप, गुण, सुविधाएँ तथा सुअवसर आदि की रही-सही कमी भी सहयोग से पूरी करें। चाहे जैसी स्थिति हो निभाने की चेष्टा करें। क्षमा और प्रोत्साहन इन दो के सहारे आप एक दूसरे के पूरक तथा पथप्रदर्शक बन जायं।



अगर कभी जीवन-पथ ऊँचा-नीचा प्रतीत हो आप अधीर होकर निराश न हों। ऊबड़-खाबड़ धरती पर लड़खड़ाता हुआ गृहस्थी का रथ शीघ्र ही समतल भूमि पर आ जायगा, यदि आप उतवलापन छोड़ कर, दृढ़ता के साथ एक दूसरे का हाथ पकड़, दबे-दबे पाँव आगे बढ़े चलेंगे। नहीं निभी तो तलाक की छुरी से बन्धन काट अलग हो जायँगे, यह विचार ही घातक है। आप आरम्भ मे जीवन संगी चुनने में सावधानी बरतें, पर एक बार जिसका हाथ पकड़ लिया उसे आजन्म निभाने का दृढ़ निश्चय कर गृहस्थी का भार संभालें। अगर आप में दृढ़ता है, कर्तव्य-निष्ठा है, तो गृहस्थी का सुख-सौन्दर्य और शान्ति आपको आनन्द-विभोर कर देगी। गृहस्थी आपको एक जंजाल नहीं, पर मधुर, आकर्षक और सुखद कोमल बंधन प्रतीत होगी। गृहस्थाश्रम त्याग, वीरता और सद्गुणों का परीक्षा स्थल है। इसकी मजबूत धुरी पर ही अन्य तीन आश्रमों का दारोमदार निर्भर है। सर्वोत्तम मनुष्यत्व ही देवत्व है। यहाँ आपके इसी देवत्व की परीक्षा है। सिनेमा की दुनिया में वैवाहिक जीवन की झांकी न देखें, वे तो चलचित्र ही हैं। समाज में सजीव और सफल चित्रों

का अध्ययन करें, उनसे आप को प्रेरणा मिलेगी। रचनात्मक प्रतिकारों से गृहस्थी की कठिनाइयों को दूर करें, और सामाजिक अड़चनों को सुलझायें।

यथार्थवादी बनें—

प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ कमियाँ, बुराइयाँ और दोष होते हैं, बिना इनके मनुष्य मनुष्य नहीं। व्यक्ति की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ मिलकर उस के व्यक्तित्व की विशेषता को बनाती हैं। हम जिससे प्रेम करते हैं, उससे यह भी आशा करते हैं कि मैं जैसा हूं, उसी तरह वह मुझे कबूल करे, एक मित्र की तरह बुराइयों को हँसकर टाल दे और मुझे अपना जानकर समझाए-बुझाए। जब पति-पत्नी एक दूसरे की कटु आलोचना करने, बुराइयाँ ढूंढ़ने और एक दूसरे को दोषी प्रमाणित करने पर कमर कस लेते हैं तो पारिवारिक सुख, दाम्पत्य-जीवन का आनन्द और प्रेम किरकिरा होजाता है।

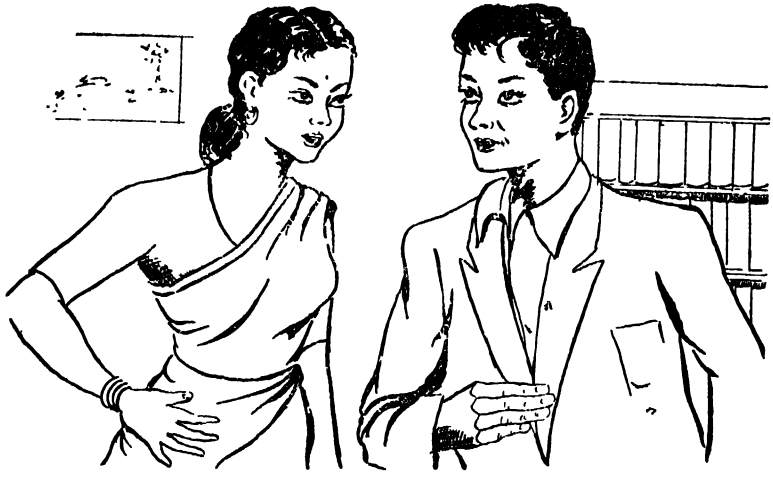
आलोचना की प्रवृति बुरी है—

समझदार पति-पत्नी परस्पर मतभेद होते हुए भी लोगों के सामने एक दूसरे का समर्थन करते और अपनी पारिवारिक एकता बनाए रखते हैं। आप एक-दूसरे पर शासन करने, अंकुश बनाए रखने की भावना को छोड़ दें। 'मेरे घर में मेरा हुक्म चलेगा', यह भावना बहुत अव्यावहारिक है। हर एक समस्या का हल है। सहन-शक्ति, समझौते और तरह देने से बहुत से खिचाव पैदा करने वाली बातें सुलझाई जा सकती हैं। जब वाद-विवाद का मौका आए तब तरह देकर, बात को टाल कर अपनी अक्लमंदी का प्रमाण देने का मौका न खोवें। 'वाद-विवाद से मतभेदों की खाई और चोड़ी हो जाती है।' क्योंकि, युक्तिसंगत बात समझने की चेष्टा न करके दोनों अपनी-अपनी बात को पुष्ट करने की दलीलें देते हैं। हठ और अहं भावना के कारण विरोध बढ़ता जाता है। हमारे एक मित्र हैं, उनका अपनी पत्नी से कभी वाद-विवाद नहीं होता। पति का कहना है कि मेरी पत्नी जब किसी बात के पीछे पड़ जाती है, तो मैं चुप हो जाता हूँ। जब वह सब कुछ कह चुकती है तब मैं उस समय उतना ही कहकर बात समाप्त कर देता हूँ कि 'ठीक है, तुमने जो कहा है, वह विचारणीय है। इस विषय पर सोच-विचार कर जो करना चाहिए, वही करेंगे।' इस से यह फायदा होता है कि उस समय के लिए बात टल जाती है। फिर सोच समझकर जो करना ठीक होगा उस विषय में मैं उसे समझा देता हूँ। पर मैं ऐसा निर्णय कभी नहीं देता, जिसमें केवल अपने

हित या स्वार्थ का ही ध्यान रखा गया हो। उसकी जो बात युक्तिसंगत होती है, उसे थोड़ा सुधारकर मान भी लेता हूँ। पर बड़े मामलों में मैं उसका पथ-प्रदर्शन करता हूँ, उसे समझा देता हूँ और समझाने से वह समझ भी जाती है।

सुधारक न बन बैठें--

कई नासमझ पति-पत्नी एक-दूसरे को जली-कटी सुनाकर मानों एक-दूसरे को सुधारने और चेतावनी देने का जिम्मा अपने ऊपर ले लेते



है। व्यंग, कटु आलोचना द्वारा वह अपने जीवन-साथी के मन को छेदते रहते हैं। इस से मनोमालिन्य बढ़ता रहता है। मनों में गांठ पड़ जाती है। सुधारने का यह तरीका गलत है। इसकी अपेक्षा यदि प्यार और मनोवैज्ञानिक ढंग से समझाया जाये, तो उससे सचमुच में अपनी कमियों को दूर करने की प्रेरणा मिलती है। जीवन में एक दूसरे को सराहने के कई अवसर आते है। यह मानव स्वभाव है कि मनुष्य अपने प्रियजनों की प्रशंसा, प्रेम और सहानुभूति का भूखा होता है। विवाहित जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते है जब कि जीवन-साथी की प्रशंसा और सराहना अवश्य करनी चाहिए। शिष्टाचार की ये छोटी-छोटी बातें मन को जीतने के लिए काफी है।

कोई भी व्यक्ति अपने में पूर्ण नहीं है। मनुष्य कमजोरियों का पुतला है। न्यूनताएँ हर एक व्यक्ति में होती हैं। जो पुरुष अपनी पत्नी की सूरत

शक्ल में दोष निकालना है, फूहड़ या अशिक्षित कहकर उसकी भर्त्सना करता है, वह अपनी पत्नी को अयोग्य प्रमाणित करता हुआ मानों अपने सम्मान को ही चोट पहुँचाता है। जो स्त्री पति की सहचरी है, गृहिणी है, बच्चों की माँ है, वह पुरुष के लिए आदरनीय है। इसी तरह जो स्त्रियाँ अपने देवर, बहनोई या सहेलियों के पतियों से अपने पति की तुलना करती और बुराई करती है, वे भी निन्दा की पात्र है। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक निष्ठा और आत्मबल होता है, यदि वे निश्चय के साथ प्रयत्न करें तो पति को प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचा सकती है, बुराइयों को छुडाकर उसे चरित्रवान और कर्मशील बना सकती है। संसार में जितने महापुरुष हुए है, उनको प्रेरणा देनेवाली माँ, बहन, साथी, प्रेमिका, पत्नी के रूप में जरूर कोई न कोई स्त्री ही रही है। किसी योग्य पुरुष की असफलता इस बात की द्योतक है कि उसको अपनी पत्नी से ऐसा सहयोग या प्रेरणा नही मिल रही है, जोकि उसे उत्कर्ष के नए मार्ग पर मोड़ दे। दूसरे को परखने के बदले यह लाख दर्जे श्रेष्ठ है, यदि व्यक्ति स्वयं को सफल जीवन-साथी बनाने की चेष्टा करे। इसी में वैवाहिक जीवन की सफलता छिपी है।

बचपन का स्वभाव आदतें बन जाती है, वह छूटती कठिनाई से ही है। बाज पुरुष अपनी चीजों को इधर-उधर फेंक देते है। सुबह उन्हे काम पर जाने की जल्दी होती है। उस समय उनका 'मूड' भी कुछ ठीक नही होता। वे घर के प्रबन्ध या बच्चो की बातों के कारण परेशान किया जाना पसन्द नही करते। इस बात को समझकर स्त्री को उस समय उनके भूल-चूक या बेपरवाही की आलोचना नही करनी चाहिए। माना कि आप घर की मालकिन है और यह चाहती है कि घर में व्यवस्था आपकी मर्जी के अनुकूल हो और घर साफ-सुथरा दिखे, पर इसका यह मतलब नही है कि पुरुष के लिए वहाँ पाबन्दियों का जाल बिछ जाए। तब तो घर उसके लिए घर नही रहेगा।

प्रेम का सौदा फिफ्टी-फिफ्टी का नही है। इस में देना अधिक और पाना कम होता है। विवाह की असफलता का एक कारण यह भी है कि वर या वधू कल्पना के ऊँचे-ऊँचे महल बनाते है। सिनेमा जगत के नायक-नायिका के रोमान्सों को अपने जीवन में यथार्थ रूप से घटित होते देखना चाहते है। कुछ स्त्रियाँ अधिक भावुक होती है। पति ने जरा सा डाट डपट दिया,

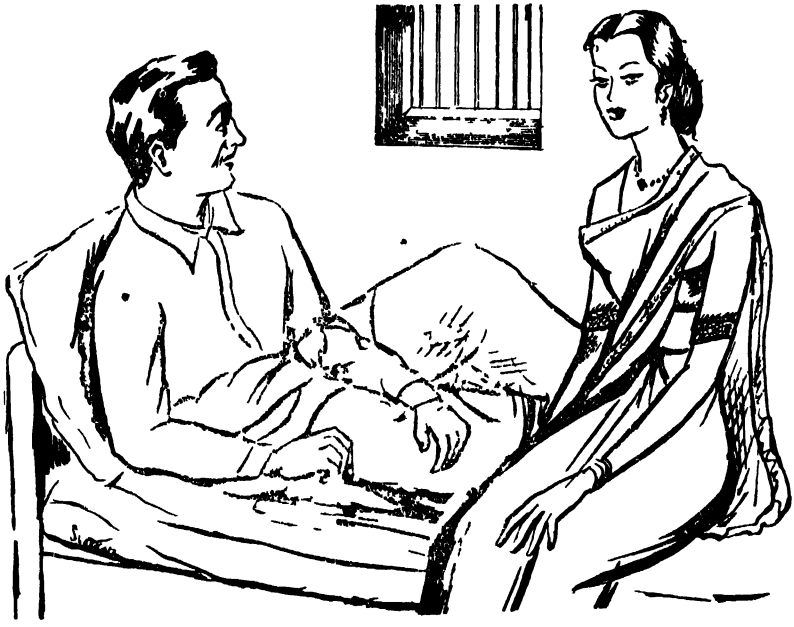
या जल्दी में जरा रुखाई से कुछ कह दिया तो उनके प्रेम के सब सपने ढह जाते हैं। वे सोचती है यह मुझे प्यार ही नहीं करते, अगर करते होते तो दिल को ऐसी चोट थोड़ा ही पहुँचाते ? बाज पुरुष भी समस्या पूर्ण होते हैं। स्त्री पर पुरुष का शासन बना रहना चाहिए इस नीति को अपनाकर वह परिवार पर नादिरशाही शासन करने में ही कल्याण समझते हैं। ऐसे निमर्म, घोर चिड़चिड़े व्यक्ति के संग जीवन व्यतीत करना अन्य लोगों के लिए दूभर हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों के चरित्र का विश्लेषण करते हुए एक अनुभवी का कहना है कि—



ढूँढ़ने पर ऐसे लोगों के स्वभाव का कारण उनके बचपन में मिल सकता है। असल में बचपन में इन लोगों की भावनाएँ विकसित नहीं हो पातीं, इसीलिए बड़े होकर वे ऐसा अजीब आचरण करते हैं। बच्चों की तरह वे दूसरों से तो कुछ पाने की आशा रखते है, पर स्वयं किसी को कुछ नहीं देना चाहते। अपनी बराबरी वालों से या अपने से बड़े और श्रेष्ठ लोगों के प्रति तो इनका व्यवहार बहुत अच्छा होता है पर अपने अधीनस्थ लोगों से इन व्यक्तियों का बर्त्ताव अच्छा नहीं होता। वे बात-बात में अपने नीचे रहनेवाले लोगों पर अपना अधिकार जमाते हैं, उन पर अपनी श्रेष्ठता प्रकट करते हैं। और ऐसे लोग शादी करते हैं, तो अपना अधिकार जमाने की उनकी भावना पूरी तरह खुल खेलती है। पत्नी और बच्चे उनके आश्रित है— यह चूंकि वे जानते हैं, इसलिए चाहते हैं कि घर भर उनका नादिरशाही हुक्म माना करे। यदि उन्हें कहीं अपने धन्धे या काम-काज में थोड़ी सफलता मिल गयी, तब तो फिर कहना ही क्या है ! फिर तो ऐसे लोग अपने आपको असाधारण रूप से सफल मानने लगते हैं। और अपनी कोई बात कटना वे बर्दाश्त नहीं करते।

असफलता के लिए दोनों दोषी—

विवाह असफल होते है, इसके लिए स्त्री-पुरुष दोनों ही समान रूप से दोषी है। विवाह के ध्येय को समझने मे भूल करना, बहुत अधिक आशा करना, अर्थ प्रधान दृष्टिकोण रखना, सहानभूति और सहयोग की भावना न रखना आदि बाते ही वैवाहिक जीवन को असफल बना देती है। विवाह



का आधार प्रेम होना चाहिए। ऐसा प्रेम जो कि वासना और स्वार्थ से परे हो, जिसमे मन, शरीर और बुद्धि इन तीनों का सहयोग हो; जिससे इन तीनों की सन्तुष्टि हो। शारीरिक आकर्षण पर आधारित प्रेम की डोरी कच्ची होती है। मन जिस प्रेम को स्वीकार करले, उससे आनन्द विभोर हो जाये, बुद्धि जिस प्रेम का अनुमोदन करे, जो हृदय की गहराई तक पहुँचकर आत्मा को छूले, ऐसा प्रेम ही गहरा, स्थायी और कल्याणकारी होता है। ऐसा निर्मल प्रेम अभाव और शिकायतो को मिटा देता है। शारीरिक या आर्थिक शोषण उसके आसपास फटक नही सकते।

एक विद्वान् का कथन है कि 'प्रेम कोई बिजली नही है जो एक बार चमक कर बादलों में ओझल हो जाए। यह तो वह दीपक है जिसे नही बुझा

से जलाया जाता है, हृदय के स्नेह से उसे भरा जाता है और आत्मा के प्रकाश से उसकी लौ को प्रदीप्त किया जाता है'।

पर लौ को जला देने से ही प्रेमियों का कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। दुख, असफलता, प्रलोभन आपत्तियों की आंधी के बीच भी इसे बुझने से बचाने में ही प्रेमियों की परीक्षा है। इस परीक्षा मे जो दम्पति सफल होते है उनका ही गृहस्थ जीवन आदर्श माना गया है। देखने में आता है कि अधिकांश दम्पतियों का प्रेम विवाह के तीन-चार साल तक ही साथ देता है। उनके कल्पना की दुनिया यथार्थ के धरातल पर आकर निराशाओं और लाचारियों के थपेड़ों से छिन्न-भिन्न हो जाती है और वैवाहिक जीवन उन्हें भार प्रतीत होने लगता है।

याद रखें विवाह का यह प्रिय बन्धन, आदर्श बन्धन, कल्याणकारी बन्धन आजन्म तक का है ऐसा समझ कर ही स्वीकार किया जाना चाहिए। यह नाजुक है पर साथ ही त्याग और आदर्श से सुरक्षित किये जाने पर अमर भी है। इसकी उच्चता के मर्म को समझें। इसी के आस-पास प्राचीन और अर्वाचीन के मिश्रण से तैयार आदर्शों की मजबूत शिलाओं का एक नव-गृह निर्माण करें। आज नवयुवक और नवयुवतियों को नवयुग का सृजन करना है, जो धर्मयुग के आगमन का सन्देश लेकर आये और भारत अपने अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त कर सके।

'विवाह मनुष्य के जीवन मे एक अवर्णनीय माधुर्य लाता है, जिसके अभाव में जीवन नीरस-सा लगता है। दूसरे शब्दों में विवाह दो स्वतंत्र विचरते हुए व्यक्तियों की रिक्तता को भरने का प्रयास करता है और साथ ही समाज को दूषित होने के अभिशाप से बचाता है।'

२. एक से दो भले

विवाह की आवश्यकता—

प्रत्येक नवयुवक और नवयुवती विवाह करना चाहती है। क्यों? इसलिये कि जीवन को पूर्ण बनाने के लिए पति-पत्नी परस्पर पूरक है। जीवन-नौका को खेने के लिए केवल दो नहीं चार हाथों की जरूरत है। दो पहियों पर ही रथ टिका हुआ है। सूने आकाश में दो पक्षी-प्रेम डोर से बंधे साथ-साथ उड़े चले जाते हैं क्योंकि एकाकी जीवन अधूरा है, थका देने वाला है। जीवन का सूनापन एक साथी के बिना दूर नहीं हो सकता। इसी प्राकृतिक माग को पूरा करने के लिए समाज ने विवाह-प्रणाली चलाई है। यह विवाह-प्रणाली संसार के हित और कल्याण के लिए है। तभी से यह परंपरा सदियों से जीवित चली आ रही है। प्रत्येक दम्पति का यह कर्तव्य है कि वह इस सम्बंध को अपने सफल सहयोग से स्थायी और सुन्दर बनाये। पर विवाह सम्बन्ध केवल शारीरिक आकर्षण पर स्थायी नहीं बना रह सकता। उसको दृढ़ बनाने के लिए पति-पत्नी का आत्मिक मिलन होना जरूरी है।

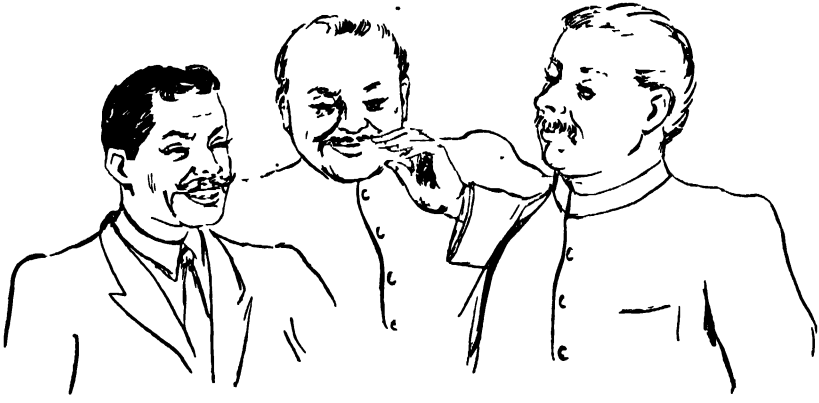


बेजोड़ विवाह—

संसार में हँसों के जोड़े जो मुक्त होकर साथ-साथ उड़ते, बहुत कम है। अधिकांश युगल एक जुए में जुड़े हुए बैलों के जोड़े ही हैं। जिन्दगी की एक साथ चलने में ही कुशलता है, नहीं तो समाज की आलोचना का हँटर पीठ पर पड़ने का डर है, ऐसा दृष्टिकोण रखकर जो निर्वाह किया जाता है

वह वैवाहिक जीवन सौन्दर्य-हीन, एक तरह की कैद है। विवाह का अभिप्राय केवल जिस-जिस तरह से पति-पत्नी के निभा लेने से पूरी नहीं हो जाता। असल में दोनों के शरीर और आत्मा का मिलन ही सच्चा विवाह है। केवल निकटता ही वांछनीय नहीं पर उससे आन्तरिक सुख की अनुभूति होनी भी जरूरी है।

जीवन साथी के चुनाव का यह तरीका ही गलत है। दो व्यक्तियों के जीवन का सौदा दो परिवारों की आवश्यकताओं का विचार करके तय कर



दिया जाता है। हमारे समाज में विवाह के नाम पर एक तरह की बेच-खरीद चल रही है। लड़के का पिता देखता है कि मेरे लायक बेटे की पढ़ाई पर जो खर्च हुआ है उसमें दुगना दहेज मिल रहा है, बस वह कुलीनता को धन के रूप में देखता है फिर उसे लड़की के स्वभाव या रूप के विषय में कोई शिकायत नहीं रह जाती। लड़का पिता के दबाव के नीचे है। वह पढ़कर निकला है अमीर ससुर के प्रभाव से उसे ऊँची नौकरी मिलने की आशा है। मोटर मिलेगी, नगद भी काफी आयेगा। बस, हाँ करदी जाती है। अमीर घर की लड़की साधारण घर में ब्याह कर आ गई। सोने की जूती सास को भी अच्छी लगती है। बहू का नखरा सिर-माथे है। क्यों न हो बहू जब भी पीहर जाती है नगद, कपड़े, फलों और मिठाइयों के टोकरे साथ लाती है। धीरे-धीरे बहू को अपने बाप के पैसे का गुमान हो जाता है। वह ससुराल वालों को अपना दबैल समझती है। पति भी अपनी आर्थिक हीनता के कारण दबा रहता है। नारी स्वभाव है वह उसी चीज के पीछे दौड़ती है जिसे प्राप्त

करने में उसे प्रयत्न करना हो। ऐसा दब्बू, सहजप्राप्त, हाँ में हाँ मिलाने वाला पति पाकर उसकी सन्तुष्टि नहीं होती। उसे जीवन अधूरा लगता है। पति के रूप में उसे स्वामी चाहिए था पर यहाँ तो धन का क्रीत दास मिला। भला ऐसे बेजोड़ विवाह में आत्म-समर्पण की सन्तुष्टि कहाँ ?

सुशीला बहुत ही सुन्दर है, नृत्य-कला में बहुत प्रवीन है। साथ ही उसने प्रथम रहकर बी० ए० पास किया। पर उसके पिता एक साधारण औकात के व्यक्ति हैं। जिस सेठ की दूकान में वह काम करते हैं उनका लड़का रमेश विलायत से बैरिस्टर बनकर लौटा है। एक जलसे में उसने सुशीला का नृत्य देखा, बस वह उस पर मुग्ध हो गया। उसने जिद्द पकड़ ली कि शादी करूँगा तो सुशीला से। बाप ने बहुतेरा समझाया कि गरीब घर की लड़की क्यों लेता है ? तुझे तो बड़े-बड़े सेठों की लड़कियाँ आयँगी, पर



रमेश नहीं माना। शादी हो गई। दो साल तक तो रमेश सुशीला के रूप का लोभी, भौंरे के सदृश उसके आस-पास मँडराता रहा। आभूषणों और जेवरों

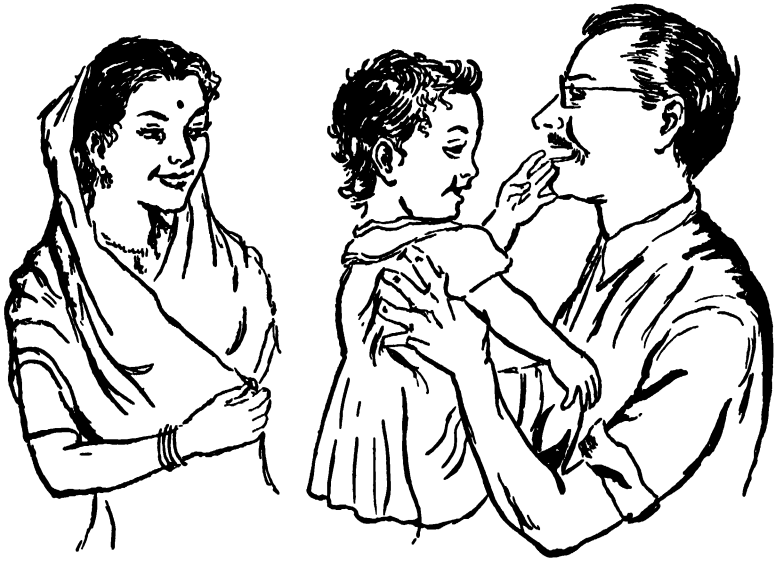
से उसे रिझाता रहा, पर प्रसव के बाद सुशीला का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया, बस रमेश ने अपने मन-बहलाव के लिए कोई और जगह ढूँढ़ ली। सुशीला रमेश के घर की स्वामिनी है, पर उसके हृदय की नहीं। लोग समझते हैं सुशीला बड़ी सुखी है, पर कोई सुशीला से पूछे। वह अपने एकाकीपन से ऊब उठी है। मन के मीत के अभाव में उसका जीवन अपूर्ण है।

दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के लिए—

नित्य इसी तरह के अनेक बेजोड़ विवाहों की कहानियाँ समाज में सुनने को मिलती हैं। पुरुष स्त्री के यौवन का शोषण करता है और स्त्री पुरुष के धन का शोषण करती है। जब तक धन और यौवन कायम रहते हैं सफल वैवाहिक जीवन का नाटक चलता रहता है, पर वास्तविकता कुछ और ही होती है। तो प्रश्न यह उठता है कि विवाहित जीवन को सफल बनाने के लिए क्या करना चाहिए ? उसके लिए तीन बातों की आवश्यकता है, सहिष्णुता, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा मित्रता की भावना। तुनुकमिजाजी, मनोवेगों में अचानक उफान आ जाना, स्वार्थवृत्ति, चिड़चिड़ापन ऐसे दुर्गुण हैं कि गृहस्थ के आनन्द को किरकिरा कर छोड़ते हैं। सच्चे अर्थ में जीवन-साथी बनने के लिए विचार और हृदय की स्वतन्त्रता होनी आवश्यक है, तभी मित्रता का नाता निभ सकता है। यदि लोक-लाज, भय और लाचार होकर किसी को प्रेम निभाना पड़े तो वह दो आत्माओं का मिलन नहीं कहा जा सकता। वासना और धन की गुलामी से ऊपर उठकर सच्चा प्रेम प्राप्त हो सकता है। सच्चा विवाह तब समझा जाय जब आत्मसमर्पण में आनन्द हो, न्यूनताओं के बावजूद अपना जीवन साथी प्रिय लगने लगे, जब जीवन-पथ पर साथ-साथ चलना आनन्ददायक प्रतीत होने लगे। तुम सम और न कोई का अनुभव हो। साथी के लिए आत्मा के द्वार खुल जायँ। जहाँ देने में ही सुख ; हार में ही जीत महसूस हो। जहाँ एक रूप होने में कोशिश न करनी पड़े। जब प्रिय की याद से मन को सुख हो। जब पाने की नहीं देने की इच्छा अधिक हो, जब अपने से अधिक किसी दूसरे के दुःख-सुख की चिन्ता हो तब समझा जाय कि दो आत्माओं का सुखद मिलन हुआ है। ऐसा प्रेम दिन पर दिन बढ़ता जाता है, आरम्भ में वासना की आग में वह अपनी तीव्रता फूँक नहीं देता।

जिस प्रकार सन्तोष और सुख को ढूँढ़ने के लिए बाहर नहीं जाना

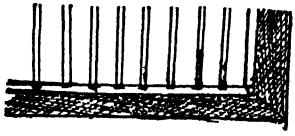
पड़ता, वह तो मनुष्य का अपना दृष्टिकोण है, उसी प्रकार सफल जीवन बिताने के लिए बाहर से साधन नहीं बटोरने पड़ते। दूसरों के लिए जीने की भावना, आत्मसमर्पण में सुख और समझदारी, जिन्दगी को सुखी बनाने की चेष्टा दोनों को मिलकर करनी पड़ती है। धन, यौवन और भोग तो सफल जीवन के साधन मात्र हैं, ध्येय नहीं। आमतौर पर लोग प्रेम के इस उच्च स्तर तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करते, इसीलिए वह प्रेम को कोसते हैं, क्योंकि प्रायः उनका ध्येय केवल शारीरिक सुख प्राप्त करना ही होता है। जब पति-पत्नी मिलकर अपना घोंसला सँवारते हैं, बच्चों को पालते



हैं, जिम्मेदारियाँ निभाने में एक दूसरे का हाथ बटाते हैं और एक दूसरे की परेशानियों को दूर करने में तत्पर रहते हैं, तभी सच्चे अर्थ में जीवन-साथी का कर्त्तव्य पूरा होता है। अगर पति-पत्नी दोनों में से एक भी अपने कर्त्तव्य को ठीक से समझता है तो वह दूसरे का हाथ पकड़ कर विघ्न-बाधाओं को ठेलता हुआ आगे बढ़ता चला जाता है। पारस के संग लोहा भी तर जाता है।

कोई भी व्यक्ति अपने में पूर्ण नहीं है। प्रत्येक पुरुष में स्त्रीत्व के अंश होते हैं और प्रत्येक स्त्री में पुरुषत्व के अंश होते हैं। बड़े होकर जो अंश प्रधान होता है उसका विकास हो जाता है। सब से अच्छा जोड़ा वह है जहाँ पति में पुरुषत्व अंशों की प्रधानता हो और पत्नी में स्त्री अंशों की। यदि इससे

विपरीत है तब भी सन्तुलन बना रहता है। परन्तु यदि दोनों एक ही अंश वाले हुए तो सन्तुलन गड़बड़ा जाता है। मानसिक और शारीरिक बल, निष्ठा, दृढ़ निश्चय पुरुष के प्रधान गुण हैं। वह क्रोधी, कामी, निर्माता और प्रेमोन्मत्त भी है। उसमें साहसिक कार्य करने की प्रबल इच्छा है। वह उपार्जनशील है। खतरे का मुकाबिला करने को तत्पर है। अपने अधिकार के लिए लड़ सकता है। अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए वह उतावला रहता है। इसके विपरीत स्त्री का मन स्नेह, दया, कोमलता और सहानुभूति से पूर्ण है। वह सौम्य, सुशील और लजीली है। बुद्धि और बल से वह चाहे पुरुष से कम है, पर व्यवहारिक ज्ञान और आत्मिक बल में वह पुरुष से बाजी मार गई है। वह अधिक दूरदर्शी तथा धैर्यशील है। उसमें त्याग और सेवा की भावना है। वह सहनशील है। मन और तन दोनों से कोमल है। करुणा







और वात्सल्य से ओतप्रोत है। पुरुष स्त्री का पूरक है और स्त्री पुरुष की। इसीलिए अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिए वह एक दूसरे का सहारा ढूंढ़ते

हैं, एक दूसरे के प्रति आकृष्ट होते हैं। पुरुष स्त्री की रक्षा करता है, उसको शारीरिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। स्त्री उसके पौरुष का सहारा पाकर निश्चिन्त हो जाती है। बदले में वह पुरुष के तप्त हृदय पर प्रेम और सहानुभूति का चन्दन लगाती है। मित्र की तरह उसको धीरज बँधाती है, दुःख में उसकी सेवा करती है और सुख में उसका मनोरंजन। ऐसे स्त्री-पुरुष का परस्पर सहयोग उनकी आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करता है। उनको मानसिक स्वस्थता प्रदान करता है। और जब वे माता-पिता बन जाते हैं—उनमें सेवा, त्याग, सहनशीलता, क्षमा आदि दैविक गुण अधिक स्पष्टरूप से विकसित हो जाते हैं।

इसलिए जब वर वधू का चुनाव हो तो स्वभाव के विषय में अवश्य परखा जाय कि उन्हें अपने साथी में पुरुषत्व अंश की चाहना है या स्त्रीत्व अंश की। प्रत्येक व्यक्ति का विरोधी तत्वों की ओर आकर्षण अधिक होता है और उसकी जिन्दगी मजे में कट जाती है। हमारे भारतवर्ष में विवाह से पहले वर-वधू को एक दूसरे को समझने का मौका तो प्रायः मिलता ही नहीं, परन्तु दो-चार बार एक दूसरे को मिला अवश्य देना चाहिए। सारी जिन्दगी का सवाल होता है। अगर किसी को देखकर प्रथम दर्शन में ही घृणा हो जाय तो उसे प्यार करने के लिए मन को बाध्य करना कठिन-सा हो जाता है। विवाह सम्बन्ध पक्का करते समय वर और वधू का हित और पसन्दगी का सबसे पहले ध्यान रखा जाये। इस सम्बन्ध से दोनों कुलों को क्या लाभ होगा यह तो बाद की बात है। अनुभवियों का कथन है कि कन्या रूप देखती है, माँ कुल और पिता वर के गुण। चलो यह भी ठीक है तीन जनों ने तीन बातों के परखने का ठेका लिया हुआ है। सन्तान का हित माता-पिता से अधिक और कौन सोच सकता है ? परन्तु कभी-कभी समझदार माँ-बाप भी सौदे-बाजी करने की भूल कर बैठते हैं। सम्बन्ध ठीक करते समय धन-दौलत की चका-चौंध उनकी आँखों में छा जाती है। और जो लड़की वाला अधिक कीमत लगा देता है उसकी बेटी की वरमाला लायक युवक के गले में पड़ जाती है। इस प्रकार बेजोड़ विवाहों की संख्या बढ़ती जाती है, फलस्वरूप समाज में विवाह के जुए के नीचे कराहते हुए दम्पतियों की आहें समाज के वातावरण को भयंकर बता रही हैं। जिन्दगी एक अमूल्य निधि है। गृहस्था-श्रम सब आश्रमों से अधिक सुन्दर, आकर्षक और महत्वपर्ण है। एक अस-

न्तोषी गृहस्थी अच्छा वानप्रस्थी नहीं बन सकता। जिन व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन से असन्तुष्टि रहती है वे समाज के लिए समस्यापूर्ण व्यक्ति बन जाते है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे व्यक्ति समाज के स्वस्थ वातावरण में विष फैलाने की चेष्टा में रहते हैं। यथा किसी के सुखी परिवार में अशान्ति उत्पन्न कर देना, किसी प्रेमी युगल को लेकर कुछ अपयश फैला देना। प्रसन्न और सुखी दम्पत्ति को देखकर कटु आलोचना करना कि 'ये लोग तो बेशर्म है। इन्हें लैला-मजनू को तरह व्यवहार करते शर्म नहीं आती।' किसी का पति चुरा लेना या पत्नी चुरा लेनी। स्वयं को समाज का उपेक्षित प्राणी समझना। अपने जीवन साथी के सिर पारिवारिक असफलता का सारा दोष मढ़ देना। अपने से भिन्न सेक्स से द्वेष करना, उनकी कटु आलोचना करना आदि इनके लक्षण हैं।

डाक्टरों और मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे व्यक्तियों की समस्याओं का मूल उनके बचपन की किसी घटना से जुड़ा रहता है। समस्यापूर्ण



असन्तोषी, अधिक डराये हुए या तिरस्कृत बच्चे ही बड़े होकर प्रतिक्रिया वादी जीवन साथी प्रमाणित होते हैं। जिनका बचपन अपूर्ण रहा उन्हीं व्यक्तियों का यौवन-काल भी असफल रहता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही सफल जीवन साथी बन सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य का जीवन उपयोगी है। हरेक में कुछ आकर्षण और योग्यता होती है। जो व्यक्ति अपने जीवन साथी के दृष्टिकोण को समझकर सम्मान जनक समझौता करना जानता है, जो लेने और देने दोनों का महत्व समझता है, जिसमें धाँधली

मचाने की प्रवृति नहीं है, जो परिश्रमी और सहनशील है उसका वैवाहिक जीवन अवश्य सफल होगा। परन्तु जीवन-साथी चुनते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि किसी दबाव, डर अथवा लोभ से विवाह न किया जाय। समान कुल और योग्यता वाले लोगों में ही विवाह सम्बन्ध करना उचित होता है। यदि पुरुष केवल आर्थिक लाभ, भोग की सुविधाओं और सन्तान के लिए और नारी आर्थिक सुरक्षा के लिए विवाह करती है तो ऐसे विवाह की आधार शिला कभी मजबूत नहीं हो सकती। अगर पति-पत्नी एक दूसरे को उन्नति के पथपर नहीं लेजा सकें, यदि वह एक दूसरे के पूरक बनकर अभाव को नहीं मिटा सकें तो विवाह बहुत कुछ अंशों में असफल ही रह जाता है।

विवाह मनुष्य के लिये एक आवश्यक बन्धन है। दाम्पत्य जीवन की जिम्मेदारियों से बचे रहने के लिए जो व्यक्ति विवाह करने से इनकार करते हैं, वह अपने प्रति भी अन्याय करते हैं। एक अनुभवी का कथन है कि कुछ दिन के उपवास करने या अल्पाहार की प्रतिज्ञा तो कोई भी साधारण आदमी भी कर सकता है, किन्तु सर्वधा निराहार रहकर जीवित रहने का दम्भ बड़ा से बड़ा संयमी भी नहीं कर सकता। आहार जिस तरह मनुष्य के शरीर और मन का भोजन है उसी प्रकार स्त्री-पुरुष का परस्पर सहवास भी उसका भोजन है। इन स्वाभाविक प्रवृतियों का दमन तो हो सकता है, लेकिन इनका नाश नहीं हो सकता।

३. हाथ पकड़कर

विवाह के कुछ साल तक तो वासनामय प्रेम का एक ऐसा खुमार रहता है कि नव दम्पति को एक दूसरे के अवगुण भी गुण ही नजर आते हैं। बेपरवाही, अल्हलपन, नादानी भी अबोधता, भोलापन और अदाएँ ही प्रतीत होती हैं। पर उसके बाद जीवन का सन्तुलन बनाये रखने के लिए यह वांछनीय है कि पति-पत्नी अपने कर्त्तव्य को समझकर काल्पनिक लोक से वास्तविकता के धरातल पर आकर पटरी जमाकर बिठालें। परस्पर सहयोग और समझदारी से अपनी गृहस्थी की नैया को खेकर ले चलें। सुख-दुख और भाव तथा अभाव में कंधा से कंधा भिड़ाकर खड़े रहें। सुनहले सपनों से युक्त निद्रा प्यारी थी, पर भोर का जागरण भी कम कल्याणप्रद नहीं।



एक दूसरे के बिना स्त्री पुरुष अधूरे हैं। पुरुष में बल, साहस, और पौरुष है, स्त्री में कोमलता, धीरता, सौन्दर्य और सेवा-भावना है। दोनों के

इन गुणों का सुन्दर सहयोग और सम्मिश्रण ही दम्पति को जीवन-पथ में सफलता देता है। चारदीवारी को घर नहीं कहते। घर वह है जहाँ परिजनों में परस्पर प्रेम हो। जहाँ थके-हारे पुरुष को निश्चिन्तता से आराम करने की सुविधा, अपने मन पसन्द के ढंग से खाने-पीने,रहने बात-चीत करने और आने-जाने की आजादी मिले। जहाँ स्त्री का मान हो, वह अपने को सुरक्षित समझे। जहाँ परस्पर एक दूसरे के लिए सहानुभूति और प्रशंसा के शब्द हों। एक दूसरे की न्यूनता को भूल जहाँ गुणों की कद्र हो। जहाँ अपना अधिकार और स्वागत हो। जहाँ शासित और शासक की भावना न हो। ऊँच-नीच का भेद-भाव जहाँ किसी को कचोटता न हो।

सच्चे साथी बनें—

गृहस्थी में एक सुखद वातावरण पैदा करने के लिए यह वांछनोय है कि पति-पत्नी में परस्पर मित्रता और समानता की भावना को प्रधानता दी जाय। यह तभी सम्भव है कि स्त्री-पुरुष शिक्षा, स्वास्थ्य, रूप, कुल में जहाँ तक हो सके समान हों, ताकि हीनता की भावना उसे बराबरी का दावा करने से रोके नहीं। अगर किसी बात की थोड़ी बहुत कमी रह भी जाय तो अपने प्रयत्नों से उसे पूरी करने की भरसक चेष्टा करनी प्रत्येक का कर्त्तव्य है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे की पसन्द और रुचि का भी अध्ययन करना चाहिए। अगर पति को कोई रंग विशेष पसन्द है, चतुर स्त्री अपने घर की सजावट तथा अपने वस्त्रों में उस रंग को अधिक महत्व दे। अगर आपकी पत्नी को संगीत में रुचि है, आप चाहे स्वयं न गा सकते हो, पर उसके गाने में दिलचस्पी तो दिखा सकते हैं, गाने की प्रशंसा कर उसे गद्‌गद् तो कर सकते हैं। इसी प्रकार एक दूसरे के प्रिय खेल तथा मनोरंजन के विषयों का भी अध्ययन करना चाहिए। एक सच्चे मित्र और सहयोगी के सदृश एक दूसरे की अभिरुचि की ओर सम्मान रखने से परस्पर प्रेम बढ़ता है।

अपने काम के बाद कई पुरुष अपना समय किसी मनोरंजक 'हाविज' में गुजारते हैं। चित्रकारी, संगीत, वागबानी, पशु-पक्षी-पालन, पुराने सिक्के, बर्तन, मूर्ति अथवा टिकटें इकट्ठी करनी, क्रिकेट, टेनिस, हॉकी आदि खेल खेलने, ताश, चौसर, शतरंज खेलना, कोई रचनात्मक काम यथा रेडियो बनाना, बढ़ईगिरी इत्यादि काम मनोरंजन के विषय बन जाते हैं। कई स्त्रियाँ इसमें अपने पति को समय और पैसा खर्चते देख कुढ़ती हैं और उसकी आलो-

चना करनी हे। एक सच्ची सहचरी के लिए ऐसा करना भूल हे। आखिर-कार काम म परिवर्तन ही वास्तविक आराम हे। इस प्रकार के मनोरजन मे



मनुष्य अपनी चिन्ताओ को भूल कर सुख पाता हे। इससे उसके मस्तिष्क को आराम और आत्मा को सुख मिलता हे।

पति की हॉविज म आप भी दिलचरपी दिखाइये, उस विषय मे अपनी जानकारी बढाइये, आपके प्रोत्साहन से मनोरजनो द्वारा वह ख्याति और धन तक उपार्जन कर सकेगे। उनके मित्रो का मडल वढ जायगा और वे उस विषय के विशेषज्ञ माने जायँगे। जहाँ तक हो सके ऐसी हौविज की तरफ अधिक रुचि बढाने की चेष्टा करनी चाहिए जिसमे दोनो का दखल हो। इससे एक दूसरे की सगति और सहयोग का पूरा-पूरा लाभ उठा सकेगे। दोनो को अपनी पसन्द और रुचि मे सादृश्यता बनाये रखना वाछनीय है। क्योकि पत्नी पति से अनुभव और आयु मे कम होती है अतएव नये ढग, तरीके तथा विषय आदि सीखने के लिए पति को पत्नी मे उत्साह और रुचि पैदा करनी चाहिए। आलोचना करने और झुझलाने से पत्नी उस विषय को जी का एक जजाल समझेगी। पर आप की प्रशसा पाकर वह शीघ्र ही प्रगति कर लेगी।

गृह-प्रबन्ध और दिनचर्या के विषय मे एक दूसरे की राय से मिल-जुल कर काम करने से घर मे सुन्दर व्यवस्था बनी रहती है। घर का बजट

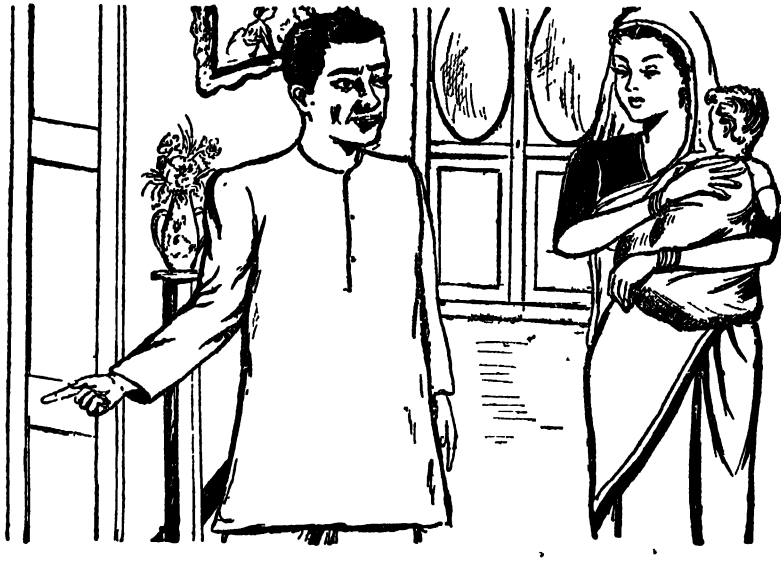
कैसे बनाया जाय, इस विषय में भी दोनों को एकमत होकर तय करना चाहिए। मित्रों का चुनाव भी, दोनों की व्यक्तिगत स्वाधीनता और मनोभावों की रक्षा करते हुए, परस्पर के सम्बन्धों की मर्यादा का ध्यान रखकर करना बुद्धिमानी है। बच्चे दोनों के प्रतीक हैं अतएव उनके देख-भाल और शिक्षा के



विषय में मतभेद रखना पति-पत्नी के लिए अप्रियकर है। इससे बच्चों के हित को हानि पहुँचेगी। जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास सुन्दरता से हो सके, दोनों को एकमत हो वैसा ही निर्णय करना चाहिए।

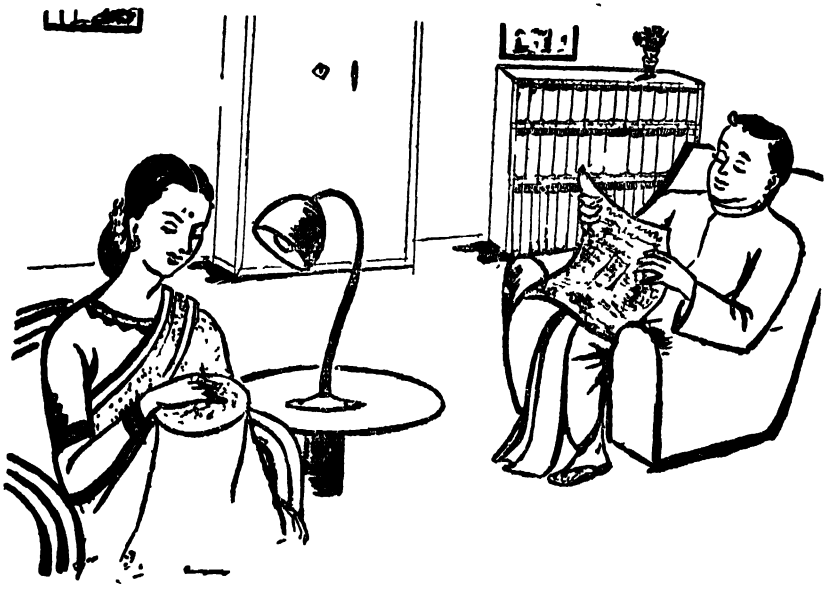
एक दूसरे के आदर्श, ध्येय तथा विचारों के प्रति सम्मान रखना परम आवश्यक है। संगति का बड़ा असर होता है, अतएव शनैः शनैः एक दूसरे के विचारों में परिवर्तन और सुधार करने का, स्त्री-पुरुष दोनों को अनेक अवसर मिलते हैं। परन्तु इस विषय में कठोरता नही बरतनी चाहिये। इन मामलों में स्त्रियाँ अधिक लचकदार पाई गई है। वह बहुत जल्दी अपनें आप को अपने पति के आदर्शो और विचारो के अनुकूल बना लेती है। अगर कोई पुरुष अपनी बुद्धिमति स्त्री के विचारों का समर्थन करता है, उसे रिश्तेदार प्रायः दब्बू कहकर उसका उपहास करते हैं। पर समझदार पुरुष घर की शान्ति और गुण-ग्राहिकता का ध्यान रखकर इन आलोचनाओं की उपेक्षा करते हैं। बुद्धिमानी का ठेका केवल पुरुषों ने ही नहीं लिया हुआ। स्त्रियों

में भी बुद्धि है। विशेष करके उनकी व्यावहार कुशलता को मानकर चलने से, कभी-कभी बहुत से आर्थिक सङ्कट टल जाते है। गृहस्थ में सुख-दुःख की सङ्गिनी पत्नी की उपेक्षा करके आप उससे सहयोग की आशा नही कर सकते। अगर उसमें भलाई-बुराई को परखने की बुद्धि कम है, आप उसके गुरु और पथ प्रदर्शक बनें, पर अपने सम्बन्धियों से उसका अपमान न करायें। कुछ अपराध या भूल होने पर उसे घर से निकल जाने की धमकी या पत्नी को



पीहर पहुँचा देने और आजन्म त्याग देने की धमकी देने वाले पुरुष कायर होते हैं। बुराई से बचने के लिये कई पुरुष आप चुप रहकर स्त्री को लांछनों और आलोचनाओं का शिकार बनने देते हैं। स्त्री लाचार होकर उस स्थिति का मुकाबला तो करती है, परन्तु इस कायरता से पुरुष उसकी आँखों से गिर जाता है। पति स्त्री का रक्षक और अभिभावक है। प्रत्येक स्थिति में रक्षा करना उसका कर्त्तव्य है। अगर आप पत्नी की कोई भूल देखते है, उसे गलती सुधारने के लिए बाध्य कर सकते हैं, पर आपके सम्बन्धियों का उसे बुरा-भला कहना या अपमान करना आपको रोकना होगा। उनका दावा आप पर है। अगर उनकी ओर कर्त्तव्य की उपेक्षा हुई है तब भी आप ही जिम्मेदार हैं। अपनी पत्नी की सुरक्षा की भावना को कभी भी नष्ट न होने दें।

नारी में नारीत्व के विकास से पहले बचपन में ही मातृत्व का विकास हो जाता है। वह अपने गुड्डे-गुड़ियों के संसार को उसी प्रकार सँभालने की चेष्टा करती है, जैसे अपनी माता को गृहस्थी सँभालते देखती है। कुछ बड़े होकर अपने छोटे बहिन-भाइयों की देखभाल में अपनी माँ का हाथ बटाती है, अतएव छुटपन से ही उसे घर की देखभाल की बहुत कुछ ट्रेनिङ्ग मिल जाती है। घर के प्रबन्ध के विषय में गृहिणी की प्रधानता होनी उचित है। पत्नी पति से घरबार, सन्तान, समाज में स्थान तथा रक्षा पाती है अतएव उसके प्रति अपनी कृतज्ञता और सम्मान प्रगट का सर्वोत्तम ढंग यह है कि घर का वातावरण पति की इच्छा के अनुकूल रखा जाय, उसके आराम और सुविधा का ध्यान उसे सबसे पहले बना रहे। मेरी स्त्री तथा बच्चे मेरे पर जान देते हैं यह विश्वास उसे अपनी स्त्री और बच्चों के लिए अधिक परिश्रम तथा उद्योग करने की प्रेरणा देगा। अधिकांश पुरुष जब उन पर गृहस्थी का बोझ आ पड़ता है, कर्त्तव्य और यथार्थता की ओर से अनभिज्ञ नहीं रहते हैं। अगर मन के अनुकूल गृहस्थी का वातावरण हो तो वे अपनी फुरसत का



समय स्त्री और बाल-बच्चों की संगति में ही व्यतीत करना पसन्द करते हैं। सप्ताह में एक बार गृहस्वामी को एक दिन का अवकाश मिलता है, उस दिन

की दिनचर्या ऐसी बनानी चाहिए कि उसे पूर्ण आराम मिल जाय। कम से कम दोपहर और शाम तो वह अपने ढंग से अवश्य गुजार सके। घर के लिए यदि कुछ आवश्यक खरीद-फरोख्त करनी हो तो शनिवार को ही करली जाय। भीड़-भाड़, सिनेमा-तमाशे में अगर उनका जाने को मन नहीं है तो आप उन्हें बाध्य न करें। कई पुरुष शाम को खुली जगह में वायु सेवन, अथवा अखबार पढ़ना, या रेडियो सुनना अधिक पसन्द करते है। स्त्री को अपने पति की सुविधा देखकर ही छुट्टी का प्रोग्राम बनाना चाहिए। ऋतु सुहावनी हो तो दोपहर को पिकनिक के लिए जाना भी छुट्टी व्यतीत करने का एक लाभदायक और मनोरंजक ढंग है। कुछ समय निकाल कर मित्रों और रिश्तेदारों के यहाँ भी कभी-कभी छुट्टी के रोज ही जाने की सुविधा होती है, पर इस विषय में एक दिन पहले ही तय करना ठीक है।

सहनशील बनें—

रिश्तेदारों और मित्रों के विषय में पति-पत्नी को परस्पर एक दूसरे के सामाजिक सम्बन्धों के प्रति उदारता रखनी चाहिए। अच्छा तो यह है कि एक दूसरे के रिश्तेदारों व मित्रों को निभाने की चेष्टा की जाय। अपनी सुविधानुसार यदा-कदा मुलाकात और उपहारों द्वारा सम्बन्ध को सजीव बनाये रखना बुद्धिमानी है। पुरुषों के प्रति एक आम शिकायत रहती है कि वे अपनी पत्नी के रिश्तेदारों की मजाक उड़ाते है, उनकी कटु आलोचना करते हैं। यह बात प्रत्येक स्त्री को नागवार लगती है। चाहे उसमें कुछ यथार्थता ही हो, पर अंधे को भी अंधा कहना असभ्यता समझी जाती है। अगर स्त्री से कभी कोई भूल-चूक हो जाय तो बच्चों और सम्बन्धियों के सामने डाँट-फटकार नहीं करनी चाहिए। इसी प्रकार स्त्री का भी सबके सामने झगड़ा खड़ा कर, रो-पीट कर सहानुभूति प्राप्त करने की चेष्टा करना-भूल है। आपस के विचारों की वैषम्यता एकान्त में मिटानी ही समझदारी है। अगर एक को क्रोध आया हुआ है, दूसरा उस समय गम खा जाय। अप्रिय बात का जवाब कटोक्ति से देना भूल है। जहाँ तक हो सके मनोमालिन्य बढ़ने नहीं देना चाहिए। बुराई से बुराई नहीं दब सकती। स्त्री-पुरुष के झगड़ों का बच्चों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। उनका मानसिक और शारीरिक विकास कुंठित हो जाता है। पति-पत्नी का सम्बन्ध आजीवन का है, अतएव परस्पर निभाने की भावना और पारिवारिक कल्याण को प्रधानता

देन ही श्रेयस्कर है।

सुनहले सपनों को सजीव रखें—

प्रेम प्रदर्शन में सामंजस्य और सादृशता होनी परम आवश्यक है। इसके अभाव मे जीवन नीरस हो जाने की संभावना है। पुरुष इस विषय में स्त्री की ओर से उपेक्षा की शिकायत करते है। पर पुरुषों का उतावलापन और स्त्रियों की भावुकता को समझने में उनकी असमर्थता भी इस विषय में एक हद तक जिम्मेदार है। स्त्रियाँ दिन भर घर के काम, बाल-बच्चों तथा पुरानी दिनचर्या से थक जाती है। पति को अपनी दिलजोई, सहानुभूति तथा प्रशंसा से पत्नी में रोमांस की भावना जाग्रत करनी चाहिए। छुट्टी के रोज दिनचर्या मे नवीनता लाने के लिए पुरुष की ओर से भी प्रयत्न होने चाहिएँ। स्त्री की वेष-भूषा में दिलचस्पी लेकर, उस दिन विशेष रूप से शृङ्गार और सजावट के लिए उसे प्रोत्साहन दे। आपकी दृष्टि मे प्रेम और प्रशंसा का संदेशा पाकर उसे विशेष आनन्द होगा। इस प्रकार प्रेम और रोमांस की पृष्ठ-भूमि तैयार हो जायगी। स्त्री की सुप्त भावनाओं और चेष्टाओं को जाग्रत करने की कला प्रत्येक जिन्दादिल पुरुष को आनी चाहिए। एक दूसरे को अपने प्रेमालाप मे रिझाने तथा गुण और रूप तथा प्रेम प्रदर्शन द्वारा मुग्ध करने की चेष्टा बनी रहनी चाहिए। इस विषय में सांसारिक अनुभव अधिक होने के कारण पुरुष को ही मार्ग प्रदर्शक होना पड़ता है। अनुराग, प्रेम और सुख से मुग्ध होकर ही स्त्री इसमें प्रवीणता प्राप्त करती है। परस्पर एक दूसरे के अनुकूल अपने को बनाते हुये सहयोग प्राप्त करने मे एक सुन्दर सामंजस्य और सादृशता अपने आप ही आ जाती है। अपने प्रेम को एक दूसरे के प्रति अनुराग, मुग्धता, प्रशंसा, आदि द्वारा प्रगट करने मे संकोच नही करना चाहिए। एक सच्चे मित्र के सदृश एक दूसरे के दु.ख-सुख, लाभ-हानि आदि में समवेदना और हर्ष प्रगट करना तथा तदनुसार प्रयत्न करना प्रत्येक पति-



पत्नी का कर्तव्य है। अपने विवाह दिवस, एक दूसरे के जन्म दिवस, तथा माननीय त्योहारों को विशेष उत्साह और प्रफुल्लता के साथ मनायें। परस्पर बातचीत में हमारा घर, हमारे बच्चे, हमारे मित्र और सम्बन्धी, हमारा धन, इस प्रकार से उल्लेख करना चाहिए। इन विषयों में 'मेरी' और 'तुम्हारी' सर्वनाम भिन्नता के द्योतक है।

निःस्वार्थ व्यवहार—

कपड़े-लत्ते, जूते, प्रसाधन की वस्तुएँ तथा जीवन की अन्य आवश्यक सामग्री अपने लिये स्वयं खरीदकर लाने या उनकी फिक्र स्वयं करने में उतना आनन्द नहीं, जितना जीवन-संगी के द्वारा उन वस्तुओं को उपहार रूप में पाने से होता है। जिस घर में पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से अधिक प्रधानता देते है, वहाँ त्याग और अनुराग का सुन्दर आदर्श शान्ति बनाये रखता है। घर का कोष तो एक ही है, परन्तु प्रेम का तकाजा अपने से पहले प्रिय का ध्यान बनाये रखने का पाठ पढ़ाता है। पत्नी सोचती है, उनकी जरूरतें पहले है, मेरा क्या मै तो उनकी आँखों



में प्रशसा और कृतज्ञता देखकर ही निहाल हो जाऊँगी। पति सोचता है अपनी प्रिया को ये वस्त्र-आभूषण पहिने देख मेरा मन गद्‌गद् हो जायेगा उसकी रूप मधुरिमा का पान कर मेरी आँखे छक जायँगी। जहाँ इस प्रकार की हित कामना होती है वहाँ अभाव कभी रह ही नही पाते। अरमान कभी अधूरे ही नहीं रहते है। एक दूसरे के प्रति गिला रहता ही नही। उल्टा यह तकाजा रहता है, 'परेशानियाँ मेरी उनसे न कहना, सुनेंगे तो वे भी परेशान होंगे'।

अविश्वास मत करें—

आप एक दूसरे पर विश्वास रखें। निर्मूल शंका और अविश्वास प्रेम रूपी अमृत में विष घोल देते है। प्रेम कोई सम्पत्ति नहीं है जिस पर कानूनी

ढंग से अधिकार जमाया जा सके, यह तो दो मन और आत्माओं का सौदा है। एक दूसरे के रूप-गुण और आत्मिक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर दो हृदयों का अटूट सम्बन्ध हो जाता है। यह स्थाई प्रेम विश्वास और आदर्श की भित्ती पर ही खड़ा रहता है। समय के साथ यह और भी मधुर होकर परीक्षा की अग्नि में तपकर निखर आता है।

पर संसार में प्रलोभन चारों ओर हैं। अगर आप कभी भी अपने जोड़े को बहकते पायें, अपने आकर्षण के प्रकाश में उसे सचेत करें, स्नेह के बन्धनों को और जकड़ लें। साथी का प्रेम से दृढ़ता के साथ हाथ पकड़ उसे सुरक्षा की ओर ले चलें। लांछना की चाबुक कभी भूलकर न लगावें। स्त्री पुरुष दोनों में अगर एक भी समझदार और दूरंदेशी है, तो जीवन पथ के ऐसे गढ़े तो आसानी से लाँघ लिये जाते हैं।

वैवाहिक जीवन की सफलता इसी में है कि भिन्नता को भूलकर एक ध्येय, एक उद्देश्य और एक आदर्श लेकर गृहस्थी के कल्याण को सुरक्षित रखना। अपने आपको एक दूसरे में आत्मसात् करना और दूसरे को पूर्ण रूप से अपना लेना, प्रेम को मधुर और अमर बनाता है। पति-पत्नी का यह सुन्दर सहयोग व विचारों की सादृशता न केवल गृहस्थी के लिये कल्याण-कारी है, बल्कि समाज-कल्याण के लिए भी वांछनीय है।

४. एक दूसरे के पूरक

बहुत से लोगों का ख्याल है कि शायद एक-सी रुचि और स्वभाव वाले लोगों की जोड़ी अच्छी निभती है। नहीं ऐसी बात नहीं है। मनुष्य



अपने अभावों को दूसरों के भावों से पूरी करने की चेष्टा करता है। एक खामोश और गंभीर प्रकृति वाले व्यक्ति की चंचल और फुर्तीले साथी से अधिक पटती है।

मोहनी को लोगों से मिलना-जुलना, क्लब-पार्टियों में जाना, उत्सवों में भाग लेना, दावतों का आयोजन करना अच्छा लगता है, जब कि उसका पति भुवनेश जल्दी किसी से हेल-मेल नहीं बढ़ाता, परन्तु वह है बिज़नेस में, जहाँ कि सामाजिक जीवन की सफलता बहुत महत्व रखती है। बस मोहनी-सी पत्नी पाकर वह बड़ा प्रसन्न है। अपनी पत्नी के कारण वह मित्रों में काफी लोकप्रिय है।

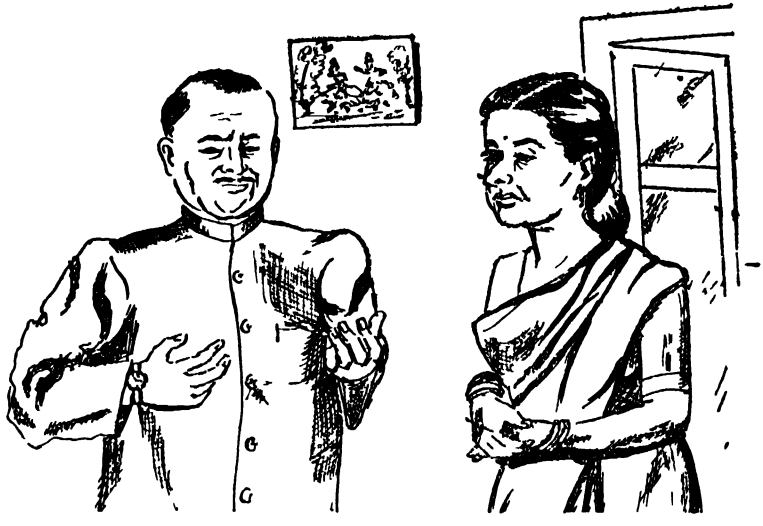
कमला को पढ़ने-लिखने का बहुत शोक है। वह एक प्रसिद्ध लेखिका है। अपना समय फिज़ूल की गप्प-शप्प मारने या शापिंग जाने के लिए खराब करना उसे बहुत अखरता है। अगर उसे अवकाश मिलता है तो शाम को अपने पति के साथ नदी के किनारे या किसी बगीचे में घूमना उसे ज्यादह अच्छा लगता है। पर उसके पति शापिंग करने के बड़े शौकीन हैं। वे खुद ही घर के लिए सभी चीजें खरीद कर लाते हैं। महिने भर की रसद, रोज की भाजी, फल, गृहस्थी के काम आने वाली अन्य चीजें खरीदने का जिम्मा उन्होंने ही लिया हुआ है। हिसाब भी वही रखते है। कमला को इससे बहुत खुशी है। उसका कहना है कि मेरा काफी समय बच जाता है। मुझे पैसा खर्चने की कोई रोक-टोक नहीं है—जिस चीज की इच्छा प्रगट करूँ मेरे पति उसी समय ला देते हैं। घर के लिए अच्छी से अच्छी चीज परखकर छाँटकर लाते हैं।

मैं उनकी इस योग्यता की प्रशंसा करती हूँ और गृहस्थी के काम में उनके इस सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ। जब वे मुझ से अधिक योग्यता से घर का खर्च चला सकते हैं तो मैं क्यों न यह भार उन पर डालूँ ? हाँ घर के अन्दर मेरी हकूमत है। घर का प्रबन्ध करना, बच्चों की देखभाल, पति के आराम सुख की व्यवस्था करनी, यह सब मेरे जिम्मे है। अपने अवकाश के समय बैठकर लेख लिखती हूँ, यही मेरी 'हॉबी' और उपयोगी धन्धा है। इससे मुझे साल में हजार दो हजार रु० की आमदनी हो जाती है। बैंक में हम दोनों का संयुक्त हिसाब है। अपना पैसा किस प्रकार से इन्वेस्ट किया जाय, घर की व्यवस्था में क्या परिवर्तन करने हैं, रिश्तेदारों और मित्रों को क्या लेना-देना है ? बच्चों की पढ़ाई पर कितनी रकम खर्चनी ? ऐसे मामले में हम दोनों मिलकर तय करते है। अपने पति के इन्श्योरेंस, बैंक का हिसाब-किताब रखना, उनके पत्रों के उत्तर ड्राफ्ट करने का सब काम मेरे जिम्मे है। कमला का कहना है इस प्रकार हम दोनों एक दूसरे के स्वभाव की विशेषताओं का पूरा-पूरा लाभ उठाते है।

दोनों ध्यान रखें--

विषमताओं के कारण जीवन कटु नहीं होना चाहिए। अगर दम्पत्ति समझदारी से काम लें तो विभिन्नता और विषमता के बावजूद भी उनकी पटरी जम कर बैठ सकती है। ज्यादातर जोड़े चरित्रहीनता के कारण फूटते है। जब पति या पत्नी अपने जोड़े की किसी और से तुलना करे, किसी दूसरे के संग की कामना करने लगे तब हृदय में अपने साथी के प्रति घृणा की भावना आ जाती है। उसकी न्यूनताएँ अक्षमणीय लगने लगती है, उसका व्यक्तित्व आकर्षणहीन प्रतीत होने लगता है, उसकी अदाएँ बनावटी लगने लगती हैं और उसकी विनम्रता और त्याग ढोंग प्रतीत होने लगते है। प्रिय की ओर से मन फिर जाता है और प्रेम के बन्धन जंजीरें महसूस होने लगती हैं। जीवन भार हो जाता है। एक अनुभवी का कहना है कि विवाहित जीवन की सफलता साथी के चुनाव पर नहीं, बल्कि विवाह के उपरान्त दोनों की मनः स्थिति पर निर्भर है। चुनाव की अपेक्षा प्राकृत सम्बन्ध अधिक स्थायी होते है। यह पति-पत्नी के हाथ में है कि विवाहित जीवन के आरम्भ के कुछ वर्षों में जो माधुर्य होता है उसे आगे भी बनाये रखें। दाम्पत्य जीवन के माधुर्य को बनाये रखने के लिए निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखें।

एक दूसरे के दु ख-सुख का हमेशा ध्यान रखा जाय। घनिष्टना से यह मतलब नही है कि पति-पत्नी परस्पर शिष्टाचार का ध्यान रखना छोड दे। एक दूसरे की सुविधा का हमेशा ख्याल रखना, बाहर से आने पर उठकर स्वागत करना, काम कर देने पर धन्यवाद देना, 'दु ख-तकलीफ मे सहानुभूति प्रकट करना आदि बाते शिष्टाचार की बुनियादी बाते है। आप एक दूसरे की बुराइयो, कमियो और भूलो की कटु आलोचना मत करे। आदते स्वभाव बन जाती है, उन्हे छोडना कठिन होता है। बचपन की समस्याएँ बडेपन मे प्रतिक्रिया दिखाती है। प्रत्येक मनुष्य गुणो और अवगुणो से युक्त होता है न तो कभी कोई पूर्ण रूप से अच्छा ही हो सकता है न बुरा ही, यह बात ध्यान मे रख कर अपने प्रिय की आलोचना मत कर। जीवन-साथी एक दूसरे के मित्र है। जिस प्रकार एक मित्र अपने प्रिय सखा की बुराई और न्यूनताओ के लिए स्वय को एक हद तक जिम्मेदार समझता है और प्यार



दुलार से, हँसी-मजाक मे सकेत मात्र करके उसे न्यूनता जता देता है, साथ ही कमियों को दूर करने की प्रेरणा भी देता है और अपराध को हँसकर क्षमा कर देता है, ठीक उसी तरह पति-पत्नो का व्यवहार एक दूसरे के प्रति होना चाहिए। अपने जीवन साथी की जो आदत पसद नही आती—उसे ऐसे मौके पर लाड़ और दुलार दिखाते हुए समझाये कि वह हँसकर कह दे 'अच्छा

लो, तुम्हें खुश करने के लिए हम ने कान पकड़ा जो आगे से फिर ऐसा कभी कर भी जायँ।' जब आप अपने साथी को अपनी बुराई को छोड़ने की चेष्टा करते देखें तो उसकी प्रशंसा करनी कभी मत भूलें। इससे उसे आत्मबल और प्रेरणा मिलेगी। अच्छे प्रयत्नों और सफलताओं पर दिल खोलकर प्रशंसा करें। मनुष्य स्वभाव है कि वह अपनी सफलता पर प्रियजनों की दाद चाहता है। इसी लिए दुःख-सुख के समय अपने ही लोगों को याद करके मनुष्य कहता है—'हाय आज के दिन यदि मेरे पति यहाँ होते तो किसी की मजाल थी कि मुझे कोई कुछ कह जाता'। 'यदि आज के दिन तुम्हारी माँ यहाँ होती तो वह इस सफलता पर फूली न समाती'। बदले की भावना घातक है कई पति अपनी पत्नियों को मार-पीट कर, धमकाकर, डराकर अपने मन माफिक व्यवहार करने पर मजबूर करते हैं। पर उनके इस कठोरता का उल्टा ही प्रभाव पड़ता है। पत्नी पीठ-पीछे उन्हें बुरा भला कहती है। उनके दुर्व्यवहार का अड़ौस-पड़ौस से रोना रोती है। चिढ़ कर वह पति से झुँझला-झुँझला कर बोलती है, मुँह फुलाये बैठी रहती है, इस प्रकार दिलों में रंजिश, और बढ़ती जाती है 'मैं क्यों उनकी परवाह करूँ, कौन-सा मुझे राज पर बिठाया हुआ है' पत्नी सोचती है। पति सोचता है—'कैसी मूर्ख औरत से पाला पड़ गया है। कसूर करके ऐंठती फिरती है। ठीक न कर दिया तो मेरा नाम नहीं।' बस इसी प्रकार की छोटी-छोटी घटनाएँ भयंकर मनोमालिन्य का कारण बन जाती हैं। पति-पत्नी में शासित या शासक की भावना नहीं होनी चाहिए। पति यदि कमा कर लाता है तो पत्नी उस कमाई को सार्थक करती है। कोई भी सुघड़ गृहिणी मुफ्त में बैठकर नहीं खाती। एक दूसरे के आत्मसम्मान को ठेस मत पहुँचाइए। यदि किसी दूसरे दम्पत्ति में आपको कुछ खूबियाँ दिखती हैं तो अपने जीवन साथी को आकर धिक्कारें नहीं। यदि आपका विवाहित जीवन अपूर्ण है तो इस के लिए आप दोनों ही दोषी हैं।

आम तौर पर देखने में आता है कि पति या पत्नी बच्चों की खूबियों और गुणों के लिए स्वयं ही सारा श्रेय लेना चाहते हैं। पिता कहता है—'यह छोटा लड़का मुझ पर पड़ा है। बड़े ने अपनी माँ के खानदान का रंग लिया है'। पत्नी भी यह कहने से नहीं चूकती 'बड़ा बच्चा पढ़ने में तेज़ अपने मामा पर गया है, पर छोटा निरा भौंदू अपने चाचा पर पड़ा है।' 'मुन्नी झूठ

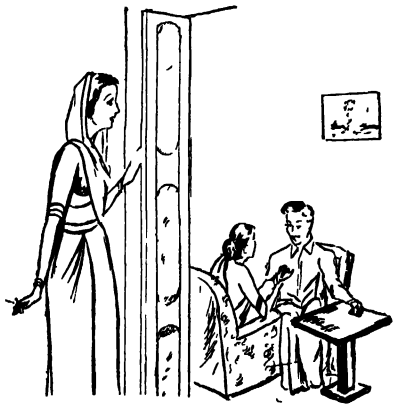
बोलती है। बिल्कुल तुम्हारी आदत ली है इसने।' 'मुन्ना अपनी आदतों में बड़ा बेपरवाह और गंदा है ठीक तुम पर पड़ा है'। इसी प्रकार परिवार में यदि कोई अच्छी बात है तो उसका श्रेय भी कई लोग अपने जीवन साथी के संग नहीं बटाना चाहते। "मैं यदि इस घर में एक दिन न रहूँ तो घर में भूत नाचें। जब मैं पीहर चली गई थी सब के मुह पर मक्खियाँ उड़ती थी। घर में धूल की परतें चढ़ गई थी।" "तुम से बच्चे नहीं संभलते। मैं एक महीने के लिए दौरे पर गया हुआ था लौटकर देखता हूँ बच्चों की पढ़ाई चौपट हो गई। मैं यदि देखभाल न करूं तो बच्चे सब नालायक निकल जायँ। तुम्हारी पढ़ाई किस काम की, जबकि तुम से छोटे बच्चों की पढ़ाई तक की देखभाल नहीं हो सकती ?"

झगड़े को मिटाने की कोशिश करें—

आप एक दूसरे की न्यूनताओं को किसी दूसरे से चर्चा मत करें। पारिवारिक झगड़ों को मिल कर सुलझायें। या फिर कोई ऐसे हितैषी को मध्यस्थ बना लें जो दोनों की भलाई चाहने वाला हो। एक बात खतम हो जाय उसे लेकर दिन भर मत झींकें। जो समय एक दूसरे की आलोचना करने और दोष लगाने में खर्च किया जाता है उसी समय को यदि पति-पत्नी अपने आचरण को सुधारने में लगायें तो पारिवारिक कलह बहुत हद तक मिट जाय। पति-पत्नी एक दूसरे को गलत और दोषी साबित करने के लिए कमर कस लेते है। नतीजा यह होता है कि गढ़े मुर्दे खोदे जाते है, भूली बातें याद दिलाई जाती हे, तिल का ताल बनाकर दिखाया जाता है, गुणों और नेकियों को भुला कर बुराई और दुर्व्यवहार का कच्चा चिट्ठा खोला जाता है। इसका परिणाम बहुत बुरा होता है। पति-पत्नी के आपसी व्यवहार सकरे और कर्कश हो जाते है। जीवन में कभी मुसकान ही नहीं आती। वे एक दूसरे पर कुढ़ते और जलते रहते हे। जरा-जरा सी बात पर तीखे वाक्य बाण दोनों ओर से चलते है।

ये सब बातें विवाहित जीवन के सौन्दर्य को नष्ट कर देती हैं। पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति उदासीन हो जाते हैं। मन मुटाव बढ़ता रहता है। दोनों एक दूसरे के हित और आराम की उपेक्षा करने लगते हैं। पत्नी अपने भाग्य पर रोती है और पति अपने मनोरंजन का कोई और आश्रय

ढूंढ़ लेता है। पत्नी को जब इसका पता चलता है वह गृहस्थी की पतवार को मँझधार में ही छोड़ देती है। जब वेदना असह्य हो जाती है पत्नी आत्म-हत्या कर लेती है या पीहर चली जाती है। पति उसकी छाती पर सौत लाकर बिठा देता है।

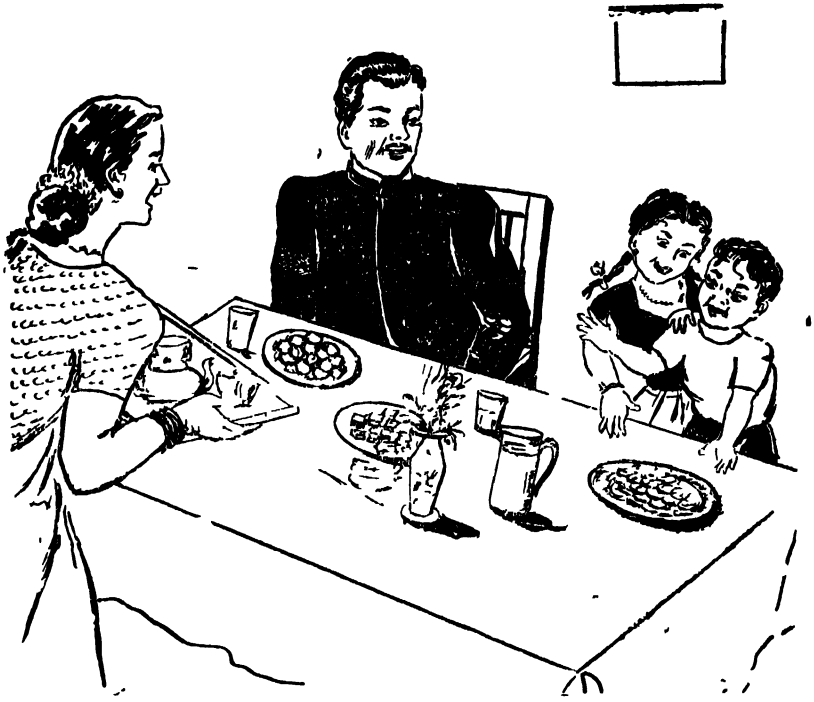


पुरुष समझदारी बरतें—

आजकल के जमाने में जब कि पति-पत्नी के समान अधिकार है और हिन्दू कोड बिल और तलाक का समर्थन हो रहा है, पुरुषों पर और भी अधिक जिम्मेदारी आगई है। अधिकांश स्त्रियाँ अशिक्षित और नासमझ होती है। ऐसी सूरत में पुरुषों को पथ प्रदर्शन करना होगा। गृहस्थी की सुख शान्ति परिवार का सुनाम और बच्चों का कल्याण हो इसलिए पति-पत्नी का सह-योग अत्यन्त वाछनीय है। स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वतन्त्र नहीं है। सतीत्व और यौवन यही दो उनके सम्बल है। नारी स्वभाव से आदर्शवादी और परि-वार से प्रेम करने वाली है। उसे अपना पति और सन्तान अधिकतम प्रिय है। अतएव इसके लिए यदि उसे कुछ त्याग भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए।

परिवार में यदि मनमुटाव हो भी जाय तो एक जना गम खाजाय। रूठे को मना लेने में भी बड़ा आनन्द है। मेरी एक सखी ने बताया कि 'जब उनकी माता जी किसी बात पर नाराज हो मुह फुला लेती तो पिता जी उन्हें देखकर आते-जाते 'बोलो जय सीता राम की' कहते और बच्चों को देखकर मुसकरा भी देते। बच्चे भी इस ताक में रहते कि देखें माँ कब हँसती है और जब माँ मुँह मोड़कर हँसती तो छोटा मुन्नू कह उठता, पिता जी देखिये माता जी हँस पड़ीं। और पिता जी ठठोली करते हुए कहते—"अजी ज़रा हँसी की चाँदनी इधर भी डालो। हमने क्या कसूर किया है ?" बस इस प्रकार क्रोध के बादल फौरन छट जाते थे। और पिता जी तो कभी गुस्सा होते ही नहीं थे। उन्हें जब कोई बात बुरी लगती तो गम्भीर हो जाया करते, बस इतने ही से घर भर के लोग चौकन्ने हो जाते। रात को एकान्त में पिताजी अपना

दृष्टिकोण माता जी के आगे रखते। माता जी पिता जी के स्वभाव से वाकिफ



थी कि वे कभी भी अन्याय की या धाँधली वाली बात नहीं कहते थे। माँ अपनी गलती के लिये माफी माँग लिया करती। हमें अपने माता-पिता के मनोमालिन्य की बहुत-सी घटनाओं का और उनके सुलझने का भी पता रहता। उनको सुन्दर ढंग से पारिवारिक झगड़ों को सुलझाते देख हमें बड़ी प्रसन्नता होती थी। मैं अपने भाई से कहा करती देखो, पिता जी कितने अच्छे हैं और भय्या कहता, माँ भी तो कितनी समझदार है !

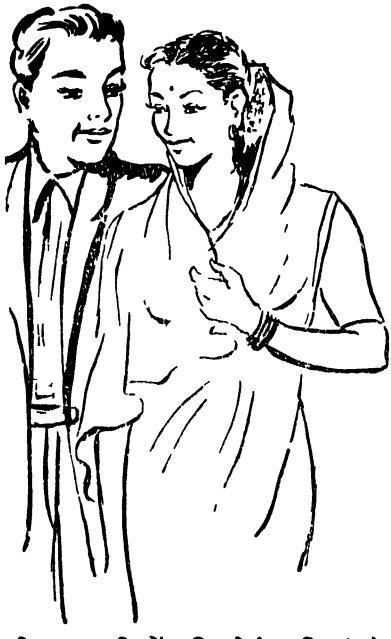
मेरी इस सखी का गृहस्थ जीवन भी बहुत सुन्दर है और इसका एक मूल कारण यह भी है कि अपने माता-पिता के स्वस्थ दाम्पत्य जीवन का सखी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। बचपन से ही उसे यह शिक्षा मिलती रही कि दाम्पत्य जीवन को परस्पर सहयोग से कैसे सफल बनाया जा सकता है।

शिष्टाचार का पालन करें--

पारिवारिक जीवन में छोटी-छोटी बातें बहुत महत्व रखती हैं। शिष्टाचार, सहानुभूति, थोड़ा-सा प्रेम-प्रदर्शन, सहिष्णुता, हँसी-मजाक ये सभी

बातें उदासी के बादलों को छाँट देती हैं। एक दूसरे की रुचि और आराम का ध्यान रखना, दूसरे की पसन्द और राय को महत्व देना, ऐसी बातों को करने में कुछ अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता, पर साथी के मन पर इसका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ता है। 'मेरी पत्नी मेरी रुचि का ध्यान रखकर भोजन बनाती है, इसलिए मुझे उसके पकाए भोजन में जो रस मिलता है वह और कहीं नहीं मिलता।' पति के इस प्रकार कृतज्ञता ज्ञापन से पत्नी का मन गद्-गद् हो जायगा। उसे भोजन पकाने का काम प्रिय लगेगा। 'आपको तो पता है, मेरे पर कौन से रङ्ग की साड़ी खिलती है।' 'आप जो भी चीज़ खरीदकर लाते है वह बहुत बढ़िया होती है।' पत्नी के ऐसा कहने पर पति को नये उपहार लाने की प्रेरणा मिलती है।

पत्नी को अपने पसन्द के कपड़ों में सजी संवरी देखकर वह मुग्ध हो जाता है। 'तुम कितनी अच्छी लगती हो आज ! गजब ढा रही हो। जरा एक बात तो सुनो कान में कहनी है।'



पति की इस सार्थक प्रेम प्रशंसा और ठठोली से पत्नी शर्माकर लाल हो जाती है। और झेंपी हुई-सी अपने लाल कपोलों को मलती हुई कहती है, 'हटो जी, आप बड़े खराब हो। बड़े दुष्ट हो। कान में ऐसी ही बात कही जाती है' ?

पति हँसकर पूछता है—'और नहीं तो क्या ? सुनो तो, दूसरे कान में बात नहीं सुनोगी ?'

जीवन के ऐसे मधुर क्षण दाम्पत्य जीवन के माधुर्य को बढ़ा देते हैं। आपके जीवन साथी में यदि कोई खूबियाँ है तो उनकी दाद अवश्य दें। इससेउ सको प्रेरणा मिलेगी। सन्तुष्टि होगी। यदि उसे अपने कैरियर में असफलता मिलती है आप धीरज बंधाये। यदि वह कोई नया काम करने लगा है या कोई नया सुझाव देता है तो उसे बिना अजमाए पहले से ही आलोचना करनी न

शुरू करदे।

कई पुरुषों की ऐसी आदत होती है कि स्त्रियों की प्रत्येक सलाह की धज्जियाँ उड़ा देते है। चाहे अन्त मे उनकी सलाह के अनुसार काम करने से काम सही क्यों न हो जाये पर वे शुरू में तो उनकी बात काटने में ही शान समझते है। ऐसा वे ही पुरुष करते है जिनमें हीनता की भावना होती है। घर के दायरे में ही वह अपनी श्रेष्ठता कायम रखने की चेष्टा करते है। एक दूसरे के अहसान को कभी न भुलाये। बेकदरी से मित्रता को बहुत चोट लगती है। स्त्री होने के नाते कोई हेय या असहाय या पुरुष होने के नाते कोई कठोर या उच्छृङ्खल है ऐसी भावना एक दूसरे के प्रति कभी मत रखें। भगवान की सृष्टि में कोई चीज सौन्दर्यहीन या बेकाम नहीं है। मानव सुलभ गुण तथा सदाचार दोनों के लिए वाछनीय है। पति-पत्नी एक दूसरे को बराबरी का दर्जा दें। जहाँ मित्रता निभती है वही प्रेम स्थायी रहता है। अपना-अपना दृष्टिकोण और रुचि प्रगट करने की हर एक को स्वतन्त्रता होनी चाहिए और परिवार के सुख-सुविधा मे दोनों का बराबर का हिस्सा है। त्याग और प्रेम पारिवारिक जीवन की आधार शिला है।

मे इस कथन से बिलकुल सहमत हूँ कि बहुत से लोगों को परिवार-संचालन का सही ढंग नहीं आता। और अपनी कमजोरी को वे अपनी सत्ता की आड़ में छुपा लेने का असफल प्रयास करते रहते हैं। अपने परिवार के सदस्यों की राय को ठुकराकर वे अपनी सत्ता का प्रदर्शन करते हैं या फिर उनकी राय का उपहास करते है।

यह भी सम्भव है कि अधिक उम्र हो जाने पर अब आप पहले की तरह अक्सर अपने जीवन-साथी की प्रशंसा न करते हों, पर दैनिक जीवन में खीझ और झुँझलाहट के जो मौके आते है, उन पर विजय पाना ही बुद्धि-मानी है। आपके जीवन साथी ने आपके निकट सम्पर्क में आकर अपने चरित्र में जो सुधार किया है, उसका मुक्त कण्ठ से और पूरी सचाई के साथ प्रशंसा कीजिए। यदि आप ऐसा नही करते तो आपके दाम्पत्य प्रेम में वह गहराई नहीं आ सकती, जो पति-पत्नी के एक-दूसरे को अच्छी तरह जान लेने पर आया करती है। याद रखिए: जीवन-साथी के चरित्र के विकास में आपका भी कुछ हाथ है, यह जानने से बड़ा आत्म-सन्तोष मिला करता है। और जो लोग महसूस ही नहीं करते कि उनके जीवन-साथी का चरित्र उनके सम्पर्क

में आने से बदल गया है, वे इस आत्मसन्तोष का अनुभव कैसे कर सकते हैं ?

व्यक्तिगत विकास का दूसरा कदम उठाइए : अपने जीवन साथी की तारीफ कीजिए कि उसने अपनी अमुक-अमुक कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर ली है।

अपने पति या पत्नी के प्रति आपके हृदय में जितना प्रेम और सम्मान है, उसे प्रकट कीजिए। याद रखिए : पति-पत्नी का प्रेम एक ऐसी चीज है, जिसे जब-तब तरोताजा करने की जरूरत पड़ती है।

यह कल्पना करना ही व्यर्थ है, कि स्वयं तटस्थ अथवा उदासीन रह-कर भी आप दूसरों का प्रेम प्राप्त कर सकेंगे। ऐसा नहीं हो सकता। स्वयं भी प्रेम-प्रदर्शन कीजिए। यदि आप निरुत्साही हैं तो यह शिकायत न कीजिए कि आपके पति अथवा पत्नी में अब दाम्पत्य प्रेम के सम्बन्ध में पहले जैसा उत्साह नहीं रहा।

५. मिसरी में फाँस

कहावत है जहाँ चार वर्तन होते है, वे कभी न कभी तो खड़क ही जाते हैं, यही वात पति-पत्नी के झगड़ों के विषय मे भी सही है। पर यदि



उनके प्रेम की आधार-शिला मजबूत है तब तो बड़े-बड़े झंझावात भी उनके प्रेम की इमारत को ढाह नहीं सकते। आधार-शिला की मजबूती के लिए सदाचार और चारित्रिक बल होना जरूरी है। नहीं तो प्रेम-बंधन टूटते देर नहीं लगती, और झगड़े सुलझाने की अपेक्षा और अधिक उलझते ही जाते हैं। अहंभाव, अभिमान और अदूरंदेशी, समझौते की भावना और सहन-शक्ति को नष्ट कर देती हैं। जब तक पति-पत्नी में मित्र-भावना नहीं है वह एक दूसरे के सम्मान का ख्याल नहीं रखेंगे। संस्कार वश पुरुप स्त्री के सामने अपनी गलती या भूल के लिए माफी माँगने में अपनी हेठी समझता है। इससे स्त्री को ही दबना पड़ता है। इसकी प्रतिक्रिया होती है। पारिवारिक जीवन में असन्तोप वढ़ता है।

जरा-सी बात—

झगड़ा हमेशा छोटी-छोटी बातों से ही शुरू होता है। पत्नी गृह-प्रबन्ध और बच्चों से परेशान है और पति को दफ्तर जाने की उतावली है। उस समय यदि पति की कोई चीज या कागज नहीं मिलता, तो वह झुंझलाता है, डाँट-डपट भी करता है। पत्नी बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में, उन्हें नाशता खिलाने में लगी होने के कारण चिढ़कर कह बैठती है—'अकेली जान मैं क्या-क्या करूँ ? आप अपनी चीजें संभालकर रखा करें। जानते तो हैं बच्चों वाला घर है। जरूरी कागज दराज में बन्द कर दिया करें'। पर पति इस सलाह को अपनी आजादी में बाधक समझता है।

शान्ति के पति मोहन एक स्कूल में हेडक्लार्क हैं। उनकी पत्नी भी किसी स्कूल में टीचर है। शान्ति स्वयं बहुत व्यवस्था-प्रिय है। वह अपने कागज-पत्र यथास्थान रखती है। जरूरी कागज फाइल में नत्थी कर देती है। पर उसके पति मोहन बहुत ही बेपरवाह हैं। वह अपनी किताबें इधर-उधर पटक देते हैं। लड़कों की कापियाँ अलमारी में, खटिया पर, बक्सों के पीछे जहाँ-तहाँ डाल देते हैं। यहाँ तक कि परीक्षा के दिनों में जाँची हुई कापियाँ या परीक्षा-फल भी आलमारी के कोने-कचरे में रखकर भूल जाते हैं। और समय पर चीज न मिलने पर पत्नी पर बिगड़ते हैं, मुन्ने के कान खींचे जाते हैं, पर वह अपनी गलती कभी नहीं मानते। बस उनका तो एक ही जवाब है—'मेरे कागज जहाँ पड़े हों वहीं रहने दो। कोई छूता क्यों है' ? शान्ति ने कई बार समझाया 'घर छोटा है। मेज पर या अलमारी में आपकी चीजों के अलावा और भी चीजें पड़ी रहती हैं। आप आलमारी खुली छोड़ जाते हैं। कई बार आपके चैक, इंश्योरेंस की रसीद और रिमाइंडर कूड़े-कचरे में चले जाते हैं, आप इन्हें रखकर खुद भूल जाते हैं। इससे समय पर काम नहीं हो पाता। जरूरी कागज खो जाने से नुकसान भी उठाना पड़ता है। ढूँढने की परेशानी अलग। सो आप ऐसे कागजों को फाईल में लगाकर दराज में क्यों नहीं रख देते ?'

मोहन को पत्नी के यह सुझाव बुरे लगते हैं, बस वह बिगड़कर कह उठता है — 'रखो जी अपनी सलाह अपने पास। तुमने बच्चों को सिर चढ़ाया हुआ है। वह हर जगह गड़बड़ करते रहते हैं। उनको कुछ नहीं कहती मुझे ही लेक्चर झाड़ने लगती हो'।

इस प्रकार पति-पत्नी मे प्राय तू-तू मे-मे हो जाती है। देखने मे आता है कि बच्चों की बात लेकर भी प्राय: दम्पति मे झगडा हो जाता है। पुरुष लडके पर अधिक कडाई रखता है। उसे डॉट-डपट देगा, यदाकदा कान खीच



कर दो-चार थप्पड भी जड देगा। यदि उसकी रिपोर्ट खराब हुई या वह शाम को कुछ देर से घर आया तो इसी बात के पीछे पत्नी को भी दो-चार खरी-खोटी सुना दी जायेगी—'तुमसे बच्चे सँभलते नही। मुन्नू नालायक है, बेवकूफ है, मेहनत नही करता। अगर तुम समझदार होती तो बच्चे भी ठीक निकलते। सब तुम्हारा ही कसूर है।'

अब भला सोचिये, बच्चों के सामने इस प्रकार जलील होकर पत्नी के मन मे पति के प्रति कटवाहट क्यो न बढेगी ? मगर सदियों से अपने को श्रेष्ठ समझने के जो सस्कार पुरुष म बने हुए है, उनके कारण अधिकांश पुरुषों को अपनी पत्नी को बच्चों, परिजनों, नोकर-चाकर, अड़ौस-पड़ौस के सामने खरी-खोटी सुनाने मे बुरा नही लगता। इस मे वह स्वामित्व की भावना का अनुभव करते है। 'स्त्री काबू मे रखने की चीज है। सच्चे मर्द स्त्रियों पर हकूमत करते है। अगर स्त्री अपने मन के माफिक नहीं चले तो मर्दानगी पर धब्बा है' ऐसे विचार रखने वाले पुरुषो का अभाव अभी भी नही है।

कई व्यक्ति 'चित भी मेरी पट्ट भी मेरी' इस नीति को अपनाकर चलते है। वह किसी भी हालत मे समझौता करना नही चाहते। ऐसे व्यक्ति अपने प्रति कुछ उच्च भावना का दृष्टिकोण रखने के दोषी पाये गये है। यह सुपिरियोरिटी कॉम्प्लेक्स उन्हे अपनी जीवन-साथी तथा उसके परि-

जनों को निम्न कोटि का समझने की प्रेरणा देती है। ऐसे व्यक्तियों को अपने रूप, अमीरी या योग्यता का बड़ा घमंड होता है और वह अपने जीवन-साथी पर इस सुपिरियोरिटी की धाक जब-तब जमाने से चूकते नही।

जो व्यक्ति बचपन मे बहुत दबाया जाता है या जिसे अपने कैरियर में असफलता रही, जो यश, प्रशंसा और प्रेम का भूखा रहा वह दूसरों की यहाँ तक कि किसी हद तक—विशेषकर जब कि तुलना हो—अपने बच्चों, या पत्नी की भी प्रशंसा या सफलता देख-सुनकर प्रसन्न नही होता। ऐसे पुरुष स्वयं को अच्छा प्रमाणित करने के लिए अपने अधीन व्यक्तियों को काला चित्रित करने की कोशिश मे रहते है। दूसरों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए वह अपने जीवन-साथी की काल्पनिक बेवफाई, निष्ठुरता, फिजूल-खर्ची तथा स्वार्थता की कहानी गढकर लोगों को सुनाने मे आनन्द प्राप्त करते है। उनके ऐसे व्यवहार का जब जीवन-साथी को पता चलता है तो उसका दिल खट्टा हो जाता है। इससे मनों मे दूरी और बढ जाती है।

पुरुषों मे एक यह भावना होती है कि मै घर का मालिक हूं, बच्चों का बाप हूं, रोटी कमाने वाला हूं, इसलिए घर मे सब को मेरा हुक्म मानना, इज्जत करनी ही चाहिए। वे ये भूल जाते है कि इज्जत और प्रेम तभी मिलता है जबकि मनुष्य उसके लायक हो। यदि वह अपनी पत्नी को मारता-पीटता है, उसके सुख-आराम का ध्यान नही रखता, बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षण मे दिलचस्पी नही लेता, परिवार के भविष्य को सुरक्षित बनाने की यथा-शक्ति चेष्टा नही करता तो बीवी और बच्चों के दिलों मे उसके लिए सम्मान नही बना रह सकता।

पति का कर्तव्य—

पति को पत्नी का रक्षक और पालक माना गया है। स्त्री की इज्जत और सुरक्षा की जिम्मेदारी पुरुष पर है। जब तक पुरुष इस जिम्मेदारी को निभाने के लायक न हो जाये उसे विवाह करने का कोई अधिकार नही। देखने मे आता है कि जब नवयुवक माँ-बाप के दबाव देने पर या किसी आर्थिक प्रलोभन के वश विवश होकर विवाह कर लेते है तो वैवाहिक जीवन में कई अड़चने, मनोमालिन्य और समस्याएँ पैदा हो जाती है। लाला गिरधारीलाल के बडे बेटे ने ३० वर्ष की उम्र तक विवाह नही किया। बाद में वह जब इंजीनियर बन गया तब उसने अपनी मनपसंद की एक लड़की

से विवाह कर लिया। माता-पिता ने इसका यह अर्थ लगाया कि यदि लड़के की छोटी उम्र में ही शादी कर दी जाती तो बहू हमारे पास रहती, हमारी अधीनता स्वीकार करती। उसका दान-दहेज हमारे कब्जे में रहता। अब इस बड़े बेटे-बहू पर तो यह जोर चला नहीं, इस लिए लाला जी ने अपने छोटे लड़के श्याम की शादी, जबकि वह २२ वर्ष का ही था और एम० ए० में पढ़ रहा था, कर दी। लड़के का ससुर एक नामी व्यापारी था। ब्याह के बाद लड़के का मन पढ़ाई में न लगा। दो बार उसने एम० ए० की परीक्षा दी और दोनों बार असफल रहा। हारकर उसने पढ़ाई छोड़ दी, और बीवी से बोला—"अपने बाप से कहो कि या तो मुझे अपने बिज़निस में साझीदार बना लें या रुपया देकर अलग दूकान खुलवा दें। "लड़की की दो बहनें और चार भाई थे वह बोली—मेरे पिता ने जब मेरी शादी की थी तो उन्हें यह कहा गया था कि लड़का एम० ए० में पढ़ता है और इसी साल वह आई० ए० एस० की परीक्षा में बैठने वाला है। अब अपने बाप से तुम्हारी नोकरी की सिफारिश और व्यवसाय के लिए रुपये माँगने का मेरा तो मुँह है नहीं। वह कबीलदार हैं। अपने बच्चों के लिए खर्चेंगे कि जमाइयों के लिए ? उन पर आगे ही काफी जिम्मेदारियाँ हैं।"



अपनी पत्नी की यह साफ बात श्याम को बहुत बुरी लगी। उसने अपनी माँ से इसकी चर्चा की। अब तो सास, ससुर और पति तीनों राधा (बहू) के पीछे पड़ गये। उसे बात-बात पर परेशान करने लगे। 'तेरे बाप के घर से कुछ नहीं आया, तू निकम्मी है, तुझे कुछ समझ नहीं। हमारे भाग्य फूट गये ऐसी बहू घर में आई कि बेटे की पढ़ाई चौपट हो गई। किसी अफसर की बेटी से विवाह किया होता तो आज के दिन हमारे बेटे को कोई बड़ी नौकरी मिल गई होती।'

राधा समझदार थी वह बहिन के ब्याह पर पीहर गई तो फिर वह कालिज में दाखिल हो गई। शादी से पहले वह थर्डीयर पास कर चुकी थी

दो साल लगाकर उसने बी० ए० बी० टी० कर ली। इसी बीच मे राशन के दफ्तर में श्याम को दिल्ली में एक छोटी-सी नौकरी मिल गई। संयोग से राधा भी दिल्ली में ही गर्ल्स स्कूल में हेड मिस्ट्रेस हो गई। राधा अपने काम में बहुत चतुर थी। दो साल के अन्दर ही उसका स्कूल हाई स्कूल बना दिया गया, पर श्याम का दफ्तर बन्द हो जाने और काम की रिपोर्ट अच्छी न होने से वह फिर बेरोजगार हो गया। पत्नी ने घर का खर्च सँभाला हुआ है—इस बात की तो श्याम प्रशंसा करता नहीं था उल्टा आये दिन पत्नी से झगड़ा करता, उसे जली कटी सुनाता, उसके बाप को कोसता, देर से आने पर सन्देह करता, लांछन लगाता।

शुरूआत ठीक होनी चाहिए—

अब यह स्पष्ट है कि यदि श्याम ने शादी अपनी पढ़ाई खतम करने और रोजगार लग जाने पर की होती, तो उसके पारिवारिक जीवन में ऐसी कड़ुवाहट कभी पैदा न होती। इस बात की बहुत जरूरत है कि वैवाहिक जीवन के प्रारम्भिक वर्ष बहुत सन्तोषजनक ढंग से बीतने चाहिएँ। पति-पत्नी को एक दूसरे को समझने, सहयोग देने तथा प्रेमपूर्वक रहकर गृहस्थी चलाने का मौका मिलना चाहिए। देखने में आता है कि कई घरों में माता-पिता की गलती से वैवाहिक जीवन की शुरूआत ही गलत ढंग से होती है। यह स्वाभाविक है कि विवाह के बाद नव-दम्पति एक दूसरे की सङ्गति में अधिक रहना चाहते हैं। उन्हें साथ-साथ घूमने-फिरने, खाने-पीने और उठने-बैठने की सुविधा अवश्य मिलनी चाहिए। इसमें जो बाधक होता है उससे उन्हें चिढ़ होना स्वाभाविक है। इसलिए विवाह के बाद कुछ दिन के लिए पति-पत्नी का 'हनीमून' के लिए कहीं दूसरी जगह चले जाने का पाश्चात्य देशों में जो रिवाज है वह बहुत ठीक है। संयुक्त परिवार में बहू को एक ओर तो यह सङ्कोच बना रहता है कि गुरुजनों से पहले उठूँ, बाद में सोऊँ। नव-दम्पति को प्रेमालाप करते काफी रात गुजर जाती है। परिजनों व मेहमानों से भरे घर में वह लोग रिलेक्स नहीं कर पाते। सबकी बातचीत व दिलचस्पी का विषय नव-दम्पति ही होते है, इससे उन पर शारीरिक और मानसिक तनाव काफी रहता है। इन्हीं दिनों में बहू के व्यवहार, शील-सङ्कोच तथा स्वभाव के विषय में भी सास-ननद और अड़ौस-पड़ौस की औरतें अपने-अपने अनुभव के अनुसार रिमार्क पास करती रहती हैं। फिर बहू के कान में अपने पीहर वालों के

व्यवहार व लेन-देन के विषय में जो आलोचना की जाती है उसकी रिपोर्ट भी इधर-उधर से पहुँच जाती है। 'उमीद बहुत थी मिला थोड़ा। नगद तो नाम मात्र को आया, सास व ननदों के कपड़े भी बहुत मामूली हैं। जेवर बहुत हलके हैं। बरात की आवभगत भी कुछ नहीं हुई। हमें क्या मालूम था कि ऐसे सूमड़े निकलेंगे ये लोग, नहीं तो हमारे नन्हे को तो बड़े-बड़े घरों से रिश्ता आता था। नन्हा ही देखकर आया था बहू। जाने किस बात पर रीझ गया। आजकल तो पाउडर लगाकर, होंठ-मुँह रङ्गकर सभी सुन्दर लगने लगती हैं।'

अब जब बहू और लड़के के कानों में ये बातें पहुँचती हैं तो उनका मन खट्टा हो जाता है। परिणाम स्वरूप या तो बेटा माँ से खिचा-खिचा रहने लगता है या बहू से। धीरे-धीरे दिलों में गिठानें पक्की होती जातीं हैं। और इन सब का कसूर बहू के सिर धर दिया जाता है। बहू के पीहर वालों को जली-कटी सुनाना, उसे ताने देने, और भाग्य को कोसना, या विवाह के बाद किसी घाटे, मृत्यु या दुर्भाग्य के लिए बहू को कुलच्छनी कहना महा मूढ़ता है। पति का यह कर्त्तव्य है कि वह पत्नी की मान-मर्यादा की रक्षा करे। रोज-रोज के ताने और आलोचनाएँ जीवन को दूभर बना देती हैं। वैवाहिक जीवन के आरम्भ में ऐसा कटु अनुभव किसी भी नवोढ़ा को परिवार से विरक्त कर सकता है। फलस्वरूप वह ससुराल के नाम से चिढ़ने लगती है, उन लोगों को अपने सुखद स्वप्न की अनुभूति में बाधक समझ, उनके संपर्क से बचना चाहती है और यहीं से पारिवारिक कलह और फूट का आरम्भ होता है।

देखने में आता है कि कमाऊ और आत्मसम्मान का ध्यान रखनेवाले बेटों की बहूओं को सास व ननद मुँह पर कुछ कहने का साहस नहीं करतीं। ससुराल के धन के लोभी, निकम्मे, हीन भाव से युक्त, दूसरों के दबैल और कायर पुरुषों की स्त्रियों की ही जिन्दगी सम्मिलित परिवार में दूभर हो जाती है। परिणाम स्वरूप पति-पत्नी की आपस में भी नहीं बनती। विवाह के बाद ऐसी परिस्थितियों में दाम्पत्य जीवन का आरम्भ ही गलत होता है और पति-पत्नी की बाद में पटरी ठीक से नहीं बैठ पाती।

पत्नी का कर्त्तव्य—

झगड़े मिटाने में पत्नी को हमेशा पहल करनी चाहिए। वह घर की

सम्राज्ञी है। वह एक रानी की तरह शान से रह सके इसके लिए परिवार में व्यवस्था और शान्ति रहना जरूरी है। फलों से लदा हुआ वृक्ष ही झुकता है। जिस तरह राज्य-कर जमां कराते रहने से ही प्रजा को आराम और सुख मिल सकता है, उसी तरह पति-पद की मर्यादा सुरक्षित रखने पर ही वह सम्राज्ञी बनी रह सकती है। स्त्री का चरित्र अपनी विचित्रता और समानुकूल व्यवहार के लिए प्रसिद्ध है। उसमें पुरुष की अपेक्षा अधिक लोच और सहन-शक्ति है। मौका देखकर वह व्यवहार करने में चतुर है। उसकी खूबियाँ ही उसे पुरुष के हृदय की सम्राज्ञी बनाने में सफल होती हैं। जो काम डाँट-डपट और जोर-जबरदस्ती से हल नहीं हो सकता उसे नारी अपनी अदा और मीठे वचनों से करने में कामयाब होती है। थोड़ी-सी सहनशक्ति रखने और तरह देने से अनेक झगड़े टल जाते हैं। यदि आप अपने पति से सच्चा प्रेम करती हैं तो उसकी मुसीबतों और लाचारियों को समझें, उनको कम करने की कोशिश करें, इससे वह जीवन भर आपका कृतज्ञ रहेगा। एक लिपी-पुती गुडिया-सी तथा मनोरंजन करने वाली पत्नी के प्रति पुरुष का आकर्षण क्षणिक होता है, परन्तु एक विनम्र, सेवा परायणा तथा सच्ची सहचरी पर पुरुष हमेशा भरोसा रखता है। उसे अपना दुख-सुख का साथी समझ मित्रवत् व्यवहार करता है।

घर के रोज-रोज के झगड़ों व अड़चनों के लिए पति को परेशान न करके, यदि पत्नी अपने शील स्वभाव और अक्लमन्दी से उन्हें खुद ही सुलझा ले तो पति की चिन्ताएँ बहुत कुछ कम हो जाती हैं। अगर पत्नी के कारण पति को ताने उलाहने सुनने पड़ते हैं या उसकी नाम धराई होती है तो ऐसी स्थिति शोचनीय है। इससे पति मन ही मन पत्नी को भी दोषी समझेगा और चिढ़कर उसे बुरा-भला भी कह सकता है। नासमझ पत्नियाँ अपने असहयोग और असहनशीलता को दोष न देकर परिजनों, पति की कमजोरी और अपने भाग्य को कोसने लगती हैं। सास-ननद के झगड़ों के बीच में पति को पंचायत करने के लिए उकसाने से वहू के प्रति सास-ननद के मन में अधिक मैल जम जाती है।

ऐसे मौके पर पति को चाहिए कि वह अपने बहन-भाइयों को मनोवैज्ञानिक ढंग से पत्नी के अनुकूल बनाये रखे और उनमें तथा पत्नी में प्रेम और समझदारी बनी रहे इस प्रकार की चेष्टा करे। देवर और ननदों की

झूठी शिकायतों से भी सास का मन बहू से फट जाता है। समझदार पुरुष पारिवारिक झगड़ों व आलोचना की सीधी चोट पत्नी पर नहीं पड़ने देते। वह



तटस्थ रहकर, प्यार से माँ और पत्नी दोनों के हित की नीति अपनाते हैं। इससे सास-बहू का परस्पर लिहाज बना रहता है। आजकल पहले जैसी सम्मिलित पारिवारिक व्यवस्था तो रही नहीं। वयस्क होकर ही लड़के-लड़कियों की शादी होती है। और अधिकांश नवयुवक अपने पैरों पर खड़े होकर ही विवाह करना चाहते हैं। इसलिए बहू का ससुराल में थोड़े दिन ही रहना होता है। उन थोड़े दिनों में पति-पत्नी को अपने परिजनों की शिकायत का कोई मौका नहीं देना चाहिए।

कभी ऐसा भी होता है कि कमाऊ बेटे से माँ-बाप कुछ आशा करते हैं और न मिलने पर बहू को दोष देते हैं। इस मामले में भी पति को अपने माता-पिता से स्पष्टीकरण करना चाहिए। पहले पत्नी को सब बातें समझाकर निर्णय कर ले और माँ-बाप को यदि आर्थिक मदद देनी जरूरी है तो खुशी-खुशी अपना कर्त्तव्य समझकर दे। यदि माँ-बाप को आर्थिक कष्ट नहीं है, केवल अपना हक समझ और उसे पूरा कराने या बेटे-बहू की परीक्षा लेने अथवा परेशान करने के लिए वह उनसे रुपया माँगते हैं तो रुपये देने न देने का समझौता लड़के को अपने माता-पिता से खुद कर लेना चाहिए। यदि बहू के प्रति माता-पिता का प्रेम बना रहेगा, तभी बहू ससुराल में रहना

चाहेगी अन्यथा नहीं। किसी के घर में अनचाहे होकर रहने में कोई सुख नहीं है। नासमझ दम्पति मेरे घर वाले और तेरे घर वाले, इस विषय को छेड़ कर अक्सर एक-दूसरे को बुरी-भली कह बैठते हैं। पति-पत्नी यदि दोनों अपने को एक इकाई समझें तो मेरे-तेरे का प्रश्न ही नहीं उठता।

नववधू ध्यान दे—

नववधू को एक बात नहीं भूलना चाहिए कि प्रत्येक घर का अपना तौर-तरीका, मर्यादा और आदर्श होता है। जो उसके पिता के घर में होता रहा वही तौर तरीका ससुराल में भी होना जरूरी है, ऐसी आशा करनी भूल है। उसे चाहिए कि नये घर के तौर-तरीकों, सभ्यता और विचारधारा को समझें-सीखे। वहाँ की मर्यादा और आदर्शो को निभाये। यदि बहू कोई सुधार करना चाहती है तो वह एक दम से होना असम्भव है। जल्दबाजी में वह लोकप्रियता खो बैठेगी। धीरे-धीरे परिजनों की सद्भावना से वह घर के रहन-सहन में सुधार कर सकती है। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि और सुविधा को समझकर जो बहू काम करती हैं उससे सब खुश होते है। कई बहुएँ शुरू-शुरू में लाड़ में आकर पीहर के घर की बहुत-सी बेमतलब की बातें ससुराल वालों से कह बैठती हैं यहाँ तक कि पति से अपने बचपन की मूर्खता और अल्हड़पन की घटनाओं का उल्लेख भी कर देती हैं। इसका परिणाम बाद में बहुत बुरा होता है कच्ची जान-पहिचान में सन्देह और ईर्ष्या का बीज पनपने लगता है। इस-लिए नववधुओं को अपने पति के साथ भी सोच-समझकर बात करनी चाहिए नादानी में अनावश्यक बातें कह बैठना ठीक नहीं है। पति के स्वभाव का पता न होने से मामूली-सी नादानी मनोमालिन्य का कारण बन जाती है। जिसका परिणाम उम्र भर भोगना पड़ता है।



ललिता नाम की एक लड़की सोशल वेलफेयर सेन्टर में काम करती थी। वहाँ गाँव की स्त्रियों के समझाने के लिए उसे परिवार नियोजन पर भी पर्याप्त जानकारी दी गई थी। उसने इस विषय में साहित्य भी पढ़ा था। विवाह के बाद प्रथम मिलन की रात्रि में ही उसने अपने पति से परि-

वार-नियोजन पर बातचीत की। उसने इस बात का भी संकेत किया कि क्योंकि अभी वह अपनी पढाई खतम करना चाहती है इस लिए बच्चे जल्द नहीं होने चाहिएँ। ललिता के पति ने ऐसी ही कुछ बातों से यह धारणा बना ली कि ललिता अच्छे चरित्र की नहीं है और सेक्स सम्बन्धी बहुत-सी बातें जो इसे मालूम हैं, उनकी जानकारी किसी सच्चरित्र कुमारी कन्या के लिए होनी सम्भव नहीं। बस वह अपनी पत्नी से खिंचा-खिंचा रहने लगा। इन्ही दिनों सोशल बोर्ड के एक सहयोगी ललिता से मिलने आये। वह उनसे निःसंकोच बातें करती रही। ललिता ने सोशल वेलफेयर वर्क में सक्रिय भाग न ले सकने में खिन्नता भी प्रगट की। बस उसके पति का सन्देह पुष्ट होता गया कि ललिता का मन किसी और पर रीझा हुआ है। उन्होंने दो-चार व्यंग भी कसे। ललिता को उनकी यह अशिष्टता बहुत बुरी लगी। धीरे-धीरे तनाव बढ़ता गया और पति ने पत्नी को दुश्चरित्रता का लांछन लगाकर त्याग दिया। एक सुशिक्षित और इंग्लैड में शिक्षा प्राप्त पुरुष से ललिता को ऐसी संकुचित वृति की आशा नहीं थी। आत्मसम्मान का ध्यान रखकर वह अपने पति के कटु व्यवहार और शंकित स्वभाव के आगे झुक नहीं सकी। परिणाम यह हुआ कि पति-पत्नी की नहीं बनी। निर्दोष ललिता



ने अपना जीवन परोपकार में लगा दिया और उसके पति ने कुछ वर्ष बाद एक अशिक्षित लड़की से विवाह कर लिया। यह सत्य है कि सन्देह प्रेम में

विष घोल देता है और बात की चोट भी जल्दी भरती नहीं है।

विवाह के एक-दो साल बाद तक प्रेम में जो तीव्रता और रोमान्स की विविधता होती है, वह हमेशा नहीं बनी रहती। हाँ, समझदारी से उनकी आभा और खुमार बाद की जिन्दगी को भी आकर्षक बनाये रखने में सफल हो सकता है। यदि पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति मित्रभाव बनाये रखने में सफल होते हैं तो उनका दाम्पत्य-जीवन सुन्दर और सरल बना रहता है। मित्रता में कुछ लिहाज और शिष्टाचार का पालन करना जरूरी है। पीठ पीछे निन्दा, स्वार्थ, कटुवचन, असहनशीलता आदि भूलें मित्रता नष्ट कर देती हैं। पति-पत्नी अपने जीवन-साथी को उसकी खूबियों और कमियों के साथ स्वीकार करने और निभाने की नीति अपनायें। गृहिणी यदि एक सुधारक और निरीक्षक की तरह परिजनों के व्यवहार की आलोचना करती है तो घरेलू वातावरण में तनाव आ जाता है। इसी प्रकार यदि पति अधिकारी और शासक की कठोरता अपनाता है तो परिजन परेशान हो जाते हैं। ये दोनों परिस्थितियाँ वातावरण के प्रतिकूल हैं। एक दूसरे के कसूर जताकर, आलोचना करके जो दम्पति जीतना चाहते हैं वे भारी भूल करते हैं। घर में अलोचक की उपस्थिति सुखदायक नहीं होती।

टू आर्डर देकर जीवन-साथी तो कहीं नहीं घडा जाता। विषमताओं के बावजूद भी प्रेम बना रह सकना सम्भव है। आयु, शिक्षा आदि में काफी अन्तर होते हुए भी यदि मानसिक प्रौढ़त्व का अभाव न हो तो पति-पत्नी का निर्वाह हो जाता है। आज अनेक परिवारों में जो कलह मची रहती है, पति-पत्नी के झगड़े खतम होने को ही नहीं आते, उसके मूल में मानसिक प्रौढ़त्व का अभाव ही है। ऐसे अपरिपक्व बुद्धि वाले व्यक्ति आयु में बड़े होते हुए भी नादानों की तरह व्यवहार करने लगते हैं और अपनी जिम्मेदारियों की तरफ से आँखें मूंद लेते हैं।

झगड़ों का एक मुख्य कारण यह भी है कि विवाह से पहले युवक और युवतियाँ एक कल्पना-लोक में रहते हैं। विवाह के बाद वह अपने जीवन-साथी से बहुत कुछ आशा करते हैं। पर लेने-देने का सन्तुलन न बना रहने के कारण बाद में उन्हें बहुत निराशा होती है। दाम्पत्य जीवन की जिम्मेदारियाँ दोनों को मिलकर निभानी चाहिएँ—इस विषय में सरिता से एक अनुभवी भाई के विचार मैं विस्तारपूर्वक उद्धृत करती हूँ—

विवाह से आशाएँ—

विवाह के बाद प्रारम्भ होने वाले जीवन के विषय में युवक और युवती--दोनों में काफी भ्रामक धारणाएँ हैं। जब एक युवक से, जो कि कमाऊ है और अकेला है, लोग यह कहते है कि भाई, तुम अब विवाह करलो, कम



से कम कमरे में झाड़ू तो लग जाया करेगी, ठीक समय पर रोटी तो मिल जाएगी, तो वे अनजाने में ही उसके मन में इस धारणा को परिपुष्ट कर देते हैं कि घर की सफाई का उत्तरदायित्व उस पर नहीं, बल्कि पत्नी पर है। और ठीक समय पर रोटी उसके मुख में डालने का उत्तरदायित्व भी पत्नी पर है। उधर लड़की अपने वैवाहिक जीवन की कल्पनाएँ कर रही होती है। माता-पिता के नियन्त्रण में तो वह 'शहनाई' और 'खिड़की' नहीं देख पाती, पर अपने पति के साथ तो वह मनचाहा फिल्म देखने को स्वतन्त्र होगी और विवाह होते ही उसे पति की जेब उधेड़ने का और लिपस्टिक, रूज

तथा पाउडर लगाने का लाइसेंस भी मिल जायगा।

इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि विवाहित जीवन में आपकी वे आशाएँ पूर्ण हो जाएँगी, जो आप अपने जीवन-साथी के विषय में विवाह से पूर्व किया करते थे। जब आप कोई व्यापार या अन्य कोई साझे का कार्य करने लगते हैं, तो प्रथम ही उसकी कठिनाइयों और विफलताओं के विषय में सोच लेते हैं। इसी प्रकार विवाह के पश्चात् होने वाली कठिनाइयों का ध्यान पहले ही करना आवश्यक है। पुष्प-शय्या पर चढ़ने से पूर्व उसमें यत्र-तत्र छिपे काँटों को देख लेना ही बुद्धिमत्ता है।

विवाहित जीवन में दम्पति के आपसी मनमुटाव के मुख्य कारण हैं आर्थिक कठिनाइयाँ, शारीरिक कमियाँ तथा मानसिक उलझनें। इनके अतिरिक्त परिस्थति के अनुसार अन्य कारण भी हो सकते हैं।

आजकल जबकि चारों ओर से महँगाई की मार पड़ रही है और वस्तुओं का अभाव परेशान किए हुए है, एक औसत दर्जे के गृहस्थ के मन पर बहुत बोझ और खिचाव पड़ रहा है। उसके मन की विनोदप्रियता, सहज बुद्धि तथा प्रसन्नता धीरे-धीरे उसका साथ छोड़ती जा रही है। वह अपने मानसिक सन्तुलन को खो बैठा है, वह परेशान है, उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वह अपनी, अपने बच्चों की, अपनी पत्नी की स्थिति को कैसे बनाए रखे। वह यह चाहते हुए भी कि उसकी पत्नी तथा बच्चे हर समय स्वस्थ तथा प्रसन्नता से चहकते रहें, उनके लिए कुछ नही कर पाता। यदि ऐसी अवस्था में उसमें उत्साह की मात्रा और प्रेम की गरमी कुछ कम होगई है,'तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। .

मान लीजिए कि घर में सायंकाल को कुछ मेहमान आने वाले हैं। पति महोदय साइकिल पर बोरी और थैला बाँधकर राशन की दुकान पर पहुँचे, पर पता चला कि दुकान पर राशन समाप्त है, कल मिलेगा। अब यदि पत्नी उस पर झुँझलाने लगे तो यह व्यर्थ ही नहीं, अपितु मूर्खतापूर्ण भी है। इस से सिवाय इसके कि आपस में मनोमालिन्य बढ़े और कुछ नहीं होगा, कम से कम आने वाले मेहमानों के लिए तो कोई प्रबन्ध नहीं हो सकेगा।

पत्नी को पति की इस अवस्था पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करना चाहिए और इसे समझना चाहिए। पति के हृदय में दहकती आर्थिक तथा अभाव-जन्य चिंता की आग को पत्नी अपनी प्रेम-भरी मुसकराहट की एक बौछार

से ही शांत कर सकती है। उसे पति के सामने केवल वही आवश्यकताएँ रखनी चाहिएँ, जिनके बिना कार्य न चल सके।

शारीरिक कारणों के विषय में सोचते हुए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह कारण बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसका गृहस्थ-जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है प्रायः देखने में आता है कि विवाह बंधन में पड़ने वाले लड़के तथा लड़की की आयु, कद, सुन्दरता, मोटापन, पतलापन आदि-का ध्यान रखा जाता है, फिर भी अनेक सम्बन्ध देखने में आते हैं जो अनमेल होते हैं। हो सकता है कि पुराने व्यक्ति इन बातों की ओर ध्यान न देते हों और एक 'कनक छुरी-सी कामिनी' का विवाह किसी मोटे, लंब-तडंग और धनी व्यक्ति से करके यह समझते हों कि वे दोनों अपनी गृहस्थ-जीवन की गाड़ी को सफलतापूर्वक ले-जाएँगे। परन्तु आजकल जब कि शिक्षा के विकास के कारण महिलाएँ अपनी शारीरिक तथा मानसिक विशेषताओं के प्रभाव और महत्त्व को समझने लगी है, ऐसे विवाह केवल मानसिक असंतोष और मनमुटाव ही पैदा करते हैं, जिसके कारण गृहस्थ की गाड़ी विनाश के गर्त्त में जा गिरती है।



यह एक आम धारणा है कि प्रेम के माम़ले में पुरुष ही पहल करता है स्त्री पुरुष के प्रेम को स्वीकार करने वाली होती है, क्योंकि स्त्री प्रकृति से लज्जाशील होती है परन्तु कई बार यह देखने में आता है कि कई युवक महिलाओं की उपस्थिति में अपने को बहुत परेशान-सा अनुभव करते हैं और स्त्रियों से बात करने में बहुत लज्जा तथा संकोच का अनुभव करते हैं। प्रेम में पहल करना उनके लिए हिमालय पार करने के समान हो जाता है। यदि ऐसे किसी युवक का विवाह किसी ऐसी लड़की के साथ हो जाय, जो उसके समान ही हो और यह समझ कर कि प्रेम में पहल करना तो पुरुष का ही कार्य है वह चुपचाप बैठी रहे, तो उनका गृहस्थ-जीवन सदा उस सुप्त ज्वालामुखी के मुख पर समझिए, जो किसी भी समय फट सकता है।

एक-दूसरे का अध्ययन—

ऐसी अवस्था में स्त्री को पुरुष के स्वभाव का अध्ययन करना होगा और उसके अनुसार आचरण करना होगा। कई स्त्रियाँ यौन सम्बन्ध में पति के साथ ऐसा व्यवहार करती हैं मानो वे कोई पाप कर रही हों। किसी सीमा तक उनकी लज्जा पति का कुतूहल तथा उत्सुकता बढ़ाने वाली होती है, पर हर बार उसका प्रयोग पति के प्रेम को धीरे-धीरे शांत करके पत्नी से विमुख कर देता है, तब पत्नियाँ यह शिकायत करती हैं कि पति उनसे प्रेम नहीं करते।

प्रेम का उत्तर प्रेम से ही मिलना चाहिए, लज्जा या संकोच से नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारतीय पत्नी के प्रेम में केवल कामेच्छा ही प्रधान नहीं होती, पति के लिए सम्मान, श्रद्धा आदि अनेक भाव होते हैं, परन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पत्नी के हृदय में पति के प्रति चाहे कितना ही प्रेम क्यों न हो, यदि वह पति के सामने अपने उस प्रेम का प्रदर्शन उचित रूप में नहीं कर सकेगी, तो विवाहित जीवन में आनन्द की आशा कम ही समझिए। इसका यह तात्पर्य नहीं कि प्रत्येक पत्नी अपने पति के सामने नाचती फिरे, परन्तु यह पति के स्वभाव पर निर्भर है कि पत्नी कैसा व्यवहार करे। यदि पति प्रेम व्यवहार में आगे बढ़ने वाला है, तो उसे पत्नी स्वयं उसी तरह आगे बढ़कर, उसका साथ देकर ही उसे तृप्त कर सकती है।

आधुनिक युवक प्रायः ऐसी पत्नी ही पसन्द करते हैं जो उनके प्रति अपने प्रेम का उचित प्रदर्शन कर सके। इसमें हावभाव, शृंगार, नृत्य, संगीत आदि का सीमा के अन्दर उपयोग किया जा सकता है। हो सकता है कि कई स्त्रियाँ इसको केवल वेश्याओं के अधिकार ही मानती हों पर यह उनकी भूल है। इन कार्यों की गणना चौंसठ कलाओं में की जाती है और पुराने समय के कई उदाहरण ऐसे मिलते हैं, जिनसे विदित होता है कि सद्गृहिणी का इनमें निपुण होना आवश्यक समझा जाता था। यहाँ एक बात और भी स्पष्ट कर देना उचित है कि प्रेमालाप व प्रेमालिंगन में सब कुछ केवल पति के ऊपर छोड़ देना और स्वयं निष्क्रिय पड़े रहना भी अतृप्ति तथा असन्तोष उत्पन्न करता है, जिसके बहुत बुरे परिणाम होते हैं। इसीलिए नीतिकारों ने पत्नी को उपदेश देते हुए लिखा है : 'शयनेषु रंभा'—'सोते समय वेश्या की

तरह पति को रिझाए' और यह सर्वथा ठीक है।

यौन-तृप्ति—

कई पत्नियाँ स्वभाव से प्रेम तथा यौन सम्बन्ध में उग्र होती हैं, पर उनके पति सदा ठंढे रहते हैं। ऐसे दम्पति भी कभी सुखी नहीं रह सकते। हो सकता है कि दुकान या आफिस की अथवा किसी अन्य चिंता के कारण वह पत्नी के प्रति अपने प्रेम का उचित प्रदर्शन न कर पाते हों, पर यह किसी भी दशा में उचित नहीं। पति को अपनी इच्छाओं से पूर्व अपनी जीवन-संगिनी की इच्छाओं का ध्यान रखना चाहिए। उसे अपनी हजामत, बालों तथा वस्त्रों का ध्यान रखना चाहिए। अपना स्वास्थ्य तथा शारीरिक आकर्षण सदा बनाए रखना चाहिए और यथाशक्ति यह प्रयत्न करना चाहिए कि उसके रहन-सहन अथवा व्यवहार से पत्नी को अपनी सहेलियों के सामने लज्जित न होना पड़े।

इन विषयों में पत्नी की आकांक्षाओं की पूर्ण तृप्ति होते रहना आवश्यक है। जिन आकांक्षाओं को पति पूरा न कर सके उन्हें पत्नी के सामने स्पष्ट रूप से रख देना ही उचित है। पत्नी को भी परिस्थिति समझनी चाहिए स्त्री स्वभाव से ही लज्जाशील है। उसकी लज्जा कई बार उसकी यौन अतृप्ति को प्रकट नहीं होने देती। इसका परिणाम यह होता है कि हर रात्री को पत्नी का असंतोष और क्षोभ बढ़ता जाता है और हर दिन को जरा-जरा सी बात पर पति-पत्नी के झगड़े भी बढ़ते जाते हैं। फिर एक दिन आता है कि वह सुन्दर और शरमीली पत्नी, जिसे पति बड़ी उमंग से घर में लाए थे, पति से दूर रहने की माँग कर बैठती है और उसका नारा होता है—'मुझे मायके भेज दो।'

यदि कहीं पत्नी में इतना साहस नहीं कि वह अपने हृदय का क्षोभ प्रकट कर सके, तो उसकी अतृप्त कामेच्छा हिस्टीरिया के दौरों का रूप ग्रहण कर लेती है फिर पति महाशय उसकी चिकित्सा के लिए वैद्यों तथा डाक्टरों की बेंचों की शोभा बढ़ाते हैं। अच्छा तो यह होगा कि पत्नी के स्थान पर वह स्वयं अपनी चिकित्सा कराएँ, अपने मानसिक अथवा शारीरिक रोग की खोज करें, जिसके कारण वे अपनी पत्नी को अतृप्ति की आग में तड़पता हुआ छोड़कर स्वयं नाक से बाँसुरी बजाते हुए सुख की नींद सो जाते हैं। क्या ऐसे पति को पत्नी क्षमा करेगी ? चाहे वह कुछ भी न कहे, परन्तु उसके

नाजुक दिल में जो विक्षुब्ध ज्वालामुखी जल रहा होता है, वह समय आने पर अपनी लपटों में सारे गृहस्थ-जीवन को भस्म कर देता है।

मनुष्य का जीवन संघर्षमय है। विवाह भी उसी का एक अङ्ग है और विवाहित जीवन में संघर्ष की संभावना इसलिए और भी बढ़ जाती है, क्योंकि पति-पत्नी ज्यादातर साथ-साथ समय बिताते हैं तथा एक-दूसरे की कमजोरियों और भूलों से परिचित हो जाते हैं। इस संघर्ष को गृहस्थ-जीवन से टालने का अथवा इसकी कड़ुआहट मिटाने का स्वाभाविक उपाय है प्रेम।

परन्तु क्या प्रेम चुंबन, आलिंगन आदि शारीरिक सम्बन्ध से उत्पन्न होने वाली भावनाओं का ही नाम है अथवा केवल एक-दूसरे के प्रति अपने उत्तरदायित्व को ही पूर्ण करने की भावना का नाम है ? वास्तव में प्रेम एक-दूसरे को समझने में है। एक-दूसरे की आवश्यकताओं को समझने में है और एक दूसरे के लिए कष्ट सहने में है। जहाँ आप एक-दूसरे की कमियों को समझ लेते हैं, वहाँ एक-दूसरे की खूबियों को भी समझना चाहिए और उन्हें बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन तथा सहायता देनी चाहिए।

यह कभी न समझिए कि पत्नी अथवा पति से कोई त्रुटि या भूल नहीं होगी। मनुष्य भूलों ही से बना है। मानव जो कुछ आज है वह भूलों और उनसे प्राप्त होने वाले अनुभवों का ही परिणाम है। भूलें और कमियाँ स्वाभाविक हैं, चाहे वे इतनी छोटी हों कि पत्नी दाल में नमक डालना भूल जाती है अथवा इतनी बड़ी हों कि पति महोदय दूसरी लड़कियों को घूरने में आँखों का सदुपयोग करते हैं। इन भूलों को यों ही नहीं छोड़ा जा सकता और बार-बार नहीं होने दिया जा सकता। इनको सुधारने का उपाय अवश्य ही होना चाहिए। परन्तु वह उपाय यह नहीं कि भूल पर भूल की जाए अर्थात एक-दूसरे पर लांछन लगाए जायं, एक दूसरे की निन्दा की जाय, तीन दिन तक बात न की जाय और चौथे दिन पति यह धमकी दें कि मैं सन्यासी हो जाता हूँ और गृहलक्ष्मी अपनी सिसकती आवाज में कहे कि मुझे मायके भेज दो।

इस झगड़े को दूर करने के लिए पहले यह अच्छी तरह समझ लीजिए कि मनुष्य से भूल होना स्वाभाविक है। इसलिए भूलों को क्षमा करते हुए समझौते की भावना से उनका उपाय सोचना चाहिए। एक-दूसरे को अच्छी तरह समझने का प्रयत्न कीजिए। भूल किस परिस्थिति में हुई इसे भी देखना न भूलिए। निज को भी टटोलिए, कि आपके अन्दर तो कोई कारण

नहीं जिससे दूसरे को भूल करने का अवसर मिलता हो। कोई भी उपाय आप क्यों न करें उसमें सदा समझौते की भावना का रहना अनिवार्य है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि गृहस्थ-जीवन के झगड़ों को दूर करने का एक सफल उपाय यह भी है कि दम्पति अपने मन में समझौते की भावना को सदा जीवित रखें। किसी भी झगड़े के बाद यह सोचकर कि जब पहले दूसरा बातचीत आरम्भ करेगा तभी मैं बोलूँगा, मुँह फुला लेना और अकड़ जाना समस्या को और भी बिगाड़ देता है। झगड़े के कारणों को समझते ही और झगड़ा समाप्त होते ही यथापूर्व एकदूसरे से बोलते रहना चाहिए। साथ ही पति अथवा पत्नी को इसे अपनी जीत नहीं समझनी चाहिए कि दूसर ने बोलना पहले आरम्भ किया है। झगड़े के पश्चात् होन वाला यह झूठा अभिमान विवाहित जीवन के लिए भयानक विष है, इससे सदा सावधान रहना चाहिए।

६. दुखड़ा मैं कासे कहूँ....?

स्त्री पुरुष का साथ—

जिन बहिनों ने पत्र द्वारा अपनी परेशानियाँ मुझे बतायी हैं उनसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। कई बहिनों की कहानी तो सचमुच में बहुत ही दर्दनाक है। सामाजिक कुरीतियाँ पुरुषों की डिक्टेटरशिप की भावना तथा स्त्रियों की आर्थिक समस्याओं ने नारी समाज को काफी दबाया हुआ है। वे मूक



वेदना में तड़प रही हैं। परिणाम स्वरूप अपनी माताओं और बहिनों को अत्याचार के नीचे इस प्रकार सिसकते देख उनके मन में प्रतिक्रिया की भावना प्रबल हो उठी है। अब तक स्त्रियाँ सहनशील थीं अतएव वह ढक्कन सदृश वैवाहिक जीवन की असफलताओं को ढांके हुए थीं। उससे पुरुषों की न्यूनताएँ भी छिप जाती थीं। मेरी यह सलाह है कि स्त्रियाँ बदले की भावना छोड़कर पुरुषों को ऊपर उठाने की चेष्टा करें। बिना समझे-बूझे पाश्चात्य सभ्यता की अन्धाधुन्ध नकल करना मूर्खता है। एक के लिए जो अमृत है, दूसरे के लिये वह विष हो सकता है। भारतीय दृष्टिकोण पाश्चात्य से भिन्न है। अपने देश में सनातन काल से चले आये कल्याणकारी आदर्शों को पुनर्जीवित करना हमारा कर्त्तव्य है। पुरुषों पर अगर आपका वश नहीं चलता, पर पुत्रों पर तो चलता है। पालने में ही उन्हें आदर्शों की लोरीं सुनाएँ। कन्याएँ तो आप का ही प्रतिरूप हैं, वे तो आपका अनुकरण करेंगी ही। बस नवयुग की सर्जनहार आप ही हैं। अगर प्रगतिशील ही बनना है, विद्रोह करना है, तो सद्मार्ग की ओर मुड़कर करें। अकेला पुरुष समाज अपने को असहाय पायगा। लज्जित हो, अपनी भूल समझकर वह आप से समझौता करेगा। आप भी सम्मानजनक समझौता करने में पीछे न रहें। मेल में ही गृहस्थी का कल्याण निहित है। फूट विनाशकारी है। स्त्री-पुरुष का सहयोग असम्भव को

भी सम्भव बना देगा। पुरुषों की यह भावना कि हम पुरुष हैं, स्त्रियाँ हम पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं, अतएव हम जो भी करें, सब ठीक है, गृहस्थी के लिए कल्याणकारी नहीं, पंचवटी की इन पंक्तियों में आज नारी समाज पुकार उठा है—

"नरकृत शास्त्रों के सब बन्धन,
हैं नारी ही को लेकर
अपने लिए सभी सुविधाएँ
पहिले ही कर बैठा नर!"

भक्षक नहीं रक्षक—

सच है पुरुषों ने अपनी सुविधा के लिए नियम आदर्श तथा धर्म और कर्त्तव्य के पाठ केवल स्त्रियों तक ही सीमित रखे, और अपने लिए पूर्ण स्वतन्त्रता की सुविधा बना छोड़ी। परिवर्तनशील संसार मे चाक घूमने पर जब नारियाँ प्रकाश की ओर पहुँचीं, उन्होंने प्रतिक्रियारूप में विद्रोह करना आरम्भ किया। पुरुष तो थे ही गैरजिम्मेदार अब अगर स्त्रियाँ भी ऐसी बन जायँगी तो बच्चों का क्या होगा? विनाश तो उनका है। समाज में आराजकता फैल जायगी। इसलिए पुरुष समाज से मेरा यह अनुरोध है कि अगर उनके अत्याचार के नीचे कोमलांगिनियाँ कुचली जा रही हैं, तो अपने पुरुषार्थ की आन रखने के लिये, अपने इन नन्हे बच्चों के भविष्य के कल्याण को सोचकर वे अपनी भूल को सुधारें। स्त्रियों के प्रति सहानुभूति रखें। समाज ने उन्हें स्त्री का स्वामी, अभिभावक तथा रक्षक बनाया है। रक्षक होकर भक्षक बनना भला उन्हें कैसे फबेगा? अगर घर में स्त्री की दशा एक दासी के सदृश है, तो मनुष्य स्वामी के स्थान से च्युत होकर एक दास मात्र ही रह जाता है। अगर उसने स्त्री को घर की रानी बनाया है, वह स्वयं ऊँचा उठता है और घर का राजा और पूजनीय बन जाता है।

उदार दृष्टिकोण—

कई स्त्रियाँ अपने पति के क्रोधातुर स्वभाव तथा मारपीट की आदत से बड़ी परेशान हैं। ऐसे पुरुष अपनी स्त्री को सहचरी या जीवन-संगिनी न समझकर एक संपतिमात्र समझते हैं। अपने पौरुष, धन और पदवी के गर्व में उन्होंने साध्वी, कर्त्तव्यपरायण पत्नी की कदर ही नही समझी। बड़े घमण्ड और शान के साथ वे उसके मुँह पर कह देते हैं कि तेरे से भी लाख दर्जे

अधिक सुन्दर और सुघड़ स्त्रियाँ मुझे मिल सकती है। अपने भाग्य को सराह कि मेरा-सा पति तुझे मिल गया।

ठीक है, स्त्री, खैर, नहीं मनायेगी तो जायेगी कहाँ? अगर जरा-सा भी साहस कर उसने पुरुष के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई तो चारों ओर से लांछना की आवाजें आयेंगी—"हाँ, हाँ, ठीक है, क्यों सहोगी, हिंदू कोड-बिल आ रहा है, दे देना तलाक, देखें कौन तुम्हारा गाहक मिलता है"। ऐसी बातें सुनना ही एक महिला के लिए क्या कम अपमानजनक है? सह-योग प्राप्ति की चेष्टा क्या स्त्री के लिए इतना गुरुतर अपराध है? क्या उसके कोमल तन्तुओं को काट कर पुरुष स्वयं तलाक के मुख में उसे नहीं धकेल रहा है? अतएव अनेक स्त्रियाँ जीवन के प्रति उदास हो, निरादर, अपमान, दुख, असुविधाएँ तथा अभाव को अपनी किस्मत का फैसला समझ, चुपचाप पुरुषों की धांधली सहने में ही अपनी कुशल समझती हैं।

मनमुटाव ठीक नहीं—

ऐसे अविवेकी पुरुषों से मैं यह पूछती हूँ कि क्या उन्होंने कभी यह समझने का कष्ट किया है कि इस जीत में ही उनकी हार है। वैवाहिक जीवन का सच्चा सुख, सहचरी का विश्वास, एकता, आत्मसात होने की सुखद अनुभूति और अपनत्व आदि, वे सभी खो चुके हैं। उसकी कठोरता और निर्दयता ने स्त्री के मुख पर ताला भले लगा दिया हो, पर जिस स्त्री के दुख-सुख की अनुभूति पुरुष ने नहीं की उसके हृदय तक उसकी पहुँच कैसे हो सकती है। ऐसे पुरुष की स्त्री तो घर की देखभाल करने वाली एक मैनेजर तथा उसकी विषय-वासना शान्त करने की एक साधन मात्र है। नौकर-चाकरों के सामने डाँट-डपट, बच्चों के सामने मारपीट सम्बन्धियों के सामने लांछित करके पुरुष न केवल अपनी स्त्री ही की, परन्तु साथ में अपनी ही मान-मर्यादा को मिट्टी में मिलाता है। अब इस स्थिति में नौकर-चाकर गृहिणी का कहना भला क्यों कहना मानेंगे, बच्चों पर उसका क्या डर रहेगा, सगे सम्ब-न्धियों में उसकी क्या इज्जत रहेगी? कुछ उसके मुँह पर बुरा भला कहेंगे, कुछ पीठ पीछे गृह-स्वामी की मजाक बनायेंगे। गृहस्वामी तड़पता-गरजता घर आता है। जितनी देर वह घर रहता है, सब अपनी जान की खैर मनाते हैं। बिल्ली के आने पर चूहों की जो गति होती है, वैसे ही सब इधर-उधर छिपते फिरते हैं। सब ढोंग और स्वांग रचकर वास्तविकता को छिपाने की

चेष्टा करते हैं। घर की पोलपट्टी, नौकरों की बेईमानी, बच्चों की उच्छृङ्खलता, पत्नी की लाचारी और पड़ोसियों की मजाक का भला उसे क्या पता। वह समझता है कि घर में मेरा खूब रौब है। मेरे घर की व्यवस्था एक मशीन के सदृश चल रही है। पर उसके घर से जाते ही, नौकर काम अधूरा छोड़ छूमन्तर हो जाते हैं, बच्चे माँ की उपेक्षा कर ऊधम मचाने को निकल जाते हैं और गृह-स्वामिनी बेचारी अन्दर ही अन्दर घुटती हुई, दुख के आँसू पीकर रह जाती है। वह अपनी लाचारी, अपनी असफलता, और एकाकीपन पर घुलती रहती है। बड़ी लड़की माँ की मूक वेदना समझकर, मन-ही-मन प्रण करती है कि मैं भावुकता और त्याग का पाठ नहीं पढ़ूंगी। आज मेरी माँ इसी के कारण प्रतिक्रया करने से लाचार है। मैं दृढ़ता के साथ पुरुष समाज से इस अत्याचार का बदला लूंगी। गृहस्वामी की इस मूर्खता से नई पीढ़ी की गृहस्थी में अशान्ति की नींव पड़ गई। इस प्रकार बुराई और अविवेक की कड़ी शृंखलाबद्ध होती चली जाती है।

कई पुरुष ऐसे हैं जिन में हीनता की भावना होती है, वे अपने को नवयुवक मंडली में मुकाबले में न्यून पाते हैं, अगर ऐसों का विवाह किसी रूप-गुण-संपन्न, जिन्दादिल स्त्रियों से हो जाय, तो उनका गृहस्थ-जीवन अनायास ही दुःखी हो जाता है। गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के लिए यह परम आवश्यक है कि समान रूप, गुण और कुल में विवाह हो, अन्यथा पुरुष को हीनता की भावना कचोटती रहती है। अपनी पत्नी को अपने से रूप-गुण में श्रेष्ठ पाकर, तथा बच्चों में उन गुणों के होने का श्रेय पत्नी को जाता देख, पति का मन असंतोष से भर जाता है। वह जहाँ तक होता है, उन गुणों की अवहेलना करने लगता है। यह पुरुषों की असहनशीलता है। उन्हें चाहिए कि अन्य बातों में स्त्री से श्रेष्ठतर होने की चेष्टा करें। साथ-ही-साथ गुणग्राहिकता दिखाते हुए अपनी पत्नी के गुणों की सराहना भी करें। इससे दो लाभ होंगे। स्त्री उत्साहपूर्वक उन गुणों को चरितार्थ करेगी, साथ ही साथ पुरुषों के अन्य गुणों की श्रेष्ठता को सहज ही स्वीकार कर लेगी।

पति गुरु-पद की मर्यादा को निभाये—

हमारे देश की बालिकाएँ, विवाह के बाद ही 'सेक्स' से परिचित होती हैं। इस मामले में पति ही उनके गुरु और मार्ग-प्रदर्शक होते हैं। कई पुरुष आरम्भ में अपने बल और मर्दानगी का रौब नवविवाहिता पत्नी पर

डालने के लिए विषय भोग में अति कर जाते हैं। पाँच-सात वर्ष बाद आयु की अधिकता के कारण जब पुरुष धीमा पड़ जाता है तो पत्नी की भूख बढ़ गई होती है। बस फिर स्त्री अपने पति को हारा-थका, दुर्बलता और बुढ़ापे से ग्रस्त समझ कर उनसे निराश-सी हो जाती हैं। पत्नी में 'सेक्स' के विषय में ऐसी भ्राँति उत्पन्न करने की भूल पुरुष प्राय: करते हैं। यदि वह प्रारम्भ में ही अपनी पत्नी को दाम्पत्य सुख का सुन्दर दिग्दर्शन कराये, शारीरिक मिलन के साथ ही आत्मिक मिलन का भी महत्व जता दें तो आगे जाकर इतनी गलतफ़हमी नहीं हो सकती।

पति-पत्नी की आयु में ५-७ वर्ष का अन्तर तो वांछनीय ही माना गया है। आयु, शिक्षा, साधारण ज्ञान और सामाजिक जीवन के अनुभव में पति का पत्नी से श्रेष्ठ होना स्वाभाविक ही है। अतएव इस श्रेष्ठता और गृहस्वामी होने के नाते उस पर गुरुपद का भार सहज ही आ पड़ता है। उस पद की मर्यादा निभाने की योग्यता के अभाव में पति की स्थिति बड़ी हास्यास्पद प्रतीत होने लगती है। ससुराल में सहानुभूति, मार्ग-प्रदर्शन तथा रक्षा के लिए पत्नी अपने पति का ही सहारा ढूंढ़ती है। अब यदि पति आत्मनिर्भर नहीं है, आर्थिक रूप में पराधीन है तो वह स्वामी, रक्षक, और गुरुपद के कर्त्तव्य को ठीक से निभा नहीं पायेगा। यदि नारी स्वयं को असहाय, पीड़ित तथा लाचार समझकर दु:ख सहती है तो इससे उसका आत्म-गौरव नष्ट हो जाता है। स्वेच्छा से प्रेमवश किया हुआ त्याग या सेवा से जो आनन्द व गौरव प्राप्त होता है वह किसी की दासता करने के लिए बाध्य होने से नहीं हो सकता।

किशोर दम्पति—

हमारे देश में अधिकांश नवयुवक और नवयुवतियों के लिए विवाह करना केवल इसलिए अनिवार्य समझा जाता है कि वह जवान हो गये हैं। पर सोचने की बात है कि कोई जवान हो गया है केवल इसीलिए वह विवाह के पवित्र बन्धन को निभा सकेगा या उसकी जिम्मेदारियाँ संभाल सकेगा ऐसी बात तो नहीं है। भारत में ९० प्रतिशत स्त्रियों के जीवननिर्वाह का साधन है विवाह और अधिकांश पुरुषों के पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभासने वाली, चूल्हा-चक्की, घर-बार की व्यवस्था करने वाली सखी, सहचरी और प्रेमिका की स्थान पूर्ति करने वाली है पत्नी। इसीलिए हमारे समाज

में विवाह करना आवश्यक हो जाता है। धर्म प्रधान संस्कृति होने के कारण, गृहस्थाश्रम में त्याग, सेवा, परोपकार, सदाचार का पालन करना अनिवार्य है, नहीं तो दाम्पत्य जीवन सफल नहीं हो सकता।

जब दम्पति में से एक की भी नीयत खराब हो, वह असहनीय हो उठता है। उसे अपने जीवन-साथी की तिल-सी बुराई भी ताड़ जैसी बड़ी दीखने लगती है। परिणाम-स्वरूप जो गलतियाँ और भूलें पहले हसकर टाल दी जाती थीं, जिनमें अल्हड़पन का सौंदर्य झलकता था, अब वे ही खटकने लगती हैं। पास बैठना अच्छा नहीं लगता, साथी की कोई सीख और सलाह नहीं सुहाती। इन सब के मूल में बेवफाई की नीयत छिपी रहती है। नजरें बदल जाती हैं और अपने अनाचार को छिपाने के लिए अपराधी व्यक्ति अपने बेकसूर जीवन साथी में हजार बुराइयाँ ढूंढ़ने और उसके सिर सब विफलताओं का कसूर थोपने की ताक में रहता है।



एक अनुभवी व सफल पति का कहना है कि :–

पत्नी अर्द्धांगिनी है। वह पुरुष की सबसे बड़ी दोस्त है उससे बड़ा मित्र पुरुष का और कोई नहीं हो सकता। अगर पति-पत्नी में मित्रता का भाव ही अधिकांश समय रहे, तो यह असम्भव है कि पति-पत्नी में प्रेम न बना रहे। जो पति पशु की भाँति बर्ताव करने के लिए ही विवाह करते हैं, और जिन के मन में कोई उच्च भावना नहीं रहती, उनकी अपनी पत्नी के साथ गहरी मित्रता कैसे हो सकती है ? जब आपके मन में अपवित्रता भरी है तो द्वेष, घृणा और ईर्ष्या आपको कैसे न सताये और आप कैसे न पत्नी के अन्दर पचासों दुर्गुणों की कल्पना कर बैठें ? ऐसी स्थिति में भला प्रेम कहाँ से आपके मन में आ सकता है ?

हमने अपने तजुर्बे से देख लिया है कि अगर पत्नी अच्छी हुई, तो पति काफी ऐबी रहने पर भी वह पति को कभी भी गलत रास्ते पर जाने नहीं देगी और सब दोष दबा देगी। अच्छी पत्नी का संग पाकर काम-धंधे की ओर मन दौड़ेगा। पत्नी की सहानुभूति और उत्साह से मन को बहुत बल मिलेगा। बुद्धिमान पत्नी से जितनी आत्मनिर्भरता मिलती है, उतनी और किसी से भी नहीं। पति की आँखें खुल जाती हैं और पति को पत्नी से श्रद्धा हो जाती है और श्रद्धापूर्ण प्रेम बहुत फल देता है।

जब आप और आपकी पत्नी इतने अच्छे प्रेमी हों, तो आपके बच्चे, इसमें रत्ती भर भी शक नहीं है, हीरे के टुकड़े होंगे।

आत्मनियन्त्रण—

सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करने वाले पति-पत्नी में आत्मनियन्त्रण रखने और मानव स्वभाव को समझने और मनोवैज्ञानिक रूप से समस्याएं सुलझाने की योग्यता होनी जरूरी है। यदि पति-पत्नी बात-बात पर आपस में उलझ पड़ते हैं, अपनी गलत बात को भी सही प्रमाणित करने के लिए बहस करने लगते हैं, एक दूसरे का अपमान करते हैं, एक दूसरे पर बे बात के झल्लाते है तो उनकी प्रीत की लड़ी दिन में बार-बार टूट कर कच्ची पड़ जाती है। यह माना कि जीवन भर का साथ होने के कारण कभी-कभी खटपट हो जानी स्वाभाविक है पर अक्लमन्दी इसी में है कि जब एक तेजी में हो तो दूसरा अपने पर नियन्त्रण रखे। दोनों में जो समझदार होगा वह अपनी समझदारी का प्रमाण आत्मनियन्त्रण द्वारा प्रगट करेगा। और इसे एक नैतिक जिम्मेदारी समझेगा कि शान्ति में झगड़े को मिटा दिया जाये।

पुरुषों के लिए यह लज्जा की बात है कि यदि वह 'मैं गृहस्वामी और रोटी कमाने वाला हूँ' इस भावनावश धांधली मचाते हैं। यदि घर में उनकी कोई बात काटता है या परिजन उनके आराम और सुविधा के विषय में हरदम चौकस नहीं रहते तो वह सब पर बिगड़ने लगते हैं। ऐसे व्यक्तियों के चरित्र की व्याख्या एक अनुभवी ने इस प्रकार की है।

वे चाहते हैं कि घर के सभी लोग उन्हें इज्जत की नजर से देखें, उनसे प्रेम करें और उनकी प्रशंसा बीच-बीच में करते रहें। और यदि परिवार के लोग उनकी तरफ इतना ध्यान न दे सकें, जितना कि वे चाहते हैं, तो बस वे घर भर को सुना-सुना कर यह कहने लगते हैं कि उन सब लोगों को उनका

एहसान मानना चाहिए, क्योंकि वे ही तो सबका पालन-पोषण करते हैं। वे इस तरह अपनी मेहरबानियों का ढोल पीटने लगते हैं, जैसे परिवार की सुख-शान्ति और व्यवस्था में घर के दूसरे किसी व्यक्ति का कोई हाथ ही न हो। पत्नी यदि यदा-कदा अपने मनोरंजन के लिए अपनी सहेलियों के साथ कहीं चली गयी, तो ऐसे महोदय पत्नी के लौटते ही फौरन उस पर अपनी कटु बातों के तीर बरसाने लगते हैं। वे कहने लगते हैं—"घर की तुम्हें क्या फिक्र है ! तुम तो जाओ अपनी सहेलियों के साथ मौज करो। मैं ही फालतू हूँ जो दिन भर आफिस की चक्की में पिसूँ और लौटकर घर सँभालूँ !..." आदि-आदि। पर आप अगर इनसे यह पूछ लें कि—"भाई साहब, रोज तो ऐसा होता नहीं कि आपकी पत्नी आपको छोड़ कर कहीं निकल जाती हो। एकाध दिन और वह भी आपकी सम्मति लेकर, अगर वह बेचारी कहीं निकल ही गयी, तो इतने खफा होने की क्या जरूरत है ?" तो यों समझ लीजिए कि गजब हो जायगा। ये भाई साहब अपनी बीवी को छोड़ कर (भले ही वे आपकी बहन लगती हों, या भाभी साहिबा, क्योंकि और किसी पति-पत्नी के झगड़े में बोलने तो आप जाएँगे नहीं।) आप पर ही बरस पड़ेंगे।

पुरुष की सहानुभूति—

अपने गुणों की दूसरों पर छाप डालना तथा प्रशंसा सुनना सब को प्रिय है। फिर स्त्रियाँ इसका अपवाद कैसे हो सकती हैं। अपनी स्त्री की रुचि का आप अध्ययन करें तथा उसमें सहयोग दें। संगीत, नृत्य, चित्रकारी, सामाजिक सेवा आदि कामों में अगर उसकी रुचि है, आप भी उस विषय में प्रोत्साहन दें। प्रायः देखने में आता है कि विवाह से पहले माता-पिता कन्या को कलाओं में निपुण बनाने की चेष्टा करते हैं, पर विवाह के बाद उन कलाओं के प्रति पति की उदासीनता, उनके सीखे-सिखाये हुनर को भी भुला देती हैं। पुरुषों को यह समझना चाहिए कि विवाह के पश्चात् स्त्री को अपनी हर प्रकार की उन्नति करने का सुझाव और सुविधाएँ देना उनका कर्तव्य है। पत्नी की रुचि, आदर्श तथा विचारों का मान रखते हुए अपने आदर्शों के साथ सहज सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा करनी ही बुद्धिमानी है। इसी प्रकार के आदान-प्रदान में ही तो आनन्द है। उसकी जिन्दादिली की दाद दें, प्रेम-प्रदर्शन में निपुणता प्राप्त करें, आपकी दिलजोई,

विनोदप्रियता, वाकपटुता तथा भावुकता उसकी खिल-खिल खेला को सजीव रखेगी। रोमांस और प्रेम में पुरुष को ही प्रधानता रखनी चाहिए। पत्नी



को रिझाये रखना, उसकी मादकता को बनाये रखना, पति को गौरव प्रदान करता है। घर-गृहस्थी के झंझटों, बाल-बच्चों के तकाजों और नखरों तथा सम्बन्धियों की उलझनों मे स्त्री परेशान हो जाती है। ऐसे अवसर पर अगर बुद्धिमान पति दो शब्द सहानुभूति के कह कर जरा सहयोग का रुख दिखा दे तो स्त्री की हिम्त बढ़ जाती है। वह अपने को अकेला महसूस नहीं करती। पति का आगे बढ़कर यह कहना—'अधीर मत ही, सब ठीक हो जायगा, लाओ मैं हाथ बटा लेता हूँ, मै प्रवन्ध कर दूंगा या मै निपट लूंगा', पत्नी के लिए डूबती को सहारे के सदृश प्रतीत होता है। ऐसे ही पुरुप-सिंहों की पत्नियाँ उनकी अनुपस्थित मे ऐसा कहते सुनी गई हैं—"आज वे यहाँ होते तो मिनटों में काम बन जाता। वे तो बिगड़ी बात बना लेते है। उनके यहाँ न

होने से मुझ पर यह मुसीबत आज टूट पड़ी है, उनके सामने किस का साहस था, आँखें दिखाने का ? उनके जैसा लाड़-चाव किसने करना है, अजी, उनकी बराबरी कौन कर सकता है ? वे तो बस वे ही है।"

दृढ़ कर्त्तव्य-पति—

आप पत्नी को घर में अधिकार और सुविधा दें, परन्तु अपने रिश्तेदारों के प्रति स्वयं ही जिम्मेदार बने रहें। उनके व्यवहार, आवश्यकताओं तथा शिकायतों की आप तटस्थ होकर जाँच करें। कान के कच्चे न बनें। अधिकांश पुरुषों में यह दोष होता है। विशेष कर जिस घर में विमाता का राज्य हो, पुरुष की यह दुर्बलता स्त्री के पहले बच्चों के लिए बहुत अहितकर प्रमाणित होती है। समाज इसी विषय में विमाता को दोषी ठहराता है, जब कि गृहस्वामी ही वास्तविक दोषी होता है। भला उसने अपने चरित्र में यह दुर्बलता क्यों आने ही दी कि पहली पत्नी के बच्चे जो कि एक समय पिता के गले का हार बने हुए थे, अब युवती पत्नी के कान भरने पर बुरे लगने लगें। गृहस्वामी का अपने पहले बच्चों के हकों की ओर से उदासीन हो जाना, तथा अपनी सुविधा के लिए तटस्थ रहना, उसके चरित्र की दुर्बलता है। मनुष्य स्वभाव को परखने और दृढ़ निश्चय में वह विफल रहता है। अगर वह अपने कर्त्तव्य को दृढ़ता के साथ करे तो उसकी न्यायवृत्ति और सत्यप्रियता से प्रभावित होकर विमाता भी बुराई से मुँह मोड़ लेगी !

संतति-कामना—

स्त्रियों की एक-दो विशेष दुर्बलताओं की चर्चा करना उपयुक्त होगा। वे अपनी सन्तान का हित सबसे पहले सोचती हैं। केकैयी, शकुन्तला, गांधारी आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। अगर पति सन्तान के हित की उपेक्षा कर, धन का अपव्यय चाहे, अपने पर ही करे, तो भी पत्नी उसका प्रतिरोध करेगी। अतएव पुरुष ने पहले सन्तान की आवश्यकताओं का ध्यान रखकर तब आमदनी की बचत को मनोरंजन, धर्मार्थ तथा सम्बन्धियों पर खर्च करना चाहिए।

स्त्री को सन्तान की बड़ी कामना होती है। बिना माँ बने उसे अपना नारी-जीवन विफल-सा प्रतीत होता है। इस विषय में असफलता मिलने पर प्रायः स्त्री ही दोषी मानी जाती है। परन्तु मैडिकल रिपोर्ट से यह प्रमाणित हो चुका है कि ५० प्रतिशत पुरुष भी इस असफलता के जिम्मेदार हैं।

अगर ऐसी बात हो तो पुरुष को चाहिए कि स्ववंश के किसी योग्य बच्चे को गोद ले ले। अगर गोद लेने की सुविधा न हो तो किसी गरीब सम्बन्धी के बच्चे का पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेले। इससे बच्चे का लाड़-चाव



करने का अरमान पूरा हो जायगा। सन्तान के अभाव का दोष स्त्री के मत्थे मढ़ना, उसे ताने-उलाहने देना, दूसरे विवाह की सोचना आदि बातें मूर्खता पूर्ण हैं। अन्य बच्चों में दिलचस्पी लेने से तथा पति-पत्नी में परस्पर एक समझदारी होने से, सन्तान का अभाव नहीं खटकता। किसी अभाव के कारण गृहस्थ-सुख को बिगाड़ना मूर्खता है।

परस्पर आकर्षण—

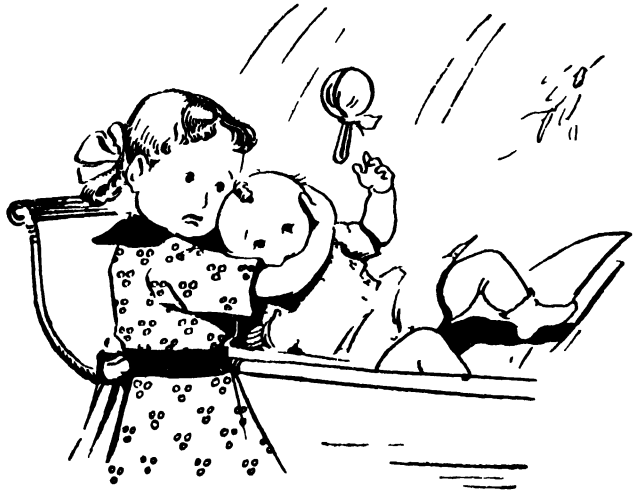
जिस प्रकार पुरुष यह कामना करते हैं कि स्त्री आकर्षण बनाये रखे, उसी प्रकार स्त्रियाँ भी यही चाहती हैं कि हमें पुरुष में आकर्षण और नवीनता दीखे। सुघड़ाई, चतुराई, वाकपटुता, बातचीत में रस, पहनने-ओढ़ने में बाँकपन तथा शिष्टाचार न केवल स्त्रियों के लिए, पर पुरुषों के लिए भी वांछनीय हैं। पति की गन्दी आदतों, बेहूदी हरकतों, चिल्लाकर जोर से हँसने और बात करने, फूहड़पन से छींकने, खखारने और डकारने से स्त्रियों को बड़ी चिढ़ है। वे इन बातों को बारीकी से परखती हैं।

नारी-स्वभाव विचित्र है। वे सहजप्राप्य वस्तु से संतुष्ट नहीं होतीं।

अतएव आप प्रेम प्रदान मे ऐसी चतुराई रखे कि पत्नी को आप के प्रेम का खजाना असीम प्रतीत हो। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब कि आप को अपनी पत्नी का प्रशसक, गुरु, प्रेमी और सच्चा मित्र बनना भी आता हो। उसको उन्नति करने के लिए प्रोत्साहन दे, उसमे आत्मविश्वास तथा आत्म-निर्भरता की भावना भरे, उसकी परेशानियो को हल करे, उसके सभी अभावो को सरल बनाने की चेष्टा करे, उसकी निराशा और असफलता की तीव्रता को सहयोग और सहानुभूति से कम करे। तब स्त्री आप की योग्यता पर मुग्ध और चकित होकर, आपका प्रेम, सहयोग, सहारा, विश्वास, भरोसा तथा सहवास अधिक-से-अधिक प्राप्त करने की चेष्टा करेगी।

दुर्व्यसन से दूर—

अगर आप गृहस्थ सुख के इच्छुक है तो ऐसा व्यसन न लगाये जिस से घर के धन, मान और सुख-शान्ति का नाश हो। जुआ, शराब, परस्त्री प्रेम, आदि ऐसे दुर्व्यसन है कि अनेक घर इन्होके कारण बर्बाद हो गये है। अगर आप इसके दण्ड से बच भी जाये, आप की सतान को इसका दुष्परिणाम



अवश्य भोगना होगा। व्यसनी मनुष्य छल, कपट, झूठ तथा टालमटोल का आसरा लेता है। पत्नी को जब उसकी इन दुर्बलताओ का पता चलता है, घर मे अशान्ति तथा असतोष छा जाता है। वह अपने कर्तव्य और धर्म से च्युत होकर घर और समाज मे लाछित तथा तिरस्कृत होता है।

जो गृहस्वामी अभिभावक न बन कर केवल जेलर बनते हैं, वे परिजनों का विश्वास और प्रेम प्राप्त नहीं कर सकते। पत्नी की उपेक्षा करके अनजाने में उसकी जगह-जगह हँसाई कराकर या उसे नीचा दिखाकर, जो पुरुष भला बनना चाहते हैं उनका गृहस्थ-जीवन कभी सुखद नहीं हो सकता। घर के मामलों में गृहिणी की ही प्रधानता रहनी चाहिए। आप अपनी सलाह और सहयोग द्वारा एक सामंजस्य स्थापित करने को तत्पर रहें। स्त्रियों में मातृत्व का प्रादुर्भाव बचपन से ही हो जाता है, वह अपने भाई बहिन, घर के पालतू पशु-पक्षी तथा गुड़ियों के प्रति उसी प्रकार का व्यवहार करती हैं जैसा अपनी माता को बच्चों के प्रति करते देखती है, अगर पुरुष अपने भोजन और देख-भाल का भार स्त्री पर छोड़ दे और इस विषय में एक बच्चे सदृश उस पर अपनी निर्भरता जता दे, तो स्त्री का मातृत्व उसके प्रति पिघल उठेगा। इसी में पुरुप की सुविधा और स्त्री का सन्तोप निहित है।

पत्नी की प्रशंसा करें—

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ प्रशंसनीय गुण होते हैं, अपने रूप, गुण तथा सेवा की प्रशंसा पति के मुख से सुनने की प्रत्येक स्त्री को लालसा होती है। चतुर पुरुष स्त्री की सुघड़ाई, सुव्यवस्था, वाक्चातुर्य, व्यवहार आदि तथा वेशभूपा आदि की प्रशंसा का अवसर पाकर बड़ाई करने से नहीं चूकते। इस से स्त्री को प्रोत्साहन मिलता है अपने पति में प्रशंसक, प्रेमी और रक्षक का समन्वय पाकर वे कृतकृत्य हो जाती हैं। पत्नी के मनोरंजन और सुविधा का ध्यान अगर पति रखता है तो पत्नी को यह भरोसा बना रहता है कि उनके रहते मुझे कोई भी तकलीफ नहीं हो सकती। मुझे कष्ट में देख उन्हें सन्ताप होगा। उनके कारण मुझे यथेष्ट सुविधा और अवकाश मिल जायगा। मेरी अड़चनों और परेशानियों को वे ही सुलझा सकते हैं। ऐसा भरोसा और विश्वास जिस पुरुष ने अपनी स्त्री को दिला दिया है वही सच्चा गृहस्वामी रक्षक तथा अभिभावक है।

अपनी मान-मर्यादा के अनुकूल स्त्री की वेशभूपा और शृङ्गार के प्रसाधन आदि जुटाने में पति को दिलचस्पी रखनी चाहिए। इस विपय में पति के सुझाव, नये ढंग तथा तरीके और रुचि का मनन करके, शृङ्गार करने में पत्नी को विशेप स्फूर्ति मिलेगी। शृंगार करना स्त्रियों का जन्मसिद्ध अधिकार है। एक अस्त-व्यस्त फुलवाड़ी को अगर आप सँवारकर क्यारियों में सजा

दें, उसका मनोहर रूप निखर आयेगा। एक स्वस्थ नारी अगर थोड़ा-बहुत सज ले तो साधारण होती हुई भी वह मनोहर प्रतीत होगी। चाहे आपकी पत्नी सुन्दर न हो, पर अगर आप उससे प्रेम करते हैं, आप उसे सुहावनी बना सकते है। पर आपकी कटोक्तियाँ, आलोचनाएँ, तथा उपेक्षा से उसकी अच्छी भली सूरत भी मुहर्रमी बन जायगी। पति का आदर स्त्री का आधा शृङ्गार और सौंदर्य है। अपनी पत्नी को उससे वंचित करके उसे रूपहीना बनाने के आप ही दोषी है। पति से आदर पाकर, स्त्री के मुख पर प्रेम और आत्मविश्वास की एक चमक आ जाती है। स्वामी को रिझाने के लिए उसके मन में बनाव-सजाव का चाव पैदा हो जाता है। एक उमंग उसके मन मे हिलोर मारने लगती है। अगर पति की उपेक्षा से स्त्री का मन ही मर गया, रूपवती युवती होते हुए भी वह आकर्षणहीन दीखने लगती है। ऐसी दशा में मन मारने का दोष पति के सिर ही आता है।

वासनारहित प्रेम—

पुरुषों के विषय में जो एक आम शिकायत सुनने में आई है वह है गर्भावस्था या किसी अन्य बीमारी में स्त्री के प्रति उनकी उपेक्षा और नीरसता। विशेष करके गर्भावस्था में स्त्री की शारीरिक और मानसिक दशा बड़ी नाजुक हो जाती है। जरा-सी थकावट होने से या मन में ठेस लगने से वे उदासी और निराशा से भर जाती हैं। ऐसी दशा में पति की ओर से ममता और दिलचस्पी में कमी उन्हें बहुत अखरती है। वे चिड़चिड़ी हो जाती हैं। अपने स्वास्थ्य की ओर बेपरवाही करने लगती हैं। पुरुष में वासनारहित प्रेम का अभाव पाकर स्त्री उसे स्वार्थी तथा निर्मोह समझने लगती है। कई पुरुष भी ऐसी नाजुक अवस्था में स्नेह और लाड़ द्वारा स्त्री को शांत रखने के बदले, उल्टा रुखाई से पेश आते है। कई तो मनबहलाव के लिए गुमराह तक हो जाते है। जब स्त्री को पुरुष के इस विश्वासघात का पता चलता है, घर में एक अशांति छा जाती है। पुरुष लज्जित होने के बदले डाँट-डपट से स्त्री को



चुप रखना चाहता है। क्रोध ईर्षा, द्वेष, शोक, आदि मनोविकारों का शिकार होकर स्त्री अपने प्रति निराश-सी हो जाती है। मानसिक आघात अधिक तीव्र होने पर गर्भपात तक होने का डर है। बच्चे तक इस मानसिक विकारों के शिकार बन जाते हैं। चंचल वृत्ति वाले इन नासमझ पुरुषों को अपनी भूल का उस समय पता चलता है, जबकि वे काफी खो चुकते हैं। घर की अशांति, स्त्री के स्वास्थ्य का नाश, बदनामी और वैवाहिक जीवन की असफलता इन सभी के मूल में उन्हीं की भूल होती है।

कई पुरुष अधिक दंभी तथा उद्दण्ड भी होते हैं। वे पर-स्त्रियों से देवर या बहनोई का नाता जोड़कर खुली मजाक करने में या अपने पूर्व रोमांसों का उल्लेख करने में लज्जा का अनुभव नहीं करते। बेचारी स्त्री इसी विश्वास पर संतोष करती है पहले जो हुआ सो हुआ, उसमें इनका अपराध नहीं था, यह तो उनके आकर्षण का दोष था कि नारियाँ उन पर मरती थीं परन्तु अब तो वह केवल मेरे ही हैं।

पर कितने पुरुष ऐसे हैं कि वे लड़कपन में अनजाने और नासमझी में हुई अपनी पत्नी की भूल को क्षमा कर देंगे ? अगर किसी रूपहीन पुरुष की अति रूपवती स्त्री के प्रति कोई पुरुष अनुग्रह दिखाये या उसकी प्रशंसा करदे, बस पत्नी कुलटा, फ्लर्ट, निर्लज्ज आदि उपाधियों के उपयुक्त समझी जाती है। भला आप एक फूल की, एक बच्चे की, एक सुन्दर चित्र की प्रशंसा करते हैं, तब तो आप प्रशंसक को बुरा नहीं कहते, एक रूपवती स्त्री की प्रशंसा करने मात्र से कोई पुरुष आपकी ईर्षा का पात्र या वह स्त्री अपराधिनी क्यों मान ली जाती है। निरर्थक सन्देह प्रेम में विष घोल देता है। आप प्राकृतिक आकर्षणों को एक स्वस्थ दृष्टिकोण से देखें। युक्तिसंगत निर्णय करने की बुद्धि रखें। अधिकांश स्त्रियाँ मानवी ही हैं देवी नहीं, संसार के प्रलोभन स्त्रियों पर भी अपना प्रभाव दिखा सकते हैं। मानव होने के नाते क्षमा और दया उन्हें भी मिलनी चाहिए। आप अभिभावक, अधिक अनुभवी है, नाव की पतवार आप ही के हाथों में है, ठीक रास्ते से नाव को खेकर ले चलें। अपने चरित्र का सुन्दर आदर्श, एक प्रेमी की-सी निपुणता, सांसारिक अनुभव और आत्मविश्वास का सहारा लिए हुए पत्नी के पथ-प्रदर्शन और रक्षक बनें। दक्षता के साथ उसे कुदृष्टि और प्रलोभनों से बचायें, दूरदर्शिता से बिगड़ती बात बना लें। गिरते हुए साथी को धक्का मत

दें, उल्टे दृढ़ता के साथ पकड़कर, सँभालते हुए, सुरक्षित स्थान पर ले चलें। नारी भीरु और ममतामयी है। बाल-बच्चे तथा गृहस्थी की ममता, समाज का डर, लोक-लाज तथा कुल का नाम ये सभी उसे बाँधे हुए हैं। वह पथभ्रष्ट तभी होती है जब पति उससे विश्वासघात करे, उसे निराधार छोड़ दे, अपमानित और तिरस्कृत कर घर से उसे निकाल दे या सुधार का मौका ही न दे।

मेरी तो यही कामना है कि घर-घर सती सीता और सावित्री हो। सभी पुरुष कवि-हृदय रखते हुए स्त्री के सतीत्व और मातृत्व को परखना जाने। उसके नारीत्व की रक्षा और सन्मान करें। स्वयं ढाल बनकर उसे आपत्तियों से बचायें और कितना कल्याणकारी हो कि पत्थर न होकर वे काष्ट हों, जिससे भवसागर से अपने साथ अपनी धर्मपत्नियों को भी पार ले जायँ। परन्तु सोचने की बात है कि कितने पुरुष ऐसे साधु-हृदय तथा आदर्शपूर्ण दृष्टिकोण रखते हैं कि नारी का रूप उसके अङ्ग में न देख कर अन्तरंग में ही अवलोकन करने की योग्यता का दावा करते हों ? स्त्री अपने जीवन की सार्थकता मातृत्व के विकास में ही समझती है। परन्तु पुरुष का सहयोग उसे मिले तभी न उसका समझना कार्यान्वित होगा। नवयुवकों से पूछिये उन्हें कैसी बीवियाँ चाहिएँ। जो अप्सरा हो, जिसमें सोलह कलायें हों, जो चहकती हुई, फड़कती हुई, बल खाती हुई हो, खट्टी भी हो, चटपटी भी हो, मीठी भी हो, नमकीन भी हो, और तिक्त भी हो यानी खटरसपूर्ण हो। जिसमें विकसित नारीत्व हो, तत्पश्चात् (विवाहोपरान्त) मातृत्व का सुन्दर विकास कर, सती सीता और राधा का आदर्श रख, वह कल्याणकारी गृहिणी बने।

नवयुग के निर्माण के लिए ऐसी नारियों की कल्पना वांछनीय और कल्याणकारी है। पर सती सीता-सी नारियों का हाथ क्या सहस्र पटरानियों के प्रभु कामी रूपलुब्धक रावण सदृश पुरुषों के हाथ में थमाना युक्तिसंगत होगा ? नारीत्व और मातृत्व को गौरवशील बनाने वाली सीता और राधा के आदर्श तक पहुँचने में असमर्थ उन महिलाओं को जिन्हें जमाने की रफ्तार अपने साथ एक स्वाभाविक ढंग से खीचे लिए जा रही है, पिछड़ी हुई कहकर जिन्हें आगे बढ़ता हुआ नवयुवक समाज बढ़े आने के लिए ललकार रहा है, क्या साधु समाज आलोचनाओं और लांछनाओं से ढक देगा ?

जमाने को किसने पकड़ा है। परिवर्तन ही जीवन है। समाज का जो आधुनिक रूप है उसी में महाजनों के पदचिन्हों का अनुकरण करने की चेष्टा

करते हुए, समयानुकूल सुधार कर, हमें कोई युक्तिसंगत हल निकालना होगा। स्त्री और पुरुष दोनों को अपनी भूलों को सुधारना पड़ेगा। सांसारिक संघर्ष का सफलतापूर्वक मुकाबिला करने के लिए, अपने सामाजिक तथा धार्मिक कर्त्तव्यों को भली प्रकार निभाने के लिए और गृहस्थ के कल्याण की रक्षा तथा संतानहित को सुरक्षित रखने के लिए, स्त्री और पुरुष दोनों ने परस्पर पूर्ण सहयोग रख, गृहस्थी के रथ को महापुरुषों की बनाई हुई लीक पर से ले जाना होगा। अन्यथा एक अरबी घोड़ा, दूसरा अड़ियल टट्टू जोतने से गाड़ी की जो दशा होती है वही दुर्दशा गृहस्थाश्रम की होगी, अगर केवल बेटियों को आदर्श का पाठ पढ़ाया गया और बेटों को प्रगति और अधिकार की ओट में उद्दण्ड छोड़ दिया गया।



एक अनुभवी भाई का यह कहना सच है कि अब वह जमाना गया जब कि पति-पत्नी को दासी समझता था और ताड़न का अधिकारी भी मानता था अब पति और पत्नी विवाहित जीवन में बराबर के हिस्सेदार हैं। यदि पति कमाकर देता है, तो पत्नी घर को ठीक तरह से चलाने और बच्चों को सँभालने में परिश्रम करती है। यदि पत्नी ने उसे रहने को घर और जीवन के अन्य साधन दिए हैं, तो उसने भी पति के लिए अपने दुलार भरे घर को सदा के लिए छोड़ दिया है। यदि पति अपनी कामेच्छा की तृप्ति पत्नी से प्राप्त

करता है तो पत्नी का भी यह स्वाभाविक अधिकार है कि वह भी पति से अपनी तृप्ति प्राप्ति करे। पति-पत्नी एक-दूसरे के मालिक या आज्ञाकारी दास नहीं, बल्कि जीवन-साथी और मित्र हैं। नारी के बिना नर आधा ही है। किसी कवि की उक्ति है—

"जो पै ये न होय रानी राधे को रकार हू तो
मेरे जानी राधेश्याम आधेश्याम रहते।"

साधु दीनबंधु एंड्रज ने भी एक बार इसी भावना से कहा था—"यदि मैं विवाह कर लेता तो मेरा जीवन अधिक पूर्ण होता"।

७. सुनहले सपनों को मिटने न दें

पत्नी ध्यान रखे—

शादी के कुछ साल बाद पति-पत्नी एक दूसरे की इतनी उपेक्षा करने लगते हैं कि वे अपने कपड़े, लते और शृङ्गार के प्रति भी उपेक्षित हो जाते हैं। विशेष करके स्त्रियाँ घर के काम-धंधों और बच्चों में ऐसी लीन रहती हैं कि यह भूल ही जाती हैं कि वे किसी की पत्नी, और प्रियतमा भी हैं। वे बाहर जायेंगी तो खूब पहन-ओढ़-कर जायेंगी, पर घर में वही फटे हाल और गंदी बनी रहेंगी। हींग और मसाले की बास भरे कपड़े, रूखे बिखरे हुए बाल, फटे हुए हाथ, चिरी हुई एड़ियाँ, ऐसी दुर्दशा बनाकर वे रात को शयन कक्षन में घुसती हैं। वर्षा के काले बादल उनके हृदय में गुदगुदी नहीं मचाते। वसन्त उनको रोमांचित नहीं करता। कहने को वे युवति हैं, पर मन उनका मरा-मरा-सा रहता है।



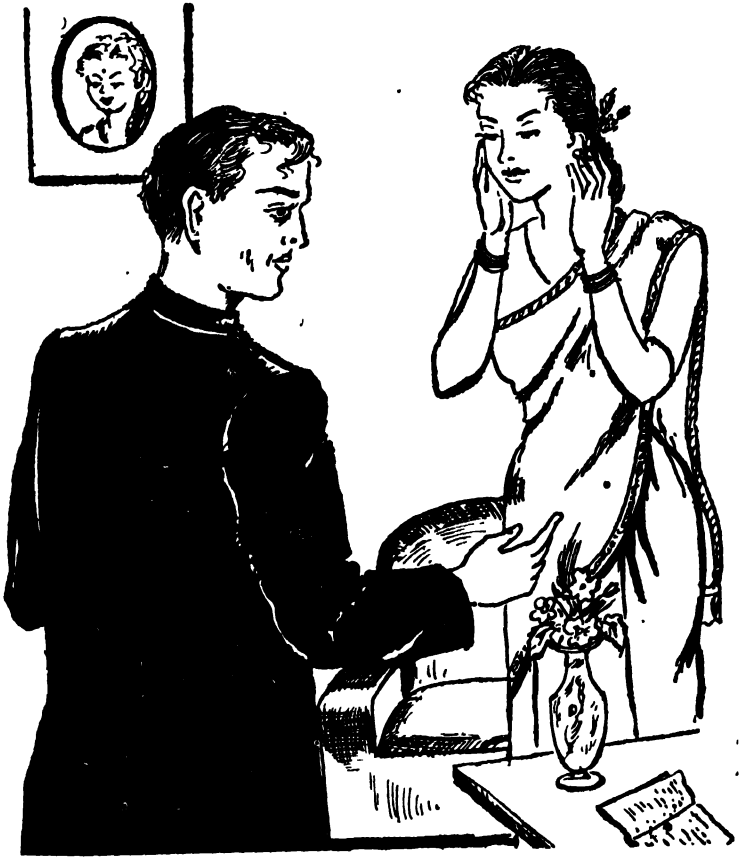
पति की रसिकता और नारी का शृङ्गार और प्रेम-प्रदर्शन दाम्पत्य-जीवन के सुनहले सपनों को सजीव रखने में बहुत हद तक समर्थ है। पति कोई पोशाक पहनकर सजता है तो आप उसकी प्रशंसा करें। उसके सजीलेपन पर कोई ठठोली करें। उसकी अच्छी बातों की दाद दें। उसकी सफलता पर प्रोत्सा-हन दें। यदि कोई फरमाइश करनी हो तो दुलार दिखाकर, प्रेम भरी अदा से अपनी इच्छा प्रकट करें। बाहर से जब पति आये तो उल्लास से भरकर दर-वाज़ा खोलें। मुसकराकर स्वागत करें। यदि कोई बोझ हाथ में हो तो थाम लें। गर्मी के दिन हों तो बैठ जाने पर पंखा करें। पानी के लिए पूछें। यदि उन्होंने जल्दी वापस जाना हो तो उनका काम जल्दी से निबटा दें। जिस चीज की उन्हें जरूरत हो वह जुटा दें। जब कि जाने की जल्दी में हों तो जाते-जाते कोई काम याद दिला कर रोकें मत। अपने काम का तकाजा मत करें।

अपने दुख-दर्द, फरमाइश की बात जब वह स्वस्थ हो कर बैठे हों तब एकान्त में कहें। पारिवारिक कठिनाइयों के लिए आप उन्हें दोष मत दें। 'हाय ! इस घर में ब्याही आ कर मेरे तो कर्म फूट गये। जब से आई हूँ कभी एक नया छल्ला भी नसीब नहीं हुआ। मेरी किस को परवाह है। एक लौंडी से भी बदतर मेरी जिन्दगी है। यहाँ आकर न कभी अच्छा खाया न पिया, आप से इस प्रकार का उलाहना सुनकर पति का मन बुझ जायगा। सोचिये तो सही पारिवारिक मुसीबतों से वह भी तो परेशान है। वह क्या नहीं चाहता कि उसकी पत्नी और बच्चे भी सुखी रहें ? अगर आप दिन भर घर के काम में पिसती हैं तो वह भी दिन भर दफ्तर या दूकान के काम में व्यस्त रहता है। आप दोनों के कन्धे पर गृहस्थी का बोझ है। उसे यदि आप हँसी-खुशी सँभाले रहेंगी तब इतना नहीं अखरेगा। आप घर की व्यवस्था और अपनी दिनचर्या में सुविधा अनुकूल परिवर्तन कर लें। जिससे आपको समय और आराम मिल सके। इससे खर्च की बचत ही होगी। घर की सफाई एक सिर दर्द मत बना लें। पति पर उठने-बैठने की ऐसी पाबन्दी भी मत लगायें कि वह बेफिक्री से घर में न रह सके। 'गलीचे पर कौन गन्दे पाँव ले आया ? तकिये पर तेल के दाग किसने डाल दिये ? चीजों की व्यवस्था किसने बिगाड़ी ? फूलदान किसने उठाकर इधर से उधर कर दिया ? मेरे तौलिये से हाथ कौन पोंछ गया ? बाल्टी में हाथ किसने डाल दिया ? गिलास पानी पीकर यहाँ कौन रख गया ?' इस प्रकार की कैफियत हर दम न माँगे। अगर घर में इस प्रकार की पाबन्दियाँ लगी रहें तो रहने का सुख ही चला जाये। पति और बच्चों के लिए वहाँ चैन से रहना दूभर हो जाये। बात-बात पर चिल्लाना, झुँझलाना ठीक नहीं है। नीति में लिखा है गृहस्थी का सबसे बड़ा सुख है—'प्रियच भार्या प्रियवादनी च' अर्थात् पत्नी ऐसी हो जो कि अपनी प्रिया हो और साथ ही वह मीठे वचन बोलने वाली हो। सुन्दर से सुन्दर स्त्री भी पति को अप्रिय लगने लगती है यदि वह जली-कटी और ताने भरी बातें सुनाती रहे। कर्कशा नारियाँ पारिवारिक कलह की जड़ हैं। ऐसी स्त्रियाँ सुन्दर होते हुए भी कुरूप प्रतीत होने लगती हैं। उनका चेहरा कठोर और अशील प्रतीत होने लगता है।

पति को एक बच्चा मत समझें--

मौके पर अपने पति का दुलार करें। क्योंकि अच्छी पत्नी माता की

तरह सेवा करने वाली, बहन की तरह शुभचिन्तक, मित्र की तरह सलाह देने वाली और प्रियतमा की तरह मनोरंजन करने वाली मानी गई है। पर आप हरदम अपने पति को एक असहाय बच्चा ही न समझें। सब मित्रमंडली के आगे आपका ऐसा कहना उचित नहीं—'हटिए आप से यह काम नहीं



सँभलेगा। लाइये मुझे दीजिये। आप तो बच्चों की तरह कर रहे हैं। मैं चली जाती हूँ तब तो मेरे बिना इनका बहुत ही बुरा हाल हो जाता है। घर-बार और खाने-पीने की कोई सुध ही नहीं रहती। हुलिया बिगड़ा रहता है।' कई स्त्रियाँ पति के हर एक काम में दखल देती हैं। मानों उनके पति को कोई अक्ल ही नहीं। उन्हें स्वतंत्र रूप से निर्णय ही करना नहीं आता। लोग उन्हें ठग लेते हैं। अगर आपको कुछ सलाह देनी हो तो पहले या बाद में

दें। या संकेत से जता दें कि निर्णय फिर बता दिया जायेगा, पर आपका सब के सामने यह कहना कि ये तो सीधे हैं इन्हें क्या पता कि क्या ठीक है और क्या गलत। लाइये मुझे दिखायें में बताऊँगी कि क्या कहना और करना चाहिए— आपकी स्त्री सुलभ-शीलता और पति के सम्मान पर चोट करती है। हमारे पड़ोस में एक बंगाली परिवार रहता था। पति उसका एक बड़ा सफल बैरिस्टर था पर पत्नी के आगे वह मेमना बने रहने में ही अपनी खैर समझता था। उसकी पत्नी थी तो बड़ी पटु-गृहिणी, पर पति पर कठोरता के साथ शासन करने के कारण उसकी बड़ी जगहँसाई होती थी। लोग उसे मजाक में बैरिस्टर साहब की 'वाईफा' कहा करते थे। सच जानिये इस प्रकार की 'वाईफा' से सब पुरुष घबराते हैं। यह तो गले पड़ा ढोल है जो बजाना पड़ता है। स्त्री अपनी लज्जा और शीलता से ही सुन्दर और प्यारी लगती है। उसकी बुद्धिमता और व्यवहार कुशलता पुरुषों को ललकारने या नीचा दिखाने के लिए नहीं होनी चाहिए। मंत्री जिस प्रकार मौका देखकर विनम्रता से राजा को सलाह देता है उसी प्रकार पति पद की मान-मर्यादा बनाये रखकर चतुर पत्नी को सचिव का कर्तव्य निभाना शोभा देता है।

पति को अपने अहसान के नीचे न दबायें—

आप अपने पति की सेवा करें, उसकी सच्ची सहचरी बनें, उसके बच्चों की आदर्श माता बनें, एक सफल गृहिणी बनें, परन्तु इन सब का अहसान पति पर लादने की कोशिश मत करें। कोई भी समझदार व्यक्ति यदि अपना फर्ज करने में सफल होता है तो यही क्या कम इनाम है ? 'तुम्हें मेरी जैसी पत्नी या तुम्हारे बच्चों को ऐसी माँ न मिली होती तो राम जाने तुम लोगों की क्या दुर्दशा होती ! अपने भाग्य को सराहो जो मैं इस घर में आ गई'। आपका इस प्रकार कहना ओछेपन का द्योतक है। आप लक्ष्मी बनकर घर में आई हैं तो इसमें आपके पति और बच्चों का भी भाग्य है। वे आप से प्रेम करते हैं। आप का सम्मान करते हैं। यही उनका कृतज्ञता ज्ञापन है। बार-बार अपने गीत गवाने मानों अपनी सेवाओं का अहसान स्वीकार कराने के लिए नाक से लकीरें निकलवाना है। यह बात नहीं कि पति देवता कभी भूल-चूक नहीं करते। अगर आपको उनकी कोई बात बुरी लगती है, आप उनकी किसी बेपरवाही से परेशान हैं तो मुँह फुलाने की जरूरत नहीं है। उन्हें ढंग से समझा कर सीधे रास्ते पर लायें।

एक समझदार बाल-सखी ने मुझे बताया कि जब वह अपने पति की अधिक सिगरेट पीने की आदत से परेशान हो जाती थीं तो उस दिन वह जरा खामोश रहती। जो बात वह पूछते उसका ठीक से जबाव देती। आदर सत्कार में और दिन से भी अधिक तत्पर रहती। बस उसके पति ताड़ जाते कि आज जरूर कोई बात है कि पत्नी के चेहरे पर रोज जैसी वह खिलावट नहीं है।

एकान्त पाकर वह पूछते—"क्यों बात क्या है ? आज चन्द्रमा मुस्करा नहीं रहा" ?

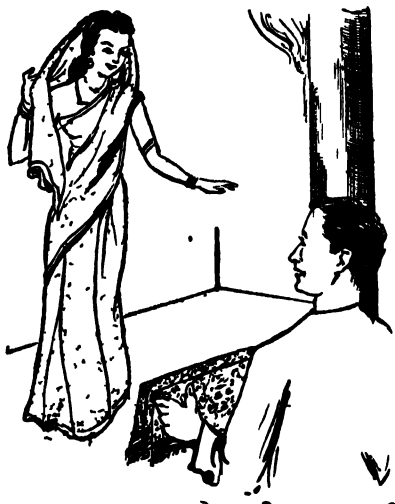
पत्नी—"आप तो हृदय में बसते हैं। फिर भी क्या आप को बताना होगा कि मुझे क्या बात अच्छी लगती है, क्या बुरी ? खैर, आप को मैं दोष क्यों दूँ ? मेरे में ही कुछ कसर है जो आपका प्रेम पाने में कमी रह गई। नहीं तो भला अपने प्रिया के लिए पति क्या अपनी आदतें नहीं सुधार सकेंगा" ?

इस प्रकार के प्रेम-भरे उपालम्भों को सुन कर पतिदेवता पानी-पानी हो जाते। आखिर को उन्हें अपनी आदत छोड़नी ही पड़ी।

श्यामलाल को घुड़दौड़ में पैसा लगाने की बुरी आदत थी। जिस दिन वह घुड़दौड़ में १००-५० फूंक आते पत्नी से छिपा नहीं रहता। उनकी पत्नी ने सत्याग्रह का एक नया तरीका निकाला। जिस महीने श्यामलाल घुड़दौड में पैसा खराब कर आते तो शेष महीने पत्नी घर में दूध और फल का खर्च चौथाई कर देती न आप दूध-फल खाती न बच्चों को देती, केवल पति को परोस देती। यह देख कर श्यामलाल ने इसका कारण पूछा। पत्नी बोली—"अब आप के घुड़दौड़ के लिए पैसे कहाँ से आयेंगे, हमारा पेट काटकर के ही तो ? अगर यही हालत बनी रही तो रोटी-कपड़ा नसीब होना भी बन्द हो जायगा। अगर कोई गृहस्थी इस प्रकार के मनोरंजन में पैसा फूंकेगा तो बालबच्चों का ही तो पेट काटेगा ? यदि आप ने हमें इसी दशा को पहुँचाना है तो फिर केवल कुछ दिन दूध-फल खाकर अपनी आदतें क्यों बिगाड़ें ?" पत्नी के कथन का श्यामलाल पर बड़ा असर पड़ा। इस सत्याग्रह का वह मुकाविला नहीं कर सका और फिर उसने रेसकोर्स की ओर भूलकर भी मुँह नहीं किया।

प्रेम का प्रदर्शन—

अपने प्रेम का प्रदर्शन करना न भूलें। कई स्त्रियाँ इसको अनावश्यक समझती है परन्तु यह उनकी भारी भूल है। हर एक व्यक्ति अपने प्रिय से यह सुनने की लालसा रखता है—'तुम मुझे प्राणो से प्यारे हो। तुम्हारे बिना मेरा जी नही लगता। तुम आँखों के सामने होते हो तो मेरा मन-मयूर नाचता रहता है। तुम्हारे चले जाने से घर सूना हो जाता है।' प्रेम का प्रदर्शन विश्वास और स्फूर्ति देता है। उससे परस्पर आकर्षण बढ़ता है। प्रेम-दृष्टि, वचन, हाव-भाव, आलिगन और चुम्बनों से प्रगट होता है। पत्नी



को पति की सब तरह से सन्तुष्टि करनी चाहिए। इस मामले मे झूठी लज्जा और सकोच या शीतलता प्रदर्शन उचित नही। पति जब परदेश जाये उसे प्रेम-पत्र लिखने चाहिएँ। कभी-कभी का वियोग भी प्रेम को तरोताजा कर देना है। उसमे तीव्रता ले आता है। परस्पर हास-परिहास, ठठोली, किसी बात को लेकर छेड़खानी तथा चिढ़ाना भी प्रेम को सजीव रखता है। कभी-कभी रूठ जाना या मना लेना भी दाम्पत्य-जीवन की चुहलबाजी है।

जीवन नें नवीनता बनाये रखे—

एकरस जीवन से मनुष्य ऊब जाता है। दिनचर्या, खानपान और पहनावे में परिवर्तन करती रहे। आठवें दिन जरूर कुछ नया प्रोग्राम बनाये। कभी बच्चों को सग लेकर घूम-फिर आयें। मित्रों के सग पिकनिक और सैर-सपाटे को निकल जाये। तीज त्यौहार पर मित्रों और सम्बन्धियों के यहाँ जाये ओर उन्हे बुलायें। अपने पति के जन्मदिन या अपने विवाह-दिवस पर विशेष आयोजन करे। ऐसे मौकों पर पति की सुविधा और रुचि का खास तौर पर ध्यान रखे। आयु के संग शरीर मे चाहे परिवर्तन आ जाये पर मनुष्य का मन बूढ़ा नही होता। बल्कि सफल दम्पति के प्रेम की चासनी गाढ़ी होकर और भी अधिक मीठी हो जाती है। अपने विवाह-दिवस के

रोज या कोई नये दूल्हा-दुलहिन को देखकर उन्हें अपने विवाह का दिन याद हो आता है। अतीत जीवन की मधुर झाँकियाँ सजीव हो उठती है। आपपति के मनोरंजन का हमेशा ध्यान रखें। उनके मनबहलाव का समय अवश्य निकाल लें। शाम को या भोजन के बाद उनके पास बैठकर प्रेम से बातचीत करें। उन्हें प्रसन्न करें।

अपने यौवन और सुन्दरता की रक्षा करें—

स्त्री का सबसे बड़ी शक्ति है उसका रूप और उसके व्यक्तित्व का आकर्षण। देखने में आता है कि विवाह से पहले युवतियाँ अपने रूप-श्रङ्गार का विशेष ध्यान रखती हैं। पर विवाह के बाद वे उस ओर से बेपरवाह हो जाती हैं। स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए यह जरूर है कि आप की दिनचर्या नियमित हो। भोजन सन्तुलित हो ताकि जरूरत से ज्यादह चर्बी आपके बदन पर न छा जाये। अधिक स्थूलता व्यक्तित्व को आकर्षण-हीन कर देती है। बदन में फुर्तीला पन नहीं रहता और औरत की चाल बिगड़ जाती है। बच्चे होने के बाद भोजन और व्यायाम सम्बन्धी असावधानी रखने से स्त्रियों की काया प्रायः भद्दी हो जाती है। यह धारणा-गलत है कि बच्चे होने के बाद यौवन चला जाता है। बात ठीक इससे उल्टी है। एक-दो बच्चों की माँ बनकर स्त्री का यौवन निखर जाता है। यदि वह सावधानी रखे तो उसका लावण्य प्रौढ़ावस्था तक बना रहता है और वृद्धावस्था में भी उसका व्यक्तित्व भव्य और आकर्षक प्रतीत होता है। कब्ज और आलस्य सौन्दर्य के दो बड़े भारी दुश्मन हैं। जो स्त्रियाँ काम नहीं करतीं, बैठे-बैठे गरिष्ठ भोजन करती हैं उन्हें अपच और कब्जियत प्रायः रहती है। इससे उनकी आँतों में एक प्रकार का विष जमा रहता है। जोकि उनके जोड़ों की स्वाभाविक लोच को नष्ट कर देता है, फलस्वरूप उनके पेट, घुटनों, ठोढ़ी के और कोहनियों पर मास चढ़ जाता है। दुर्बलता भी शरीर की कान्ति हरन कर लेती है। इस लिए यदि बीमारी या जचकी के बाद दुर्बलता बनी हुई



है तो डाक्टर को दिखाकर इलाज करवायें, पौष्टिक भोजन खायें। ब्रह्मचर्य से रहें। साफ हवा, धूप और पानी का पूरा लाभ उठायें। नियम से वायु-सेवन के लिए जायें। आम तौर पर स्त्रियाँ अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करती हैं। रोगों को छिपाये रखती हैं। नतीजा यह होता है कि रोग बढ़ कर भयंकर रूप धारण कर लेता है और शरीर कमजोर हो जाता है। रोगी और दुर्बल पत्नी पति के जीवन का सारा आनन्द और उत्साह किरकिरा करके धर देती है। उसकी सारी कमाई इलाज में ही फुंक जाती है। कई घरों में तो दाम्पत्य-जीवन इसी कारण से नीरस हो जाता है।

वेशभूषा—

हमारे देश में निम्नवर्ग के लोग भी दहेज में गोटे, सिलमे, सितारे और जरी के कपड़े देते हैं जो कि बाद में सन्दूकों में तहा करके रख दिये जाते हैं। और केवल विवाह-शादी के मौके पर पहनने के लिए उनकी तह खोली जाती है। पड़ा-पड़ा वह कपड़ा गल भी जाता है। कितना अच्छा हो कि उनके स्थान पर रोजमर्रा काम आने वाली सुरूचिपूर्ण पोशाकें दी जायँ। इससे बहू-बेटी को एक तो यह लाभ होगा कि वे उन्हें काम में ला सकेंगी, दूसरी बात घर में कपड़ों की किल्लत के कारण वह दो साड़ियों से महीना गुजारती है वह मुसीबत भी दूर हो जायगी। वेशभूषा के विषय में एक बात और ध्यान रखने योग्य है। काम-काज के समय एक रंगीन सूती साड़ी पहन ली जाय पर काम से निबटकर हाथ-मुँह भली प्रकार धोकर साफ साड़ी पहन लेनी चाहिए। हाथ पोछने हों तो तौलिये या झाड़न से पोछें। अपनी साड़ी से झाड़न का काम मत लें। कई एक बहिनों का जब कि वे घर के काम में लगी रहती हैं हुलिया बिगड़ा रहता है। यह ठीक नहीं है। सुबह उठकर मुँह-हाथ धोकर बाल सँवार लें और टीका लगायें। पति के सामने स्त्री को श्रीहीन नहीं प्रतीत होना चाहिए। उसे यह ग्लनि नहीं होनी चाहिए कि मेरी पत्नी बिना शृङ्गार के बड़ी बदसूरत प्रतीत होती है। शृङ्गार पति के सामने बैठकर करने की जरूरत नहीं। पति-पत्नी में थोड़ा-सा पर्दा, थोड़ा-सा रहस्य बने रहने में आकर्षण बना रहता है। शाम के समय पति के आफिस से लौट कर आने से पहले आप घर साफ-सुथरा रखें। बच्चों को जलपान करके तैयार कर छोड़ें और अपनी वेशभूषा भी स्वच्छ रखें। उनके आने से पहले रसोई का आधा काम निबटा लेना चाहिए, ताकि पाँच से

लेकर सात बजे तक आप को पति के संग गप्प-शप्प करने, बाहर जाने का अवकाश मिले। यह न हो कि शाम को तैयार होने में ही घन्टों लगा दें। दो मिनट में तैयार होती हूँ, ऐसा कह कर पति को घन्टा भर इन्तजार करवाये। इस से पति का मूड बिगड़ जाता है और सम्भव है वह आपसे चिढ़ भी जाये।



कहावत है—'खाये जो मन भाये, पहने जो जग भाये'। अपनी वेशभूषा में पत्नी को पति की रुचि, सामाजिक मर्यादा और अवसर का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। हर समय तड़क-भड़क कपड़े पहनना या फैशन में अन्धानुकरण करना शोभा नही देता। जो वस्तु एक पर सजती है, हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति उसमें हास्यस्पद प्रतीत हो। छोटे कद पर बड़े फूलों वाली या चौड़े बार्डर वाली साड़ी शोभा नहीं देती। जो महिलाएं लम्बी नहीं हैं उन्हें साड़ी और ब्लाऊज एक ही रंग का पहिनना चाहिए। जिनका पेट निकला हुआ है वे यदि एक इंच ऊंची एड़ी की सैन्डल पहन कर चलें तो उनकी चाल ठीक रहेगी। दिन के समय हलके रंग पहनना शोभा देता है। विशेष सजावट रात में ही अच्छी लगती है। भड़कीले-चमकीले कपड़े पहन-कर शापिंग के लिए या सिनेमा और खेल-तमाशों में जाना ठीक नहीं है। आभूषण नारी की शोभा तभी बढ़ाते हैं जब कि वे सुरूचिपूर्ण ढंग से पहने गये हों। बनारसी साड़ी, जरी का ब्लाऊज और घर में जितने जेवर हों सब लाद लेना ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई स्त्री जेवर और कपड़ों की स्टेंड बनी हुई हो। हाथ-पाँव फटे हुए, प्रत्येक हाथ में चार-चार अँगूठियाँ भरी हुईं और गले में गुलुवन्द, जंजीर और कंठी कमी हुई, कानों में चाहे वे फटे जा रहे हों पर भारी-भारी झूमके लटकाये हुए, तेल से चीक़ट सिर, दो भिन्न-भिन्न छींटों के ब्लाऊज और साड़ी पहनकर, फटी चप्पल पाँव में डाल कर, कुछ स्त्रियाँ

अपना हुलिया बिगाड़ लेती है। और जब वे किसी विवाह-शादी मे शरीक होती है तो अपने जेवरो का प्रदर्शन इस भौड़े ढग से करती है कि बस पूछिये मत। वहाँ जाकर भी उनकी आँखे आई हुई सहेलियों के जेवर-कपड़ों ही को परखती है, उनकी दिलचस्पी जेवर कपडो तक ही सीमित रहती है। ऐसी फूहड़ नारियाँ ब्याह-शादियो से लौटकर अपने पतियो को जेवर के तकाजो के मारे परेशान कर देती है। उनके पति जब अपने मित्रो की पढ़ी-लिखी पत्नियों को सफेद साड़ी मे सुरुचिपूर्ण ढग से सुसज्जित हुए और हाथो में केवल दो



चूड़ियाँ और कान में टाप्स पहनकर आकषक ढंग से बातचीत करते देखते हैं तो उन्हें अपनी पत्नियों की वेशभूषा और बातचीत की तुलना उनसे करके

बड़ी निराशा होती है।

रूप शृङ्गार का महत्त्व—

देखने में आता है कि हमारे देश में विवाह के बाद बहुत कम स्त्रियाँ इस बात का महत्त्व समझती हैं कि पति को रिझाये रखने के लिए उन्हें अपने शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक आकर्षण को बनाये रखने की जरूरत है। इस विषय में पाश्चात्य महिलाएँ बहुत सचेत हैं। वह इस बात को भली प्रकार अनुभव करने लगी है कि एक नारी के लिए उसका रूप, आकर्षण, मिठास और व्यवहार-कुशलता बहुत महत्त्व रखता है। इसी के बल पर वह परिवार और समाज में इज्जत और प्रशंसा प्राप्त करती है और अपने दाम्पत्य-जीवन को सफल बना सकती है। इस लिए वे वृद्धावस्था तक भी रूप-शृंगार के महत्त्व को भुलाती नहीं।

पर हमारे देश मे स्त्रियाँ जहाँ एक-दो बच्चों की माँ बनी कि वे अपने रूप की सार-सँभाल करना छोड़ देती हैं। सन्तुलित भोजन न करने से तथा नियमित दिनचर्या के अभाव में उनकी काया बेडौल हो जाती है। पेट निकल आता है। स्तन ढलक जाते हैं, गर्दन और कूल्हों पर अनावश्यक माँस चढ़ जाता है। इस बेपरवाही से उनकी अच्छी भली काया बेडौल बन जाती है और प्रौढ़ावस्था में ही वे बूढ़ी दीखने लगती हैं। इसका बुरा परिणाम उनके दाम्पत्य-जीवन पर भी पड़ता है। शौकीन तबियत का पुरुष जब अपने मित्र की पत्नी को सुरुचिपूर्ण ढंग से वेशभूषा धारण कर सजी-साँवरी देखता है और उस अनुरागपूर्ण आकर्षक नारी की अपनी नीरस और आकर्षणहीन पत्नी से तुलना करता है तो उसे अपना जीवन सूना लगने लगता है। वह अपनी पत्नी से कहता है—"सुनो जी! तुम लबड़धौं क्यों बनी रहती हो? अब तुम्हारा विवाह से पूर्व का रूप कहाँ चला गया ? देखो हमारे पड़ोसी मित्र की पत्नी तुम से दो साल उम्र में बड़ी ही है पर उसने अपने रूप-यौवन को अभी तक कायम रखा हुआ है। पर एक तुम हो कि न तो ठीक से बाल बनाती हो, न नहाती-धोती हो। तुम्हारे कपड़े सन्दूक में पड़े सड़ रहे हैं। प्रसाधन सामग्री इधर-उधर बिखरी फिर रही है, तुम्हें किस बात की-कमी है ? जो इस तरह का हुलिया बनाये रहती हो ?"

अपने रसिक पति की बातें सुनकर पत्नी तुनक कर ईर्ष्या से भर कर बोलती है—"हाय हाय ! अब मैं तुम्हें बुरी दीखने लगी हूँ ! पड़ोसियों

को घूरते तुम्हें शर्म नहीं आती। उसने तो शर्म बेच खाई है। चार-चार बच्चों की माँ है पर हारसिंगार लगाकर पति के संग सैर-सपाटे को निकल जाती है। भला सोचो यह क्या नारी को शोभा देता है? अब क्या मुझे ब्याह करना है जो दिन भर रूप को सँवारने में लगी रहूँ? सजने-सँवरने की उम्र गई। बच्चे हो गये। अब दिन पर दिन बूढ़े ही तो होना है"।

हमारे देश में अधिकांश स्त्रियाँ इसी प्रकार से सोचती हैं। समय से पहले ही वे बूढ़ी हो जाती हैं। वे इस बात को भूलती हैं कि रूप नारी का बड़ा भारी बल है। अब जमाना करवट बदल रहा है। लोगों की रुचि परिष्कृत हो रही है। उनकी सौन्दर्य-प्रियता बढ़ रही है। अपने पारिवारिक जीवन में सुख और सौन्दर्य बिखेरने के लिए स्त्री को अपना वाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के सौन्दर्य की रक्षा करने की चेष्टा करनी होगी। माना कि आयु का प्रभाव यौवन पर अवश्य पड़ता है परन्तु यदि आप अपने स्वास्थ्य और आकपर्ण को बनाये रखेंगी तो वृद्धावस्था में भी मधुर और भव्य प्रतीत होंगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

शारीरिक और मानसिक स्वच्छता—

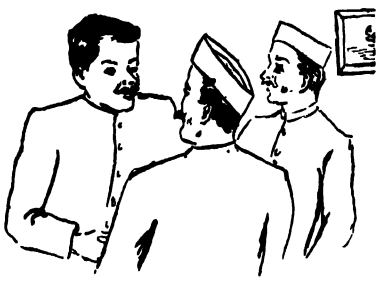
समझदार महिलायें अपने शरीर की स्वच्छता और गंध का भी विशेष ध्यान रखती हैं। यदि किसी महिला के दाँत गंदे हैं या उसका हाजमा खराब है तो उसके मुँह से बात करते समय गंध आयेगी। उसका पति उसकी ओर मुँह करके नहीं सोयेगा। याद रखें मुँह और पसीने की गंध बहुत ग्लानि पैदा करने वाली होती है। अपने सब अङ्गों को साफ़ रखें। गर्मियों के दिनों में दो बार स्नान करें। बालों को सप्ताह में दो बार धोकर रोज कंघी काढ़ें। उन्हें तेल और मैल से चीकट न कर छोड़ें। केवल ऊपर के वस्त्र ही नहीं अपितु पेटीकोट और चोली भी साफ रखें। फटे हुए और मैल से पटे हुए हाथ और पैर कुरूपता को बढ़ाते हैं। अपनी आदत भी साफ रखें। नाक साफ करके दीवार से न पोंछ दें। बच्चों को जहाँ-तहाँ न सुसुकारें। कचरा-कूड़ा यथा स्थान डालें। इधर-उधर मत थूकें-खखारें। खाते समय सुघड़ाई से खायें अपने विचारों को पवित्र रखें। मनोवेगों पर नियंन्त्रण रखें। किसी पर एक दम से न बरस पड़ें। मुँह बनाकर, हाथ नचा कर अपनी ही न हाँकती जायँ। दूसरे का दृष्टिकोण भी समझने की चेष्टा करें। किसी के विषय में अपने विचार नग्नता से मत प्रगट करें।

कई स्त्रियों को पर निन्दा सुनने-सुनाने की आदत-सी होती है। बात का बतंगड़ बनाकर दूसरों की कीर्ति पर कीचड़ उछालने में उनको आनन्द आता है। इससे दूसरों का चाहे कुछ न बिगड़े पर उनकी मानसिक कालिमा अवश्य झलक आती है इस तरह स्त्री पति की नजरों में गिर जाती है। अपनी पत्नी की यह मानसिक गन्दगी उसको कुंठित कर देती है। वह चिढ़ जाता है। ईर्ष्या, द्वेष, किसी को देखकर जलना-कुढना, षड्यन्त्र प्रियता, झूठ बोलना, अपना कसूर दूसरों के सिर मढ़ देना ये सब मानसिक अस्वस्थता के चिह्न हैं। ये स्त्री के व्यक्तित्व को घटिया किस्म का बनाते हैं और दाम्पत्य-जीवन में कटुता पैदा कर देते हैं। अनेक प्रौढ़ दम्पति एक दूसरे की व्यवहारिक और मानसिक गन्दगी से ऊबकर एक-दूसरे को प्रेम के स्थान पर घृणा करने लगते हैं। युवावस्था में जो घृणा मन में दबी छिपी पड़ी थी, प्रौढ़ावस्था में आकर वही एक-दूसरे की आलोचना और कटु शब्दों में प्रगट होने लगती है। इससे कलह बढ़ती है। पति विरक्त होकर सोचता है—'इस स्त्री को इतनी बार समझाया, इतने साल इसे मेरे साथ रहते हो गये पर यह अपनी आदतों से बाज नहीं आई।' पत्नी पछताती है—'हाय! जब मैं जवान थी, तब मेरी अच्छी-बुरी सब आदतें इन्हें भाती थीं, पर अब मैं फूहड़, नासमझ, संकुचित हृदया बन गई। अब पता चला कि इनका प्रेम झूठा था।'

क्योंकि पत्नी गृहलक्ष्मी है, वह परिवार का मेरु दण्ड है। उसी की चेष्टा से परिवार में सुख-शान्ति और बरकत रहती है, इसलिए उसका सर्वांग सुन्दर होना जरूरी है। अपने विचारों, वृतियों और चेष्टाओं से परिवार को शिवं, सुन्दरं और सत्यं की पावन गंगा लहरी से सींच कर नारी दाम्पत्य और पारिवारिक जीवन को सफल बनाती है।

८. जरा साजन को भी सुनो

हमारे देश में अधिकांश स्त्रियों की भरण-पोषण की समस्या विवाह द्वारा ही हल होती है। विवाह ही मानों उनका 'कैरियर' होता है। अब इस



कैरियर को सफल बनाने के लिए, स्वयं को सफल गृहिणी, आदर्श माता और सच्ची सहचरी प्रमाणित करने के लिए कितनी बहनें सच्चे अर्थ में योग्यता प्राप्त करने की चेष्टा करती हैं ? सच्ची बात तो यह है कि अधिकांश बहनों को अच्छा घरबार व योग्य पति मिलते हैं रूप और पिता के धन के बल पर। पर यदि वह स्वयं में थोथी हैं तो कुछ दिनों बाद ही वह अपने फूहड़पन, बेपरवाही और नासमझी से अपने दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन में ऐसी उलझनें पैदा कर बैठती हैं जिससे न केवल उनका पर उनके पति का सुख भी किरकिरा हो जाता है।

बचपन की आदतें ऐसी जड़ पकड़ लेती हैं कि वह छुटाये नहीं छूटतीं। कहने को ये होती हैं मामूली बातें, पर नमक की तरह वे मधु के स्वाद को बिगाड़ कर रख देती हैं। यथा कोई स्त्री फिजूलखर्ची या बेपरवाह होती है तो उसका पति उसकी इन आदतों से परेशान होकर उसके हाथ में पैसा खर्चने को नहीं देता। तंग आकर घर का प्रबन्ध वह अपने हाथ में ले लेता है। इससे स्त्री की कद्र घट जाती है। बाज स्त्रियाँ समय पर काम करने का महत्व ही नहीं समझतीं, इससे उनके पति को काम पर जाने और अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करने में बड़ी परेशानी होती है। कुछ स्त्रियाँ चीजों की सार-सँभाल करने का महत्व ही नहीं ज्ञात, नतीजा यह होता है कि उनके घर में वक्त पर काम के समय कोई चीज ही नहीं मिलती। कई स्त्रियाँ अपनी बातचीत तथा पहनने-ओढ़ने में बहुत फूहड़ होती हैं इससे उनके घर वालों को काफी शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। कई बहनें अपने कर्कशा स्वभाव के कारण घर की शान्ति नष्ट कर देती हैं।

अपनी गृहस्थी को ठीक से चलाने के लिए पुरुष स्त्री का सहारा ढूंढ़ना है। स्त्री का यह कर्तव्य है कि वह पुरुष की रुचि सुविधा और आराम का पूरा-पूरा ध्यान रखे। उसकी मेहनत की कमाई को सार्थक करे। उसके घर की व्यवस्था ठीक से करे। उसके बच्चों का पालन-पोषण इस सुन्दर ढंग से करे कि पुरुष पर उसकी योग्यता की छाप बैठ जाये। यदि स्त्री पुरुष के प्रेम और सहयोग को सेवा, सहनशक्ति और त्याग से प्राप्त करने की चेष्टा करती है तो पुरुष उसका दास बन जाता है। जो महिलाएँ लड़-झगड़ कर, घर में कलह मचा कर, छल-फरेब और रौब डाल कर पति को जीतना चाहती हैं वह भारी भूल करती हैं। ऐसी पत्नी के आगे पति चाहे लाचारी में हार मान भी ले, पर मन ही मन वह उससे कतराता और दूर ही रहना चाहता है।

ऐसी समस्यापूर्ण स्त्रियाँ परिवार के लिए सिर दर्द बन जाती हैं। इस विषय में कुछ भुक्त-भोगी भाइयों ने मुझे पत्र लिखे हैं। कुछ समस्यापूर्ण पत्नियों के व्यवहार का मैं नीचे उल्लेख करती हूँ।

एक भाई लिखते हैं—'मुझे यह सूचित करते बड़ा दुःख होता है कि मेरी पत्नी में चोरी करने की बड़ी बुरी आदत है। वह एक रईस घर की लड़की है। उनके पीहर का मकान एक मोहल्ले में है। बचपन से ही अपने चटोरपन को सन्तुष्ट करने की उन्हें बहुत सुविधा मिलती रही। माता और बड़ी बहिनों का दृष्टान्त उनके सामने था। खोंमचे वालों को बिठाकर दो-चार रुपये की चाट खाना और खिलाना तो उनके लिए मामूली बात है। पर मैं बचपन से ही बाजार की बनी चीजों से नफरत करता रहा हूँ। विवाह के पश्चात् श्रीमती जी की लत और भी जोर पकड़ गई, क्योंकि मैं आरम्भ में अपनी सारी तनख्वाह तीन सौ रुपया उनके हाथ ही थमा देता था। जब मैं अकेला था तब सौ रुपये में मजे में गुजारा हो जाता था, दो सौ बचा लेता, पर उनके आने पर तीन सौ रुपये में महीना चलाना कठिन हो गया। जब मुझे उनके चटोरपन का पता चला, घर का खर्च मैं खुद करने लगा, बस उन्होंने मेरी जेब से पैसे चुराने शुरू किये। यहीं तक सीमा होती तब भी खैर थी। पर जो मेहमान हमारे यहाँ आकर ठहरते, उनके बटुओं की भी सफाई होने लगी। यात्रा में, सभा में, किसी के घर जहाँ भी उन्हें मौका मिलता हाथ सफाई करने से न चूकतीं। रिश्तेदारों में हमारा घर बदनाम हो गया। कई बार मुझे

अपनी श्रीमती की इस हरकत के कारण बहुत शर्मिन्दगी उठानी पड़ी है। जब इस बात की शिकायत उनके माँ-बाप से की तब बेटी के सिखाये जाने पर उन्होंने उल्टा मुझे ही बदनाम किया कि 'यह डिक्टेटर है, कंजूस है, पैसे-पैसे दमड़ी-दमड़ी को तरसाता है। मेरा जीवन ऐसा दुःखी बन गया है कि शादी करके पछता रहा हूँ'।

सच है सुनने में इस भाई की कहानी चाहे अजीब लगती हो परन्तु जिसके पाँव में जूता काटता है वही जानता है कि दर्द किधर है। अगर चौकीदार ही चोर बन जाय तो खजाना सुरक्षित कैसे रह सकता है ? जब स्त्री ही पैसे चुरा-चुरा कर फिजूलखर्ची करने लगेगी तो भला गृहस्थी की व्यवस्था कैसे बनी रह सकती है ? मितव्ययता, सुगृहिणी का प्रशंसनीय गुण है। जिस स्त्री में इसका अभाव है वह कभी भी एक सफल गृहिणी नहीं बन सकती। उसके कारण गृहस्थी की आर्थिक दशा हमेशा शोचनीय बनी रहेगी धनोपार्जन करने की अपेक्षा धन का सद्व्यय करने में अधिक बुद्धि व चतुराई की आवश्यकता है।

अपनी माताओं को छुटपन में छल-कपट और छिपाव-दुराव करते देख लड़कियों में भी चोरी की वृत्ति आ जाती है। ऐसी तो अनेक बहनें मिलेंगी जो पति को घर के हिसाब का ब्योरा देते समय कई झूठे-सच्चे खर्च गिना देती हैं। कई बहनें घर की रसद बेचकर पैसे बटोरती हैं और इस प्रकार संचित धन को पीहर जाकर जेवर और कपड़े बनाने में खर्च कर देती हैं। पूछे जाने पर यह बहाना बनाते उन्हें देर नहीं लगती कि अमुक जेवर व कपड़े मुझे पीहर से मिले हैं। उनके बच्चे भी अपनी माताओं को इस कुसंस्कार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। बड़े होकर वे भी चोरी करना सीख जाते हैं। विद्यार्थी जीवन में झूठा-सच्चा हिसाब देकर बाप से अधिक पैसा मँगाने की उनकी आदत-सी पड़ जाती है। इस छल-फरेब के परिणामस्वरूप उनमें कई दुर्व्यसन भी पड़ जाते हैं।

कई फैशनेबुल स्त्रियों को शापिंग करने का बड़ा शौक होता है। पर धनाभाव के कारण वे गिरह से पैसे खर्चने में अपने को असमर्थ पाकर हाथ-सफाई की तरकीब ढूँढ़ निकालती हैं। अपने बाल-बच्चों को लेकर वे किसी शानदार दूकान में घुस जाती हैं जबकि स्वयं दूकान में इधर-उधर चक्कर काट भाव आदि पूछती हैं। बच्चों को जो-जो चीजें उड़ानी होती हैं उसकी

ताक में बैठा देती हैं। जब तक दूकानदार बातों में उलझा रहता है बच्चे हाथों-हाथ चीज पार कर निकल जाते हैं। शाम को जब वे घर वापस लौटती हैं, जूते, छाते, ऊन तथा अन्य फैंमी चीजों का काफी ढेर उनके साथ होता है। किस प्रकार से हाथ सफाई में किस-किसने क्या-क्या सहयोग दिया इस विषय की मनोरंजक चर्चा के साथ उन चीजों का बाकायदा बटवारा होता है। ऐसी शिकायतें और घटनाएँ बड़े-बड़े शहरों में अधिक सुनने में आती हैं। बड़ी दुकानों में जहाँ शो-रूम खूब सजा हुआ हो दूकानदार किधर-किधर नजर रखे? फिर फैशनेबिल श्रीमतियों को बिना प्रमाण कुछ कहने का दुस्साहस भी कौन कर सकता है? अगर बच्चा पकड़ा गया तो दिखावटी डाँट-डपट देकर उसे वहाँ से भगा दिया। परन्तु किसी ने सच कहा है कि सौ दिन चोर का एक दिन साह का। बदकिस्मती से जब ऐसी महिलाएँ रंगे हाथों पकड़ी जाती हैं, पति के नाम और इज्ज़त सब पर पानी फिर जाता है।

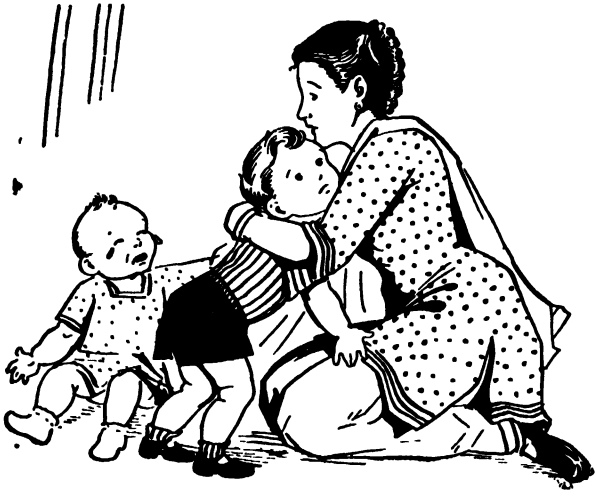


कई स्त्रियों की आदत छल-कपट की बड़ी होती है। अपराध होने पर अपनी गलती को भविष्य में सुधारने की चेष्टा न करके, वे अपनी भूल को पहले तो छिपाने की कोशिश करेंगी, झूठ बोलकर, हेर-फेर कर वह दूसरे के मथ्थे दोष मँढ़ेंगी। अगर उसमें भी असफल रहीं तो व्यर्थ की बहस करके जो उन्होंने किया उसे ठीक प्रमाणित करने की चेष्टा करेंगी। काम में व्यस्त तथा सत्यप्रिय पुरुष के लिए स्त्री का यह व्यवहार असहनीय हो उठता है। बार-बार समझाने पर भी जब वह हठ नहीं छोड़ती तब वह क्रोधित होकर डाँट-डपट पर उतारू हो जाता है। बस कई घरों में ऐसी नासमझी ही कलह और अशान्ति का कारण बन जाती है।

कई स्त्रियाँ ईर्ष्या-डाह की बड़ी शिकार होती हैं। अगर किसी ऐसे घर में जहाँ सास-फूहड़ और ननद अशिक्षित हो, कोई सुन्दर-सुघड़ बहू आ

जाये और ससुर तथा अड़ोस-पड़ोस उसकी प्रशंसा करने लगें, बस सास और ननद की ईर्ष्या और डाह का पारावार नहीं रहता। स्वयं तरक्की करने के बदले वे उन गुणों को ही दूषती हैं। 'भाड़ चूल्हे में गई पढ़ाई-लिखाई, धोबी के कपड़े तक तो पूरे लिखने नहीं आते, जब से बहुरिया ने कपड़े लिखने शुरू किये हैं, मेरे कई कपड़े खो गये हैं'। 'खाना क्या पकायेगी, दो घन्टे तो रसोई की सफाई ही करती रहती हैं। सजा हुआ गोदाम हो, पूरी सफाई हो तब तो रसोई बनाती है। हर एक बात में नखरा। जैसे इतने दिन हम ढोर की तरह ही रहते आये थे?' 'बड़ा रूप का घमंड है, ऐसा तो रंग है मानों कोढ़ फूटा हो।' अपने पलँग पर किसी को पाँव रखकर बैठने नहीं देती। मानो घर के बच्चे सब अछूत हों।'

इसी प्रकार कई बहुएँ भी निन्दा चुगली करके अपनी ईर्ष्या और डाह प्रगट करती हैं। परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने की एक प्रतिस्पर्धा-सी मच जाती है। सास-बहू, देवरानी-जिठानी, ननद-भावज आदि की लड़ाई घर-घर सुनने को मिलती है। ढोंग, आडम्बर द्वारा प्रत्येक स्त्री यह प्रमाणित करने की चेष्टा करती है कि मैं ही सब काम करती हूँ, अन्य सब निकम्मी बैठी रहती हैं। मैं नेक हूँ वह बुरी है। दोष उसका है, मैं निर्दोष हूँ। वह बड़ी चालाक चंट है, मैं भोली-भाली हूँ इसीलिए मैं घाटे में हूँ। इस लड़ाई-झगड़े, और पारिवारिक कलह का प्रभाव पड़ता है घर के पुरुषों पर। दिन भर के थके हारे वे दोनों ओर की कलह की कहानी सुनते-सुनते परेशान हो जाते हैं। घर में धन-दौलत, सुख-सम्पत्ति सब कुछ होते हुए भी परिजनों के लिए घर में अशान्ति मची रहती है। बच्चों पर भी इस अस्वस्थ



वातावरण का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। वे डरे हुए, सहमे हुए रहते हैं। यदि बच्चे बड़े हुए तो दलबंदी में वे भी जुट जाते हैं और उनके चरित्र पर भी इन कुसंस्कारों की छाप पड़ती है। बस घर में जिसकी चलती है, वह छल-बल से दूसरे को बदनाम करने की चेष्टा में जुट जाता है। एक दूसरे पर झूठी तोहमतें लगाई जाती हैं, बहकाने, फुसलाने गुमराह होने और हिंसा के दोषारोपण किये जाते हैं। झूठे षड्यंत्र रचे जाते हैं। गुप्त मंत्रणाएँ होती हैं। कई घरों में स्त्री-चरित्र के रहस्यों की अनेक विचित्र कहानियाँ और घटनाएँ सुनने में आती हैं। बिचारे पुरुष प्रायः कठपुतली गवर्नमेंट से चुपचाप कहे अनुसार हाँ में हाँ मिलाते रहते है, अथवा गृहस्थी को सब दुखों का मूल समझ भगोड़े वीर सदृश इस संघर्ष से दूर ही रहने की चेष्टा करते हैं। पारिवारिक कलह के कारण बहुत से पुरुष इतने अधिक परेशान हैं कि उनके लिए घर सुख और आराम का ठौर न होकर एक मुसीबत की जगह बनी रहती है। तङ्ग आकर वह अधिकांश समय घर से बाहर रहने की चेष्टा करते हैं। अपने मित्रों के सुखद पारिवारिक जीवन की झाँकी देखकर उन्हें अपनी किस्मत पर अफसोस होता है। तंग आकर ऐसे कई पुरुष व्यसनों के शिकार हो जाते हैं।

अनेक स्त्रियाँ ऐसी हैं जो अपनी भूल समझती हैं, पर उन्नति करने में अपने को असमर्थ पाती हैं। अपनी भूल स्वीकार कर, सुधार करने का वह यत्न ही नहीं करती। न्यूनताएँ उनके स्वभाव का अंग हो गई हैं। अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए वे सहानुभूति प्राप्त करने के लिए काल्पनिक बीमारी, अथवा दुर्बलता का ढोंग रचती हैं। किसी कर्तव्यशील, चतुर स्त्री की गृह-व्यवस्था और रूप-गुण की प्रशंसा सुन वे खिसिया सी जाती हैं और अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए सिर दर्द का बहाना, हिस्टेरिया का फिट आदि का ढोंग रच लेती हैं। परिजनों को आनन्द-प्रमोद मनाते देख और स्वयं को उनकी खिल-खिल रेलपेला में भाग लेने में अयोग्य समझ, वे अपने पति का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए, अचानक बीमारी का दौरा अथवा कोई चिन्ता का बहाना ढूंढ़ निकालेंगी। उनकी गैर जिम्मेदारी की आलोचना करने लगेंगी। ऐसी 'मूडी' स्त्रियों का रुख कब अचानक बिगड़ जाय इसका पता लगाना कठिन है। और प्रायः वह ऐसे अवसर पर ही बिगड़ता है, जब कि सबका आनन्द किरकिरा करके उन्हें सन्तोष मिल सके।

कई पुरुष अपनी पत्नी की निर्मूल सन्देह करने की आदत से बड़े तङ्ग-

आये हुए हैं। ऐसी स्त्रियों ने अपने पति को किसी महिला की रूप, गुण,कर्म, बोलचाल, पहिनावा, स्वभाव, योग्यता किसी बात की भी प्रशंसा करते सुना नहीं कि बस उनके मन में सन्देह का विष उफनने लगता है। वह प्रशंसित निरपराधिन स्त्री उनके कोप और आलोचना की अकारण ही पात्र बन जाती है और वे उसकी हरेक बात सन्देह की दृष्टि से देखने लगती हैं।

कोई भी व्यक्ति दबाव डाल कर, बराबर परेशान करके, अथवा लड़-झगड़ या तकाजा करके प्रेम नहीं प्राप्त कर सकता। प्रेम के विषय में पूर्ण विश्वास और धीरता रखनी चाहिए। जिस में गुण और सुन्दर स्वभाव का आकर्षण होगा उसके प्रति प्रेम बना रहना स्वाभाविक ही है। छिपकर किसी की बात सुनना, दूसरों के जरिये यह पता लगाने की चेष्टा करना कि वे कहाँ गये थे, जिसके पास गये थे, किस लिए गये थे आदि बातें बड़ी नादानी की हैं और खिन्नता पैदा करने वाली हैं। कई स्त्रियों को ऐसी आदत होती है कि अपने पति के पत्रों को वह चोरी से पढ़ती हैं। सबूत पकड़ने के लिए उनकी जेबों और दराजों की तलाशी लेने से भी नहीं चूकतीं।

इस विषय में हमारे पड़ोस में एक मजेदार घटना हुई। हमारे घर के पास ही मेरी दूर की एक भावज रहती थीं। एक दिन शाम को जब हम अचानक पहुँचे, तो देखते क्या हैं, भामीजान का रोने के बाद मुँह तन्दूर सा लाल हो रहा है और थके-मांदे भैया बिना कुछ खाये-पिये उदास बैठे हैं। भाई से इस कोप-लीला का कारण पूछा तो वह खिन्न से हो कर बोले—"मुझे तो कुछ पता नहीं चलता, आधे घन्टे से आया हुआ हूँ बस चुपचाप यह तमाशा देख रहा हूँ। अच्छा-भला छोड़ गया था रोने-गाने का कुछ कारण मेरी तो समझ में आ नहीं रहा है।



बहुत मिन्नत-आरजू के बाद मानलीला का जो कारण पता चला, वह भी मूढ़ता का एक प्रमाण ही था। भैया परसों दोपहर को दफ्तर से अपने किसी मित्र के यहाँ खाना खाने गये थे। खाना खाने के बाद उन्होंने वहाँ गन्ना चूसा। दाँत में गँडेरी का कुछ अंश फँसा रह गया था, उसको निकालने

के लिए उन्होंने पास की मेज पर पड़ा एक हेयर-पिन उठा लिया। दाँत कुरेदने के बाद रुमाल के लिए जेब में हाथ डाला, हेयर पिन जेब में ही छूट गया। आज दोपहर को धोबी को कपड़े देते समय भाभी साहब के हाथ वह हेयर-पिन लग गया। क्योंकि भाभी हमेशा चोटी करती है, अतएव इस हेयर-पिन का सम्बन्ध उन्होंने भैया की किसी प्रेमिका से जोड़कर सन्देह का जो विष घोला, उसके फलस्वरूप, बेवफा, बेशरम, निष्ठुर, दगाबाज, अविश्वासी आदि न जाने कितने तो टाइटिल भैया को मिले और रो-रोकर भाभी की आँखें अलग कौसंबी बनीं।

ऐसी स्त्रियों से मेरा कहना है कि प्रेम-अधिकार, लड़ने और दोहाई देने से नहीं मिलता। वह तो सहज आकर्षण और उत्तम स्वभाव से मिलता है। किसी ने ठीक कहा है—

"उत्तम स्वभाव मेरा दुश्मन का मन रिझावे
वह देखते ही कह दे, तुम प्यारे के लिये हो।"

अगर जीवन-साथी कभी प्रलोभनों की और झुकता नजर आये प्रेम के बंधनों से आप उसे और जकड़ें। आकर्षण को अधिक सजीव तथा मादक बनायें। अपने अभावों की भरसक पूर्ति करें, ताकि पुरुष मकड़ी के जाले के सदृश आपके गुणों के आकर्षण में उलझा रहे और गुमराह होने से बचा रहे। इस कला में निपुणता प्राप्त करना प्रत्येक स्त्री का कर्तव्य है। पति के गुप्त प्रेम का पता



लगाने के लिए उनके खतों को पढ़ना, छिपकर मित्रों की बातें सुनना, उनकी हरकतों और हलचलों का जानकारी के लिए खुफियागिरी करना, अथवा उनके जेबों की तलाशी लेना और अड़ोस-पड़ोस और सखी-सहेलियों से इस विषय में सहयोग प्राप्त करना, बड़ी मूर्खता है। ऐसी बातों से कभी-कभी तो लेने के देने पड़ जाते हैं। अन्य पुरुष आपकी मूर्खता, भूल और वैवाहिक जीवन की पोल-पट्टी को जानकर झूठी सहानुभूति दिखा, आपको गुमराह करने की चेष्टा करेंगे। पता लगने पर आप अपने पति का विश्वास

खो बैठेंगी। ऐसी नासमझ स्त्रियाँ ही दूसरों की बातों पर झट विश्वास कर लेती हैं। यात्रा, खेल-तमाशों में परिचित, दो-दिन के मुलाकातियों से घरोपा स्थापित कर अपनत्व दिखाने के लिए अपने घर के दुखड़ों का कच्चा चिट्ठा खोल बैठती हैं। लोगों की सहायता करनी और उन्हें नेक समझना बुरा नहीं है पर याद रखें अनावश्यक भेद खोलने और चर्चा करने की आदत अच्छी नहीं। इससे घर की इज्जत जाती है और आपका शील टूटता है।

विना सोचे-समझे नकल करना, जेवर, कपड़ों की बेहद हवस, देखा-देखी मेले-ठेलों में पैसे खर्चना नासमझी है। किसी अक्लमंद का कहना है कि अगर किसी चीज की अधिक मशहूरी चाहिए, आप किसी स्त्री को उसे एक बार सस्ती बेचदें, उसकी देखा-देखी आपकी चीज मोहल्ले की सभी स्त्रियाँ खरीद लेंगी। कोई चीज खरीदने से पहले अपनी जेब, आवश्यकता तथा समयानुकूलता अवश्य देखें। पहनना-ओढ़ना तथा खाना-पीना और रस्मो-रिवाज अपनी आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और मानमर्यादा के अनुसार ही शोभा देते हैं। इस विषय में भेड़चाल चरितार्थ करना भूल है।

शिक्षा का यह अभिप्राय है कि पढ़-लिखकर स्त्रियाँ स्वयं को एक कर्तव्यपरायणा गृहिणी, और सहचरी बनाकर गृहस्थ-जीवन को सफलता-पूर्वक निभा सकें। पति जो उपार्जन करे, उसका सदुपयोग करें, उसे जीवन में प्रगति करने की प्रेरणा दें, अपने बाल-बच्चों की देख-भाल और पालन-पोषण ममता और कर्तव्य-निष्ठा की भावना रखकर करें। समाज में अपनी मर्यादा बनाकर स्वयं को यथाशक्ति उपयोगी नागरिक प्रमाणित करें। घरेलू जीवन की स्वतंत्रता की ओट में, किसी भी नागरिक को गृह-कलह और बुरे उदाहरण द्वारा सामाजिक गंदगी फैलाने का अधिकार नहीं है। स्त्रियों के ऊपर इस विषय की विशेष जिम्मेदारी है। अगर माता सच्चरित्रा है तो सन्तान सहज ही पवित्र आचरण वाली बन जाएगी। माता के चरित्र की छाप सन्तान पर पड़नी अवश्यम्भावी है। इसीलिए नीतिशास्त्र में कहा है कि व्यभिचारणी माता के सदृश सन्तान का अहित करने वाली और कोई नहीं है। चरित्र-हीनता में निर्लज्जता, कर्तव्यहीनता, आलस, कलह-प्रियता, द्वेष-भाव, हिंसा-भावना, संकुचित मनोवृत्ति, छल-कपट, झूठ आदि सभी दोष आते हैं। इन सभी दुर्गुणों से चरित्र का पतन होता है।

स्त्रियों के प्रति असहनशीलता की भी बड़ी शिकायत सुनने में आई

है। कटोक्ति द्वारा वे शत्रुता और कलह को बढ़ाने की प्रायः मूर्खता करती हैं। अगर वे छिद्रान्वेषी वृत्ति को छोड़ कर, अनधिकार चेष्टा न करें, तो गृहस्थी की शान्ति बहुत कुछ बनी रहे। बात बढ़ाकर कहना, चुगलखोरी करना, किसी की गुप्त बात का भण्डाफोड़ करना ऐसी मूर्खता करके स्त्रियाँ प्रायः मुसीबत खड़ी कर लेती है। जो स्त्रियाँ निठल्ली रहती हैं वे ही ऐसे कारनामों के लिए प्रसिद्ध होती है। देखने में आया है कि जहाँ चार



स्त्रियाँ मिलेंगी या तो व एक दूसर की निन्दा, चुगली और किसी का बहू-बेटी की आलोचना करेगी अथवा जेवर-कपड़ों की बातें छेड़ बैठेंगी। अगर किसी नेक स्त्री ने कोई रचनात्मक कार्य करने के लिए कोई नारी-मण्डल या क्लब खोला है, वहाँ भी उसके साथ सहयोग देने के बदले, उल्टा उसकी आलोचना कर बना काम बिगाड़ेंगी। इसलिए स्त्रियाँ रचनात्मक कार्य में तथा सामाजिक सेवा में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त ही नहीं कर पाती। ऐसी नुकताचीनी करने वाली प्रायः वे ही स्त्रियाँ होती हैं जिनमें हीनता की भावना होती और जो दूसरे की प्रशंसा सुन और सफलता देख ईर्ष्या से जलती रहती हैं। उनके आपस के इन झगड़ों का कुफल पुरुषों को भी भोगना पड़ता है, उनके ऐसे कुसंस्कार, असहनशीलता तथा कलह-प्रियता के कारण वे भी अपनी मित्र-मण्डली में अप्रिय बन जाते है। व्यवहार में ऐसी असावधानी से ही घर की शान्ति नष्ट होती है।

इसके अतिरिक्त स्त्रियों में विनोद-प्रियता का अभाव भी बहुत खलता है। अगर आप के चरित्र में बल है, आप स्वयं को धोखा नहीं देतीं, दूसरों के

मान सम्मान का ध्यान रखती है, तब किसी की मजाल नहीं कि आपसे अश्लील मजाक कर जाय। अगर कोई बेहूदा आदमी आस्तीन में छिपा साँप निकल भी जाय, आप समय रहते उसके दाँत उखाड़ डालें। याद रखें इस विषय में अपने पति से छिपाव-दुराव नहीं होना चाहिए, यही आप की सच्चाई का प्रमाण है। साँच को आँच नहीं आती। किसी की झूँठी सहानुभूति या डरावे में आकर अगर आपने पति से छिपाव-दुराव रखा फिर आप का आत्मबल चला जायगा। अपने पति से छिपाकर किसी से घनिष्टता न बढ़ायें। पति-पत्नी दो शरीर होते हुए भी आत्म और मन के एक हों तभी प्रेम का सुखद, मोहक तथा अमरत्व रूप का अनुभव होता है। विचार की विषमता, आदर्शों तथा ध्येय की विभिन्नता आदि इस अमृत में विसर्जन हो जाते हैं। आप दोनों एक दूसरे के पूरक बन जायें। अगर आप की किसी न्यूनता अथवा भूल से आप के जीवन-संगी को झुँझलाहट या लज्जा उत्पन्न होती है, तो यह भी प्रेम की अधिकता का प्रमाण ही समझें। हम उसी व्यक्ति के लिए परेशान होते हैं और उसी की कमियों को देख लज्जित होते हैं जिससे हमें प्रेम हो, जिस के लिए हमें हमदर्दी हो, जिसे हम अपना समझते हों। फिर भला अपने हितैषी की बात का बुरा क्यों मानना ? मन में गिठान क्यों पड़ने देनी ? कही-सुनी हो जानी स्वाभाविक है, पर मन में मैल इकट्ठा न होने पाये, नहीं तो नासूर बन जायगा।

बहिनों से मेरा यही कहना है कि पति स्त्री का सर्वस्व है, प्रेमी है, मित्र है, अभिभावक है, रक्षक है, शृंगार और सौभाग्य है, गुरु और पथ-प्रदर्शक भी है, अगर उसने कुछ ज्यादती भी की है, वह गलती पर भी है, आप मानवी से देवी बन उसको क्षमा करें। सोचें यह वह व्यक्ति है जिसको आपने सहर्ष अपना तन और मन समर्पण किया है। जिससे प्रेम और आदर पाकर आप आनन्द-विभोर हो उठी हैं। वह आप के प्यारे बच्चों का बाप है। ऐसे व्यक्ति को चाहे वह अपराधी भी क्यों न हो, प्रेम का तकाजा है कि आप को क्षमा करना ही पड़ेगा। परमात्मा की सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है नारी! जो स्त्री अपने नारीत्व का अभिमान करती है वह कठोर हो ही नहीं सकती। क्षमा, दया और सेवा तथा सत्य यही उसकी चतुर्भुजा हैं। अगर किसी स्त्री की मूर्खता तथा कठोरता के कारण किसी नेक सदाचारी और कर्तव्यपरायण पति का जीवन दुखी बन रहा है, तो उस स्त्री का जीवन निष्फल है। रूप,

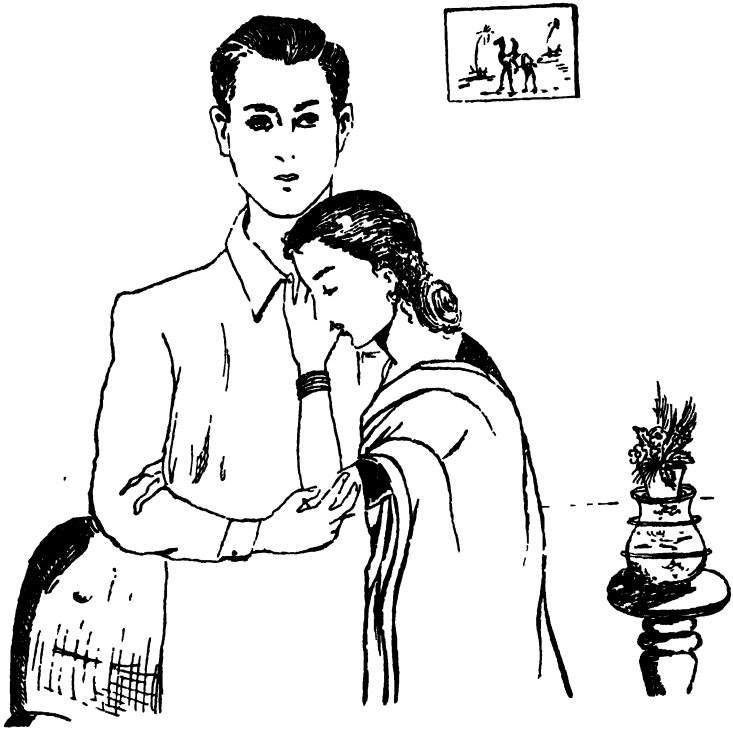
विद्या, धन तथा अधिकार पाकर भी उसके सदृश दिवालिया और कोई नहीं है। अपना नारीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व लुटाकर आज वह कंगालिन है। आजकल गृहस्थ-जीवन की कठिनाइयों और सामाजिक संघर्षों तथा महंगी की भयानकता को देखते हुए जीवनयापन दुरूह हो गया है। इस समय प्रत्येक नारी का यह कर्तव्य है कि सिंहावलोकन कर अपनी पिछली भूलों को सुधारे, भविष्य को प्रगतिशील और सुन्दर बनाये। पालने का बालक कल का नागरिक है, उसका उत्तरदायित्व उसी पर है। गृहस्थी में निराशा, अभाव, तथा असफलता नारी के ही प्रयत्न से दूर होगी। कर्तव्य की ओर नारी के जागरूक होने से ही गृहस्थाश्रम प्रगतिशील होगा।

महात्मा गांधी के शब्दों में—'स्त्री पुरुष की अपेक्षा किसी भी रूप में कम श्रेणी की नहीं है, परन्तु केवल इसी कारणवश वह यदि पुरुषों की समानता करना चाहेगी तो उसे अपने स्त्रीत्व को भूलना पड़ेगा। स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी करना यानी प्रकृति द्वारा वितरित मातृत्व के कर्तव्य को भूलना नहीं चाहिए।

स्त्री का जीवन त्याग पर उभरा है। वह जितने सहज रूप से त्याग कर सकती है, उतना पुरुष नहीं कर सकता है। कौमार्य अवस्था में वह माँ-बाप की सेवा करती है, तरुण अवस्था में पति की और वृद्धाकाल में पुत्रों की। सेवाधर्म में स्त्री की बराबरी कोई पुरुष नहीं कर सकता। कल के आने वाले संसार में—भविष्य में—स्त्री ही अधिक प्रभावशाली होगी।'

६. हार में जीत

पुरुष के जीवन में हलचल मचाने वाली, उसको पद-पद पर प्रेरणा देने वाली और महान बनाने वाली शक्ति यदि कोई है तो वह है स्त्री। पुरुष



और स्त्री पारस्परिक उदारता और सहनशीलता से अपने परिवार को स्वर्ग बना सकते हैं। देखा गया है कि नारी वधू बनने से पहले स्वप्नों की दुनियां में खोई रहती है और विवाह के कुछ साल बाद ही वह ऊब जाती है, आए दिन उसकी अनबन रहा करती है और वह घर को नरक बना देती है।

विवाह के कुछ साल बाद ही जब प्रेम का प्रवाह एक स्थिर गति से चलने लगता है तो अधिकांश पत्नियाँ प्रेम के तीव्र खुमार के दूर होने पर निराशा से भर जातो हैं। उनके मन की उमंगें एक असन्तोष और खिन्नता

से दब-सी जाती हैं। और उनकी यह आम शिकायत होती है कि पुरुष में प्रेम की सजीवता और आवेग क्षणिक है। अब उनमें पहले की-सी बात नहीं, वे मुझ से कुछ रूठे से, कुछ खिचे से रहते हे। अब उनका वह चुहलपन और भावुकता सब सपना हो गई। मेरी ओर ध्यान देने की भी उन्हें फुरसत नहीं मेरे मन में ठेस लगा कर उन्हें इसका ख्याल भी नहीं होता। कभी-कभी बिना बात अचानक रुखाई से उत्तर दे देते हे। बस वे तो कह कर जल्दी में चले जाते हैं, चाहे यहाँ हम दिन भर भुनते रहें। हमारा दर्द किसने समझा है ? जिन्दगी बहुत दु:खी है, इत्यादि शिकायतें पत्नी की इकट्ठी होती जाती हैं। शनैः-शनैः यह मैल इकट्ठा होकर एक नासूर बन जाता है और बीबीजान का नाजुक मिजाज सप्त सुर पर ऐसा तन जाता है कि मामूली-सी बात को वह बतंगड़ बनाकर लड़ने लगती है। अपनी भूल और गलती के कारण ही उनकी हार होती है, बस वे रोना शुरू कर देती हैं।

आये दिन घरों में इस प्रकार की अनबन हो जाती है। भावुक और नाजुक-मिजाज स्त्रियाँ यह भूल जाती है कि पुरुष वास्तविकता को अधिक पसन्द करता है। हमेशा सुनहले सपनों में खोये रहना उसके लिए सम्भव नहीं। उसके सामने रोटी की समस्या है। वह विवाह करके केवल खेलने के लिए एक गुड़िया ही नहीं लाया, परन्तु दु:ख-सुख समझने वाली एक सहचरी लाया है। वह आपसे यह उम्मीद करता है कि सामाजिक मान-मर्यादा बनाये रखने में आप उसे पूरा सहयोग दें। एक चतुर गृहिणी के कर्तव्य को समझती हुई, गृहस्थी की चिन्ताओं से उसे दूर रखें। एक मित्र के सदृश उचित परामर्श देकर उसी की मुसीबतों को सुलझायें। एक प्रेमिका के सदृश उसका मनोरंजन करें। पुरुष विवाह करता है, जीवन को सुखी और सफल बनाने के लिए। पत्नी और बाल-बच्चों के सुख के लिए यथाशक्ति वह अधिक उपार्जन करने की चेष्टा करता है। पत्नी की आर्थिक समस्या को वह भरपूर सरल बनाता है। पति से बाल-बच्चे, घरबार, धन-दौलत, मान-मर्यादा पाकर भी अगर स्त्री अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं होती तो फिर भला वैवाहिक जीवन कैसे सुखी हो सकता है ?

आप अपनी ही शिकायतों की गठरी अकारण ही बड़ी करती जा रही हैं, क्या कभी उनके मलाल को समझने की भी चेष्टा की है ? गृहस्थ-जीवन को सुखी बनाने का श्रेय और कटु बनाने का दोष दोनों ही पत्नी को जाते हैं।

अगर कर्तव्यशील पुरुष का जीवन दुखी है, तो इससे अधिक लज्जा की बात स्त्री के लिए हो ही नहीं सकती। ऐसी असफल गृहिणी अपने मन को टटोले कि क्या उसने अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर अपने स्वामी के हृदय को ठेस नहीं पहुँचाई ? क्या उसने इस बात को जानने को चेष्टा की है, कि उसके पति की रुचि किस ओर है ? उनको किस ढंग से पहिनना, ओढ़ना, बातचीत करना पसन्द है ? उनका आदर्श तथा उद्देश्य क्या है ? वे किस विचारधारा के हैं ? कोनसा रङ्ग, कौनसा कवि या लेखक, किस प्रकार की सजावट, कौन सी कला, कैसा भोजन आदि उन्हें रुचिकर है ?

आप यह याद रखें पुरुष स्त्रियों से अधिक मितभाषी, साथ ही एक हद तक अधिक उदार हैं। वे एक दो बार तो संकेत से आपकी गलती जता देते हैं। अगर आप समझदार हैं आपको दोबारा कहलाने का मौका ही नहीं आयेगा। दो-चार बार कहने पर भी जब वे देखते हैं कि आप उनके दृष्टि-कोण को समझने की चेष्टा न कर असहयोग ही दिखाती हैं, तब सम्भव है कि वे कहना ही छोड़ दें, फलस्वरूप मनमुटाव बढ़ता जायगा।

आप सोचती हैं, मै इतना काम करती हूँ दिन भर सेवा में तत्पर रहती हूँ, यहाँ तक उनके आने पर भी मेरा काम खत्म नहीं हो पाता, तिस पर भी उनकी त्योरियाँ चढ़ी रहती हैं, भला क्यों ? चौबीस घन्टे गृह-कार्य में व्यस्तता आपके लिए गौरव की बात होगी परन्तु उनको इससे चिढ़ है। वे जब आपके काम को इतना बिखरा हुआ देखते हैं, इसके विपरीत अपनी मित्र की पत्नी को जिसके पास दो बच्चे भी हैं गृहकार्य को समय पर समाप्त कर पति के संग घूमते-फिरते देख, आपके पति आपको फूहड़ और निकम्मी गृहिणी समझते हैं। हरेक काम का समय होता है, अति हरेक बात की बुरी होती है।

शाम को जब कभी भी पति के मित्र सपत्नीक आपके यहाँ आते हैं, आप गुसलखाने या चौके में अस्त-व्यस्त वेशभूषा में बैठी रहें फिर भला आपको वहाँ बुलाने में उन्हें संकोच नहीं होगा ? बार-बार समझाने पर भी आप में सुथराई और सुघड़ाई का अभाव देख वे आप से विरक्त हो जायँगे। आपके फूहड़पने से उनकी मान-मर्यादा भंग होती है। आपके पास सन्दूकों कपड़े भरे पड़े हैं, उन्होंने शृंगार-साधन जुटाने में कोई कसर नहीं रखी, फिर भी आपकी वेशभूषा में हमेशा न्यूनता रहे, फिर भला उन्हें आप से मलाल

क्यों न होगा ? वे आपको देख नाक-भौं क्यों न सिकोड़ेंगे ?

आपकी नाजुक मिजाजी—

बात यहीं नहीं खत्म होती, आपका नाजुक मिजाज़ एक और कांटा है जो हमेशा चुभता रहता है। किसी ने जरा भी मजाक की कि आप तुनक पड़ीं। गुणहीना स्त्रियों में हीनता की भावना उन्हें ऐसी कचोटती रहती है कि किसी की प्रशंसा सुनी नहीं कि उनका मन मुरझा जाता है। चाहे कोई आम चर्चा ही क्यों न हो, वे उसे अपने ऊपर किया गया आक्षेप ही समझेंगी। विनोद-प्रियता की भावना का अभाव होने के कारण न तो उन्हें अपनी ही बात-चीत से किसी का मनोरंजन करना आता है, और न ही दूसरे के खिल-खिल-खेला की वे दाद ही दे सकती हैं। उनकी कुढ़न और नाजुक-मिजाजी पति के जीवन को नीरस बना देती है। बेचारा पति क्या करे ? अगर चुप रहे तो उसे निष्ठुर, नीरस, उदासीन आदि उपाधियाँ मिलती हैं अगर कुछ बोले तो उल्टा मन-मुटाव बढ़ता है।

इसलिए देखने में आया है कि कई एक विवाह इस नाजुक-मिजाजी के कारण भी असफल हो जाते हैं। प्रसन्न-वदना, सुहासिनी, प्रियवादिनी, पत्नी एक सफल सहचरी है, अगर यह बात प्रत्येक स्त्री की समझ में आ जाय तो उसकी बहुत सी न्यूनताएँ छिप जायँ।

कई स्त्रियाँ अपने पति के विषय में दस जनों के बीच में यह बात बड़े गौरव से कहती हैं कि अगर मैं उनकी देखभाल न करूँ तो मालूम नहीं इनका क्या हो, ये बड़े वैसे बेपरवाह, गन्दे, भुलक्कड़, सुस्त, भोले न जाने क्या-क्या हैं।

मनुष्य छुटपन में माँ की, कुछ बड़े होकर बहिन की, और विवाह के बाद स्त्री की देख-भाल का सहारा ढूंढ़ता है। समझदार स्त्री इसे अपना सहज कर्त्तव्य समझती है और इस में उसे आनन्द आता है। सुविधा पाकर मनुष्य अपनी देखभाल का भार स्त्री पर ही डाल देता है, पर उसका यह मतलब कभी नहीं है कि मनुष्य अपनी देखभाल करने में नितान्त असमर्थ है। अगर स्त्री सेवाभाव को छोड़ कर एक सुधारक का रुख अख्तियार करती है तो यह उसकी भूल है। आदतें मनुष्य का स्वभाव बन जाती हैं। उनका छोड़ना जरा कठिन हो जाता है। विशेषकरके बड़े होकर। अगर स्त्री कड़ाई के साथ पुरुष की किसी आदत की आलोचना करती है तो वह अपने कार्य में

कभी भी सफल नहीं हो सकती। पुरुष सोचता है यह मेरा घर है कि कोई रिफार्मेटरी स्कूल। वह अपनी बुराइयों को छोड़ने के बदले प्रतिक्रिया रूप और दृढ़ता से उन्हें दोहराता है। स्त्री खिसियानी होकर उसकी उपेक्षा करती है। बस घर की शान्ति नष्ट होते देर नहीं लगती।

चतुर पत्नी आलोचना न करके बुरी टेव को छुड़वाने में सहयोग देती है, उनकी चेष्टाओं को देख प्रशंसा से प्रोत्साहित करती है। आप माता-सी उदारता दिखाएँ, पुरुष एक बालक के सदृश अपने बल और अधिकार को भूल आपका आज्ञाकारी बन जायगा। समय देखकर उनकी बेपरवाही पर



आप एक प्रेम-भरी झुँझलाहट दिखायें, एक मीठी झिड़की देकर पीठ पर थपकी मार, एक अदा के साथ निहोरा देकर कहें—'जाओ हमें अच्छा नहीं

लगता, इतनी बार कहा आप फिर भी समझते नहीं, भला इतना भी क्या परेशान करना ! जाने दो अब नहीं कहेंगे।' आपका इतना कहना होगा कि वह लपककर आप को मनाने उठेंगे—'अच्छा अब की माफ करदो। अब फिर ऐसा नही करूँगा। भूल हो गयी, आदि खुशामद-भरी वाक्यों की झड़ी लगा देंगे। आँख में आँख डालकर आप कहें—'अच्छा याद रखना अब के माफी नहीं मिलेगी।' और हँसकर चाहे चपतियाँ तक दें पर मजाल है वे गुस्सा कर जावें। सच मानिये पुरुषसिंह इसी प्रकार काबू आते हैं।

यथाशक्ति चेष्टा करने पर भी अगर आप से कोई काम बिगड़ गया है अथवा कोई कमी रह गई है, उस समय अगर उनको क्रोध आ जाय, आप विनम्र हो जायँ, अपराध को छिपाने के लिए छल-कपट के जाल में मत उलझें न ही अपनी बात को सच प्रमाणित करने के लिए बहस करें, इन बातों को पुरुष पसन्द नहीं करते। गलत रास्ता पकड़ अपने आपको और भी मुसीबतों में डाल देंगी।

अपने पति की बुराई और परस्पर के लड़ाई-झगड़ों की चर्चा अपने सगे-सोई या सहेलियों में करना भूल है। पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का आना सन्देह उत्पन्न करता है। अगर कभी समझाने-बुझाने का अवसर आये भी, तो ऐसे व्यक्ति को बीच में डालना चाहिए जिस पर आप दोनों को भरोसा हो, जो आपका सच्चा हितैषी हो, साथ ही पूर्ण सहानुभूति और पक्षपात रहित ढंग से दिया हुआ जिसका निर्णय आप दोनों को मान्य हो। अधिकांश स्त्रियाँ कानों की कच्ची और सिखावट में जल्द आने वाली होती हैं। कई मूर्ख पड़ोसिनें दूसरों के घर में लड़ाई कराने का समय ही ढूँढ़ती रहती हैं। अगर आपके पति को आपका किसी से मिलना-जुलना नागवार लगता है, उनसे छिपकर अपनी मेल-मुलाकात मत बढ़ाएँ। आप दूसरे पुरुषों की प्रशंसा करते समय अपने पति की उनसे तुलना करके पति को हीन प्रमाणित करने की भूल कभी भी न करें। इससे पति के आत्म-सम्मान को चोट पहुँचती है। और संभव है उस मनुष्य की ओर आपका आकर्षण उन्हें फूटी आँख न सुहाये और अकारण सन्देह उत्पन्न करदे।

इस प्रकार जब आपके प्रति किसी अन्य स्त्री के गुण और रूप की प्रशंसा करते हैं, आप ईर्ष्यालु न हो उठें, इसके विपरीत प्रतियोगिता की भावना लेकर आप भी उन गुणों में श्रेष्ठ होने की चेष्टा करें। स्त्री का

आकर्षण उसका स्त्रीत्व है। अपनी सुरूचिपूर्ण वेशभूषा, वाक्यपटुता, गृहकार्य-दक्षता, शीलता, विनम्रता, सच्चरिता और उदारता आदि गुणों से एक मामूली स्त्री भी एक रूपगर्विता नारी को प्रतियोगिता में सहज ही पछाड़ सकती है। कोई स्त्री अति रूपवती होकर साथ ही सोलह कला पूर्ण भी हो ऐसे उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं। रूप नाशवान है जब कि गुण स्थायी है। रूप का आकर्षण क्षणिक है। पति गुणों का दास हो जाता है। आप उसके बच्चों की माँ हैं, उसके दुख-सुख की साथी हैं, एक ही पथ



के आप दोनों पथिक हैं। उसकी जीवन-संगिनी, गृहिणी, सखी, इज्जत, आबरू सभी कुछ आप ही हैं, यह बात कोई भी समझदार पुरुष नहीं भूल सकता। एक कर्तव्यपरायणा, सुरूचिपूर्ण मधुर-भाषिणी स्त्री का अपमान कोई पति करता है, उसके सदृश संसार में कोई अभागा नहीं। यह मूर्खता घर पर आई लक्ष्मी के अपमान करने के सदृश है।

प्रेम-प्रदर्शन में आप निपुणता प्राप्त करें प्रत्येक माता का कर्तव्य है कि इस विषय में अपनी कन्या को पटु बनाए। अवसर पर पुरुष प्रदर्शन का

इच्छुक है। अपने हाव-भाव, स्पर्श और वाक्यपटुता से पति के मन को रिझाए रखें। जिससे आपके रमणी-रूप का सुन्दर आकर्षण उसे विमुग्ध करने में सफल हो सके और आपके प्रेम की तीव्रता, उष्णता, आवेग और स्निग्धता उसे जिन्दा-दिली का अनुभव कराती रहे। जीवन में नवीनता, रोचकता तथा आकर्षण बनाये रखना आपका कर्तव्य है। मनुष्य कभी भी वृद्धत्व और उदासीनता अनुभव नहीं करता, अगर पत्नी उसके सुनहले सपनों को साकार बनाये रखने में क्रियाशील रहे। उसे उन्नति पथ की ओर बढ़ाने के लिए स्फूर्ति और उत्साह की आवश्यकता है। वह आप से इस प्रोत्साहन की उम्मीद करता है। सफल और ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक, चित्रकार, कलाकार वैज्ञानिक, राजनैतिक, त्यागी और वीर देशभक्त जितनी भी महान विभूतियाँ संसार में हुई हैं उन सब के जीवन में उनकी पत्नी अथवा प्रेमिका का प्रोत्साहन और प्रशंसा ही प्रेरणा का स्रोत रहा है। प्रत्येक मनुष्य प्रशंसा का भूखा है। अगर पुरुष को अपनी स्त्री या प्रेमिका से यह संजीवनी मिल जाय तो उसकी परम संतुष्टि होती है, इस बात को एक चतुर पत्नी हमेशा याद रखती है।

भगवान ने स्त्रियों को एक तात्कालिक निर्णय करने और किसी स्थिति को भाँप कर उसके अनुसार ही काम करने की सहज-बुद्धि और व्यावहारिक कुशलता दी है, अगर कोई नारी इसका सदुपयोग करना जानती है तो उसे अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने में कभी भी असुविधा नहीं होगी। जब कभी आपका मन असंतोष और असफलता की कटुता से भर जाय, आप विवेक का सहारा लेकर दूरदर्शिता से काम लें। अपनी समस्याओं को शान्त मन से सुलझाने की चेष्टा करें। सारा दोष पति के सिर डाल देने से कठिनाइयाँ हल नहीं होंगी। अपने व्यवहार की भी पक्षपातरहित आलोचना करें, अगर आप की ओर से न्यूनता हो, कर्तव्य की उपेक्षा की गई हो तो अपनी भूल को सुधारें। मनुष्य के जीवन में सीखने और तरक्की करने की सर्वदा गुंजाइश रहती है।

जब दो दिल मिले हुए हों, परस्पर का मलाल एक दूसरे से छिपा नहीं रहता। मैं क्यों मनाऊँ, कसूर तो उनका है, हमेशा ही दबाते रहते हैं, यह अन्याय है, आदि दलील देकर चाहे आप अपना संतोष कर लें, पर इससे बात सुलझती नहीं है। अगर आप का दोष नहीं है तब भी आप ही

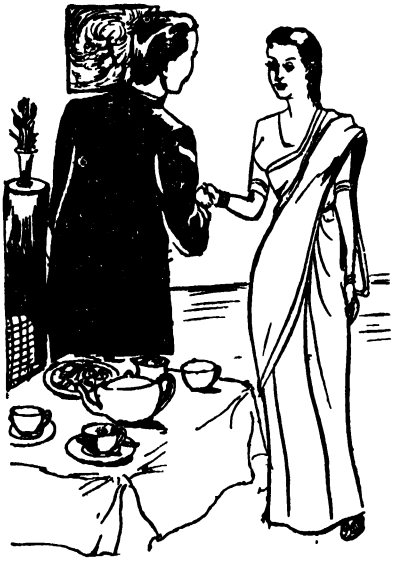
दब जायँ। क्षमाशील ही महान होता है, नमनेवाली और लचकवाली डाली ही दो टूक हो जाने से बच जाती है। स्त्री भगवान की सृष्टि की सर्वोत्तम रचना क्यों मानी गई है—अपने गौरवशाली त्याग और सेवा के कारण ही। आप बच्चों की माँ हैं, गृहिणी हैं, यही आपका सबसे बड़ा बल और अधिकार का आधार है।

अगर वे अकारण ही रूठ गये हैं तब भी आप ही मना लें। जब उनका कोप शान्त हो चुका हो, प्रतिक्रिया रूप मन खिन्नता और अवसाद से भरा हो, उस समय बहस करनी व्यर्थ है। भोजन करने के पश्चात्, दिनभर के काम की चिन्ताओं से मुक्त जब वह स्वस्थ चित्त हों, आपने अपनी सेवाओं से उन्हें उस दिन विशेष रूप से अनुगृहीत किया हो, आप सस्नेह उनकी पीठ पर एक हाथ रखकर और दूसरे हाथ में उनका हाथ लेकर आँखों में प्रेम और करुणा भर पूछें—'क्यों रूठ गये साजन' ?

वे उलाहना देंगे, आप को अपराधी प्रमाणित करने की चेष्टा करेंगे, आप सुनें, चुपचाप सुनें। जब वे सब कुछ कह कर अपना दिल हलका कर चुके हों, संक्षेप में अपना दृष्टिकोण उनके सामने विनम्रता से रखें। सच मानिये, चाहे दोनों में से विजय किसी की भी हो, परन्तु समझदार व्यक्ति सच्चाई के आगे घुटने टेके बिना नहीं रह सकता। रात की निस्तब्धता में, तारों की छाया में, दो दिलों में गाँठ देर तक पड़ी नहीं रह सकती। आप की चतुराई से यह मान-लीला कुछ देर में ही समाप्त हो जायगी। नये आवेश और प्रफुल्लता से भर कर दो दिल फिर जल्दी ही मिल जायेंगे। इसी मेल-मिलाप और समझदारी में ही गृहस्थी का कल्याण व्याप्त है। आपकी विन-म्रता चतुराई गृहस्थी की सुख-शान्ति बनाये रखने में समर्थ होगी। याद रखें आपकी इस सुन्दर हार में ही जीत छिपी है।

१०. साँझ भई घर आवो, साजन !

पुरुष स्त्री को घरबार और समाज में मान-सम्मान देता है। पत्नी न केवल उसकी कमाई पर, परन्तु उस पर भी आधिपत्य जमा लेती है। पति



उसे अपने दिल की रानी, अपने बच्चों की माँ और घर की मालकिन बनाता है। पत्नी को अपना सब कुछ सौंपकर बदले में वह भी तो कुछ चाहता है, इसको समझने और उस अनुसार करने की चेष्टा करना प्रत्येक पत्नी का धर्म और कर्त्तव्य है। पुरुष दिन भर दफ्तर, कारखाने अथवा दूकान या खेत पर काम करता है। मानसिक एवं शारीरिक परिश्रम करके वह थककर चूर-चूर हो जाता है। जीवन-संघर्ष में उसे मान-अपमान सभी सहना पड़ता है। अपने अफसर की डाँट और धाँधली को वह इसलिए चुपचाप सह जाता है कि उसकी नौकरी पर ही उसके बच्चों का पालन-पोषण और स्त्री का आराम निर्भर है।

थका-हारा, मानसिक चिन्ताओं से चूर मनुष्य जब घर की ओर कदम उठाता है, वह सोचता है—'मेरा घर! मेरा प्यारा घर, जहाँ मेरी प्यारी पत्नी जो मेरे आराम का ध्यान रखती है, मेरे लिए इन्तजार कर रही होगी। दिन भर के कामों से वह भी परेशान होगी, पर अपनी तकलीफ भूलकर, बच्चों को किसी प्रकार सन्तुष्ट कर, फुसलाकर बाहर भेज, द्वार पर खड़ी वह मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। मुझे देखते ही वह मधुर मुस्कान से मेरा स्वागत करेगी। हाथ बढ़ाकर मेरे छाते और फाइलों के बंडल को लेकर एक ओर रख देगी। पंखा लेकर झलेगी, मेरी थकावट को दूर करने के उपाय करेगी। चाय-पानी पीने के पश्चात्, जब मैं कुछ स्वस्थ होऊंगा और दिन भर

की आप बीती कहानी सुनाऊँगा, वह सहानुभूति और सान्त्वना देकर, मुझे



ढाढ़स बँधायेगी, एक सच्चे मित्र के सदृश कुछ सलाह भी देगी, अन्त में हास्यविनोद में चिन्ता के ये बादल उड़ जायँगे और फिर.....'

माता की-सी सेवा, बहिन की-सी कल्याण-कामना, और मित्र की-सी सहानुभूति तथा प्रेमिका की सी लग्न जिस पुरुष को अपनी स्त्री में मिल जाय उसके भाग्य पर तो संसार के सभी सौभाग्य न्यौछावर हैं। स्त्री का आकर्षण पुरुष के लिए बहुत तीव्र है। बड़े-बड़े ज्ञानी और पराक्रमी तथा धनी इसके आगे हार मान गये हैं। अगर यह आकर्षण अपनी पत्नी की ओर हो तो गृहस्थ-जीवन स्वर्ग सदृश है। अगर नारी अपने आकर्षण का सदुपयोग करना जानती है, वह पुरुष को अपने रूप-गुणों से विमोहित कर अपना दास बना सकती है। पुरुष पर विजय प्राप्त करने का सहज तरीका है, सेवा और प्रेम से उसे अपने वश में करना। आप इस की परीक्षा कर देखें। वह हाथ बाँधे आपकी कृपा की चाहना करेगा। पर यह याद रखें पुरुष आपको दासी के रूप में नहीं स्वामिनी के रूप में देखने का इच्छुक है। आप दिन भर घर के धंधों में ही फँसी हुई या बाल-बच्चों में ही उलझी हुई हैं, आपकी वेशभूषा आपके फूहड़पन का द्योतक बन, आपके स्वाभाविक रूप को भी छिपाये हुए हैं, आपके कपड़ों से हींग और मसालों की गंध ही आ रही है। आपको ऐसी दशा में देख पति एक उसांस खींचकर एक ओर मुँह फेर लेगा। आपके हाथ के बने सुस्वादु भोजन को खाते समय उसके नेत्र कृतज्ञता और प्रेम का संदेश लिये आपकी ओर नहीं उठेंगे। शाम को भी आपको रसोई या बच्चों में व्यस्त देख, वह सुहावनी संध्या में भी सूनापन अनुभव करता हुआ, सड़क पर सजी हुई, मदयौवना युवतियों के साथ जाते हुए पुरुषों को देखकर उदास हो जायगा। उसे उन प्रेमी दम्पतियों के भाग्यों पर ईर्ष्या होगी। अपने अधूरे अरमान

उसे कराहते हुए लगेंगे। इस सबके लिये आप ही दोषी हैं।

क्योंकि प्रत्येक पत्नी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने पति की रुचि, आवश्यकताएँ, ढंग तथा आदर्शों को समझने की चेष्टा करे। एक पुरुष को शाम को क्लब जाना रुचिकर लगता है, जबकि दूसरे को नदी के किनारे प्राकृतिक दृश्यों की शोभा निहारने तथा पत्नी के संग घूमने में आनन्द आता है। जिस मनुष्य को दिन भर शारीरिक परिश्रम करना पड़ा है उसे शाम को जलपान करने के पश्चात एकान्त में आराम-कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ना अच्छा लगता है। चतुर गृहिणी पति के घर वापिस आने से पहिले बच्चों और घर की सफाई तथा नाश्ते का प्रबन्ध करके, अपनी वेशभूषा सुधार, बच्चों को बाहर भेज, स्वयं पति के स्वागत के लिए उत्सुक रहती है। थका-हारा पुरुष बच्चों का कोलाहल और स्त्री की शिकायतें सुनने के लिये तैयार नहीं होता। जब तक पति स्वस्थ न हो जाय, उसका रुख अनुकूल न हो, घर की शिकायतों और तकाजों से उसे कभी परेशान न करें।

पति का मनोरंजन करना आपको आना चाहिए। अगर आपको गाना



आता है तो पति की थकावट और उदासी को दूर करना आपके बायें हाथ का खेल है। उमरख्याम की तरह कितने ही पुरुषों ने यह सुखद कल्पना की है—'काश इस रंगीन सुहावनी संध्या में, किसी पेड़ के नीचे, कुछ खाने-पीने

की सुविधा जुटा, अपनी प्रिया के साथ कुछ काव्य-चर्चा करने का सुअवसर मिलता ! क्या ही अच्छा होता अगर इस सन्नाटे में वह मधुर रागिनी गाकर मेरे हृदय की सोई हुई तंत्रियों को झंकृत कर देती, तब तो इस भूतल पर ही मेरे लिए स्वर्ग उतर आता ।'

क्या आपने कभी इस रंगीन सपनों को सजीव बनाने की चेष्टा की है ? आपकी बातचीत का ढंग, आपकी भाव-भंगिमा, वेशभूषा, आपका सुखद स्पर्श सभी इन सपनों को सजीव बनाने में क्रियाशील होने चाहियें। पुरुष कभी भी बूढ़ा या हारा हुआ सा अनुभव नहीं करता, अगर कोई उसे प्यार करके बढ़ावा देने वाला हो जिससे उसमें जिन्दा-दिली बनी रहे। तभी न किसी ने ठीक कहा—'जिन्दगी जिन्दा-दिली का नाम है।' पर पति को जिन्दादिल बनाये रखना पत्नी पर निर्भर है।

जीवन संघर्ष से चूर, निराशा और अवसाद से भरे पति के मन में नवजीवन संचार करना पत्नी का ही कर्तव्य है। अगर आपके पति को ताश, कैरम अथवा चौसर या कोई अन्य खेल खेलने का शौक है, आप भी खेल में निपुणता प्राप्त करें। अगर बागवानी अथवा पशु-पालन में उसकी अभिरुचि है तो आपका सहयोग मिलना बहुत आवश्यक है। सच्ची जीवन-संगिनी आप तभी हैं जब उसके प्रत्येक कार्य में आप हाथ बटा सकें।

अगर सुबह काम पर जाते समय वे आप से कह गये हैं कि आज अमुक जगह शाम को जाना है, तैयार रहना, आपको चाहिए उस दिन सब काम जरा जल्दी ही निबटा कर, यथा समय तैयार हो जायँ। उनके आने पर यह समस्या न खड़ी हो कि कौन सी साड़ी पहनूं ? ब्लाउज और जूते साड़ी से मैच करते हुए नहीं हैं। मैं कैसे जाऊँ ? क्योंकि पहिनने लायक कोई पोशाक ही मेरे पास नहीं है। आपकी वेश-भूषा साफ सुथरी और रुचिकर होनी चाहिये, तड़क-भड़क वाली नहीं। आप जहाँ जायँगी आपका व्यक्तित्व तथा वाकपटुता और शीलता से समाज प्रभावित होगा। तड़क-भड़क और शोखपन, अभद्रता और ओछेपन का द्योतक है। अपने वस्त्रों, जेवरों के कारण पति को कभी परेशान न करें, विशेष करके जब कि वह कहीं जाने की जल्दी में हो या थका हारा बाहर से आया हो। प्रियवादनी, प्रिय भार्या को पति से कुछ भी प्राप्त करना कठिन नहीं है, पर अवसर देख कर फरमाइश करनी चाहिए।

पति के मित्रों का आप घर आने पर उचित सम्मान करें। शाम को अगर वह अपने मित्रों को साथ में ले आये हैं, आप अचानक आये मित्रों को देख माथे पर त्योरी न डालें। घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं, ऐसे अक्समात् प्रबन्ध में न्यूनता क्षमनीय है। आतिथ्य सत्कार में खान-पान के विषय में कुछ कमी भी हो तो मधुर वचनों से उसकी पूर्ति की जा सकती है। अधिकांश मित्र मान के भूखे होते हैं, खान-पान के नहीं। स्त्री की व्यवहार-कुशलता पर ही पति की लोकप्रियता निर्भर है।

पति घर से ऊब क्यों गये हैं ?—

कई स्त्रियों की शिकायत होती है कि उनके पति काम पर से सीधे घर ही नहीं आते, अगर आते भी हैं तो शाम बाहर ही गुजारते हैं। इस विषय में बहुत अंशों में स्त्रियाँ ही दोषी हैं। उनमें आकर्षणशक्ति कम है। जब उनके पति अपने मित्रों की पत्नियों से अपनी पत्नी की तुलना करते हैं, वे उन्हें बहुत पिछड़ी हुई पाते हैं। सिखाये जाने पर भी वे कोई नई बात सीखने की चेष्टा ही नहीं करतीं। उनकी बातचीत, वेशभूषा, भाव-भंगिमा सभी फूहड़पन की द्योतक हैं। उनका घर गन्दा, बच्चे गन्दे, वे स्वयं गन्दी। व्यवस्थाप्रिय पति उनकी ऐसी अव्यवस्था देख बिदक जाता है। शाम को



थका-हारा वह घर जाने की अपेक्षा किसी होटल में ही चाय पीना पसन्द करता है। बचा हुआ समय भी वह किसी क्लब या मित्रों के संग गुजारना

अच्छा समझता है। घर में उसके लिए क्या है ? कुछ भी तो नहीं। मुँह सुजाकर जली-कटी सुनाने को तैयार बीवी और आपसमें लड़ते-झगड़ते बच्चे ! समय पर उसे अपना तौलिया या साबुन भी नहीं मिलता। पायजामे या धोती का पता नहीं कि कपड़ों के किस ढेर के नीचे दबे पड़े हैं। चप्पल का एक पांव है, एक गायब। अगर वह अपनी स्त्री को इस बेपरवाही के लिए कुछ कहने को मुँह खोलने का साहस करता है, फौरन जवाब मिलता है 'बड़े धनकुबेर आये हैं जिनके लिए द्वार पर लौंडी बन कर खड़ी रहूँ ! एक तुम्हीं काम करके नहीं आरहे हो, हम भी यहाँ दिन भर गृहस्थी की चक्की में पिसते रहे हैं। सिर अलग दुख रहा है, हमारा दुख-सुख किसने समझा है।' एक बार उनकी यह बड़बड़ शुरू हुई कि फिर जल्द बन्द ही नहीं होती। बेचारा पति इस छत्ते को न छेड़ने में ही अपनी कुशल समझता है। अपने से भी कम आमदनी वाले मित्रों के घर की सुव्यवस्था देख उसे अपनी किस्मत पर रोना आता है, घर उसके लिए एक बवाल है। थका-हारा पति का हृदय,



स्त्री के इस निर्मम और कर्कश व्यवहार की कटुता से घुनता ही रहता है। उसका मन उदासी से भर जाता है, भोजन रुचिकर नहीं लगता। पत्नी से

बात करने का उसका मन नहीं करता, बच्चे उसके मन को खिलाते नहीं। वह सोचता है क्या मैं इन्हीं के लिए दिन भर मरता हूँ ? अपने जीवन और स्वास्थ्य का बलिदान क्या इस स्वार्थी स्त्री और निकम्मे बच्चों के लिए करना भूल नहीं है ? देखता हूँ कि पढ़ाई की सब सुविधायें जुटा देने पर भी पढ़ने में किसी की रुचि ही नहीं है। माँ बच्चों की देखभाल ठीक से नहीं कर पाती। धकेल-धकेल कर उन्हें स्कूल भेजा जाता है। घर में अशान्ति और अव्यवस्था फैली हुई है। जिस दिन से ब्याह हुआ है जान मुसीबत में फंस गई है। पर इनसे छुटकारा कैसे ? यह तो गले पड़ा ढोल है, बजाना ही पड़ेगा। लाचारी ! हाय लाचारी !

इसके विपरीत समझदार पत्नी अपने थके-मांदे पति का सुस्वागत कर, अपनी चतुराई से उसकी सुनहली संध्या को सुहावनी बनाती है। रातें उनके लिए प्रेम का सन्देश लेकर आती हैं और दिन चहकता हुआ उत्साह भरता है। नई उमंग और प्रेरणा से पुरुष दिन के संघर्ष के लिए तैयार होता है। स्फूर्तिदायी, मधुर मुस्कान से पत्नी उसे विदा करती है। गृह-कार्य में लगी वह दिनेश को विश्राम के लिये अस्ताचल की ओर जाते देख, अपने प्रिय के अनुराग में रंजित हो, अपने साजन की प्रतीक्षा में गुनगुनाती है—'साँझ भई घर आवो, साजन !'

११. सहचरी कि कन्धे का बोझ ?

सच्ची सहचरी—

स्त्री पुरुष की सहचरी और मित्र कहलाती है। परन्तु दो समान दृष्टि-कोण तथा रुचि वाले व्यक्तियों की ही मित्रता और संगति भली प्रकार निभ सकती है। स्त्री जब पुरुष के साथ कदम उठा कर चलने के अयोग्य प्रमाणित हो, तब पुरुष को उसकी संगति में आनन्द नहीं आता। वह समाज में सम्मानपूर्वक स्थान पाकर अपने अड़ोस-पड़ोस का विश्वासी तथा सहयोगी बन सके—इसलिए भी पुरुष को स्त्री का सहारा ढूंढ़ना पड़ता है। कमाऊ होने मात्र से ही कोई पुरुष समाज में प्रतिष्ठा नहीं पा लेता, उसके लिए गृहिणी का सफल सहयोग परम वांछनीय है।



जो पुरुष घूमने-फिरने बाहर अकेले जाते हैं, उन्हें एक तो एकाकीपन अनुभव होता है, दूसरे, वे अपने सपत्नीक मित्रों में घनिष्ठता नहीं प्राप्त कर सकते। अतएव प्रत्येक पुरुष की यह इच्छा होती है कि उसकी पत्नी सही अर्थ में सहचरी और मित्र का कर्त्तव्य निभा सके। वह उसे अपने साथ बाहर ले जाने में गौरव और सम्मान का अनुभव कर सके।

मैं भी साथ चलूंगी—

कुछ स्त्रियों की यह शिकायत है—'वे मुझे अपने साथ कभी बाहर नहीं ले जाते, खुद तो जहान में घूमते-फिरते हैं, खेल-तमाशे देखते तथा दावतें उड़ाते हैं, हमें चाहारदिवारी में बंद-सा किया हुआ है। बस हम सड़ा करें यहाँ! हमारे नसीब में तो बस गुलामी ही बदी है। दिनभर नौकर-चाकर, बाल-बच्चों और घर के धन्धों से हमारा भी तो जी ऊब जाता है। न कहीं आना, न कहीं जाना। अगर कहें तो जवाब मिलता है, किसने रोका हुआ है। गाड़ी जुतवाओ और चाची को साथ लेकर-घूम फिर आओ। भला क्या घूम-फिर आवें ? हमारा भी तो जी करता है तुम्हारे साथ जाने को। देखो न हमारे

देवर को देवरानी के बिना कहीं घूमने-फिरने नहीं जाते। यहाँ तक कि कार चलाकर देवरानी ही आफिस छोड़ आती हैं। आये दिन उनके घरों में दावत और पार्टी होती हैं। यहाँ तो हिसाब ही दूसरा है। आदमियों की मजलिस अलग, औरतों का जमघट अलग। अगर हम भी चार अक्षर पढ़ जाते, गिट-मिट करना सीख जाते तो हमारी भी जिन्दगी भार न होती। हम भी हाथ में हाथ डालकर बाहर निकलते।'

भगवान गंजे को नाखून नहीं दे, इसी में उसकी भलाई है, नहीं तो खुजा-खुजाकर सिर घायल कर मारे। यही दशा कई स्त्रियों की है। पुरुष इन्हें बाहर साथ नहीं ले जाते, मित्रों से परिचय नहीं करवाते, इसी में उनकी इज्जत बनी हुई है। उनके अवगुण, अयोग्यता तथा फूहड़पने पर पर्दा पड़ा हुआ है। स्त्री अगर पुरुष की सहचरी तथा मित्र बनने का दावा करती है, तो उसे चाहिए कि अपने गुण-स्वभाव, वेशभूषा, सुरुचि तथा चरित्रबल द्वारा इस बात का विश्वास दिला दे कि वह समाज में पुरुष की प्रतिष्ठा और सुनाम को न केवल बनाये रखेगी अपितु उसे गौरवान्वित भी करेगी। जिनमें इस योग्यता का अभाव है उनके लिए चहार दिवारी में रहना ही उपयुक्त है।

हमारे देश की स्त्रियाँ अभी तक पुरुषों के लिए न केवल आर्थिक रूप से ही भार बनी हुई हैं, परन्तु उन्हें बाहर लेकर निकलना, यात्रा करना, किसी सभा-सोसाइटी, सिनेमा, मैच आदि में ले जाने में भी पुरुष की बहुतसी सुविधाएँ नष्ट हो जाती हैं। उन्हें चौबीस घन्टे इसी बात की चिन्ता बनी रहती है कि कहीं श्रीमती जी को कोई तकलीफ तो नहीं, कोई मर्द उन्हें घूर तो नहीं रहा, वह पुरुषों के बीच असुविधा तो नहीं अनुभव कर रहीं ? परन्तु पति देवता के इतनी फिक्र करने पर भी श्रीमतीजी अपनी चटक-मटक वेशभूषा, जेवरों की झनकार अथवा पानों से रंगी हुई बतीसी के प्रदर्शन के कारण अन्य लोगों का ध्यान अनावश्यक रूप से आकृष्ट कर लेती हैं। जब वह आश्चर्य से अपनी चारों ओर की दुनियाँ को एक अजीब ढंग से आँखें फाड़कर घूरती हैं, अथवा घूँघट रूपी दूरबीन में से टिकटिकी बाँधकर चारों ओर का इन्सपेक्शन करती हैं, तब आसपास के व्यक्तियों को यह समझते देर नहीं लगती कि यह पिंजड़े की चिड़िया आज खुली दुनियाँ में आकर अपने को एक अजीब मजलिस में पा रही है। बेचारा पति अपने सामने वाले सज्जन के बगल में बैठी हुई महिला की जब अपनी स्त्री से तुलना करता है तो उसे अपने भाग्य पर

झुँझलाहट होती है। उस शिक्षित महिला की सादी, पर स्वच्छ वेशभूषा, समयानुकूल सुरूचिपूर्ण शृङ्गार और सभ्य व्यवहार को देखकर वह अपनी



किस्मत पर कटकर रह जाता है। सामने की महिला अपने पति की बगल में बैठकर सहजरूप से धीरे-धीरे यदा-कदा अपना दृष्टिकोण अथवा विचार प्रगट करती है, जब कि इनकी श्रीमती लज्जा का नाटक करती हुई, अपने पति की ओर से घूँघट काढ़ अथवा पीठ मोड़, पर पुरुषों की ओर मुँह कर, बकरी के सदृश पान चबाती हुई व्याख्यान या खेल न देखकर आसपास के लोगों को कौतूहल से देखती हुई, बैठी रहती है। बीच-बीच में अपने नन्हे को जिन्हें कि उन्होंने जमीन पर मूँगफली के छिलकों से खेलने छोड़ दिया था, एक-दो धप्प भी जमा देती है। मिट्टी से सना हुआ, नाक चाटता हुआ नन्हा जोर से चिल्लाकर रो उठता है। अन्य व्यक्ति अपने मनोरंजन में खलल पड़ते देख दबी-सी आवाज में कहने लगते हैं, 'समझ में नहीं आता कि ऐसे स्थानों में ये व्यक्ति बच्चों को लेकर क्यों निकलते हैं'! पति महाशय लज्जित से होकर नन्हे को गोदी में उठा, पत्नी पर झुँझलाते हुए बाहर निकलने में ही कुशल समझते हैं। न तो ऐसी स्त्रियों को स्वयं बाहर जाकर व्यवहार करना आता है और न अपने बच्चों को ही बाहर ले जाने लायक बना सकती हैं।

यात्रा के समय भी आधी गृहस्थी साथ बाँध कर चलती हैं और पैकिंग भी ऐसी बढ़िया होती है कि बस फूहड़पन और दरिद्रता की द्योतक! पन्द्रह

पुलिन्दे, अट्ठारह गठरियाँ और बाइस संदूकचियाँ तथा डोलचियाँ बाँधेंगी। अगर अपना सामान लेकर ठीक से यात्रा पूरी करलें, तो खैर ही समझिये। इसके अतिरिक्त गाड़ी पर चढ़ते समय, 'ए लल्ला ! ए मुन्ना ! अरी भावी ! ओ बे पल्टू किधर है' आदि जोर-जोर की आवाजें लगाती हैं। पति देवता को भी कुछ 'प्रसाद' मिल जाता है। 'अजी तुम्हें कुछ फिक्र ही नहीं, हम यहाँ तक-लीफ में है, फलानी गठरी नहीं मिल रही, नन्हे को अपने पास बिठा लो।' 'अगले स्टेशन से पूरियाँ ले देना, मथुरा के पेड़े लेना न भूलना और हाँ, आगरे से दाल-मोठ भी लेना' आदि फरमाइशें गाड़ी में बैठते ही शुरू हो जाती हैं। रास्ते भर खाना तथा खरीद-फरोख्त जारी रहती है। छिलके, दोने, पानी आदि से सारा कम्पार्टमेंट गन्दा हो जाता है। अगर कोई भली स्त्री टोक दे, तो लो बैठे-बिठाये की लड़ाई मोल ले ली। 'तेरे बाप की गाड़ी है, क्या तूने ही किराया दिया है, हमने नहीं ? निपूती न हो, आस औलाद हो, तभी न बच्चों को देखकर खुश हो। खबरदार जो ज्यादा बोली तो जीभ खींच लूंगी। चली है गार्ड बाबू को बुलाने। तेरा कुछ लगता होगा, जो उसकी धमकी दे रही है। जा बुला ले उसे, हम भी देख लेंगे, हमारे सङ्ग भी मर्द हैं।'

इतने में दूसरे स्टेशन पर गाड़ी रुकती है और पति देवता तार स्वर में अपनी कर्कशा बीवी की परिचित आवाज सुन लपककर कम्पार्टमेंट की ओर आते हैं और उनके कारनामों को सुनकर लज्जित हो, उस भली स्त्री से क्षमा मांगते हैं। श्रीमती जी यह देखकर और भी जल-भुन जाती हैं और गाड़ी चलने पर बड़-बड़ करती हुई व्यंग कसती हैं। 'आजकल की यह चिकनी-चुपड़ी फैशनेबिल औरतें आँखों-आँखों में मर्दों पर जादू डालती हैं।'

अगर किस्मत से कोई उनके जैसी ही मिल गई तब तो अपनत्व दिखाने की भी सीमा नहीं रहती। घरबार, कुटुम्ब, परिजन, धन-दौलत आदि से लेकर पति-पत्नी तक के रहस्य की चर्चा सब कुछ हो जायगी। रास्ते भर में धर्मबहिन भी बन जायँगी। गोपनीय बातों तक का उल्लेख कर देंगी। घर के लड़ाई-झगड़े तक बता देंगी। यहाँ तक की जेवर और कपड़ों तक की फरमा-इशें कर बैठेंगी अथवा भेजने की जिम्मेवारी ले बैठेंगी।

किसी सभ्य मारकेट में इन स्त्रियों को अपने साथ शापिंग में ले जाना एक दूसरी मुसीबत है। कारण उन्हें तो आदत है गली में आये फेरी वालों से खरीदने की, जो कि पहले ही दुगना दाम बताते हैं, फिर मोल तोल करते

-कराते ड्योढे दामों पर सौदा टूटता है। बस अपने मोल-तोल की योग्यता वह कनॉट प्लेस तथा अन्य एमपोरियम में भी अजमाने से नहीं चूकतीं। यहाँ तक कि सभ्य दूकानदारों को भी, 'तुम लूटते हो, क्या अंधेर मचा रखा है' आदि अपशब्द सुना देती हैं।

शाम को घूमने-फिरने अथवा दोस्तों के यहाँ साथ चलते समय इनकी वेशभूषा तथा चाल देखने लायक होती है। जाड़े के दिनों में कुड़ती, कमीज, वास्कट, उस पर से फतूही या स्वेटर से लदकर, शाल-दुशाले से सिर और मुँह ढककर, फटे मोजे, टूटी चप्पल पहिन ज़मीन पर पांव घिसती हुई ये पति देवता के पीछे चल देती हैं। नाखून मैले, कपड़ों से हल्दी, हींग की बास आ रही, अव्वल तो कंघी दो-दो दिन तक नहीं काढ़ती, अगर काढ़ी भी तो बालों में तेल चुपड़कर सिर चिकना बना लेती हैं। मोटा-मोटा काजल, उस पर से पानों से रंगे पपड़ी पड़े होंठ, एक अजीब ही हुलिया होता है इनका! गर्मियों के दिनों में यह हाल कि बदन पर पतला जम्पर और बिना पेटीकोट के धोती, जिनमें से पांव और टाँगे झलकती हैं। शरीर की लज्जा चाहे न निवारण हो पर घूंघट अवश्य खिंची होती है। पढ़े-लिखे, नौजवान पति को इस वेशभूषा से अलंकृत पत्नी को बाहर ले जाने में संकोच अनुभव होना स्वाभाविक ही है।

इनमें विनोदप्रियता का या तो सर्वथा अभाव होता है अथवा वह अपनी सीमा को भी पार कर जाती है। बात का बतंगड़ बना लेंगी। अपनी कटूक्तियों के दुष्परिणाम-स्वरूप झगड़े कर लेंगी। इन स्त्रियों की बातचीत का विषय व्यक्तिगत चर्चा अथवा पर आलोचना तक ही सीमित होता है। हीनता की भावना इनमें इतनी अधिक होती है कि अपने को अच्छा प्रमाणित करने के लिए दूसरे की निन्दा तो अवश्य ही करेंगी।

अब अर्द्ध शिक्षिता तथा अधिक फार्वर्ड स्त्रियों का भी हाल सुनें। उनके पतियों की भी कम परेशानियाँ नहीं है। अर्द्धशिक्षित स्त्रियों के विषय में "अधजल गगरी छलकत जाय" यह कहावत भली प्रकार चरितार्थ होती है। मौलिकता तो इनमें होती ही नहीं। मोर के पंख लगाकर कौवे के सदृश वे अपने समाज से भी बहिष्कृत होती हैं। साथ ही सुरुचिपूर्ण महिलाओं में भी इनकी नहीं जमती ओर बहुत फार्वर्ड स्त्रियाँ तो इनकी मजाक उड़ाने में भी नहीं चूकतीं। अन्धाधुंध नकल इनका विशेष दुर्गुण है। नये फैशन, नये रिवाजों को बिना सोचे-समझे अपना लेती हैं। चटक-मटक, शोखपन इनकी

स्वाभाविक लज्जा पर भी पानी फेर देता है। इनका 'मेकअप' तो बस देखने ही लायक होता है। काले रंग पर सफेद पाउडर, उस पर रूज थोपा हुआ इनके मुख को जामुनी रङ्ग का बना देता है। सुर्ख, लाल-चौड़ी फैली हुई लिपस्टिक, मैले-काले नाखूनों पर क्यूटैक्स पोता हुआ इनके गंदे हाथों की कुरूपता बढ़ाता है। दिन के समय गहरे रंग की साड़ी के साथ बेमेल ब्लाऊज तथा जूते पहन कर, लम्बे-लम्बे बुन्दे लटका कर जब ये बाहर निकलती है तो लोगों को शृंगार और शिक्षा दोनों से अरुचि-सी हो जाती है।

ऐसी पत्नियों के कारण पति भी समाज में चर्चा का विषय बन जाते है। मैच या सिनेमा देखने जायँगी तो इतनी जोर से चर्चा और 'रिमार्क' पास करेंगी कि आस-पास के लोगों को भी नागवार लगने लगता है। हिन्दी बोलना इन्हें अच्छा नहीं लगता, बात-बात में अंग्रेजी की टाँग तोड़ने में ही गौरव अनुभव करती हैं। कुछ रटे-रटाये वाक्य मुँह चढ़े होते है, उन्हीं को एक खास लहजे के साथ दोहरा देती है। किसी की प्रशंसा या उन्नति इन्हें नहीं सुहाती। इसी कारण से इनके पति, समाज में अप्रिय बन जाते हैं।

ये तितलियाँ—

अधिक फार्वर्ड या मार्डन तितलियाँ भी अपने-अपने पतियों के लिए एक समस्या बनी हुई है। घर से साथ लेकर चार कदम निकलने की देर है कि मित्रमंडली श्रीमतीजी को आकर घेर लेती है। पति महाशय अनुचर बन जाते हैं और पत्नी जी अग्रचरी बनी हुई मित्रों की बाँह में बाँह डाले इठलाती मटकती, किलकारियाँ भरती चल देती हैं। उनका शोखपन राह चलतों को पुकारकर कहता है कि देखो हमें, हमारी वेशभूषा तथा शृंगार को देखो, हमारे यौवन पर आँखें सेको। उनकी मजाक पुरुषों के मुँह पर ताले लगा देती है। शीलता और लज्जा तो उन्हें छू भी नहीं गई। दुनियाँ में भला उन्हें किसकी परवाह और किसका लिहाज। भरी सभा में अपने पति को 'हेलो स्टूपिड डार्लिग' कहकर मजाक उड़ाने में उन्हें संकोच नहीं। ये सोसाइटी की 'गेवर्ड' और रंगीन तितली जो ठहरीं। बेचारा पति बुत-सा बना हुआ, मित्रों की दबी आवाज में कही गई कटूक्तियाँ सुनी-अनसुनी कर अपने दुर्भाग्य को भूलने की चेष्टा करता है। ऐसी स्त्रियों का पति एक पासपोर्ट या ढक्कन का काम करता है। क्या करे बेचारा जानते-बूझते भी अनजान बनने में ही अपनी खैर समझता है।

अब अगर पुरुष स्त्रियों को बाहर साथ ले जाने में हिचकिचाते हैं तो इनमें उनका क्या दोष ? मैं यह नहीं कहती सभी स्त्रियां ऐसी हैं, पर उपर्युक्त शिकायतें कुछ स्त्रियों के विषय में सुनने में आती भी हैं।

हमारे देश में अनेक सुसंस्कृत, शीलवान, व्यवहार-कुशल स्त्रियां भी हैं उनके पति उन्हें अपने साथ आग्रहपूर्वक ले जाते हैं। वे एक दूसरे के पूरक हैं। उनकी वेशभूषा, सुरुचिपूर्ण शृंगार और मर्यादापूर्ण हाव-भाव सभी उनके चरित्रवान तथा योग्यता के द्योतक हैं और दूसरों को प्रभावित किये बिना नहीं रहते। ऐसी नारियाँ ही पुरुषों को समाज में लोकप्रिय बनाती तथा उन्नति में सहायक सिद्ध होती है।

विवाह के पूर्व कन्याओं को इस बात की भी शिक्षा अवश्य दी जाये कि बाहर जाकर चार आदमियों में किस प्रकार व्यवहार करें तथा समयानुकूल वेशभूषा और शृंगार करने का ज्ञान रखें। अन्यथा पत्नी की मूर्खता के कारण पुरुष को समाज में बहुत लज्जित होना पड़ता है।

प्रसाधन का यह अभिप्राय नहीं है कि आप जो नहीं हैं वह प्रतीत होने लगें। प्रसाधन जरूरत से अधिक और कम दोनों ही नारी के आकर्षण को फीका कर देता है। सुरूचिपूर्ण प्रसाधन और वेशभूषा नारी के व्यक्तित्व को उभारती है। उसमें उसकी शिक्षा, कुलीनता और संस्कृति का पता चलता है।

सजने-संवरने में किन बातों का ध्यान रखें—

प्रसाधन सामग्री का उपयोग रूप-रंग के दोषों को छिपाने के लिए न करके उनकी रक्षा के लिए ही करना उपयुक्त है। अतएव उनके उपयोग और चुनाव के विषय में निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

१. प्रसाधन सामग्री का उपयोग अपनी आयु, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति, प्रतिष्ठा तथा अवसर के अनुकूल करना चाहिए। अगर कोई प्रौढ़ या अधेड़ स्त्री गहरे रंग की लिपस्टिक और सुर्ख रूज लगाती है तो लोग उसकी अवश्य हंसी उड़ायेंगे। इसी प्रकार अगर कोई रोगी स्त्री गालों को रंगकर सेब बना ले तो बहुत ही अस्वाभाविक लगेगा। केवल मुँह को लीपने-पोतने से ही कोई आकर्षक नहीं बन जाता। प्रायः देखने में आता है कि सौ रुपये मासिक पाने वाले बाबू के पाँवों में साबुत जूता भी नहीं होता, परन्तु

उनके पीछे-पीछे चली आती श्रीमती जी ने रेशमी, चटकीले कपड़े पहने हुए तथा मुँह पर पाउडर और लिपस्टिक तथा क्यूटेक्स का उदारता के साथ दुरुपयोग किया हुआ है। बेचारा पति हजामत बनाने के लिए भी पैसे नहीं बचा पाता, परन्तु पत्नी गली में फेरीवालों से सस्ते-सस्ते प्रसाधन खरीदकर अपने चेहरे को लीप-पोत कर एक अजीब हुलिया बना कर बाहर निकलती है।

पाश्चात्य देशों में रात्रि के भोजन पर या क्लब अथवा नाच समारोह पर अथवा विशेष गार्डन पार्टी पर जाते समय ही भड़कीले ढंग से शृङ्गार करने का रिवाज है। अन्यथा वे अपने रंग और होठों से मिलता-जुलता स्वाभाविक प्रतीत होने वाला केवल थोड़ा पाउडर तथा लिपस्टिक ही लगाती हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। वे खरीद (शापिंग) को जाते समय भी चटख लिपस्टिक लगा कर और गुलाबी कपोल करके जायँगी। उनका बनाव-शृङ्गार उनके शोखपन का द्योतक होता है। उनकी इस प्रकार की बनाव-शृङ्गार-प्रियता उनका स्वाभाविक रूप भी नष्ट कर देती है। उनका सहज आकर्षण भी नष्ट हो जाता है। शिक्षा का अभाव तथा फैशन की अंधाधुन्ध नकल उनके सौन्दर्य, शील स्वास्थ्य और धन सभी के लिए घातक सिद्ध होती है।

२. अपनी त्वचा और रंग के अनुकूल प्रसाधन-सामग्री खरीदें। जिन की त्वचा सूखी और खुरदरी होती है, उनके लिये साबुन का उपयोग वर्जित है। रात्रि में क्रीम मलकर प्रातःकाल बेसन से मुँह धोने से उनकी त्वचा मुलायम और चमकदार रह सकती है। इसी प्रकार पाउडर के बदले स्नो का उपयोग अधिक उचित होगा। जिन महिलाओं की त्वचा अधिक 'ग्रीजी' होती है अगर वे अपने मुख पर क्रीम आदि चिकनाई का उपयोग करती हैं तो उनके चेहरे पर मुहासे और फुंसियों का निकलना बढ़ जाता है। ऐसे स्त्रियों के लिए साबुन से मुँह धोने के पश्चात् भली प्रकार चेहरे को पोंछकर हलका पाउडर लगाना ही पर्याप्त होगा।

पाउडर की भी कई किस्म और रंग होते हैं। टैलकम पाउडर का उपयोग स्नान करने के पश्चात् केवल शरीर पर करना चाहिए। चेहरे के लिए अपने रंग से मिलते हुए रंग का पाउडर लगना ठीक है। चेहरे पर कभी भी सफेद पाउडर मत लगायें। प्रायः देखने में आता है कि साँवले रंग की

स्त्रियाँ सफेद पाउडर पोत कर, ऊपर से गालों पर सुर्खी मल लेती हैं। काला सफेद तथा लाल रंग मिलकर उनका चेहरा जामुनी रंग का दिखने लगता है। उस पर सुर्ख रंग के होंठ ऐसे प्रतीत होते हैं मानों हब्शिन चली आ रही हो। सुन्दर दिखने के बदले वे और भी भयानक दिखती हैं। काले रंग पर सफेद पाउडर बहुत ही भद्दा दिखता है। उसके स्थान पर अगर वे अपनी स्वस्थ त्वचापर 'स्नो' या 'लारोला लोशन' लगायें तो उनके मुख की चमक बनी रहे। साफ रंग पर भी थोपा हुआ पाउडर भद्दा दिखता है। पाउडर लगाने से पूर्व चेहरे पर कुछ 'बेस' अवश्य लगाना चाहिए। लारोला या वेनिशिंग पौंड क्रीम इसके लिये उपयुक्त है। 'बेस' को भली प्रकार चेहरे पर मल कर, तब रुई या पैड से थोड़ा-थोड़ा पाउडर लगाने के पश्चात् धीरे-धीरे मल देना चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि चेहरे पर पाउडर के धब्बे न रह जायँ। भौंहों या सिर के बालों में भी पाउडर फँसा न रहे। कानों के पीछे तथा गर्दन तक पाउडर सब जगह बराबर मल कर पोंछ देना चाहिए ताकि ऊपर का फालतू पाउडर झड़ कर चेहरे का रंग एक-सा दिखने लगे।

३. लिपस्टिक लगाते समय पहले होंठों को भली प्रकार पोंछ लेना चाहिए, बाद में होंठों के आकार की बाह्य रेखा बना कर तब होंठों पर लिपस्टिक लगायें। फिर होंठों को परस्पर मिलाकर, टिस्यू पेपर से होठ धीरे-धीरे थपथपा दें। ताकि फालतू रंग टिस्यू पेपर पर निकल जाय। दिन के समय बहुत हल्की लिपस्टिक लगानी चाहिए।

४. यह याद रखें प्रसाधन-सामग्री का उपयोग रूप की रक्षा के लिए ही किया जाय। उनका उपयोग उतनी मात्रा में ही करें जितने से आप के रूप की स्वाभाविकता बनी रहे। बनावटी लाली या पाउडर की सफेदी लगाने से कोई सुन्दर नहीं दिखती। शृंगार ऐसा करना चाहिए, जिससे आप की सुरुचि का पता चले, तथा जो आप के रूप-रंग में खप जाय।

५. केवल क्यूटैक्स लगा लेने से ही हाथ सुन्दर नहीं दिखते। आप हाथों को साफ रखें। खुरदरे तौलिये से उन्हें रगड़ कर, कुछ क्रीम या लोशन लगायें। नाखूनों को भली प्रकार काटें, उन्हें साफ रखें तथा नर्म कपड़े से उनको धीरे-धीरे रगड़कर चमकायें। अगर क्यूटैक्स लगाने का शौक हो तो उन पर नेचेरेल रंग का क्यूटैक्स लगायें। प्रायः देखने में आता है कि स्त्रियाँ

बड़े-बड़े नाखून रखती हैं। उनमें मैल फँसी रहती है। उनकी उँगलियों के पोरों में मैल की लकीरें पड़ी होती हैं। और नाखूनों का आधा क्यूटैक्स निकला रहता है। ऐसे हाथ देखने में बहुत गन्दे तथा कुरूप दिखते हैं।

६. आँखों में काजल इस प्रकार लगाना चाहिए कि वह इधर-उधर न फैले। काजल की मोटी चिकनी तह बहुत भद्दी लगती है। आँखों की चमक बनाये रखने के लिए ठंडे जल के छींटे मारने के पश्चात् बोरिक लोशन से भी उन्हें कभी-कभी धोना चाहिए।

७. केशों को सीकाकाई या आंवले तथा रीठे से धोकर जड़ों में थोड़ा-थोड़ा शुद्ध नारियल का तेल लगाना चाहिए। गन्दे बालों में नित्य हेयर क्रीम या खुशबूदार तेल चुपड़ कर पानी लगाकर बनाने से उनकी जड़ें कमजोर हो जाती हैं। साथ ही उनकी स्वाभाविक चमक भी चली जाती है। खोपड़ी में तेल की कुछ बूंदों को भली प्रकार मालिश करने से रुधिर परिचालन भली प्रकार होता है, साथ ही बालों की जड़ें भी मजबूत रहती हैं।



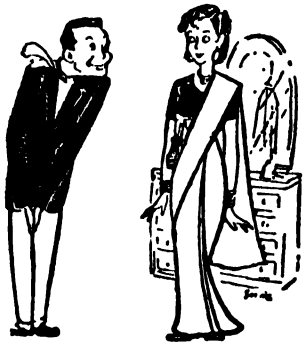
८. सुगंध, इत्र तथा सेंट के विषय में प्रत्येक की अपनी-अपनी रुचि है। परन्तु इस विषय में एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि गंध अति तीव्र न हो। भीनी-भीनी सुगन्ध ही प्यारी और सुखद प्रतीत होती है। प्रत्येक मनुष्य की गंध उसकी स्मृति को बनाये रखती है। गंध विशेष से मनुष्य को अपने प्रिय-जनों तथा प्रिय घटनाओं की याद ताजी हो जाती हैं।

प्रसाधन के अतिरिक्त आपकी वेशभूषा समयानुकूल तथा प्रसाधन के उपयुक्त होनी चाहिए। इसलिए साड़ी, पेटीकोट, ब्लाऊज़ आदि का मेल मिला करके हैंगर में लटका कर रखें। बाज स्त्रियाँ तैयार होने में बहुत देर लगा देती हैं मानो कहीं जाने के लिए उनका तैयार होना ही प्रधान बात है। 'अभी पांच मिनट में तैयार होती हूँ' ऐसा कह कर के एक घन्टा लगा देती हैं। पति इन्तजार से ऊब जाता है। मीटिंग, घूमने या सिनेमा का समय चूक जाता है। किसी भोज, विवाह या उत्सव पर उनके पति महोदय पत्नी को लेकर समय पर कभी नहीं पहुँच पाते। इससे एक हानि यह होती है कि पति

के आनन्द-प्रमोद का मूड बिगड़ जाता है।

दूसरी बात यह भी ध्यान रखने की है कि जब आप पति के साथ कहीं बाहर जायें चाहे कुछ घन्टों के लिए या कुछ दिनों के लिए आप की चेष्टा उस अवकाश के समय को सफल बनाने की होनी चाहिए। 'हाय चाबी तो बाहर ही रह गई। कहीं नौकर कुछ चुरा न लें'। 'घर पर मुन्नू रो रहा होगा'। 'बेबी को कौन संभालेगा ?' 'मेरे पीछे घर की व्यवस्था राम जाने कैसी हुई होगी ? पीछे से नौकरों ने बहुत बेपरवाही की होगी' इस प्रकार की काल्पनिक चिन्ताएँ मत खड़ी करलें। यदि परदेश में थोड़ी बहुत असुविधा हो तो उसकी शिकायत करके छुट्टी का आनन्द किरकिरा मत करें।

यह तो मानी हुई बात है कि बाहर जाकर थोड़ी बहुत असुविधा और खर्च हो ही जाता है। केवल इसलिए यह कहना कि 'इससे तो लाख दर्जे अच्छा था कि घर में ही रहते, इतना अधिक खर्च हो गया और आनन्द कुछ खास आया नहीं' ठीक नहीं है। सामाजिक-जीवन में लोगों से मिलना-मिलाना, व्यवसाय और साहित्य के विषय मे चर्चा करना, उनके कैरियर को सफल बनाने में बहुत हद तक सहयोग देता है। इसे समय या पैसे की बरबादी समझ कर व्यर्थ मत समझें। पति आप को साथ इसलिए ले जाते हैं कि सच्चे अर्थ में सहचरी का पार्ट अदा करके उनके सामाजिक-जीवन को सफल बनायें और एकाकीपन को दूर करें। अगर आप ये दोनों कार्य करने में असफल हैं तो बाहर जाकर आप अपने पति के कन्धे का बोझा बन जाती हैं फिर भला सोचिये आपको अपने साथ ले जाने से वह क्यों नहीं कतरायेंगे ?



यदि साथ चलना है—

पति के साथ बाहर जाने के लिए उतावली होने से पहले, या "मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले जाते ?"—यह गिला करने से पूर्व यदि आप निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने लगेंगी, तो उसकी नौबत ही नहीं आएगी।

जहाँ जाना हो उसका प्रोग्राम पहले ही से बना लें। यह न हो कि जाने के समय वेशभूषा या घर का धंधा अथवा बच्चों की चिन्ता के कारण आप वहाँ

जाकर न तो स्वयं प्रसन्न हों और साथ ही अपनी चिन्ताओं से पति का आनन्द भी किरकिरा करें। अतएव कहीं मैच, सिनेमा या मित्र के यहाँ जाने से पूर्व ऐसी व्यवस्था कर जाएँ कि आपको बेफ़िक्री रहे। सभी स्थानों पर बच्चों को संग ले जाना ठीक नहीं। इससे आपकी परेशानी बढ़ती है और बच्चे भी तंग आ जाते हैं।

दिन के समय यदि सार्वजनिक स्थानों में जाना हो तो अपनी वेशभूषा सादी तथा स्वच्छ रखें, शृंगार भी सुरुचिपूर्ण हो। चटक कपड़े या अधिक बनाव-शृंगार रात्रि के प्रीतिभोज अथवा विवाह शादियों पर ही शोभा देता है।

समाज, काल तथा मर्यादा के अनुकूल व्यवहार करें। आप अगर परदे या छुआछूत की पक्षपाती हैं, तो ऐसे स्थानों पर मत जाएँ जहाँ आपका व्यवहार और एतराज़ अन्य लोगों को असुविधाजनक अथवा हास्यास्पद प्रतीत हो।

ज़ोर-ज़ोर से हंसना अथवा अपने ज़ेवर या वेशभूषा का प्रदर्शन करना या पान चबाना या नदीदों के सदृश खाना आदि बातें बहुत अशोभनीय हैं। स्त्री का सौन्दर्य उसके शील तथा मधुरता में है। ऐसा व्यवहार भूल कर भी न करें जिसके कारण आप बेहूदी या फूहड़ लगें।

आप अंग्रेज़ी में बातचीत नहीं कर सकतीं या कांटे-छुरी से खाना नहीं जानतीं, तो दूसरों के सामने इसकी चेष्टा भी न करें। मुहावरेदार हिन्दी बोलने तथा हाथ से खाने में आप किसी प्रकार की भी हीनता का अनुभव न करें। जिस में आप का आत्मविश्वास बना रहे, वैसा ही व्यवहार करने में बुद्धिमानी है। आपकी बातचीत सलीकेदार तथा मीठी हो। कटूक्ति और आलोचना करने वाली स्त्रियाँ बहुत अप्रिय बन जाती हैं।

बाहर जाकर नागिरता के नियमों का पालन करें। स्थानों को गन्दा करना या फूल तोड़ना, अथवा बस या रेल के डिब्बों में कचरा और गन्दगी फैलाना मूर्खता है। साथ के लोग आपके व्यवहार से आपकी योग्यता तथा कुलीनता का अन्दाजा लगाते हैं।

मार्ग में असुविधा होने पर, कोई भूल चूक हो जाने पर बाल-बच्चों अथवा नौकर को डांटनां-डपटना आरम्भ न करें। न ही अपने पति से ताना या उलाहना दे कर बात करें। अन्यथा एक तमाशा बन जाएगा और आस-

पास के लोगों का ध्यान सहज ही आप की ओर आकृष्ट हो जायगा।

यात्रा में अनावश्यक सामान बांध कर साथ मत ले जाएँ। अनेक गठरी-मुठरियों को संभालना बहुत असुविधाजनक होता है। बेबात को परेशान न हों, न ही दूसरों को परेशान करें। समय पर ही खाना चाहिए। प्रत्येक स्टेशन पर या बाज़ारों में पत्ते चाटना स्त्रियों के लिए शोभनीय नहीं है।

बाहर जाकर छींकना, खांसना, जंभाई लेना या हंसना अथवा अपने भावोद्रेक प्रकट करने में सावधानी बरतें। ऐसा करते समय आसपास के लोगों का ध्यान आकृष्ट न करें।

बहुत जल्दी किसी से घनिष्टता न बढ़ा लें। इसी प्रकार बिना बात के झगड़ा मत मोल ले बैठें। भीड़ में घुस कर आगे बढ़ने की चेष्टा करना भी मूर्खता है। ऐसे अवसरों पर अपने पति के पीछे चलना ही ठीक है।

अगर कभी ऐसा हो भी कि भीड़ में से कोई बेहूदा आवाज़ कसे या घूर कर देखे, तो यही उचित है कि आप उस ओर ध्यान ही न दें। अच्छा तो यह है कि ऐसी जगह जाएँ ही मत। अगर मौका पड़ ही जाए तो बात को अनुसुनी कर देना चाहिए। वह अपने आप ही चुप हो जाएगा। अगर आक्षेप स्पष्ट है, तो अपने पति से कहें, वह स्थिति संभाल लेंगे। पर अपने पति को बेबात के दूसरों से भिड़ाकर तमाशा मत बनायें।

जब आप अपने पति के साथ बाहर जाएँ, तो मित्रों के संग वार्त्तालाप में इतनी लीन न हो जाएँ कि पति की उपस्थिति का भान ही न रहे। मित्र-मंडली में बातचीत इस प्रकार की होनी चाहिए कि सभी को उस में भाग लेने का अवसर मिले। अपनी प्रधानता से पति को पीछे डाल देना उचित नहीं है। बातचीत में विनोद-प्रियता की भावना रखें, साथ ही द्वि अर्थक तथा अशिष्ट शब्दों का कभी भूल कर भी प्रयोग न करें।

पति के साथ खरीददारी के लिए जाएँ तो मोल-तोल के लिए बहस या वस्तु की आलोचना करके अभद्रता मत प्रकट करें। जो चीज खरीदनी हो उसकी सूची घर से बनाकर चलें। उसके लिए रुपयों की व्यवस्था भी शापिंग जाने से पहले ही कर लें। दूकान पर जाकर अधिक कीमती चीज लेने की हठ करके, और पति से अधिक रुपये खर्चने के लिए बहस करना मूर्खता है। आपस का हिसाब-किताब घर आकर करें। आपके पास मेरे इतने रुपये

जमा हैं, या आपने मुझ से अमुक दिन इतने रुपये उधार लिये थे वे अब दे दें, इस प्रकार की बातचीत दूकान पर अच्छी नहीं लगती। यदि किसी दूकान से कुछ खरीदना नहीं है तो उसकी चीजों की निन्दा करके या तुम्हारी चीज महंगी है ऐसा कहकर मत उठें। चीज दिखाने के लिए शुक्रिया करके या फिर किसी दिन आयेंगे, ऐसा कह कर वहाँ से चल दें।

मार्ग में यदि कोई सहेली या पिहर के रिश्तेदार मिल जायें और वह केवल आपको साथ ले जाना चाहें तो पति की उपेक्षा कर उनके साथ जाने की हामी मत भर बैठें।

बाज ईर्ष्यालु स्वभाव की स्त्रियां किसी दूसरी स्त्री को सजी-संवरी या अधिक आदर मिलते देख जल-भुन जाती हैं और अचानक ही बेबात के उनका मूड बिगड़ जाता है और वह अपने पति या बच्चों पर अकारण ही झुँझलाने लगती हैं। यह ठीक बात नहीं है। इससे उनके मानसिक अस्वस्थता का पता चलता है। याद रखें मानसिक रूप से अपरिपक्व पत्नी कभी भी सफल सहचरी नहीं बन सकती।

१२. यदि तुम साथ हो····

आजकल प्रत्येक शिक्षित पति इस बात की कामना करता है कि उसे पत्नी ऐसी मिले जो उसके सामाजिक जीवन को सफल बनाये, उसके मित्रों



के संग मिलजुल सके, उसके परिजनों से हिलमिलकर गृहस्थी की नैया को आसानी से खे सके। उसकी होशियारी और समझदारी से वह लोकप्रिय बन सके। उसके प्रभाव का क्षेत्र बढ़े और उसकी मुसीबतें हल हो जायें। स्त्रियां भी पति के सामाजिक जीवन में साझेदारी चाहती हैं। पर अपने इस सपने को साकार करने के लिए स्त्रियों को इस क्षेत्र की जिम्मेदारी संभालने की योग्यता होनी चाहिए। घर के तंग दायरे का संकुचित दृष्टिकोण यहाँ सफल नहीं रहेगा। आपकी नाजुक मिजाज़ी, नखरे, गैरजिम्मेदारी आदि बातें अपने पति की स्थिति को हास्यास्पद बना देंगी। सामाजिक क्षेत्र में पुरुष अधिक अनुभव रखते हैं। उनके पथप्रदर्शन को स्त्री को स्वीकार करना होगा। मतभेद होने पर पुरुष के हृदय में सन्देह उत्पन्न हो सकता है। स्वतंत्रता की ओट में यदि नारी मर्यादा तोड़ती है, तो पुरुष ईर्ष्यालु हो जाता है। कोई-कोई पढ़े-लिखे समझदार पति भी बड़े शंकालु होते हैं। पत्नी पर जो उनके स्वामित्व की भावना है वह नहीं बदलती। वह अपनी किसी दूसरे से तुलना सहन नहीं कर सकते यदि पत्नी उनके द्वारा लगाई गई पाबन्दियों को तोड़ती है, तो वह उसकी

स्वाधीनता में रोड़े अटकाते हैं। इससे मनोमालिन्य बढ़ता है और घर में कलह उत्पन्न होती है। एक घटना का उल्लेख करती हूँ—

मोहनी के पति मिलटरी में एक उच्च पद पर थे। विवाह के बाद उनके कुछ साल बड़े आनन्द से गुजरे। सोहन नाम का एक नवयुवक रईस कैप्टन साहब का बड़ा दोस्त था। वह भी बाल-बच्चों वाला था। मोहनी को मोटर चलाना सीखने का शौक हुआ। सोहन ने उसे कार सिखाने का जिम्मा लिया। दिन पर दिन उन दोनों की घनिष्टता बढ़ती गई। सोहन मोहनी को बढ़िया से बढ़िया तोहफे लाकर देने लगा। कैप्टन साहब ने एक-दो बार इस घनिष्टता की कड़ी आलोचना भी की और मोहनी को सावधान भी किया पर मोहनी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। एक दिन सांझ को कार ड्राइव करते हुए दोनों बहुत दूर निकल गये। कार में पंचर हो गया और दोनों रात को लौट नहीं सके। इस कारण से पति-पत्नी में काफी कहा-सुनी हुई और मोहनी की बदनामी हुई सो अलग। अगर मोहनी पति की चेतावनी अनसुनी न करती तो, इन सब मुसीबतों से बच जाती।

सोचने-समझने की बात यह है कि पत्नी पति की अनुचरी बने और अपने सामने वह सोसायटी की तितलियों का आदर्श न रखे। उसे तो घर की तरह बाह्य क्षेत्र में भी नारी सुलभ गुणों से लोगों को प्रभावित करना चाहिए। अपने पति के प्रभाव क्षेत्र को विकसित करने के लिए एक सहज और स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण अपनाने से ही उसको सफलता मिल सकती है।

आप का कर्त्तव्य है कि अपने पति के मित्रों का आदर-सत्कार करें। उसके परिजनों को घर आया देखकर मुँह-नाक न सिकोड़ें, नहीं तो लोग आपको तो बदमिजाज़ कहेंगे ही साथ ही आपके पति का भी नाम धरेंगे कि देखो ब्याह से पहले वह कितना मिलनसार और हमदर्दी दिखाने वाला था, अब ब्याह के बाद इसकी आदत ही बदल गई। पति की सच्चे अर्थ में सह-योगिनी बनें। उसकी उन्नति में सहयोग दें। गाने-बजाने, तीज-त्यौहार मनाने का शौक रखें। इस बात की भी कोशिश करें कि पति आपके पास आकर अपने काम-धन्धे की सब चिन्ताएँ भूल जाये। पति के विनोदी स्वभाव की दाद दें। जरा-सी मज़ाक पर चिढ़ जाना अच्छा नहीं है। यदि पति अपने मित्र की पत्नी या बहन, भावज या माँ की प्रशंसा करता है तो इसमें चिढ़ने की कोई बात नहीं है। कोशिश करके पति को प्रिय लगने वाले कार्य आप

भी करना सीख लें। अपने नये-नये गुणों और प्रेम भरी अदाओं से पति को हमेशा रिझाती रहें। वाक्य-पटु महिला सुन्दर उक्तियों, चुटकलों, हास-परिहास की बातों से घर में खिल-खिला खेला मचाये रखती हैं। सीमित मात्रा में व्यंग और हास-परिहास सामाजिक जीवन को भी मधुर बनाये रखता है। इससे अपनत्व पैदा होता है।

बातचीत का सलीका—

स्त्री का सलीके से बात-चीत करना, उसको और भी मोहक और प्रिय बना देता है। बातचीत में पटुता और माधुर्य आकर्षण को बढ़ाता है। उससे लोकप्रिय होने में सहायता मिलती है। व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है। अपने विचारों को ठीक से प्रगट करना आता है। सामाजिक जीवन का सुन्दर विकास होता है। बातचीत में जो स्त्रियां फूहड़ होती हैं, जिनकी आवाज कर्कशा होती है, वे बेबात के झगड़ा खड़ा कर लेती हैं। उनका वार्तालाप और अदा पति के हृदय में उमंग नहीं पैदा कर पातीं। प्रेम, मधुरता व सरसता के अभाव में उनकी बातचीत में कोई रस नहीं रहता। अपने भौंड़े ढंग से वह सरस वातावरण को भी कडुवा बना कर रख देती हैं।

रामबाबू की पत्नी लीला बहुत मुँहफट है। वह कुछ नाक में तथा तेवर चढ़ाकर झुंझला कर बोलती है। इससे उसकी सहेलियाँ, सास, नन्द और जिठानी का यह विचार है कि वह बहुत तुनकमिजाज है। वह न केवल स्त्रियों में ही परन्तु अपने पति के मित्रों में भी इस दोष और कमी के कारण आलोचना का विषय बन गई है। लीला को यदि किसी की कोई बात पसंद नहीं आती तो खरी-खोटी मुँह पर ही सुना देती है। लोग उससे बात करते डरते हैं। जबकि रामबाबू की बातचीत करने का ढंग बहुत सुन्दर है। वह अपनी वाक्यपटुता और हास्यप्रियता के कारण काफी लोकप्रिय हैं।

पति के कैरियर को सफल बनाने में—

पति के व्यवसाय, पढ़ने-लिखने, हौबी, आदि में पत्नी का सहयोग व प्रेरणा का बहुत महत्व है। इस विषय में पाश्चात्य महिलाएँ बहुत चतुर हैं। देखने में आता है कि जो बात दफ्तरों में तय नहीं हो पाती, उसे किसी प्रीति भोज में घरेलू वातावरण में सहज ही तय किया जा सकता है, बशर्ते कि पत्नी अतिथिसत्कार और बातचीत में होशियार हो। आप अगर अपने पति के मित्र और अफसरों को अपनी बातचीत और आवभगत से प्रसन्न करने में

सफल हो सकती हैं तो आपके पति को अपने अफसर और मित्रों का सहयोग प्राप्त करने में अधिक कामयाबी मिल सकती है। पड़ोसियों की मदद करने, मित्रों के पारिवारिक दुःख-सुख में शरीक होने तथा परिवारों में घनिष्टता स्थापित करने में पुरुष तभी सफल हो सकता है जबकि उसकी पत्नी भी इस ओर अपना फर्ज अदा करना जानती हो। जो महिलाएँ मर्यादा को निभाती हुई पति के सामाजिक जीवन को सफल बना सकती हैं, वह सच्चे अर्थ में सहचरी प्रमाणित होती हैं।

आजकल जिस व्यक्ति को हमारी सरकार देश से बाहर नियुक्त करके भेजती है, उसके चुनाव में इस बात का भी विशेष महत्व दिया जाता है कि उस व्यक्ति की पत्नी पढ़ी-लिखी, कला और सांस्कृतिक बातों की जानकारी और सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी रखने का शौक रखने वाली हो। वह प्रीतिभोजों और सभाओं का आयोजन करने की योग्यता भी रखे, और मौका पड़ने पर सामाजिक सेवाओं में भाग भी ले सके। उपरोक्त योग्यता जिसकी पत्नी में होगी उस व्यक्ति को व्यवसाय, नौकरी और सामाजिक जीवन में सफलता मिलने में जरूर सहूलियत होगी। क्योंकि जहाँ पुरुष अनेक सुविधाएँ देकर भी अपने व्यवसाय में सफल नहीं हो पाते, वहाँ महिलाएँ अपनी बातचीत की चतुराई, स्वभाव की मधुरता और दो-चार मीठी बातें करके अपने पति के काम को बना लेती हैं। इसका एक यह भी कारण है कि अधिकांश पुरुष शिष्ट, सभ्य और आकर्षक महिला के अनुरोध के आगे झुक जाते हैं।

जिस व्यक्ति के दो-चार मिलने-मिलाने वाले हैं, चार लोगों से जिस का मुँह-मुलाहिजा है, उसका काम झट बन जाता है। पुरुष अकेला अपनी सामाजिक जिम्मेदारी नहीं निभा सकता। इसके लिए पत्नी का पूरा सहयोग चाहिए। एक उदाहरण देती हूँ—ज्ञानचन्द एक बड़ी फर्म में नौकर है। वह अपना काम मेहनत के साथ करता है। उस की पत्नी लीला बहुत समझदार और चतुर है। उसे समाज-सेवा करने का भी बड़ा शौक है। फर्म में जो कर्मचारी हैं उनकी बस्ती में लीला ने शिशु-कल्याण केन्द्र और प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र खोला हुआ है। इससे वहाँ के लोग उसके बहुत कृतज्ञ हैं। इस कार्य में उसने आस-पास की महिलाओं का भी सहयोग प्राप्त किया हुआ है। तनखाह में बढ़ती की जाये इस बात को लेकर एक बार छोटे कर्मचारियों व मैनेजर में

झगड़ा हो गया। कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। अगर हड़ताल चालू रहती तो सामान भेजने की मांग पूरी न होने से फर्म को काफी नुकसान उठाना पड़ता। ज्ञानचन्द ने मैनेजर को आश्वासन दिया और अपनी पत्नी को लेकर वह कर्मचारियों की बस्ती में गया। लीला ने उन सब को समझाया कि आप लोग हड़ताल मत करें इससे कंपनी को और घाटा होगा फिर आपकी तनख्वाह की मांग भी पूरी न हो सकेगी। ज्ञानचन्द ने भी भरोसा दिया कि डायेरेक्टर तक आप की शिकायतें व मांग लिखकर भेज दी गई हैं। जवाब आते और निर्णय लेते कुछ समय लग सकता है अतएव आप लोग हड़ताल न करें। कर्मचारियों के मुखिया ने कहा—'हम बहिन जी के (लीला) अहसान के नीचे हैं। आप की बात चाहे एक बार न भी मानते, पर बहिन जी का हुक्म तो हमारे सिर माथे है'। इस प्रकार वह हड़ताल टल गई। ज्ञानचन्द की धाक अफसरों पर जम गई और इससे उसकी तरक्की भी हुई और वह कर्मचारियों के लिए भी कुछ करवाने में सफल हुआ।

महेन्द्र स्वरूप अपने शहर के एक हाई स्कूल के हेडमास्टर थे, और विवाह से पहले अपने सहयोगियों में काफी लोकप्रिय थे। उनके पड़ौस में ही शिक्षा विभाग के डायेरेक्टर रहते थे। किसी कारण से दोनों पड़ौसियों के बच्चों में कुछ झगड़ा हो गया। इस पर महेन्द्र की पत्नी ने डायेरेक्टर साहब की पत्नी को खरी-खोटी सुना दी। अन्य लोगों से भी डायेरेक्टर साहब हेडमास्टर की पत्नी के बदमिजाजी की चर्चा सुन चुके थे। महेन्द्र ने अपनी पत्नी को समझाया भी—"इस प्रकार से पड़ौसी व मित्रों से लड़ाई मोल नहीं ली जाती। मैं अपने मित्रों को घर लेकर आता हूँ तब भी तुम्हें नहीं सुहाता, मैं किसी के घर जाऊँ तब तुम मुझ से कैफियत तलब करती हो। किसी के घर न्योते पर जाना मुझे इसलिए अच्छा नहीं लगता क्योंकि अपने घर मैं उन्हें नहीं बुला पाता। मैं तो तुम्हारी आदतों से परेशान आ गया हूँ।"

पर श्रीमती महेन्द्र अपने सदृश किसी को समझती ही नहीं। उसी के कारण महेन्द्र शिक्षा-विभाग में अपनी लोकप्रियता खो बैठा। डायेरेक्टर साहब ने उसकी बदली एक छोटे शहर में कर दी—जहाँ बच्चों की पढ़ाई ठीक से न हो सकी। रिटायर्ड होने तक महेन्द्र के दो लड़के बी० ए० पास तो कर चुके थे पर समाजिक जीवन सफल न होने कारण न तो उनकी लड़कियों

के लिए अच्छे वर मिल सके, और न ही लड़कों की नौकरी ही लगाने में ही उनको किसी ने सहयोग दिया। इस प्रकार श्रीमती महेन्द्र की नासमझी और असहयोग से उनका परिवार पिछड़ा ही रहा।

सामाजिक जीवन की सफलता के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है। आप दूसरों से घनिष्ठता और प्रेम इस हद तक रखें जो बराबर निभ सके। स्त्रियाँ इस मर्यादा का प्रायः अतिक्रमण कर जाती हैं। अगर किसी की सगी बनेंगी तो अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर करने को उतावली रहेंगी, और अपने घर का सारा भेद भी बता देंगी। पर यदि मन फट गया तो उसके अड़ौस-पड़ौस तक से बैर ठान लेंगी। देखने में आता है कि जरा-जरा सी बातों को लेकर दो घरों में प्रायः झगड़ा हो जाता है। बच्चों की लड़ाई में बड़े भी दलबन्दी में जुट जाते हैं। दोनों ओर से कभी-कभी डट कर तू-तू मैं-मैं होती है। स्त्रियों में तो नोक-झोक चलती ही रहती है, पुरुषों को भी उसमें घसीट लिया जाता है। यह भारी गलती है।

अपने पति से छिप कर किसी से हेल-मेल मत बढ़ायें। किसी पुरुष का सहयोग अपने पति के बिना स्वीकार मत करें। सामाजिक जीवन में आदान-प्रदान का सन्तुलन बनाये रखना चाहिए नहीं तो मित्रता अधिक दिन नहीं



निभती। मित्रों के दुख-सुख में शरीक हों, उनका हाथ बटायें, हमदर्दी दिखायें। अड़चन पड़ने पर केवल मौखिक सहानुभूति दिखाकर ही अलग

न हो जायें, जहाँ तक हो सके व्यवहारिक रूप से भी मदद करें। दुख के समय जो मित्र काम आता है उसी पर विश्वास और प्रेम बना रहता है। अड़चन पड़ने पर मित्र परिवार में बीमार की सेवा, घर या बच्चों की संभाल में सहयोग दें। मित्र की पत्नी बीमार हो या पीहर चली जाय तो मित्र परिवार की सार-संभाल मित्र पत्नी का कर्तव्य है। आप अपने पड़ौसी मित्रों से सुख और उत्सवों पर मिलें, बधाई दें, उपहारों के आदान-प्रदान से प्रेम बढ़ाएँ। सखी-सहेलियों को पतियों व बच्चों सहित निमंत्रण दें। मिलकर पिकनिक के लिए बाहर जायें।

याद रखें पति का सामाजिक जीवन पत्नी के सहयोग के बिना कभी भी सफल नहीं हो सकता। दो परिवारों में घनिष्ठता और अपनत्व बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि उस परिवार की स्त्रियाँ एक दूसरे के दुख-सुख में काम आयें।

पड़ौसी धर्म—

समाज में रहते हुए आप समाज से अलग अपनी खिचड़ी नहीं पका सकते। एक दूसरे का सहारा ढूँढ़ना ही पड़ता है। बड़ी-बड़ी बातों को तो छोड़िये, छोटे-छोटे काम भी पड़ौसी के सहयोग के बिना धरे रह जाते हैं। आपके पति शाम को चार दोस्तों के संग आ जाते हैं। और जल्दी में यह कह-कर बैठक में चले जाते हैं कि जरा चटपट चार लोगों के लिए चाय सजा कर भेज दो। आप देखती हैं कि चीनी काफी नहीं है या दूध फट गया है नौकर कहीं बाहर गया हुआ है—मुन्ना भी अभी तक खेलकर नहीं लौटा है—आप परेशान होती हैं और एक दम से आपको पड़ौसिन की याद आती है और लपककर एक कटोरी चीनी और पाव भर दूध आप उसके यहाँ से ले आती हैं। आज बुधवार है आटे की चक्की बन्द है। पर आपको कल आटा पिसाने की याद नहीं रही अब क्या करें ? आपकी नेक पड़ौसिन झट अपने यहाँ से पतीला भर कर आटा आपको ला देती है और प्रेम भरा उलाहना भी देती है कि "बहन जी, ऐसे आड़े-भिड़े के समय ही तो पड़ौसी धर्म पाला जाता है। मैं भी तो उस दिन आपके घर से पाव भर घी ले गई थी। इस तरह का लेना-देना तो मित्रों में बना ही रहता है।"

आपको सयानी पड़ौसिन ठीक कहती है, अगर आप अपने पड़ौसी के काम आयेंगी तो वह भी आपको सहयोग देने में पीछे नहीं रहेगी। यह तो

ऐसा हिसाब है कि जो नेकी आप बोयेंगी सो ही काटेंगी। कभी-कभी अपने सगे-सोई काम नहीं आते पर पड़ौसी और मित्र हाथ बटा लेते हैं। मनुष्य की लोक-प्रियता उसके गुणों और सद्व्यवहार पर ही निर्भर है।

मित्र-मंडली का सहयोग प्राप्त करें—

मनुष्य के जीवन में मित्रों का सहयोग बहुत महत्त्व रखता है। बड़े होकर बहन-भाइयों का साथ तो छूट जाता है पर मित्र ही समय पर काम आते हैं। पर मित्र या पड़ौसी का सहयोग तभी प्राप्त हो सकता है जबकि परिवार की महिलाओं में परस्पर हेल-मेल हो। अतएव स्त्रियों को यह चाहिए कि अपने पति के मित्र परिवार के दुख-सुख में शरीक अवश्य हों। अगर आप उनके काम आयेंगी तो वे भी समय पर आप का हाथ बटायेंगी। तीज-त्यौहार, उत्सव, विवाह-शादियों आदि पर पड़ौसियों और सहेलियों के सहयोग के महत्व पता चलता है। आपके यहाँ अचानक मेहमान आ गये हैं, पड़ौस से खटिया, खाली कमरा या कुछ बर्तन चाहिएँ आप यदि उनको ऐसा सहयोग देती रहीं हैं तो मौके पर निसंकोच उनसे भी मदद मांग लेंगी। आपके पति बाहर गये हुए हैं, मुन्ना अचानक बीमार हो जाता है या घर में कोई दुर्घटना हो जाती है आप झट पड़ौसियों को आवाज देती हैं और वह मिल कर आपकी मुसीबत हल्की कर देते हैं या दौड़-धूप करके आपकी समस्या हल कर देते हैं। आप चार दिन के लिए पीहर जा रही हैं पीछे आपका १२ वर्ष का मुन्नू और उसके पिता जी रह जाते हैं, ऐन मौके पर आपका रसोइया बीमार पड़ जाता है। पर आपके नेक पड़ौसी अपके प्रोग्राम को असफल नहीं होने देते। मुन्नू व उसके पिता जी की भोजन-व्यवस्था उनके यहाँ ही हो जाती है।



आपको किसी ऐसी जगह जाना है कि छोटी मुन्नी को साथ ले जाना वहाँ सुविधाजनक नहीं है। आप पड़ौसिन के पास जाकर अपनी कठिनाई बताती हैं और वह कहती है—"बहन जी, आप मुन्नी को यहाँ झूले में सुला जायें छोटा भय्या (मुन्ना) उसे बहलाये रखेगा।" आप लौटकर देखती हैं कि मुन्नी और मुन्ना आपसमें मस्त हैं। आप किसी स्कूल में काम करती हैं आपके बच्चे को खसरा निकल आया है। सात-आठ दिन की आपको छुट्टी मिलनी कठिन है। आपकी अड़चन का आपके पति के मित्र की पत्नी को पता चलता है। वह तीन-चार दिन नित्य दोपहर को आपकी गैर हाज़री में आकर मुन्नू को दवा-पथ्य दे जाती है और कहानी सुनाकर उसका मनोरंजन भी करती है।

अड़ौस-पड़ौस के व्यवहार का पारिवारिक जीवन तथा आपके बच्चों के चरित्र निर्माण पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए पड़ौस के बच्चों में भी आपकी दिलचस्पी कम नहीं होनी चाहिए। उनके कल्याण और सदाचार पालन के विषय में आप भी सहयोग दें। कहावत है कि पड़ौस की शक्ल तो नहीं पर अक्ल जरूर ही आ जाती है। बच्चों के विषय में तो यह बात सोलह आने सच है, जो वह अपने पड़ौसी भाई को करते देखेंगे वही खुद भी करेंगे। आपका अपने पड़ौसियों के प्रति कैसा रुख है, कैसा सहयोग और दृष्टिकोण है इस बात से बच्चों के सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उनको



सामाजिक कर्त्तव्य की शिक्षा आपके द्वारा निभाये गये पड़ौसी धर्म की सफलता और असफलता से मिलती है। अगर आपकी पड़ौस से अच्छी निभती है, तो बच्चों को अपने समवयस्क मत्रों की कमी नहीं रहेगी और उनका खाली समय आनन्द से कट जायेगा। आपका पड़ौसी जीवन जितना अधिक सफल

होगा, आप स्वयं को विपत्ति में उतनी ही अधिक सुरक्षित अनुभव करेंगी। देखने में आता है कि पड़ौस के असहयोग से बने-बनाये काम बिगड़ जाते हैं और उनके सहयोग से आपकी इज्जत बची रहती है।

आप बाल-बच्चों वाली है। कल के दिन लड़कियों की शादी होगी, लड़के नौकरी पर लगेंगे। उस समय सफल सामाजिक जीवन के कारण आपको अनेक सुविधाएँ प्राप्त हो सकेगी यह भी संभव है। कि आपके घर में रिश्ता करने के इच्छुक परिवारों का परिचय मित्र-मंडली के द्वारा ही हो और आपका सुयश मित्र-मंडली के द्वारा ही फैले अथवा लड़के की नौकरी और पति की तरक्की में भी मित्र-मंडली का भी हाथ हो। आपके विरोधियों का मुँह बंद कराने में भी आपके पारिवारिक मित्र ही काम आयें। पर यह सब केवल चाहने मात्र से नहीं हो सकता, इसके लिए आपको अपने परिवार के सामाजिक जीवन को सब तरह से सफल बनाने की चेष्टा करनी होगी। इन्सान की कद्र करना सीखें, दूसरों से इन्सानियत से पेश आना न भूलें, सान्त्वना के दो मीठे शब्द, हमदर्दी, समय पर थोड़ा-सा सहयोग, अड़े-भिड़े में काम आना, दुःख-सुख बटा लेना कहने को ये है तो छोटी-छोटी बातें पर मनुष्य को लोकप्रिय



बनाने में इनका बड़ा हाथ होता है। किसी की नेकी को कभी मत भूलें। याद रखें यदि आप नेकी बोयेंगी नहीं तो काट भी नहीं सकतीं। आप इस बात की हमेशा चेष्टा करें कि अपनी योग्यता से पड़ौस को फायदा पहुँचा सकें। मान लें किसी मुहल्ले में स्कूल नहीं है, आपके बच्चों को भी दूर स्कूल जाने में कष्ट होता है, आप एक घंटा जिस समय अपने बच्चों को पढ़ायें पड़ौस के बच्चों को भी इकट्ठा करलें, इससे सभी पड़ौसी आपका अहसान मानेंगे और आपकी लोक-प्रियता बढ़ेगी।

याद रखें—

माता-पिता का सफल सामाजिक-जीवन बच्चों के सुखद भविष्य की आधार-शिला बन जाती है। मित्र-मंडली में प्रिय-परिजनों की गणना भी है, यथा—जेठ-जिठानी, देवर-देवरानी, नन्द-नन्दोई, बहन-बहनोई, साला-सलहज आदि ऐसे रिश्तेदार हैं जोकि प्रेम और घनिष्ठता हो जाने पर मित्रों के दायरे में आ जाते हैं। पर यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि गृहिणी का व्यवहार इनके प्रति प्रेमपूर्ण हो। वह इनकी आयु और पद के अनुसार सबको अपने प्रेम व सेवा से जीत कर विश्वास प्राप्त कर सके और प्रेम के आदान-प्रदान में सन्तुलन बनाये रखे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पड़ौसी-धर्म या रिश्तेदारी तभी निभती है जबकि मित्राचारी भी हो। बिना मित्रता के केवल मुँह-देखी की प्रीति और राम-दुआ का नाता ही रह जाता है। परिजनों में मित्राचारी तभी निभ सकती है जबकि स्त्रियों में आपस में मेल हो, परिवार के बच्चे स्नेह-बन्धन में बंधे हों, परिजन दुःख-सुख में इकट्ठे हों, केवल लेने की ही कामना न हो, देने की उत्सुकता भी हो। दोषों व न्यूनताओं को भुला कर, अपनत्व बना रहे। परस्पर आर्थिक शोषण और अविश्वास न हो। कोई नाते में बड़ा है या भाई है इस लिए उसका देने का ही हक है, लेने का नहीं, ऐसी भावना नहीं रखनी चाहिए। 'भाई के मिस ले और भतीजे के मिस दे'—बहन को इसी नीति को अपना कर चलना चाहिए तभी वह अपनी भाभी की प्रिय बनी रह सकती है। अब जब कि सामाजिक ढाँचा ही बदल रहा है, बहनों को प्रलोभन वृति को छोड़ना होगा।

गृह-कलह की तरह पड़ौस-कलह भी जीवन को नारकीय बना कर रख देती है। बुरा पड़ौस केले के पास बेर की तरह दुखदाई प्रमाणित होता

है। इसलिए स्त्रियों को अपने मामले आपस में ही सुलझा लेने चाहिएँ। मर्दों के कान भर कर झगड़ों को तूल देना मूर्खता है। पड़ौसी बच्चे आपस में बहन-भाइयों की तरह लड़ते रहते हैं। बच्चों की लड़ाई में बड़ों को जहाँ



तक हो सके नहीं पड़ना चाहिए। उन की लड़ाई तो क्षणिक होती है। वह आज रूठे कल फिर एक हो जाते हैं। पर बड़ों की दलबन्दी पड़ौसी-प्रेम पर करारी चोट करती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आते बैर का कारण कभी-कभी बच्चों की लड़ाई ही में पाया गया है। बच्चों की लड़ाई में स्त्रियाँ मैदान में उतर आती हैं और फिर कटु वाक्य बाणों की वर्षा दोनों ओर से होने लगती है और ऐसी बातें कह दी जाती है, कि कलेजों में छेद पड़ जाते है। पारिवारिक कलंकों को बढ़ा-चढ़ा कर कहा जाता है, व्यंग कसे जाते हैं और गढ़े मुर्दे खोद कर रख दिये जाते हैं। परिणाम यह होता है कि जो दो पड़ौसो भाई कल तक मित्र थे शाम को एक दूसरे से आँख बचा कर निकल जाते हैं। परिणाम-स्वरूप राम-दुआ भी बन्द हो जाती है।

पीठ पीछे निन्दा और चुगलखोरी भी प्रेम के लिए कतरनी साबित होती है। स्त्रियाँ इस दोष की प्रायः अपराधिनी होती हैं। मौहल्लों में जहाँ चार औरतें खाली होकर बैठी कि पर-निन्दा, स्व-प्रशंसा और इधर की उधर लगाई-बुझाई किये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती। इस नारद-प्रकृति को छोड़े

बिना कोई भी व्यक्ति समाज में लोकप्रिय नहीं हो सकता।

बाज़ स्त्रियों के पेट में पानी भी नहीं पचता। वह नौकरों-चाकरों या बच्चों के मारफत अपने पड़ौसियों के घर की बातों का पता लगा लेती हैं। सास-बहू के झगड़े, देवरानी-जिठानी की खटपट, पति-पत्नी की कलह कौन आया-कौन गया, क्या खरीद फरोख़ात हुई, क्या नई चीज आई, आदि बातों का पता लगाये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती। फिर जहाँ चार स्त्रियों में बैठी कि बात को बढ़ा-चढ़ाकर ऐसा सुनाती हैं कि उसके मूल और छोर का पता लगाना असम्भव हो जाता है। मुँह पर मीठी और पीछे घात करने वाली ये पड़ौसिनें कब किसकी इज्जत पर कीचड़ उछाल देंगी, कहा नहीं जा सकता। ऐसी स्त्रियाँ पड़ौसियों के लिए बहुत दुखदाई प्रमाणित होती हैं। इनके पति को समाज का कोप-भाजन बनना पड़ता है। स्त्री का गुलाम, 'वाइफा' का हजबैंड कह कर लोग उनका उल्लेख करते हैं।

गृहस्थी की धुरी है गृहिणी। इसी लिए पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सफल बनाने का दायित्व बहुत कुछ उसी पर है। आप इतिहास के पन्ने उलट डालिये तो आप को यह बात स्पष्ट हो जायगी कि संसार में जितने भी महापुरुष, नेता, साहित्यिक, सन्त, वैज्ञानिक, चित्रकार, कलाकार आदि हुए हैं उन्हें लोकप्रिय बनाने, प्रेरणा देने और उनके जीवन की बाधाओं को दूर करने में नारी का हाथ रहा है। चाहे वह रंगमंच पर उसके साथ रही या यवनिका के पीछे, पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुरुषों के जीवन नाटक को सफल बनाने में वह बराबर प्रयत्नशील बनी रही।

१३. दावत और प्रीतिभोजों का आयोजन

सुशीला का पति मदन क्यो लोक-प्रिय है ? उसके दोस्त मित्र दु ख-सुख मे उसकी मदद करने और शरीक होने क्यो पहुँच जाते है ? इसका एक



ही जवाब है—लोगो के साथ उसके सामाजिक सबध अच्छे है। वह अपने पडोसियो के बाल-बच्चों, मित्रो तथा मुलाकातियो की अच्छी आवभगत करता है। मदन की लोकप्रियता का श्रेय उसकी पत्नी को है। वह बच्चो की पार्टियाँ, पिकनिक, आदि का आयोजन इतने सुन्दर ढग से करती है कि कम खर्चे मे ही उसकी दावते सफल हो जाती है। अपने इस प्रबन्ध कुशलता के कारण सुशीला और उसके पति इतने प्रसिद्ध हो गये है कि उनके रिश्तेदार व मित्र उनको अपनी प्रत्येक दावत मे बुलाते है और सुशीला के सुझावो से भरपूर लाभ उठाते है।

आजकल दावतों के प्रबन्ध में कई एक ऐसे अच्छे सुधार हो गये हैं कि अतिथि सत्कार का काम सरल और सुविधाजनक बन गया है। कहावत है गर्ज़ सब सिखा कर रहती है। नौकरों की समस्या, स्थान का अभाव, खाद्य-पदार्थों की किल्लत और नवीनता-पसंदी ने प्रीतिभोजों का रूप ही बदल दिया है। आजकल न तो भारतीय ढंग से बड़े-बड़े थाल सजाकर खाना-खिलाना लोग पसन्द करते हैं और न विलायती ढंग से डिनर-पार्टी और गार्डन पार्टी का रिवाज ही रहा है। दावत का असली महत्व है ऐसे मित्रतापूर्ण वातावरण में मिलना-मिलाना जहाँ घड़ी, दो-घड़ी इकट्ठे होकर सब हँस बोल सकें, अपना मनोरंजन कर सकें। यह बात घरेलू वातावरण में ही हो सकती है। होटलों और रेस्टोरेंट में इसका अभाव ही रहता है। आप यदि घर में किसी को निमंत्रित करती हैं तो यह जरूरी नहीं है कि पन्द्रह किस्म के पकवान बनाये जायें और विशेष तरह की सजावट की जाये। मेहमान निवाज़ी के लिए आप को परेशान होने की जरूरत नहीं है। आगे जाकर मैं मेज सजाने और विशेष पार्टियों के प्रबन्ध के विषय में बताऊँगी, पर यहाँ पर कुछ सुझाव देती हूँ जिनका ध्यान अवश्य रखें।

१. जब आप को किसी को भोजन या टी-पार्टी के लिए निमंत्रित करना हो, दो-चार दिन पहले ही उसे सूचित कर दें, इससे यह लाभ होगा कि आपके मित्रों को आप के यहाँ आने का प्रोग्राम बनाने में सहूलियत होगी। साथ ही आपको भी यह मुसीबत नहीं उठानी होगी कि खाना तो दस के लिए बनायें पर आयें कुल पाँच व्यक्ति।

२. अगर आप के पास नौकर नहीं है तो मित्रों को भोजन पर न बुला कर टी-पार्टी पर ही बुलायें। इस से प्रबन्ध करने और बातचीत करने की आपको सुविधा रहेगी।

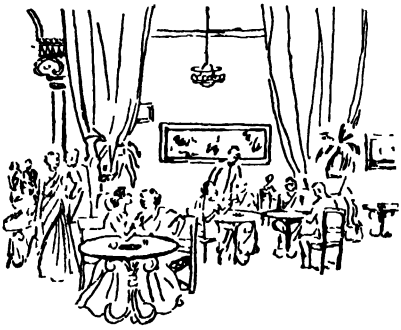
३. मेहमानों के आने पर यदि आप रसोई में बार-बार चक्कर लगायेंगी तो आप की परेशानी देख कर मेहमानों को भी असुविधा होगी। याद रखें, यदि आप के मित्र आप के घर आकर संकोच अनुभव करते हैं तो दावत का ध्येय सफल नहीं हो सकता।

४. खाने-पीने और बैठने का प्रबंध ऐसा करें कि परोसने में सहूलियत हो। अगर स्थान छोटा है तो कमरे के एक कोने अथवा बरामदे में टेबल पर सब सामग्री लगा दें। वहीं पर प्लेटे व चम्मच आदि रखें। मिठाई, केक, बिस्कुट

आदि चीजें जो कि एक दिन पहले की बनी हुई हों मेज पर पहले ही से सजा दें। केवल पकौड़े या समोसे ही गर्म-गर्म लाने की जरूरत पड़ेगी।

५. आप खाने-पीने का ऐसा आडंबर मत रचायें जो आपसे संभले नहीं और आप नाहक में निराश और खिन्न होकर सिर दर्द ले बैठें। दावत वही अच्छी समझी जाती है जिस में भाग लेकर मेहमान और मेज़बान दोनों को प्रसन्नता हो।

६. बर्तनों की सफाई, चम्मचों की पालिश, कमरे की सजावट आदि ऐसे छोटे-मोटे काम सुबह ही कर लें। प्लेटें, फूल, मिठाई, चटनी आदि मेज पर मेहमानों के आने से पहले सजाकर ढक दें। कुछ मिठाई आदि एक दिन पहले भी बनाई या मंगाई जा सकती है। सैंडविचेज़ कुछ घंटे पहले बनाकर गीले नैपाकिन में लपेट कर रख छोड़ें। मेहमानों के आने पर उन्हें मेज पर सजा दें। पकौड़े, चिप्स या पापड़ आदि चीजों को मेहमानों के आने से पहले बनाकर रख दें। परोसते समय एक बार और तल लें, इससे वे अधिक कुरकुरे हो जायेंगे। समोसे, छोले, कचौड़ियाँ आदि परोसने से पहले गर्म की जा सकती हैं।



७. यदि आपने किसी को भोजन के लिए निमंत्रित किया है तो भाजी बनाकर हौटकेस या हौट-टिफिन अथवा कुकर में रखलें इससे वे गर्म रहेंगी। खीर, हलवा, आलू, पुलाव, पूरियाँ, कचौड़ियाँ या फुलके ये चीजें आप मेहमानों के आने से घंटा दो-घंटा पहले भी बनाकर रख सकती हैं। इन्हें हौटकेस या कुकर में रखने से ये गर्म रहेंगी। खीर, हलवा, पुलाव आदि पर बादाम पिस्ते आदि की सजावट उस समय करें जब कि उन्हें डोगों में डालकर मेज पर रखने का समय हो। दही-बड़े, चटनी आदि सुबह ही बना कर तैयार कर लें। यदि आपके पास फ्रीजिडियर है तब तो दही-बड़ों को सुबह ही भिगो देने से वे खराब नहीं होंगे। खाते समय अलग से थोड़ा दही डालने के लिए तैयार रखें, पर यदि फ्रीजिडियर नहीं है तो दही-बड़े तलकर निकाल लें। दही में भिगोने से पहले उन्हें गर्म पानी में नमक डालकर नर्म कर लें, फिर ताजे दही में डालकर काँच के बोल में सजा दें। सब्जी और सलाद शाम

को ताजी ही बनानी चाहिए, नहीं तो इनका स्वाद अच्छा नहीं रहता। जो भाजी तली हुई या भुनी हुई बनानी है यथा करेले, घुइयाँ, कटहल, छोले, रवांस वे दो घन्टा पहले भी बनाई जा सकती हैं।

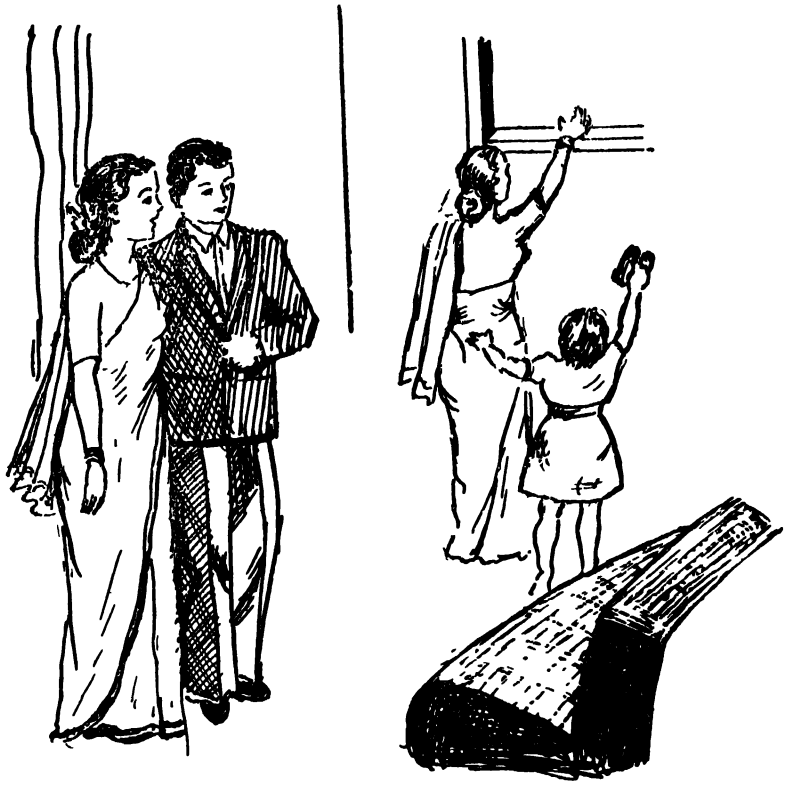
८. मेहमानों के आने से पहले आप का चौंका साफ-सुथरा, बर्तन करीने से लगे हुए दिखें। आम तौर पर देखने में आता है कि जब हमारे घरों में किसी का खाना होता है रसोई की गत बन जाती है। चारों ओर छिल्के, बर्तन और पानी बिखरा रहता है। घर के सब लोग परेशान से दीखते हैं। एक अच्छी खासी हाय-तोवा मची रहती है। नौकर को बुरा-भला और गालियाँ सुननी पड़ती हैं। बच्चों को डांटा-डपटा जाता है। गृहिणी परेशान होकर भँवीरी की तरह कमरे से रसोई में और रसोई से आंगन में चक्कर काटती फिरती है। ऐन मौके पर कोई चीज बिगड़ जाती है, कोई तैयार नहीं हो पाती, कोई गिर पड़ती है, इस पर गृहिणी नौकर पर झुँझलाती है। नौकर अलग बड़-बड़ करता रहता है। ऐसे दृश्य आप को दावत के समय कई घरों में देखने को मिलेंगे। दावत के बाद गृहिणी की यह आम शिकायत होती है—'हाय आज तो थक कर चूर हो गई। मेरा तो सिर फटा जा रहा है। मुझ से तो कुछ खाया ही नहीं गया। फलाँ चीज समय पर पहुँची नहीं, अमुक चीज में नमक ज्यादा हो गया था। खीर में बादाम-पिस्ते डालना ही भूल गई। पूरियाँ तो ठंढी ही हो गई थीं। पापड़ कच्चे थे, अरे हाँ सलाद तो परोसना ही भूल गई।'

९. उपरोक्त शिकायतों को दूर करने का यही तरीका है कि टी-पार्टी प्रीति-भोज या डिनर पर क्या खाना-खिलाना है इसका मीनू दो दिन पहले बना लें, ताकि बाजार से यदि कोई खास चीज लानी हो तो समय रहते सुविधा से खरीदी जा सकती है। जल्दी-जल्दी में खराब चीज खरीदनी पड़ती है। दावत की कुछ तैयारी जैसा कि मैं ऊपर बता आई हूँ एक दिन पहले कर लें, कुछ सुबह को कर लें और शेष काम मेहमानों के आने से पहले निबटा लें। भोजन में नमक, मिर्च अधिक मत डालें। जो अधिक खाने वाले हैं वे ऊपर से डाल सकते हैं। कम का तो इलाज भी है अधिक का नहीं। खाद्य पदार्थों को तैयार करके चख लें, यदि कुछ चीज छूट गई है तो डाली जा सके।

१०. मेहमानों के आने के समय आप उनके स्वागत के लिए तैयार रहें।

उस समय आप का गुसलखाने में होना या घर की सफाई में लगे रहना शोभा नहीं देता।

११. परोसने में आप अपनी सहेली या उनकी लड़की का सहयोग ले सकती हैं।



१२. न केवल खिलाना परन्तु वातावरण को प्रसन्न और दिलचस्प बनाये रखना भी गृहिणी का कर्तव्य है। किसी विशेष अतिथि को ही सारी प्रधानता नहीं देनी चाहिए, अन्य मेहमानों की ओर भी थोड़ा बहुत ध्यान देना जरूरी है। अगर कोई मेहमान स्वयं को उपेक्षित अनुभव करेगा तो वह दावत का आनन्द कभी नहीं उठा सकेगा।

खाने के कमरे की सजावट—

खाने का कमरा हवादार, साफ-सुथरा और आकर्षक ढंग से सजा

होना चाहिए। अगर जाड़े के दिन है तो दरवाजे बन्द रखें और कमरे को अंगीठी आदि से गर्म रखें। यदि गर्मी के दिन है तो खिड़कियाँ, दरवाजे और रोशनदान खोल कर कमरे को ठंडा रखें। यदि आपने पाट और आसन पर बिठाकर खिलाने का प्रबन्ध किया है तो फर्श को साफ करके बराबर की दूरी से एक से पाट और आसन लगायें। आने-जाने के लिए दरवाजे का स्थान खुला छोड़ दें। खाद्य पदार्थ रखने के लिए बीच में एक छोटी चौकी रखें ताकि एक सिरे से परोसकर बाद में बर्तन चौकी पर रखे जा सकें। रांगोली धूपबत्ती, फूल आदि से कमरे को सुन्दर और सुगन्धित बनायें। चटनी, पापड़, नमक, नींबू आदि परोसे जाने के पश्चात् मेहमानों को बैठने को



बुलायें। मेहमानों के हाथ धोने के लिए साबुन तौलिया तैयार रखें। भोजन थाली में जरूरत से अधिक न परोसें।

यदि आपका खाने वाला कमरा पाश्चात्य ढंग से सजा है और भोजन

मेज कुर्सी पर बैठकर खाने की व्यवस्था की गई है तो मेज को करीने से सजायें। मेज पर एक मोटी चादर या सफेद खेस बिछाकर तब उस पर सफेद चादर बिछायें, इस से चादर जमी रहेगी। यदि आप की खाने की टेबल अच्छी पालिश वाली है तो चादर न बिछाकर टेबल-मैटस् भी काम में लाये जा सकते हैं। टेबल 'लिलन' मैच करते हुए होने चाहिएँ, यह न हो कि सेन्टर टेबल क्लाथ एक रंग का है और नैपकिन दूसरे रंग के। बर्तन व काँटे छुरी व चम्मच भली प्रकार पालिश किये हुए हों। मेज पर बड़े या ऊँचे गुलदस्ते मत सजायें। नमकदानी साफ हो ताकि नमक, मिर्च आसानी से छिड़का जा सके। मेज पर बीच में चाँदी के या काँच की सुन्दर गोल प्यालियों में सूखा मेवा बादाम, पिस्ता आदि सजाकर रख दें। पिछले पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है जिससे आपको अंग्रेज़ी ढंग से मेज सजाने का कुछ अन्दाज लग सकेगा कि किस जगह कांटा-छुरी, रोटी के लिए प्लेट और नैपकिन आदि मेज पर रखे जायें। यदि आपके यहाँ 'बौय' खाना परोसने के लिए नहीं है तो खाने-पीने की मुख्य चीजें यथा भाजी, तरकारी तथा चपाती को डोंगे और प्लेटों में डाल कर मेज पर ही रख लें। यदि मेज छोटी है तो गृहिणी अपने समीप ही एक छोटी टेबल पर सब चीजें सजाले और मेहमानों को 'पास' करती जाये, वे परोस कर आगे बढ़ा देंगे।

भोजन मेहमान के बायें हाथ की ओर से परोसा जाता है। प्लेटें दाईं हाथ की ओर से उठाई जाती हैं। अंग्रेजी कायदे के अनुसार विशेष मेहमान मालकिन के दाईं ओर और मेहमान की पत्नी गृहस्वामी की दाई ओर की कुर्सी पर बिठाई जाती है। अगर मेहमान अधिक हों तो खाना घेरे में, क्रम में परोसा जाता है। यदि दो-चार व्यक्ति ही हैं तो पहले महिलाओं को परोसा जाता है बाद में पुरुषों को। खाने के कमरे में साइड बोर्ड भी तरीके से सजायें। फालतू प्लेटों और काँटे चमच दाई तरफ रखी जायें। डेजर्ट प्लेटें और फिंगर बोल (हाथ धोने के प्याले) बाई ओर रखे जायें। पूरी, पराठे और फुल्के की डिश भी परोसने के बाद साईड बोर्ड पर रखी जा सकती है। रात के भोजन में अधिक आडम्बर होता है, पर दोपहर के भोजन में इतनी सजावट की जरूरत नहीं है।

शाम की चाय—

अगर आपके पास ट्रौली टेबल है। तो केक, सेंड विचेज़, मिठाई आदि

उसके नीचे की ट्रे में तथा चाय के बर्तन ऊपर की ट्रे में सजाये जा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को एक क्वाटर प्लेट दे दें, वे केक-स्टैंड में से जो चाहिए स्वयं ले लेगें या फिर गृहिणी प्लेटों में परोस दे। प्रत्येक व्यक्ति की कुर्सी के पास एक छोटी नीची साइड-टेबल रखी हो, ताकि उस पर वह अपनी प्लेट रख सके। मालकिन चाय ट्रौली में रखे प्यालों में परोस कर चीनी पूछ कर डाल दें और प्याले मेहमानों को पकड़ा दिये जायें।

बुफे—

आजकल बुफे ढंग से दावत बहुत लोकप्रिय है। उसमें परोसने का खटराग नहीं होता और गृहिणी को घूमने-फिरने और मेहमानों से बातचीत करने की सुविधा रहती है। मेहमान भी एक दूसरे से अधिक सरलता से मेल-मुलाकात बढ़ा सकते हैं। कमरे के बीच में या एक ओर मेज लगा उसपर भोजन आकर्षक ढंग से सजा कर रख दिया जाता है। वहीं पर प्लेटें, कांटे, नैपकिन आदि भी रखे जाते हैं। मेहमान प्लेटें उठाकर खुद ही अपनी-अपनी प्लेटों में इच्छानुसार परोस लेते हैं। कई लोग घूम-फिरकर लोगों से बातचीत करते हुए खाना पसंद करते हैं, कोई पास पड़ी कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।

पिकनिक पार्टी—

जब ऋतु अच्छी हो तो इच्छा होती है कि किसी नदी या पहाड़ी के किनारे अथवा बगीचे में पिकनिक के लिए बाहर जाया जाये। अगर चार परिवार मिल कर पिकनिक के लिए बाहर जायें तो व्यवस्था करनी आसान होती है। खाने-पीने की चीजें, बर्तन आदि लाने की जिम्मेदारी बांटी जा सकती है। एक के जिम्मे पूरियाँ-पराठे और सूखी भाजी, दूसरे के जिम्मे दही-बड़े और चटनी अचार, तीसरे के जिम्मे फल और चौथे के जिम्मे कुछ मिठाई आदि दी जा सकती है। अगर बाहर जाकर केवल चाय-पानी की व्यवस्था करनी है तो साथ में स्टोव ले जायें और चाय वहीं पर तैयार करें। पिकनिक की तैयारी के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाय।

१. बाहर खाने-पीने की ऐसी चीजें ले जाई जायें जो पैकिंग में बिखरें नहीं। पतली रसेदार चीज ले जाने में सुविधा नहीं होती।

२. हौट टिफन में पूरियाँ और भाजियाँ बन्द की जायें। दही, चटनी अचार सलाद ऐसी चीजें अलग टिफिन कैरियर में रखी जायें।

३. प्लेटें, चम्मच और चाकू एक गोल टोकरी में भर लें। फल मिठाई

अलग टोकरी में।

४. बहुत बड़ा-सा बंडल न बाँधें। चीजों को इस तरह से पैक करें कि मोटर में रखने में असुविधा न हो और उठाकर ले चलने में सुविधा रहे।

५. बैठने के लिए एक-दो दरी और शीतल पाटी, बर्तन, चाय के लिए कुछ नैपकिन, बिछाने के लिए टेबल-क्लाथ, पानी की सुराही, गिलास, खेलने के लिए ताश या अन्य कोई खेल भी ले जाना न भूलें।

६. मनोरंजन के लिए पोर्टिबल ग्रामोफोन भी ठीक रहेगा। शिकार के शौकीन लोग अपने साथ बन्दूक भी ले जाते हैं। बाहर जाकर बच्चों को



व्यस्त रखना जरूरी है। नही तो ऊब कर वे 'घर चलो' 'घर चलो' की रट लगा देते हैं। इसलिए हो सके तो उनके लिए एक फुटबाल या क्रिकेट का बाल-बल्ला साथ ले जायें, या फिर उनको किसी और खेल में लगा दें।

७. पिकनिक पर चायपार्टी के लिए सैंडविचेज़, केक, बिस्कुट, नमकीन, मिठाई, फल आदि ले जाना ठीक रहेगा। बाहर कुछ भूख भी अधिक लगती है इस लिए भोजन सामग्री इतनी ले जानी चाहिए कि पूरी पड़ जाये।

८. जो खाद्य पदार्थ बाहर ले जायें उनमें अधिक घी, तेल, मसाला और रसा नहीं होना चाहिए। कुछ टिन फल के भी ले जाये जा सकते हैं।

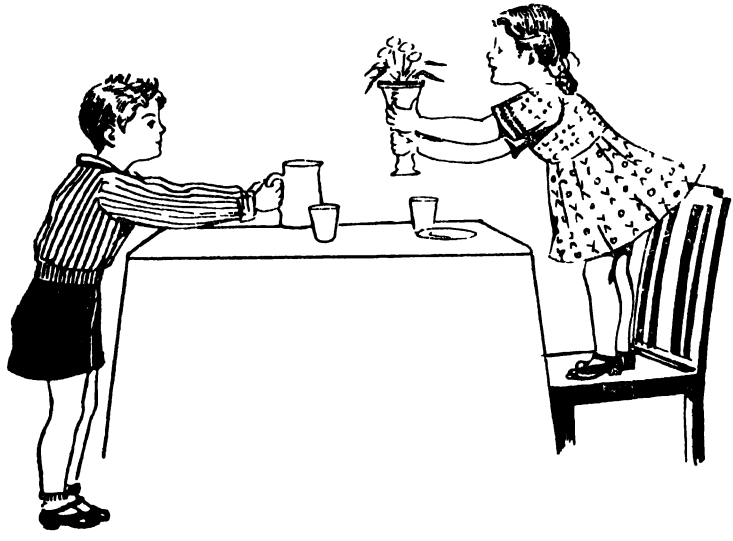
९. कई लोग घर से रसद ले जाते हैं और नदी के किनारे किसी खेत के पास दाल-बाटी बनाकर खाते है। भारतीय ढंग से इस प्रकार की पिकनिक भी ठीक है बशर्तेकि आप प्रबंध ठीक से करलें और गोबर कंडे की आंच में बाटी बनाकर, मिट्टी की हंडिया में ही दाल चढ़ा दें और खेत से मूली गाजर, मटर आदि तोड़ कर सलाद बना लें। चौके-बर्तन का खटराग बाहर

नहीं होना चाहिए। भोजन पकाने में उस दिन सभी व्यक्ति हाथ बटायें ताकि गृहिणी को आराम मिल सके।

१०. पिकनिक पर जब बाहर जायें पीने का पानी घर से ले जायें। सम्भव है कि बाहर आपको साफ पानी न मिले और इधर-उधर का पानी पीकर आप बीमार हो जायें।

बच्चों की पार्टी—

हमारे देश में कई एक त्यौहार ऐसे आते हैं जब कि केवल बच्चों को खिलाने पिलने का महत्त्व समझा जाता है। यथा नवरात्रों की अष्टमी को कन्याओं और बालकों को दावत दी जाती है। इसी प्रकार वसन्त पंचमी, गणेश चतुर्थी पर भी बालक-बालिकाओं को विशेष रूप से निमंत्रित किया जाता है। आजकल बच्चों के सामाजिक जीवन को विकसित करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। अतएव उनके जन्म दिन या परीक्षा में पास होने पर बच्चों की पार्टी का आयोजन आम घरों में किया जाने लगा है।



सभी बच्चे रंग-बिरंगी सजावट को बहुत पसन्द करते हैं। अतएव विशेष अवसर पर पार्टी वाले कमरे को रंगदार कागजों की जंजीरों और गुब्बारों आदि से सजाया जा सकता है। भोजन परोसने से पहले बच्चों को कुछ देर बाहर खेलने में व्यस्त रखें। म्यूज़ीकल चेयर, तीन पाँव की दौड़,

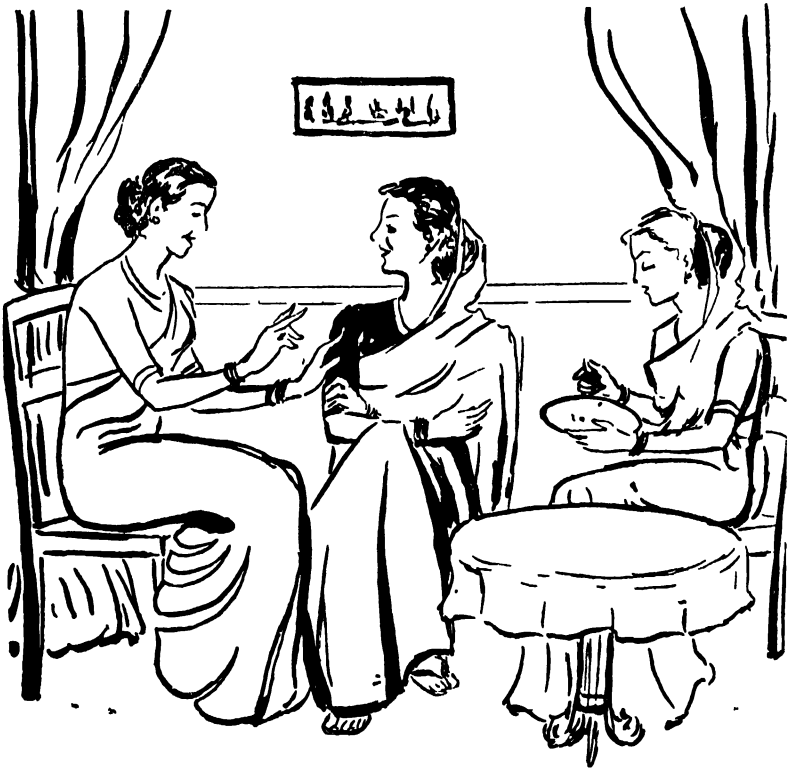
आदि खेल बच्चों को बहुत प्रिय हैं। बच्चे पार्टियों में केवल-खाने पीने ही नहीं आते परन्तु खेलने-कूदने और मनोरंजन के लोभ से भी आते हैं। इस लिए खेल में जो जीते तथा अन्य बच्चों को भी कुछ न कुछ इनाम दें। आजकल प्लास्टिक के खिलौने काफी सस्ते मिलते हैं। कुछ उपयोगी उपहार यथा रूमाल, पेंसिलें, लुडो, गेंद आदि भी दिये जा सकते हैं। प्रत्येक वस्तु पर बच्चे का नाम लिख कर लटका दें। जो इनाम किसी खेल में जीतने पर देने हों उन्हें अलग रखें।

बच्चों की पार्टी में खाने-पीने की चीजें सादी पर देखने में आकर्षक और रंग-बिरंगी होनी चाहिएँ। अगर बिठा कर खिलाने की सुविधा न हो तो मेज के आस-पास खड़े करके सब को खिलाया-पिलाया जा सकता है। बच्चों को खुद परोस दें। उनके लिए गिलास, प्याले, प्लेटें, चम्मच छोटे-छोटे हों ताकि वे संभाल सकें। उन्हें अधिक मिर्च मसाले वाला या घी वाला भोजन मत दें। सैंडविचेज, केक, आलू चाप्स, आलू चिप्स, बर्फी, मूग की दाल, ऐसी ही पाँच-छः चीजें काफी है। बच्चे आइसक्रीम के बड़े शौकीन होते हैं। आप बेसन, मैदे या खोये की चीजों को छोटे-छोटे साँचों में दबाकर भिन्न-भिन्न आकृतियों में उन्हें सजा सकती हैं। पीने के लिए बच्चों को कोई कोल्ड ड्रिंक या आधी दूध आधी चाय, कोल्ड कौफी व दूध दीजिए। अन्त में उन्हें दो-दो टौफी, लेमन ड्राप्स या चाकलेट का टुकड़ा दें। आम, सन्तरे आदि फल जिनका रस टपका कर वे अपने कपड़े सान लें, खाने को मत दें। अगर देने भी हों तो काट कर या छील कर दें। फल के छोटे-छोटे टुकड़े आइस्क्रीम के साथ मिलाकर भी परोसे जा सकते हैं।*

* यह लेख लेखिका की पुस्तक 'भारतीय-भोजन-विज्ञान' से उद्धृत किया गया है।

१४. अब फिर कब दावत उड़ेगी ?

सामाजिक जीवन के क्षेत्र में प्रीतिभोजों और दावतों का महत्त्व भुलाया नहीं जा सकता—पर इस मंहगी के जमाने में दावतें और प्रीतिभोज तो



सपने की बात हो गई है। किसी तरह खींच तान कर सात दिन पूरे होते हैं, अपना ही पेट नहीं भरता किसी को खाने पर क्या कोई बुलाये? पर बिना बुलाये काम भी तो नहीं चलता। तीज-त्यौहार हैं, उत्सव-विवाह आते हैं, बेटी-बहिनें, भाई-भतीजे शहर में ही रहते हैं, उन्हें कभी खाने पर न बुलायेंगे तो लोग नाम धरेंगे। फिर अतिथ्य-सत्कार का तकाजा भी तो है। माना कि कोई घर में खाने-पीने के लिए ही नहीं आता, पर कभी-कभी तो चार सगे-सोई, भाई-

बन्धु, अड़ोस-पड़ोस या सखा-सहेली उत्सव मनाने, हँसने-बोलने, खेलने-कूदने और मौज करने के लिए इकट्ठे होते ही हैं।

खाने-पीने की किल्लत एक अकेली आपको ही तो नहीं है, सबके सामने यही समस्या है। सुशीला के घर भी वही राशन आता है, जो शान्ति के आता है, पर हम तो यही देखते हैं कि सुशीला महीने में एक-दो बार सपरिवार जहाँ दावत पार्टियों में जाती है वहाँ अपने घर भी दूसरों को बुलाती है। इस आदान-प्रदान ने उसे और उसके पति को बड़ा लोकप्रिय बना दिया है। मित्र-मंडली किसी की पार्टी में चाहे जाय चाहे न जाय पर सुशीला के घर अगर पार्टी है तो सभी कोई समय निकाल कर पहुँच जाते है। अनेक बहनों की यह धारणा बनी हुई है कि शायद मित्र-मंडली जहाँ खाना खूब स्वादिष्ट मिले वहीं जाना पसंद करती है। परन्तु सुशीला की पार्टी में जाने को सभी उतावले रहते हैं। आखिरकार कारण क्या है? शान्ति ने भी खिलाने-पिलाने में कोर-कसर नहीं रखी और लीला भी मेहमानों की खातिर-तवाजह में दो-तीन घण्टे इधर से उधर दौड़ती ही रहीं, पर उन दोनों की पार्टी की चर्चा किसी की जबान पर नहीं है, जिससे सुनो बस सुशीला की पार्टी की ही बड़ाई करता है।

एक दिन विभा ने सुशीला की सफलता पर धूल उड़ाते हुए चार सहेलियों के बीच में कहा—"बहिन ! तुमने सुनी एक बात ? हम तुम सब हैरान थे कि सुशीला के पास इतना राशन कहाँ से आता है जो आये दिन पार्टियाँ होती हैं, आज उसकी पोल पता लगी। उसकी सखी-सहेलियों ने एक सूची बनाई हुई है कि किस के घर में कौन-कौनसी चीज विशेष स्वादिष्ट बनती हैं, बस जब सुविधानुसार पार्टी करने का तय हो जाता है, प्रत्येक सहेली अपने-अपने घर से वही एक चीज बना लाती है और सब जने मिल-कर एक जगह इकट्ठे होते हैं और दावत उड़ती है। खाद्य-पदार्थ सब बीच में मेज पर रख कर जो जिसे चाहिए उतना अपनी प्लेट में परस लेता है। इस प्रकार थोड़े से भोजन में ही उनकी दावत हो जाती है। बैठने के लिए कुर्सियों तक का प्रबन्ध भी नहीं करना पड़ता। खड़े-खड़े घूमते-फिरते सब खाते हैं। भला सोचो इस तरह दावत देनी कोई कठिन है ?"

गीता ने हांमी भरते हुए कहा—"तीज-त्यौहारों की दावत तो वह और भी सहज ढंग से मना लेती हैं। मुंडन हो चाहे नामकरण संस्कार, सब

आगंतुकों को एक-एक फूलों का बटन और पान देकर छुट्टी मिली। उनकी मित्रमंडली ने विवाह तक पर फूल, पान और शरबत का गिलास पिला कर छुट्टी पाने की रीति निकाली है। परन्तु खेल-कूद और तमाशों का वह हुल्लड़ मचता है कि अधिकांश हो-हो-ही-ही करने ही वहाँ जाते हैं। कुछ पल्ले तो पड़ता नहीं।"

समाज में बहुत से व्यक्ति ऐसे मिल जावेंगे जो स्वयं कोई उलझन सुलझाने में असमर्थ होते हैं, पर अगर किसी दूसरे को उसमें सफलता होती देखें तो उन्हें वह व्यक्ति या उसका सुनाम सुहाता नहीं। माफ करें, स्त्रियों में यह संकुचित वृत्ति अधिक है। आज हमारे समाज में सुशीला, सुश्री सुगुणा, सुनीता, सुभाषणी, सुहासनी आदि बहिनों की कमी नहीं है जिनमें कि यथा नाम तथा गुण पाये जाते हैं, कमी है उन्हें उत्साहित करने की। पुरुष स्त्रियों की प्रगति में उतने बाधक नहीं, जितने स्वयं स्त्रियाँ हैं।

जमाने की कठिनाइयों को देखते हुए हमारे प्रीति-भोजों की परिपाटी में भी परिवर्तन होना आवश्यक है। एकत्रित होकर खाना-पीना तो छूट नहीं सकता। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अतः मिलना-जुलना उसका स्वाभाविक गुण है। जीवन में लोकप्रियता और सफलता प्राप्त करने के लिए दावतें खाना-खिलाना तो आवश्यक है ही। पर राशन की समस्या और मँहगाई को देखते हुए दावतों को सफल बनाना एक चतुर गृहिणी का ही काम है और इसके लिए सुशीला की नीति अपनाने में सुविधा रहेगी।

जब चार व्यक्ति एकत्रित होते हैं, तो केवल खाने की इच्छा से ही नहीं आते, जहाँ घंटा दो घंटा भली प्रकार मनोरंजन में बीत जाएँ, मनुष्य अपनी चिंताएँ भूलकर बच्चे के सदृश खिलखिल-खेला में डूब जाएँ, अपनी दिन भर की थकावट और विषाद को सखी-सहेलियों की गप्प में शरीक होकर भुला दें, असल में वही पार्टी सफल कही जा सकती है।

पार्टी को सफल बनाने के लिए आपको मनोरंजन के साधन जुटाने की सरल विधि आनी चाहिये। भोजन की समस्या तो सुशीला के ढंग से हल हो सकती है। आप भी अपने सखी-सहेलियों से सलाह कर एक सूची बना लें कि किस बहिन के लिए कौन-कौन सी चीजें पकाकर लाने की सुविधा है। सारा भोजन पकाना कठिन है पर एक वस्तु बनानी सरल है। खाने की बहुत-सी चीजों में से जो एक चीज जिसे सुविधाजनक लगे बना लायें। जिसे

पकाने की किसी कारणवशात् सुविधा न हो वह सलाद या फलों का स्टू बनाकर ले आए। एक निश्चित स्थान पर सब अपनी-अपनी चीजें लेकर पहुँच जायँ। अगर कहीं बाहर पिकनिक के लिए गए हैं तो घास पर दो शीतल पट्टी बिछाकर बीच में सब खाद्य-पदार्थ रख लीजिये। जब तक एक दो बहिनें प्रबन्ध करने में लगी हैं, मनोरंजन के लिए कई खेल खेले जा सकते हैं यथा—

१. म्युजिकल आर्म्स—म्युजिकल चेअर के सदृश ही खेला जाता है। मान लें ११ पुरुष और १२ स्त्रियाँ हैं। सब पुरुष एक लाइन में खड़े होकर अपनी एक बाँह वे कमर पर रख लें। लाइन में अगर एक का बायाँ हाथ कमर पर है तो दूसरे का सीधा हाथ होगा। इसी क्रम से सब खड़े होंगे। प्रत्येक पुरुष की कमर पर रखी बाँह के पास ही एक एक स्त्री खड़ी होगी। सब स्त्रियों का मुँह एक ही ओर को होगा। बाजे पर कोई गत बजने पर स्त्रियाँ लाइन की परिक्रमा करती हुई भागेंगी। जैसे ही अचानक बाजा बजना बंद हुआ प्रत्येक स्त्री अपने निकटस्थ पुरुष की बाँह के पास खड़ी हो जायगी। जो स्त्री बिना साथी के रह जायगी वह निकल जाती है और साथ ही एक पुरुष भी कम कर दिया जाता है। आखिर में जो स्त्री बच जाय वह जीत गई। दूसरी बार में पुरुष भागेंगे और स्त्रियाँ खड़ी रहेंगी।

२. अँगूठी चोर—एक अँगूठी को एक पतली रस्सी में डालकर घेरा बनालें। सब जने डोरी को पास-पास मुट्ठियाँ सटाकर पकड़ लें और मुट्ठियों में जल्दी-जल्दी अँगूठी को छिपाते हुए सरकाते जायँ। एक व्यक्ति जो कि घेरे के बीच में बैठा होगा अँगूठी किसकी मुट्ठी में है, यह बताएगा। अगर बताने वाला ठीक बता सकेगा कि अँगूठी अमुक के पास है तो वह मनुष्य जो पकड़ा गया बीच में आयेगा और बीच वाला उसके स्थान पर आ जायगा।

३. अँगूठे नचाओ—सब व्यक्ति एक घेरा बनाकर बैठ जाते हैं। बीच में एक व्यक्ति खड़ा होकर उनसे अँगूठों की ड्रिल करवाता है। 'अँगूठा ऊपर', 'अँगूठा नीचे', ये आदेश घुमा-फिराकर जल्दी-जल्दी देता है। जल्दी में कई अँगूठा ऊपर रखने के बदले नीचे कर देते हैं उन्हें घेरे में से बाहर जाना पड़ता है।

भोजन के पश्चात् ऐसे खेल खेलने उपयुक्त होंगे जिसमें थकावट कम हो।

१. कुछ कागजों पर प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं की दो-दो चार-चार लाइनें लिखकर बोर्ड पर टाँग दें, और फिर एकत्रित व्यक्तियों को अपने-अपने कागज में उन कविताओं के रचयिताओं का नाम लिखने को कहें। जिसके नाम सबसे अधिक ठीक हों वह जीता।

सिनेमा-प्रेमी चलचित्रों के नाम लिखकर टांगें तथा एकत्रित सज्जन उन चित्रों में नायक-नायिकाओं का अभिनय करने वाले सितारों की सूची तैयार करें।

२. एक खेल विशपरिंग गेम कहलाता है आप एक बात किसी के कान में धीरे से कहते हैं। उसने जो कुछ भी सुना है दूसरे को कह देता है, इसी प्रकार कहते-कहते अन्त में बात कुछ की कुछ बन जाती है।

३. अन्ताक्षरी—मान लो आपने चार अक्षर का एक शब्द शबनम कहा अब दूसरा व्यक्ति तुरन्त शब्द के अन्तिम अक्षर 'म' से कोई चार अक्षर का शब्द कहेगा जैसे मलमल। अब तीसरे व्यक्ति को तुरन्त 'ल' से आरम्भ होने वाला चार अक्षरों का शब्द कहना होगा। इस प्रकार शब्दों की प्रतियोगिता चलती रहेगी। यह खेल दो पार्टियों में विभाजित होकर भी खेला जा सकता है। इसी प्रकार शब्द के बदले, कोई पद्य कहने की शर्त रखने से गोष्ठी बहुत ही साहित्यिक बन जायगी।

भानमती का पुलिन्दा—एक लिफाफे में इनाम देने के लिए कुछ उपहार अथवा चाकलेट रखकर एक कागज़ लपेट दें, उसके ऊपर एक प्रशंसात्मक शब्द अथवा 'मंजिल आ गई', 'पाला मार लिया' या 'मुँह मीठा करें' लिख दें। फिर एक कागज लपेट कर कुछ चुटकला या विशेषण लिख कर फिर कागज लपेटें। इस प्रकार लिख-लिखकर कागज लपेटने से पुलिंदा बड़ा हो जायगा। यह पुलिन्दा पहले से तैयार रखा जाय। कागज खोलने पर उसपर लिखा वाक्य सुनायें। बाद में उसे विशेषण वाक्यों के उपयुक्त अथवा ठीक विरोधी व्यक्ति को यथा 'मैं भीम हूँ' यह विशेषण वाक्य आने पर आप किसी दुर्बल व्यक्ति को पुलिन्दा दीजिये, इसी प्रकार 'कंघी करते हार गया' यह वाक्य आने पर किसी गंजे व्यक्ति को वह पुलिन्दा दिया जा सकता है। कभी-कभी पुलिन्दा उपयुक्त व्यक्ति को भी दिया जाता है। इस खेल में विनोद-प्रियता की भावना रखनी चाहिए। तभी खेल सफल हो सकता है।

जब कभी आप बच्चों की दावत करें उस समय तो सुई धागे की दौड़

तीन टाँग की दौड़, चम्मच आलू की दौड़, सिर पर मटकी लेकर भागना आदि खेल खिलाएँ। बच्चों को इन खेलों में खाने से भी अधिक आनन्द



आएगा। जीतने वालों को एक-एक रुमाल या पेंसिल देने से वह आपके यहाँ की पार्टी को सर्वदा याद रखेंगे।

मनोविनोद और मनोरंजन से आकर्षित होकर ही व्यक्ति आपकी पार्टी में न केवल हमेशा आना ही चाहेंगे पर आपको बुलायेंगे भी, और जाते समय यही कहेंगे, अब फिर कब दावत उड़ेगी ?

सामाजिक भोजों के लिए कोष संग्रह—

बहुत से उत्सव, स्कूलों, कालिजों, संस्थाओं, क्लबों और जाति-बिरादरी तथा मौहल्लों में सामाजिक रूप से मनाये जाते हैं। उनके लिए कोष संग्रह करने के कुछ तरीके ये हैं—१. कोई नाटक या तमाशे का आयोजन करके चार-चार आने के टिकट बेच दें २. आनन्द बाजार लगायें, जहाँ पर ख़ाने-पीने, खेल-तमाशे और सजावट की चीजें बेच कर धन इकट्ठा किया जाये। ३. दावत के पहले जब सब लोग खेल तमाशों में व्यस्त हों हाथ की बनी हुई कुछ चीजों पर दो-दो आने का टिकट बेच दें फिर ताश के पत्तों को उल्टा करके उठाने को कहें। एक लकी (Lucky) पत्ता पहले से निश्चित

कर लें। जिसके पास वह पत्ता चला जाये उसी व्यक्ति को वह चीज दे दी जाये। रुमाल के पैक्ट, कुशन-कवर, टी-कोजी, टेबल-क्लाथ या बाजार से कुछ चीज खरीद कर उनको बेचा जा सकता है। इस प्रकार पार्टी का खर्च निकल सकता है।

पार्टी को सफल बनाने के लिये यह भी जरूरी है कि मेहमानों को परस्पर घुलने-मिलने के मौके मिलने चाहियें। इसके लिये मेहमानों में से कुछ सहायक चुन लें। खेल बदल-बदल कर खिलायें। जितने व्यक्ति वहाँ हों उनकी संख्या के अनुसार खेल का कार्यक्रम बनाये। आनन्द तभी है जब कि जैसे-जैसे समय गुजरे और पार्टी का रंग जमता जाये और समाप्त होने पर मेहमानों के मन में यह अरमान बना रहे कि कार्यक्रम कुछ देर और चलता तो अच्छा था।

१५. आप गृहलक्ष्मी बनें

मितव्ययता नारी का गुण है—

एक कहावत है कि 'घरनी बिन घर भूतका डेरा।' यह कहावत केवल सुघड़, चतुर और कर्तव्य-परायणा गृहिणी पर ही चरितार्थ होती है। फूहड़, कर्कशा, फिजूलखर्च और आलसी नारी तो घर को नरक बनाकर रख देती है। ऐसे घर से तो गृहस्वामी दूर ही भागता है।



पुरुष मर-मरकर कमाता है। इस कमाई के पीछे उसे अपना खून-पसीना एक करना पड़ता है। लोगों की गर्म-सर्द बातें सुननी पड़ती हैं। अब यदि गृहिणी इस मेहनत की कमाई को सार्थक करना नहीं जानती तो घर में अभाव ही अभाव बना रहता है। पुरुष हिम्मत हार जाता है और अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाते ही उसकी जिन्दगी कटती है। देखने में आता है कि अधिकांश विवाह आर्थिक चट्टान से टकराकर ही विफल होते हैं। इसलिए गृहिणी का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह पुरुष की कमाई को सार्थक करने की योग्यता रखे। मासिक व्यय को इस प्रकार सन्तुलित रखे कि जरूरत पूरी होकर कुछ धन आपत्काल या आकस्मिक खर्च के लिए भी बच जाय। घर का बजट ठीक बनाना, जरूरतों पर पहले खर्चना, फिजूल खर्ची से बचना और घर की व्यवस्था सुचारु रूप में करना ये सब बातें सुगृहिणी कहलाने के लिए आवश्यक हैं।

पुरुष चाहे जितना कमाकर लाये यदि उसकी पत्नी गृहस्थी की व्यवस्था

ठीक से नहीं करना जानती, उनके घर में कभी पूरा ही नहीं पड़ता। अनाप-शनाप बातों में पैसा खर्च हो जाता है और आवश्यक बातों के लिए कमी पड़ जाती है। यदि पत्नी अपना बजट सन्तुलित नहीं रखती तो मुसीबत के समय उसे दूसरों का मुंह ताकना पड़ता है। व्यवहार-कुशल और दूरंदेशी नारी हमेशा कल का ध्यान रखकर आज का खर्च चलाती है। दुःख-सुख, दैविक आपत्ति, बीमारी, असमर्थता, घाटे, बेरोजगारी आदि सब का ध्यान रख कर बजट बनाना चाहिए। मितव्ययता स्त्रियों का विशेष गुण होना चाहिए। किसी की देखा-देखी ज़ेवर कपड़ों की हवस करना, बूते से बाहर खर्च कर देना, उत्सवों पर दिखावे के लिए उधार लेकर धूमधाम करनी, अपने से ऊँचे स्तर के लोगों से मेल-मिलाप बढ़ाकर लेन-देन और दावतों पर पैसा खर्च करना नासमझी है।

स्त्रियाँ कहाँ गलती करती हैं—

आम तौर पर देखने में आता है देवरानी-जिठानी की नकल करने के लिए अपने बूते से बाहर पैसा खर्च कर वे अपनी हवस पूरी करने से नहीं चूकतीं। शर्मा जी के दो लड़के थे। बड़ा लड़का जज था, जब कि छोटे लड़के श्रीराम को अधिक पढ़ा-लिखा न होने के कारण बाप ने फार्मिंग के लिए काफी जमीन ले दी थी। जब तक छोटे लड़के की शादी नहीं हुई वह अपनी फार्मिंग में बड़ी दिलचस्पी लेता रहा आराम से खाना-पीना निकल आता था। बड़े भाई ने कुछ रुपयों की मदद कर दी थी। वहीं फार्म पर एक छोटा-सा बँगला भी बना दिया था। जब छोटे लड़के का व्याह हुआ तो और बहू ने आकर देखा जेठ-जिठानी शहर में रहते हैं, उनके घर में बिजली, रेडियो और फिजिडियर है। बस



उसने अपने पति के पीछे पड़कर सारी फार्म बिकवा दी, मकान भी बेच दिया और शहर में आकर छोटा-सा घर बनवा लिया। हवस के मारे रेडियो और फिजिडियर भी खरीद लिया। एक साईकिल की दूकान खोल ली। इस प्रकार दो चार साल में ही सारा पैसा खा-पीकर खतम हो गया। श्रीराम का

मुँह अब भाई से भी पैसा माँगने का नहीं रहा। उन्होंने फार्म बेचने को मना किया था पर श्रीराम की बहू का कहना था कि जेठ-जिठानी जी कब चाहते हैं कि हम लोग उनकी तरह मौज करें। वे तो हमें गाँव का किसान ही बना रहने देना चाहते हैं। शहर में रहने से श्रीराम की सेहत भी गिर गई। अब वह साफ हवा, खुली जगह, घर का दूध और भाजी की सुविधाएँ भला शहर में कहाँ ? यहाँ तो खाने-पीने के लिए ही कम से कम दो सौ रुपये चाहिएँ। आज बाबू श्रीराम का जीवन दुखी क्यों हैं ? क्योंकि उसकी पत्नी ने दूरंदेशी से काम नहीं लिया।

इसी प्रकार की भूल श्यामा ने की। उसकी बड़ी बहन के बच्चे दिल्ली में मार्डन स्कूल में पढ़ते हैं। वे हैं भी पढ़ने में बहुत होशियार, क्योंकि उनके माँ-बाप बच्चे की पढ़ाई में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। पर श्यामा के दोनों लड़के लाड से बिगड़े हुए हैं। जब वे पढ़ाई में पिछड़ गये तो उसके पति ने कहा—"देखो तुम्हारी बहन के बच्चे कितने लायक हैं। अगर तुम बच्चों की सँभाल ठीक से करो तो ये भी कुछ बन जायेंगे।" श्यामा ने अपनी भूल तो समझी नहीं—उसने यही जिद्द पकड़ ली कि हम भी अपने दोनों लड़कों को दिल्ली मार्डन स्कूल में ही दाखिल करवायेंगे। श्यामा के पति ने कहा—"स्कूल बदलने से कुछ विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा। गाजियाबाद में सस्ते में पढ़ाई हो रही है। बाहर भेजेंगे तो ३०० रु० महीना खर्च आयेगा।" पर उनकी एक न चली और बच्चों को मार्डन स्कूल में दाखिल करवा दिया गया। एक तो उनकी नींव कमजोर थी अतः एक-एक क्लास नीचे दाखिला मिला, तिस पर उन्होंने मेहनत नहीं की। फेल हो गये। एक साल में ढाई हजार रुपया अलग खराब हुआ। खर्च से तंग आकर श्यामा के पति को अपने बच्चों को घर वापिस लाना पड़ा।

तारा के पड़ौस में एक थानेदार रहते हैं। उनके यहाँ ऊपर की आमदनी के रूप में आये दिन घर में नये-नये तोहफे आते रहते हैं। थानेदार की पत्नी तारा की पक्की सहेली है। वह अपने जेवर-कपड़े लाकर तारा को दिखाती है—"देखो बहिन मेरे पति मुझे कितना प्यार करते हैं—रोज मेरे लिए कोई-न-कोई चीज आती ही रहती है।" तारा की भी इच्छा होती है कि उसके पति भी उसे इसी प्रकार उपहार लाकर दें। आये दिन वह अपने पति से जेवर-कपड़े के लिए कहती है। उसका पति एक सेठ की दूकान पर मुनीम

है। वह तारा को समझा कर हार गया कि 'भाग्यवान ! दरोगा की औरत की नकल मत कर। उसके यहाँ तो अन्धाधुन्ध मची हुई है। हमें ऐसी कमाई



नहीं चाहिए। दरोगा की पत्नी को क्या पता कि दरोगा जी रात-रात भर कहाँ-कहाँ गुलछर्रे उड़ाते है।' पर तारा पर इस शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह तो अपने को अभागी और पति से तिरस्कृत समझती है। पति से सीधे मुँह बात नहीं करती। कई बार बेचारे को भूखे ही काम पर जाना पड़ता है पर तारा को इस बात की कोई परवाह नहीं।

राधा को अपना बजट सन्तुलित रखना भी नहीं आता। महीने के आरम्भ में ज्यादा खर्च कर देती है और आखिर में बड़ी तंगी से गुजारा करना पड़ता है। जिस दिन त्यौहार होगा या कोई अतिथि घर में आयेंगे वह बहुत-सी चीजें बना लेगी, फिर बाकी दिन चाहे सूखी रोटी ही खानी पड़े। इस असन्तुलित बजट के कारण आपत्काल में सिर पर कर्जा हो जाता है। एक कर्ज उतरता है तो दूसरा कर्जा चढ़ जाता है।

चमेली के घर सभी बीमार रहते हैं। इसका कारण यह है कि उसे सुघड़ाई और सफाई से खाना ही पकाना नहीं आता। उसके पकाये भोजन में न तो रस है न पौष्टिक तत्वों की रक्षा ही हो पाती है। बे-मेल, बे-मौसम

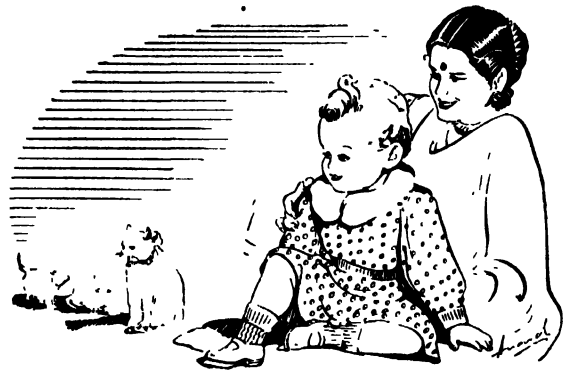
भोजन पका कर धर देती है। खिलाने-पिलाने में भी बहुत बदपरहेजी करती है। इससे आये दिन उसके घर के लोग बीमार रहते हैं।

उपरोक्त सभी स्त्रियाँ कुछ ऐसी गलतियाँ करती हैं जो कि उनके पारिवारिक सुख को कम करती हैं। आर्थिक चट्टान से उनकी गृहस्थी की गाड़ी प्रायः टकराती रहती है। ये सुघड़ गृहिणी के लक्षण नहीं हैं। सुघड़ और समझदार वह है जो अपने पति की कमाई का सद्व्यय करती है। घर की व्यवस्था और सँभाल ठीक से करती है। अपनी आय के अनुसार खर्चती है। कई बहनों का कहना है कि सफेदपोश, मध्यम वर्ग की समाज में सबसे ज्यादा मुसीबत है। उसे समाज के रीति-रिवाज, लेन-देन, भाईचारा, सभी निभाना है। मेहनत अधिक करनी पड़ती है पर आराम कम मिलता है। अपने बच्चों को कहाँ से अच्छा खिलाये, पिलाये और पढ़ाये ? आये दिन गृहस्थी में इसी बात को लेकर चखचख होती है। विवाह से पहले पति-पत्नी के कितने अरमान थे, बूढ़े माँ-बाप भी आशा लगाये हुए थे। अब अपना ही नहीं पुरता उनको कहाँ से दें ? जब से बच्चों की जिम्मेदारियाँ बढ़ी हैं गुजारा होना मुश्किल हो रहा है। अगर पहले पता होता कि गृहस्थ में इतनी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं तो विवाह ही नहीं कराते।

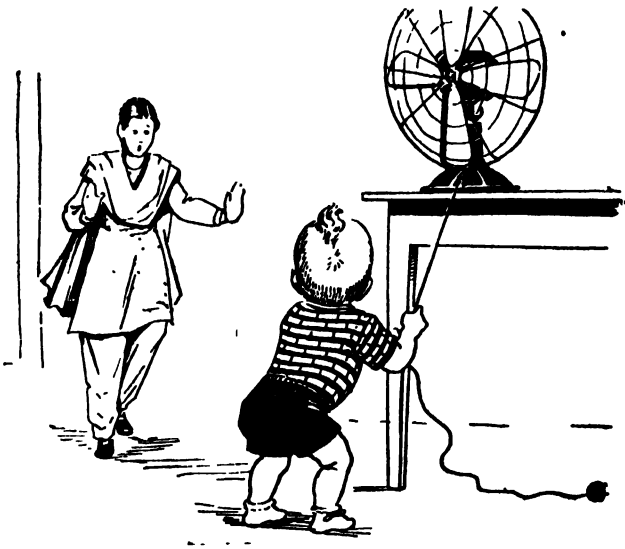
जो लोग ऐसा सोचते हैं वह हारे हुए खिलाड़ी हैं। कमर कसकर मुसीबतों से जूझना नहीं जानते। अगर पति-पत्नी परस्पर ठीक से साझेदारी निभायें और बच्चों का भी सहयोग प्राप्त कर लें तो उनकी गृहस्थी की गाड़ी मजे से चल सकती है। आगे जाकर मैं आपको लक्ष्मी की आदर्श गृहस्थी के विषय में बताऊँगी। देखिये सुघड़, समझदार लक्ष्मी ने अपने परिवार को कितना सुखी बनाया है। आप भी वैसा कर सकती हैं। स्त्री से पुरुष यह आशा करता है कि वह सच्चे अर्थ में जीवन-सहचरी प्रमाणित हो। समस्याओं को सुलझाये न कि बढ़ाये। सभ्यता के विकास के साथ जीवन की जरूरतें भी बढ़ गई हैं अतएव स्त्री का कार्य-क्षेत्र केवल चूल्हे-चक्की तक ही सीमित नहीं रह गया। उसे भी पुरुष के साथ मिलकर आर्थिक समस्या को हल करना होगा। यह तभी संभव हो सकता है जब कि वह गृह-प्रबन्ध में चतुर हो, किफायत से—पर कंजूसी से नहीं—गृहस्थी चलाये, बजट और आमदनी में संतुलन बनाये रखे, गृह-व्यवस्था सुन्दर और व्यवस्थित रखे, जरूरतों को पहले पूरी करे। सब का सहयोग लेकर फिज़ूल-खर्ची

को रोके और अपने अवकाश के समय का ऐसा सदुपयोग करे कि न केवल धन की बचत ही हो पर कुछ अतिरिक्त आमदनी भी बढ़ जाये। समझदार स्त्रियाँ चादर देखकर ही पांव पसारती हैं। अन्धाधुंध नकल और दिखावे बाजी से हमेशा नुकसान होता है।

बच्चों की जिम्मेदारी—



घर की व्यवस्था के अतिरिक्त गृहिणी पर ही बच्चों की सार-सम्भाल का भी उत्तरदायित्व है। जब तक बच्चे छोटे हैं वे माता के अधिक सम्पर्क में रहते हैं। गृहिणी पद पर आरूढ़ होते समय मातृत्व पद की जिम्मेदारियाँ निभाने की योग्यता भी होनी आवश्यक है। बच्चे परिवार का आवश्यक अंग हैं। वे घर की शोभा हैं। यदि माँ को बच्चे ठीक से पालने नहीं आते तो पारिवारिक चिन्ताएँ और अड़चनें बढ़ जाती हैं। बीमार बच्चे माँ-बाप की परेशानी को बढ़ाते हैं, उनके कारण मेहनत की कमाई दवाई और डाक्टरों को भेंट चढ़ जाती है। समस्या-



पूर्ण बच्चे दाम्पत्य-जीवन को कटु बना देते है। उनको लेकर पति-पत्नी में परस्पर झगड़ा तक हो जाता है। कुसंस्कारी बच्चों के कारण माँ-बाप को परिजनों और अड़ौस-पड़ौस में लज्जित होना पड़ता है, कुल का नाम डूबता है।

पुरुष दिन भर जीविकोपार्जन में लगा रहता है। उसे इतना समय नहीं मिलता कि वह छोटे बच्चों के चरित्र को गढ़े, उन्हें सदाचार का पाठ पढ़ाये, उनमें अच्छी बातों का चाव पैदा करे, दैनिक जीवन में उनको कर्तव्य निभाना सिखाये। इन सब बातों की जिम्मेदारी माँ पर आती है। वह प्यार से फुसला कर बच्चे की बुरी टेव छुड़वा सकती है, उसे सदाचारी और संस्कारी बना सकती है। जो माताएँ अयोग्य होती हैं, वे बच्चों को गाली-गलौच करती हैं, मारती-पीटती हैं और पिता से पिटवाने की धमकी देती हैं। ऐसी माताएँ अपनी कद्र तो कम करती ही हैं पर साथ में पिता को भी बच्चों की दृष्टि में केवल एक दरोगा बना देती हैं। संस्कारी माताओं के बच्चे भी संस्कारी और सभ्य होते हैं। आपका ध्येय केवल यही नहीं होना चाहिए कि पढ़-लिख कर बच्चा कमाने लायक हो जाये, पर साथ ही बच्चे को इस योग्य भी बनायें कि उसका शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास हो सके, वह जीवन संघर्ष से जूझ सके और एक उपयोगी नागरिक की तरह अपना जीवन बिता सके।

बच्चे बुरे क्यों निकलते हैं—

बच्चों में बहुत से दुर्गुण स्नेह के अभाव और अधिक दबाव के कारण आ जाते हैं। बच्चा अपने संगी-साथियों को खाते-पीते और खेल-तमाशों में जाते देखता है, उसका भी मन होता है कि मैं भी खेलूं, अच्छा खाऊँ-पहनूं। पर माता कंजूसी के कारण तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से बच्चे को पैसा खर्चने को नहीं देती। वह डाँट-डपट कर बच्चे की इच्छाओं का दमन करना चाहती है, सो बच्चा चुराकर पैसा खर्चता है, पकड़े जाने पर वह झूठ बोलता है, झूठ के खुल जाने पर वह किसी और के सिर अपराध मढ़ देता है। इस प्रकार वह एक के बाद दूसरा अपराध करता है।

आठ वर्ष का सुभाष गणित में दो बार फेल हो गया, इस पर 'माँ' ने पिताजी से शिकायत कर दी और उसका जेब खर्च दो रुपया बन्द करवा दिया गया। सुभाष अपनी बहिनों को पैसे खर्चते देखता था, तो उसका भी जी ललचाता था। उसकी बहिनें शाम को जब बगीचे में खेलने जातीं,

तो कभी खट्टे छोले या मूंगफली लेकर खाती थीं, सुभाष का मन भी खाने को करता था। उसने बहिनों से पैसे माँगे, पर उन्होंने यह कह कर देने से इन्कार कर दिया कि 'तू हमारे पैसे कैसे चुकायेगा, तेरा तो जेबखर्च जब तक के लिये बन्द हो गया है जब तक तू गणित में पास नहीं होता। गणित तो मुझे आता ही नहीं, सो जेबखर्च चालू होने की भी कुछ उम्मीद नहीं है। यह सुनकर सुभाष को एक तरकीब सूझी उसने कहा—'अगर तुम मुझे पैसे खर्चने को नहीं दोगी, तो मैं माताजी से कहूँगा कि इन्होंने खट्टे छोले खाये थे, फिर देखो कैसी डांट पड़ती है। तुम्हारा भी पाकेट मनि बन्द करवाऊँगा।' यह धमकी काम कर गई।

अब सुभाष पर बहिनों का डेढ़ रुपया उधार चढ़ गया। पर वह चुकाने से लाचार था, क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे। इधर बहिनें अपने पैसों के लिये तकाजा कर रही थीं। आखिरकार बहिनों ने माँ से कहा—'माँ', सुभाष ने हमारा डेढ़ रुपया देना है, क्योंकि इसने अपने फाऊँन्टेनपेन में ट्यूब डलवाई थी, एक मैप ड्राइंग लाया था' इस प्रकार के बहाने कर के बहिनों ने अपने पैसे वसूल कर लिये। सुभाष ने भी सोचा पैसे प्राप्त करने का यह अच्छा तरीका है। वह हर आठवें-दसवें कभी पेंसिल के बहाने, कभी रबड़ के बहाने पैसे माँगने लगा। एक दिन उसने अपनी डेढ़ रुपये की कीमत की पुस्तक आठ आने में बेच दी। जब उसने पैसे खर्चे, तो बहिनों ने घर पर शिकायत कर दी कि आज इसके पास आठ आने थे, इसने चाकलेट खरीदी है। खोज करने पर सारी बात का जब पता चला, तो माता-पिता को अपनी भूल पर पछतावा हुआ कि अगर हमने इसको ऐसी कठोर सजा न दी होती, तो यह झूठ और बहानेबाजी का आश्रय नहीं लेता। दूसरी बात बच्चों का अगर कुछ खाने को जी करे तो वह वस्तु या तो घर पर बना दी जाय या खुद ही किसी साफ दूकान से खरीद कर लाई जाय। बच्चों को जेब खर्च उचित ढंग से खर्चना सिखाएँ। अगर आप उन्हें कभी भी पैसा खर्चने को नहीं देंगे, तो एक तो वह गलत ढंग से पैसा प्राप्त करने की चेष्टा करेंगे, साथ ही उसे छिपाकर गलत ढंग से खर्च कर डालेंगे।

भूल हर एक से हो जाती है। बच्चे के अपराध करने पर इस बात पता लगाएँ कि उसको ऐसा करने की किस बात से प्रेरणा मिली। अगर आप कारण को दूर न करके बच्चे को डाँट-डपट द्वारा सुधारने की चेष्टा

करेंगी, तो वह झूठ और फरेब का सहारा लेकर बचने की चेष्टा करेगा। बच्चों की सभी इच्छाएँ तो पूर्ण नहीं हो सकती, हाँ, उनकी उचित माँगों की पूर्ति अवश्य होनी चाहिये। घर की आर्थिक कठिनाइयों तथा अभावों को सुलझाने और मुकाबिला करने में मुन्ना-मुन्नी का भी सहयोग लें, मुसीबतों को सामना करने योग्य उन्हें भी बनाएँ। इस विषय में बड़ों का दृष्टान्त बच्चों के लिए प्रेरणात्मक होगा।

प्रेरणाप्रद वातावरण—

१५ वर्ष का मोहन जे. एस. डब्ल्यू. की परीक्षा में सफल हो गया। परन्तु उसके पिता गरीब थे। कुल दो सौ रुपये उन्हें मासिक तनख्वाह मिलती थी। मोहन का साल के आरम्भ में ५०० रुपये खर्चा था, बाद में हर मास लगभग चालीस रुपये खर्चा पड़ता। माता-पिता ने सोचा अब अगर खर्च के कारण होनहार मोहन को आगे पढ़ने से रोक दिया जायेगा तो बहुत अन्याय होगा। घर में सब ने सलाह की कि किसी प्रकार इस समस्या को हल किया जाय। मोहन के पिताजी ने कहा कि मैंने साइकिल लेने के लिये ढाई सौ रुपये बचाये थे, अब साईकिल नहीं लूँगा। दो सौ रुपये माताजी ने वक्त-बे-वक्त के लिये बचाये हुए थे वे निकाल कर दे दिये—मोहन की बहिन सीता ने भी अपने भैया-दूज और राखी आदि के ४० रुपये जोड़े थे, वह उसने सहर्ष दे दिये। फिर भला दस वर्ष का मुन्नू क्यों पीछे रहने वाला था। अब केवल कुछ रुपयों की कमी और रह गई थी, रुपये जल्द जमा करवाने थे।

यह देख कर मुन्नू अपने कमरे में गया और लौट कर शरमाते हुए, अपना छोटा बटुआ माँ के हाथ में चुपके से थमा दिया। जब माँ ने खोल कर देखा तो उसमें पन्द्रह रुपये थे। बच्चे के लिये पन्द्रह रुपयों का त्याग पन्द्रह हजार के बराबर था। यह देख कर मोहन की आँखों में तो आँसू आ गये। माता ने छोटे मुन्नू को हृदय से लगा लिया और बोली—"बेटे! बड़ा भैया जब पास होकर नौकरी करेगा, तब तक तू कालेज में आ जायेगा। तेरी पढ़ाई का सारा खर्च वह देगा।"

घर भर के त्याग से पांच सौ रुपयों की समस्या हल हो गई। मोहन ने भी आगे जाकर कुल ३० रु० महीना में ही गुजारा कर लिया। इधर उसकी बहिन सीता और मुन्नू ने भी पाकेट मनि के लिये माँ से कभी तकाजा

नहीं किया। वे जानते थे बिड़ी मुश्किलों से पिताजी मोहन भैया के लिये ३० रुपये महीना बचा पाते हैं।

बड़ों का उदाहरण—

बच्चे जब देखते हैं कि हमारे पिता-माता भी स्वार्थी हैं, वे अपने ऊपर तो खूब खर्चते हैं, हमारे लिये ही उनकी सब नसीहतें हैं, वे स्वयं उस पर अमल नहीं करते, तो बच्चों के चरित्र में दृढ़ता नहीं आती। जिनके घर चोर-बाजारी से कमाई आती है, उनके बच्चे तो अवश्य ही फिजूलखर्च, धोखेबाज और फरेबी होते हैं। धन की अधिकता के कारण वे आरामतलब और सुस्त तथा बेपरवाह भी बन जाते हैं, उनमें असहनशीलता तथा दम्भ भी पाया जाता है। यही कारण है कि जिनके घर बेईमानी की अंधाधुन्ध कमाई आती है उनके बच्चे चरित्रहीन और दुर्गुणी हो जाते हैं।

बच्चों पर अपने बड़ों के रोजमर्रा के व्यवहारों का भी बड़ा प्रभाव पड़ता है। आपकी छोटी-छोटी भूलें उन्हें अपराध करने की प्रेरणा देती हैं। यथा भाजी बेचने वाला आया, माँ ने तोल के पश्चात् ऊपर से एक-दो आलू चुपके से और डाल लिये, चूड़ी वाली से चूड़ियाँ लीं, उसे भुलावे में डालकर चार चूड़ियाँ अधिक बँधवा लीं, मेहमान के लिये पन्द्रह दिन का राशन कार्ड बनवाया पर वे शनिवार को ही चले गये, पर माँ ने नौकर को कहा कि कल इतवार को भी राशन जरूर ले आइयो, अगले हफ़्ते के राशन का फायदा हो जायेगा। कोई पूछताछ करेगा तो कह देंगे मेहमान इतवार को गये थे। इसी तरह पिताजी घर में बैठे होते हैं, पर कोई अनचाहे मित्र या किराये के लिये मकान मालिक के आने पर, मुन्ने से कहला दिया जाता है कि पिताजी घर पर नहीं हैं, किसी पड़ौसी के कोई चीज माँगने पर झूठे बहाने कर दिये जाते हैं, मुन्ना-मुन्नी अपने बड़ों के ऐसे व्यवहार ही से झूठ और बहानेबाजी का पाठ पढ़ते हैं।

समझदार माताएँ मनोवैज्ञानिक ढंग से अपने बच्चों की समस्याओं को सुलझाती हैं। बुरी औलाद सुख से नहीं जीने देती। बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी माता पर इसलिए अधिक होती है क्योंकि वह उनके सम्पर्क में अधिक रहती हैं। उसका उदाहरण और आदर्श बच्चों को आज्ञा-कारी और कर्तव्यशील बनने की प्रेरणा देते हैं। पारिवारिक वातावरण से ही उन्हें उपयोगी नागरिक बनने की प्रेरणा मिलती है। माता को चाहिए

कि बच्चे के सामाजिक-जीवन को ठीक से विकसित करें। उसे अपने संगी-साथियों के साथ हेल-मेल से रहना सिखायें। यदि बच्चों का चरित्र बचपन से ही ठीक ढांचे में ढलता है तभी बड़े होकर वे अपने जीवन में सफल हो सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक आदर्श गृहिणी ही सफल माता बन सकती है।

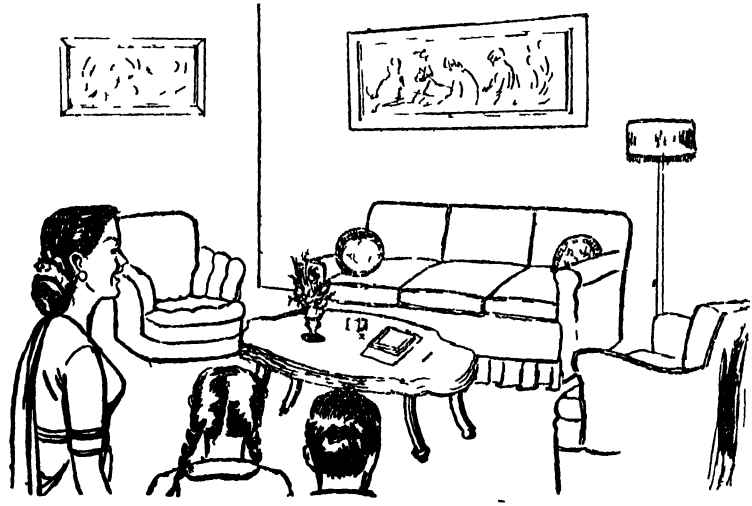
श्री सम्पूर्णानन्द जी के शब्दों में—'सच बात तो यह है कि हम पितृत्व और मातृत्व के अर्थ को, उसके दायित्व को समझते ही नहीं। विवाह यौन-सम्बन्ध को वैध बनाने का साधन-मात्र नहीं है, वह पवित्र संस्कार है। उसके द्वारा स्त्री-पुरुष केवल पति-पत्नी ही नहीं बनते वरन् सहधर्मी बनते हैं। सन्तान उत्पन्न करने का धार्मिक उद्देश्य यह है कि ज्ञान का दीपक बुझने न पाये, पुश्त-दर-पुश्त उनकी उपलब्धि और वृद्धि होती रहे। सन्तान को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि वह ज्ञान और धर्म के अभ्युदय और निश्रेयस के तत्वों के प्रसार का काम कर सकें'।

श्री राजेन्द्रप्रसाद के विचारों में—'नारी की परम स्वतन्त्रता, शोभा इसी में है और होनी चाहिये कि वे भावी पीढ़ी की मानसिक और सांस्कृतिक गुरु बनकर माता के उच्च दर्जे को पहिचानें'।

१६. घर का बजट और सँभाल

बजट को सन्तुलित रखें—

जो नारी सच्चे अर्थ म पति की मित्र है—वह उसके प्रत्येक काम मे हाथ बटायेगी। देखने में आता है कि अपने अवकाश का समय हमारी देश की



अधिकांश स्त्रियाँ गप्प शप्प मे ही गुजार देती है। जब कि वे उसी समय में कोई उपयोगी गृहोद्योग अपना करके घर की आमदनी बढ़ा सकती है। यह अतिरिक्त आमदनी उनके आड़े-भिड़े काम आ सकती है। आर्थिक चट्टान से टकरा कर कई वैवाहिक जीवन छिन्न-भिन्न हो जाते है। आजकल बेरोज़गारी जिस तेजी से बढ़ रही है उसको देखते हुए यह आशा करनी ही व्यर्थ है कि सभी पढ़ी-लिखी महिलाएँ केवल नौकरी करके आमदनी बढ़ा सकती है। फिर सारे समय नौकरी उसी महिला के लिए करनी उचित और सम्भव है जिसके छोटे-छोटे बच्चे न हों या फिर कोई बड़ी-बूढ़ी घर सँभालने वाली हो। नौकर के भरोसे घर छोड़कर नौकरी करना महामूर्खता है। नौकर रखने का अर्थ है कि कम से कम ५०) का खर्च। जिस ढंग से वह खाना पकायेगा उसमे २५ प्रतिशत बचत हो सकती है, यदि स्त्री खुद खाना पकाये

नौकर कितना बिगाड़ते और फेंकते हैं यह किसी गृहिणी से छिपा नहीं है। फिर नौकर के पकाये भोजन से न तो आप को सन्तोष होता है न परिजनों को। आप उस पर बिगड़ती हैं, खिजती हैं और फिर खीज कर खुद काम करने बैठ जाती हैं। कई बार तो गृहस्वामी को आप से इस झींकने, चिल्लाने पर क्रोध भी आ जाता है और वह तंग आकर यही कहता है कि 'भाग्यवान, नौकरी छोड़ और अपना घर खुद सँभाल। तुम्हारे १००) महीना कमा कर लाने से यहाँ कुछ बचता नहीं है। उलटा नौकर की तनखाह और जो वह बिगाड़ता है उसी में सौ रुपये खर्च हो जाते हैं। तिस पर न तो तुम रोटी चैन से खाकर काम पर जा पाती हो और न भर पेट मैं ही रोटी खा पाता हूँ। क्या धरा है ऐसी नौकरी में ? घर में रहकर तुम घर का काम भी सँभालोगी और साथ में कुछ और भी कर सकती हो।'

आप भी सोचती हैं—'ठीक तो कहते हैं पतिदेव। नौकरी करनी कौन सरल है ? सुबह के समय दफ्तर जाने की दौड़-धूप रहती है। दफ्तर में भा डाँट-डपट सहनी पड़ती है। इधर मुश्किल से १००) कमा पाती हूँ। पर इससे अधिक घर में नुकसान हो जाता है।'

इसी लिए समझदारों ने स्त्रियों के लिए सफलतापूर्वक, चतुराई से गृहस्थी चलाना ही सर्वोत्तम कैरियर माना है। पति की तनखाह से कैसे पूरा पड़ सके, उसके लिए चार सुझाव हैं। (१) घर का बजट आमदनी को मद्दे नज़र रख कर बनाया जाये (२) गृह-व्यवस्था सुचारू रूप से की जाय ताकि समय और पैसे की बचत हो सके। (३) फिजूलखर्ची से बचा जाये। जीवन की आवश्यकताओं को पहले पूरा किया जाये, उसके बाद मनोरंजन पर पैसे खर्चना उचित है। (४) अपने अवकाश के समय में अपनी रुचि और सुविधानुकूल कोई गृहोद्योग अपना कर आमदनी बढ़ाई जाये।

घर का बजट और व्यय—

घर के सब लोग मिलकर सलाह करें कि किस प्रकार आमदनी को खर्चा जाये ताकि उसका अधिक से अधिक लाभ हो सके। सम्मिलित पारिवारिक जीवन का नवनिर्माण किस प्रकार करें, इस विषय में मैने आगे बताया है। को-ओपरेटिव आधार पर सम्मिलित पारिवारिक-जीवन बिताने से भी काफी बचत हो सकती है। लक्ष्मी ने अपनी गृहस्थी की आमदनी कैसे बढ़ाई इसका वर्णन भी अगले अध्यायों में किया गया है। यदि प्रत्येक गृहिणी उस प्रकार

से अपनी गृहव्यवस्था रखे तो घर की आमदनी भी बढ़ सकती है और बजट भी सन्तुलित रह सकता है। सबसे अधिक खर्च होता है भोजन के मद पर। पर यह तभी सार्थक हो सकता है जब कि आप समझदारी से ऐसा भोजन पकायें कि शरीर की जरूरतें कम खर्च में हो पूरी हो जायँ। यह बात नहीं है कि जिनके यहाँ अधिक पैसा भोजन पर खर्च किया जाता है वे ही अच्छा भोजन प्राप्त कर सकते हैं। देखने में आया है कि कई घरों में अधिक पैसा खर्च करके भी पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं होता। घर चाहे आपका छोटा-सा हो पर उसमें अनावश्यक सामान मत भर लें। शहरों में स्थानाभाव के कारण जरूरत भर का ही सामान रखना ठीक है। पैसे-पैसे का हिसाब रखें और कुछ रकम अचानक खर्च के लिए अलग सम्भाल कर रख दें।

फिजूलखर्ची से बचें—

देखने में आता है कि सुचारु रूप से गृहव्यवस्था न कर सकने से घर का खर्च बहुत हो जाता है। यथा—

१. पूरे समय नौकर रखने की जरूरत नहीं है। पाँच-सात रुपये पर बर्तन माँजने के लिए एक महरी रख लें जो कि दिन में दो समय आकर आपके बर्तन माँज जाय और सुबह कमरों में झाड़ू भी दे जाये।

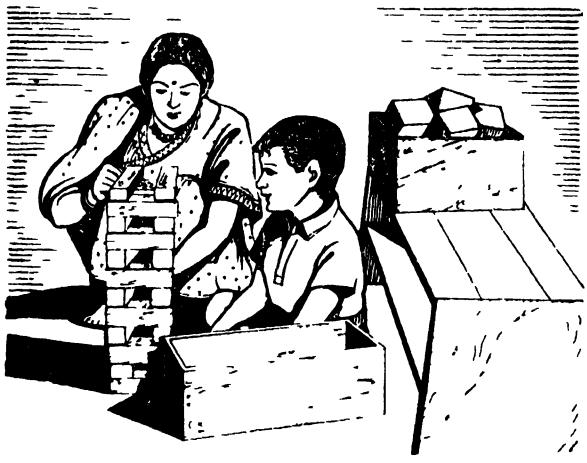
२. जब सुबह भाजी-तरकारी काट लें, तब आग जलायें और घंटे डेढ़ घंटे में एक भाजी, दाल तथा रोटी तैयार करलें। आम तौर पर गृहिणी सुबह से चौका लेकर बैठती है और दोपहर के दो बजे जाकर काम खतम होता है। शाम को फिर पाँच बजे से १२ बजे रात तक चौके का काम चलता है। इस से एक तो ईंधन बहुत जलता है। दूसरा गृहिणी चूल्हा-चक्की के सिवाय किसी काम के लिए अवकाश नहीं निकाल पाती।

३. घर की रसद महीने या सप्ताह में एक बार नकद पैसे देकर खरीदें। रोज-रोज खरीदने या मँगाने से घाटा रहता है और चीज भी अच्छी नहीं मिलती। रसद डिब्बों में बिन-चुन कर भर दें ताकि कीड़े-मकोड़े ओर चूहे खराब न करें।

४. दफ्तर या स्कूल जाने वाले व्यक्ति भोजन एक समय पर कर लें और स्त्रियाँ बाद में ताकि काम जल्द निबट जाये। रात को परिवार के सब लोग इकट्ठे बैठकर खायें तो आनन्द भी आये और पकाने तथा खिलाने की सुविधा भी रहे।

५. हर एक काम का समय बाँध लें ताकि आपको बेफिक्री से दूसरे काम समेटने के लिए अवकाश मिल जाय। सप्ताह में एक दिन शाम को खाना पकाने से छुट्टी रखें। यथा इतवार के दिन सुबह विशेष रूप से भोजन पका लें। या फिर शाम को जलपान के समय ही भोजन करके घूमने-फिरने के लिए अवकाश निकाल लें।

६. बच्चों के लिये ट्यूशन न लगवायें। माँ-बाप का यह फर्ज है कि



बच्चों की पढ़ाई आदि में दिलचस्पी लें। माँ की शिक्षा किस काम आयेगी यदि वह छोटे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई भी नहीं सँभाल पाती ? यदि कोई ऐसा विषय है जो आप को नहीं आता तो अपने पति का सहयोग प्राप्त करें।

७. जाड़ों में अपने पति के पुराने कोट, पतलून तथा स्वेटरों को उधेड़कर बच्चों के कपड़े बना दें। एक जोड़ा नया और दो जोड़े पुराने कपड़ों से काम चल जायेगा। फटे कपड़ों की मरम्मत करना न भूलें। पुरानी साड़ियों तथा चादरों से दरवाजे के पर्दे, झाड़न-गिलाफ बनालें। बच्चों को नये कपड़े तीज-त्यौहार और जन्म दिन पर बनवा दें। इससे दो लाभ होंगे, बच्चों की जरूरतें भी पूरी हो जायेंगी और उपहार देने की समस्या भी हल हो जायेगी। रेशमी और गर्म कपड़े रीठे या लक्स में घर पर खुद ही धो लें। धोबी कपड़ों को पटक कर उनकी आधी जान निकाल देता है। केवल जो कपड़ा भट्टी चढ़ाना हो उसे ही धोबी को दें।

८. दिखावे में आकर अतिथि-सत्कार तथा उत्सवों पर बूते से बाहर खर्चा मत करें।

९. किसी की देखादेखी जेवर-कपड़ों की हवस मत करें। स्त्री का

सच्चा भूषण है लज्जा। साफ-सुथरी और सुरुचिपूर्ण पोशाक तड़क-भड़क वाले कपड़ों से अधिक अच्छी लगती है।

१०. कहावत है 'सस्ता रोवे बारबार महँगा रोवे एक बार'। इसलिए ऊपरी-तड़क भड़क देख कर कोई चीज मत खरीद लें। जरूरत हो तभी चीज खरीदें। पड़ी-पड़ी चीज एक तो आउट ऑफ फैशन हो जाती है दूसरी बात वह खराब भी हो सकती है। फिर बेमतलब चीजों की सार-सँभाल करने की मुसीबत क्यों बटोरी जाय? यदि आप अनावश्यक चीजों को खरीदने का लोभ संवरण कर लेंगी तो आड़े-भिड़े समय के लिए आपके पास धन जमा रहेगा। कई स्त्रियों की ऐसी आदत होती है कि सखी-सहेलियों के संग मिलकर घूमने-फिरने के बहाने शापिंग को चल देती हैं। और फिर देखादेखी उनका भी मन कुछ खरीदने को कर आता है। इसी तरह से फिजूलखर्ची की आदत पड़ जाती है।

११. ब्याह-शादियों के लिए भी बरसों पहले से कपड़ा खरीदकर नहीं रखना चाहिए। एक तो फैशन बदलते रहते हैं तथा कपड़ा पड़ा-पड़ा गल जाता है। फिर जो रुपया जेवरों-कपड़ों में पहले से लगाया हुआ है वह यदि बैंक में या पोस्टल सार्टिफ़िकेट में लगाया होता तो बढ़ता रहता। दूसरी बात यह कि बीमारी या आपत्काल में चीज काम नहीं आती, उस समय तो नकद रुपया चाहिए। रुपया पास न होने पर फिर ऊँची ब्याज पर उधार लेना पड़ता है।

आर्थिक कठिनाइयों के अतिरिक्त भी गृहिणी के आगे अन्य कई समस्याएँ ऐसी आ जाती हैं जिनके कारण गृहस्थी की गाड़ी चलते-चलते लड़खड़ा जाती है। इनमें से कुछ हैं—अतिथि सत्कार, उत्सवों का आयोजन, घर की सफाई, सजावट और भोजन तथा नौकरों की समस्या।

बजट का सन्तुलन बना रहे तथा गृहस्थी की दिनचर्या में खलल न पड़े इसलिये उपर्युक्त सभी समस्याओं को मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण रखकर सुलझाना पड़ेगा।

अतिथि-सत्कार और उत्सव—

कहावत है—जितनी बड़ी चादर हो उतने ही पाँव पसारे जायँ। किसी की देखा-देखी अधिक खर्च करने से फिर महीने के अधिकाँश दिन फाके की नौबत आती है। यदि मन में किसी के प्रति मित्रभाव नहीं है तो अतिथि-

सत्कार केवल एक दिखावा-मात्र रह जाता है। जो आपका सच्चा मित्र है उसके लिए मीठे शब्द, आदर और प्रेम से परोसी हुई रोटी ही काफी है। त्यौहारों के विषय में बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता हैं। रूढ़िवादिता को छोड़कर उत्सवों, त्यौहारों और पर्वों का समाज के लिए जो कल्याणकारी रूप हो उसे ही अपनाना चाहिये। पुरानी रूढ़ियाँ अब टूट रही है। उनकी जगह स्त्रियों को अब नयी मर्यादाएँ बाँधनी होंगी। त्यौहारों और उत्सवों को इस प्रकार से मनाने की प्रेरणा देनी होगी जो पारिवारिक जीवन को अधिक आनन्दमय और सामाजिक-जीवन को अधिक मनोरंजक बना दे।

घर की सफाई और सजावट--

कई एक स्त्रियाँ वैसे तो बड़ी शौकीन होती हैं परन्तु घर बड़ा गन्दा रखती हैं। ढेर-के-ढेर कपड़े पलँगों, सन्दूकों पर और गुसलखाने में पड़े रहते हैं। घरों में जाला लटकता रहता है। फर्नीचर पर धूल जमी रहती है और कोई चीज ठिकाने पर नहीं होती। पत्नी की इस गन्दगी और अव्यवस्था पर पति बहुत झुँझलाता है। वह जब जाने की जल्दी में होता है उसे अपना तौलिया नहीं मिलता, जूता एक है एक पलँग के नीचे किसी ने पटक दिया है। कमीज बिस्तरों के नीचे दबी हुई है। उसकी जरूरी चिट्ठी या फाइल किसी बच्चे ने इधर-उधर पटक दी है। फाऊन्टेन पैन जो कि श्रीमती जी पत्र लिखने के लिए उठाकर ले गई थीं उसका पता ही नहीं चल रहा है। धोबी को कपड़े दिये थे तो कमीज में पति के साइकिल के ताले की चाबी ही चली गई। अब भला बताइये पति देवता को गुस्सा क्यों न आयेगा ? वह बच्चों पर बिगड़ता है, चीजें उठाकर इधर-उधर पटक देता है और पत्नी को बुरी-भली सुनाकर बिना खाना खाये हाँपता हुआ दफ्तर पहुँचता है। मिजाज बिगड़ा रहने के कारण वहाँ पर भी बड़े बाबू से बिना बात के कहा-सुनी हो जाती है। जिसका फल उसे बाद में भुगतना पड़ता है। शाम को थका-माँदा जब वह अपने घर की अव्यवस्था पर अफसोस करता हुआ घर पहुँचता है तो बैठक में अपनी सहेलियों को विदा करते-करते पत्नी को दस मिनट और लग जाते हैं और पति अपने जूते खोल कर जब बैठक में घुसता है तो एक ओर मूँगफली के छिलके पड़े हैं, दूसरी ओर कपड़ों की कतरनें बिखरी हुई हैं। ऐशट्रे और फूलदान एक ओर लुढ़के पड़े हैं शायद पड़ोसिन का मुन्ना उनसे खेल रहा होगा। पति महाशय किसी मित्र के बच्चे के जन्म दिन पर

देने के लिए एक खिलौना लाये थे, पर आकर देखते हैं कि आपकी बहन के बच्चे उसे लेकर आपस में छीना-झपटी कर रहे हैं और उसका एक पहिया



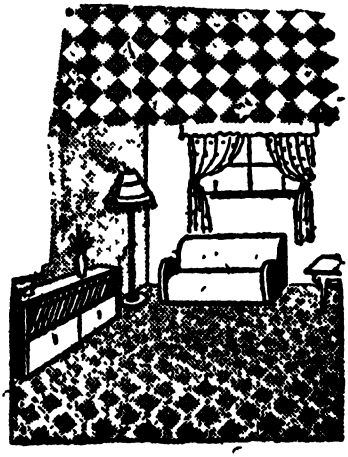
तोड़ डाला है। अब आप ही सोचिये घर की इस अव्यवस्था से खीज कर पति का मूड क्यों न बिगड़ेगा ? फलस्वरूप चिढ़कर पति को पत्नी का शृंगार और रूप फीका दीखने लगता है। किसी ने ठीक कहा है कि 'सुन्दर पत्नी पति का मन केवल कभी-कभी ही आकर्षित कर पाती है परन्तु सेवा-परायणा

पत्नी पर पति हमेशा प्रसन्न रहता है।' घर की व्यवस्था के मामलों में आप नीचे लिखी बातों का ध्यान रखें—

१. घर को हमेशा साफ-सुथरा रखें। हर आठवें दिन जाले उतारना, दरवाजे और शीशे पोंछना न भूलें। सुबह या जब पति दफ्तर चले जायें कमरा झाड़कर, फर्श और फर्नीचर पोंछ दें।

२. हर एक चीज के लिये स्थान निश्चित रखें। नही तो समय पर चीज ढूंढ़ने में बड़ी असुविधा होती है। झाड़-पोंछ करके हर एक चीज को निश्चित स्थान पर रख दें।

३. स्थान थोड़ा हो तो कमरे में बहुत-सा फर्नीचर मत रखें। सुबह के समय खटिया बाहर करके एक ओर खड़ी कर दें और बिस्तरों को लपेटकर



एक चौकी या पलंग पर सजा कर पलँग-पोश से ढक दें। बैठक में दो कुर्सी, एक टेबुल रखें। एक तखत पर गद्दे बिछा करके रंगदार अच्छा पलंगपोश बिछा दें। दो लम्बे गाँव तकिये लगा दें। इस तखत पर रात के समय बिस्तरा भी लगाया जा सकता है। अगर कमरे में दो-तीन खिड़कियाँ हैं तो एक खिड़की में जिसे आप प्रायः बन्द रखती हैं, आप पर्दा तथा हैंगर लगाने के लिए छड़ लगवाकर उससे ड्रेसिंग आलमारी का काम ले सकती हैं। पास की दीवार पर एक शीशा लगवा दें। एक कोने में छोटी-सी टेबुल सजा कर पति के कागज पत्र उस पर रखें। कुर्सी-मेज इस प्रकार से लगायें कि आने-जाने में सुविधा हो और ठोकर न लगे। ऋतु अनुसार कमरे की व्यवस्था बदलते रहना चाहिए।

४. सन्दूक सब कमरों में रखने ठीक नहीं हैं। यदि एक से तीन-चार सन्दूक हैं तो उनमें ऐसा सामान भरें जिन्हें रोज-रोज निकालने की जरूरत न पड़े। उन्हें लाइन में सजाकर ऊपर से दो गद्दे डाल दें और उसे एक सुन्दर पलंग पोश से ढक दें। अब यह जगह सोने बैठने के काम आ सकती है। एक छोटी कोठरी में फालतू सामान भर दें। वहीं पर विस्तरें भी रखे जा सकते हैं।

५. दरवाजे या खिड़कियों में पर्दे लगाकर रखें। दो-चार सुरूचिपूर्ण चित्र, एक फूलदान आदि घर की सजावट बढ़ा देते हैं।

भोजन—

इस विषय में अगले अध्याय में विस्तृत रूप से यह बताया गया है कि परिजनों को यदि अच्छा और सन्तुलित भोजन खाने को नहीं मिलेगा तो उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता। शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी बनी रहने से व्यक्ति बीमारी का जल्द शिकार हो जाता है। अतएव जो पैसा इलाज पर खर्चना पड़ता है, उसको यदि अच्छा भोजन प्राप्त करने पर ही खर्चा जाये तो अक्लमंदी है। गृहिणी को इस वात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भोजन ऋतु, रुचि और स्वास्थ्य अनुकूल होना जरूरी है। भोजन परिजनों को प्रेम और सफाई से करायें। पति की रुचि का ध्यान रखें। ताजी, गर्म और सफाई से बनाई हुई एक-दो चीज में जो रस है वह बेपरवाही से पकाये हुए पकवानों में नहीं है। एक ही चीज रोज-रोज मत बनायें। अदल-बदल कर भोजन पकायें। उन्हें सफाई और सुघड़ाई से परोसें। वक्त के लिए घर में रसद हमेशा बचा कर रखें। यह न हो कि ऐन मौके पर कह दें कि अमुक चीज खतम हो गई है। पति के मित्रों की आवभगत करनी न भूलें। पत्नी यदि सुघड़ गृहिणी होती है तो पति का सामाजिक-जीवन सफल रहता है। पाक-शास्त्र से चतुर नारी सब परिजनों की प्यारी होती है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि पति के हृदय का रास्ता पेट से होकर है। अर्थात् जो पत्नी पाक-विज्ञान में प्रवीण होती है वह अपने पति को पेट-पूजा से हमेशा प्रसन्न रखती है। गेहूँ तो सब के घर में आता है पर रोटी बिरले घरों में ही पकती है। सुघड़ नारी के हाथ के भोजन में कुछ और ही रस होता है। एक सफल गृहिणी के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह भोजन पकाने में चतुर हो, बच्चों को भली प्रकार सँभाल सके और घर को साफ-सुथरा रखे, साथ ही आमदनी और खर्च का सन्तुलन बनाये रखे।

१७. लक्ष्मी को गृहस्थी

अच्छे भोजन के अभाव में—

मेडिकल रिपोर्ट से यह पता चला है कि हमारे देश से अधिकांश लोग अयुक्त आहार करते है इसकी वजह से उनका स्वास्थ्य बहुत गिरा हुआ है और उनमें बीमारी का मुकाबिला करने की शक्ति बहुत कम पाई गई है।

देश के लोगों को खाना अच्छा नही मिलता, इसके निम्नलिखित कारण है—

१. गरीबी।
२. सामाजिक रीति-रिवाज।
३. जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण।
४. मुसीबतों और दु.खों से घिरे रहने के कारण जिन्दादिली और जीवित रहने के लिए उमंग की कमी।
५. अज्ञानता।

भारत मे कई एक लोग ऐसे है जिन्हे दिन मे एक बार भी भरपेट भोजन नसीब नही होता। जो पैसा अपने खाने-पीने पर खर्चना उचित है वह व्यसनों में उड़ा दिया जाता है और या वे पेट काट-काटकर पैसा जोड़ते जाते हैं। घर आकर वही पैसा उधार चुकाने में खतम हो जाता है।



कई बार ऐसा भी होता है कि खाने-पीने भर को तो पैसा गृहस्वामी कमा लेता है पर उसे खाने-पीने पर खर्चना नहीं है। लड़के के ब्याह, माता-पिता के श्राद्ध, संबन्धियों को लेना-देना तथा अन्य सामाजिक आडंबरों के लिये अपनी मेहनत की कमाई उसे बचाकर रखनी पड़ती है। इसी कारण से न तो वह अच्छा खा सकता है, न पहन सकता है। यहाँ तक कि बीमार होने पर भली प्रकार इलाज भी नहीं करवा सकता। स्वास्थ्य गिरा रहने से उसकी

कमाने की क्षमता भी कम हो जाती है और उसके बच्चे भी स्वस्थ्य पैदा नहीं होते। इस प्रकार इस दुष्चक्र में फँस कर उसका जीवन स्तर हमेशा गिरा रहता है।

कई लोग सामर्थ्य होते हुए भी जान बूझकर सांसारिक सुखों से स्वयं को वंचित रखते हैं। धर्मान्धतावश वे सोचते हैं कि अगर हम इस जन्म में शरीर को कष्ट देंगे तो हमें अगले जन्म में सुख प्राप्त होगा या मुक्ति मिल जायेगी। इसलिए वे अच्छा भोजन नहीं खाते। रूखा-सूखा खाकर अपना पेट भर लेते हैं। जिस प्रकार से वे उपवास करते हैं उससे शरीर की शुद्धि तो होती नहीं, उल्टा पानी के अभाव में शरीर में विष इकट्ठा हो जाता है और शक्ति का क्षय होने के कारण उन्हें अनेक रोग घेर लेते हैं। जब उनकी काया बिगड़ जाती है, तब उन्हें अपनी भूल मालूम होती है। कई बार ऐसा भी होता है कि एक दम से कोई बुरा फल नजर नहीं आता, परन्तु अच्छा भोजन न मिलने से उनकी शक्ति धीरे-धीरे क्षय होती जाती है और समय से पहले ही वे बूढ़े हो जाते हैं।

कई लोगों को अपने शरीर को कष्ट देने में आनन्द आता है। लोगों की सहानुभूति पाने के लिए वे ऐसा करते हैं। 'हाय-हाय भूख से बेचारे का मुँह सूख गया है' 'देखो न शान्ता जैन की माँ कितनी तपस्विनी है! उपवास व व्रत से उसने अपनी काया सुखा ली है।'

मनोवैज्ञानिक चिकित्सक इस मनोवृत्ति को 'मैसोकिज़्म' कहते हैं। हमारे देश में मैसोकिज़्म से पीढ़ित व्यक्तियों का अभाव नहीं है। ये लोग स्वयं को अच्छे भोजन तथा जीवन के अन्य सुखों से वंचित रख कर एक प्रकार के सुख का अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त कई लोग निराश, असफलता तथा मुसीबतों से तंग आकर अपने जीवन के प्रति उदासीन हो जाते हैं। उनमें उत्साह और कुछ करने की इच्छा का अभाव पाया गया है। ऐसे लोग भी अपने खान-पान की ओर उदासीन रहते हैं। मिल गया तो खा-लिया नहीं मिला तो दिन भर चाय की प्यालियाँ पीकर तथा सिगरेट फूंककर ही दिन गुजार दिया। ये लोग भी अच्छे भोजन का महत्त्व नहीं समझते।

गृहिण भी दोषी है—

कई घर ऐसे भी हैं जिनके घर काफी पैसा है, पर गृहिणी की अज्ञा-

नतावश उन्हें सन्तुलित भोजन ही नहीं मिल पाता या सामाजिक रिवाजों के कारण वे अपने खान-पान का रिवाज नहीं बदलना चाहते। यथा पूर्व भारत में रात को अधिकांश खाते-पीते घरों में पक्का भोजन व पकवान खाने का रिवाज है। इस कारण से अनेक प्रौढ़ व्यक्तियों का शरीर स्थूल हो जाता है और उन्हें पेट के अनेक रोग हो जाते हैं।

अब इस अध्याय में इस बात पर विचार करना है कि जो मध्यम वर्ग के लोग हैं जिनकी आमदनी दो सौ रुपये से ५००) मासिक तक है वे किस प्रकार से अपना बजट बनायें कि उन्हें अच्छा भोजन मिल सके और उनकी अन्य जरूरतें भी पूरी हो सकें। मैं एक उदाहरण पेश करती हूँ।

लक्ष्मी का पति मनोहर दिल्ली में एक ऑफिस में हेड क्लर्क है। उसे लगभग ३००) मासिक मिलते हैं। परिवार में दो बच्चे हैं—एक लड़का एक लड़की। लड़के का नाम है सुधांशु, इसी साल मैट्रिक पास करके हायर सेकेण्डरी में आया है। लड़की का नाम है लता। वह आयु में मुन्ने से दो साल छोटी है, नौवीं कक्षा में पढ़ती है। घर में मनोहर बाबू की बूढ़ी माँ जी भी हैं। लक्ष्मी अपने यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करती है। दोनों पति-पत्नी परस्पर सहयोग से गृहस्थी चलाते हैं। वे इस बात को भली प्रकार समझते हैं कि स्वस्थ रहने के लिए अच्छा भोजन बहुत जरूरी है। परिश्रम का महत्व भी वे खूब समझते हैं। इस कारण उन्होंने अपने घर का बजट ऐसा सन्तुलित रखा हुआ है कि उनका काम बड़े मजे में चल रहा है। आप भी जानना चाहेंगी कि वे अपनी आमदनी को किस प्रकार खर्चते हैं। सुनिये—

सन्तुलित बजट—

प्रतिमास ५०) मकान का किराया और बिजली पानी पर खर्च होता है। मनोहर बाबू और उनके मित्र ने मिल कर शहर से कुछ दूर १००) रुपये महीने पर एक मकान साझे में ले लिया है। शहर में इसी मकान के दो सौ रुपया किराया देना पड़ता। ऑफिस से चाहे तीन मील दूर उनका घर है पर मनोहर बाबू को साइकिल से ऑफिस जाने में कुछ खास दिक्कत नहीं होती, ५०) ऊपरी खर्च यथा बच्चों के स्कूल की फीस, धुलाई व ईंधन आदि पर खर्च होता है, २०) महीना मनोहर बाबू अपने जीवन-बीमा के लिए कटा देते हैं, १०) महीना फंड में कटाते हैं ताकि कन्या के विवाह के लिए रुपया जमा होता जाये, २०) महीना पोस्ट ऑफिस में जमा करा देते

हैं। अब रहे १५०) इसे वे हर मास अपनी गृहिणी को खाने-पीने पर खर्चा चलाने के लिए दे देते हैं।

इस रकम को लक्ष्मी निम्नलिखित प्रकार से खर्च करती है। २५) महीने का उनके यहाँ गेहूँ और चावल आ जाता है, १५) का घी और ५) का तेल मँगा लेती है, ३०) प्रतिमास दूध पर खर्च हो जाते हैं। २०) की साग-सब्जी आ जाती है, १०) दालों और मिर्च मसालों पर खर्च किया जाता है, ५) प्रतिमास अतिथि-सत्कार और तीज-त्यौहार के लिए रख लिये जाते हैं, १५) का फल, २) का गुड़, ६) चीनी और चाय का खर्च है, ५) चोका बर्तन वाली को और २) मेहतरानी को तनखाह है, १०) वे अपनी सास जी को दे देती हैं ताकि जब भैया दूज या राखी आदि आये या और कोई त्यौहार हो तो अपनी बेटी को तीज-त्यौहार पर देने के लिए या रिश्तेदारी में कुछ लेने-देने या किसी पर्व पर माँ जी इस रकम को अपना मर्जी और सुविधा के मुताबिक खर्च कर सकें।

लक्ष्मी महीने के आरंभ में ही एक दिन बाजार जाकर गेहूँ, दाल, चावल, मसाला आदि अपनी पसन्द का ले आती है। फिर उसे साफ करके छानबीन कर डिब्बों में भर कर रख देती है। उनके घर के पास ही एक गाँव है, वहीं से सामने दुहा कर रुपये का दो-ढाई सेर के हिसाब से दूध उन्हें मिल जाता था। जाड़ों में दूध की क्रीम सस्ती मिलती है। वह क्रीम लेकर घी खुद ही बना लेती है। गर्मियों के लिए भी फागुन के महीने में ही बीस सेर घी इकट्ठा बनाकर दो बड़े मर्तबानों में भर लेती है। लक्ष्मी का कहना है कि घर का तपाया हुआ घी सोलह आने खालिस होता ही है, साथ ही गुण और स्वाद में भी बहुत अच्छा होता है। बाजार के घी में एक तो मिलावट होती है, दूसरा वह उठता भी ज्यादा है।

मनोहर बाबू प्रातःकाल जलपान करके अपने दोनों बच्चों के साथ गाँव की ओर खेतों में घूमने निकल जाते हैं और वहीं एक परिचित कुँजड़े से साग-भाजी ले आते हैं। ताजी भाजी में जो स्वाद और रस होता है वह शहर की दो दिन की बासी और पानी में भिगोई हुई भाजी में नहीं होता।

भोजन की व्यवस्था—

लक्ष्मी इस बात को भली प्रकार समझती है कि घर में पैसे की बचत तभी हो सकती है जब कि दिनचर्या नियमित रखी जाये। सुबह का जलाया

हुआ चूल्हा अगर दोपहर को दो बजे ठंडा होगा और शाम को ५ बजे जलाया हुआ रात को दस बजे तब तो २५) महीने का ईधन ही उठ जायेगा



और गृहिणी को चूल्हा-चक्की से ही अवकाश नहीं मिलेगा। इस प्रकार धन और समय दोनों की बरबादी होती है। प्रातःकाल जहाँ लोगों के घर में सब चाय पीते है लक्ष्मी चीनी के बड़े जग में पानी भर कर दो नींबू निचोड़ उसमें चार चम्मच चीनी और एक चम्मच नमक डाल कर नींबू-पानी तैयार कर लेती है। जाड़ों में यही चीज वह गर्म पानी में तैयार करती है। लक्ष्मी का कहना है कि खाली पेट नीबू पानी पीने से लिवर ठीक रहता है, पेट साफ रहता है और इससे विटामिन 'सी' प्राप्त होता है, जुकाम से बचाव रहता है और गर्मियों में जब कि अधिक पसीना निकल जाये तो थकावट बढ़ जाती है तथा शरीर में नमक की कमी हो जाती है नींबू पानी पीने से बहुत लाभ होता है। उसका यह भी विचार है कि जिन व्यक्तियों को ९॥ स्कूल या ऑफिस जाना होता है वे यदि सुबह दूध या लस्सी पियें तो ९ बजे वह रुचि से भोजन नहीं खा पाते।

नींबू-पानी पीकर उसकी लड़की तो कमरे की झाड़-पोंछ करती है और लड़का बिस्तर आदि लपेटकर रख देता है। पिता जी दूध दुहा लाते हैं। लक्ष्मी भाजी काटकर आटा सानकर, चूल्हा सुलगाकर नहाने चली जाती

है और आकर तुरन्त दाल चढ़ा देती है। अगर लौकी या कद्दू का रायता डालना होता है तो उसे कद्दूकस में निकाल एक कटोरे में रख उसे दाल के पतीले पर रखकर ढक देती है। उसमें पानी डालने की भी जरूरत नहीं पड़ती। इस प्रकार उसका विटामिन व्यर्थ नहीं जाता। दाल पक जाने पर भाजी छौंक देती है। जिस दिन आलू की सब्जी बनती है, उस दिन दाल में ही पालक, सोया, चौलाई, बथुआ आदि डालकर पका लिया जाता है। बस एक दाल, भाजी, रायता, इतना खाना सुबह को उनके यहाँ बनता है। दोनों बच्चे और मनोहर बाबू ९ बजे भोजन कर लेते हैं। इसके बाद लक्ष्मी उन तीनों के साथ ले जाने के लिए प्रत्येक के डिब्बे में दो-दो पराठे, नींबू के अचार की फाँक तथा भाजी साथ बाँध देती है। पराठे कभी मूली, आलू या पालक भर के भी बनाये जाते हैं। कभी-कभी लक्ष्मी दूध में आटा सान कर गुड़ डालकर मीठे पराठे बना देती है। भाजी के स्थान पर कभी-कभी अंकुरित मूँग या चने की घुँघनियाँ भी होती हैं।

इन लोगों को बिदा करके दस बजे लक्ष्मी अपनी सास जी को भोजन कराती है। उनके खाने के बाद खुद खाती है। कभी-कभी सास-बहू दोनों साथ बैठकर भी खा लेती हैं। रोटी पकाने के बाद चूल्हे पर लक्ष्मी पानी का बड़ा पतीला भर कर चढ़ा देती है, ताकि कहारिन बर्तन सफाई से धो डाले और गर्म पानी से झाड़न तथा कपड़े भी साफ धुल जाते हैं।

लक्ष्मी ने घर की आय कैसे बढ़ाई—

खाना खाने के बाद एक घण्टा लक्ष्मी लेट कर अखबार आदि पढ़ती है। इसके बाद १२ बजे वह अपनी सिलाई या बुनाई लेकर बैठती है। सिलाई-बुनाई और कसीदे के काम में लक्ष्मी बहुत होशियार है। वह अपने घर के सब कपड़े तो सीती ही है, साथ ही महिला-कला-केन्द्र से बुनाई और कढ़ाई का काम भी ले आती है। इस प्रकार प्रति मास ५० रुपया वह उपार्जन कर लेती है। इसी तरह रुपये जोड़कर उसने दो हजार रुपये के पोस्टल सर्टिफिकेट ले लिये हैं, जो कि १२ वर्ष में तीन हजार हो जायँगे। लता भी अपनी माँ की तरह बड़ी चतुर है। वह भी बुनाई और सिलाई में अपनी माँ का हाथ बटाती है। सुधाँशु भला क्यों पीछे रहने लगा। वह चित्रकारी बहुत अच्छी करता है। आयल-पेंटिंग और वाटर कलर में उसका हाथ खूब बैठा हुआ है। एक बार उसने सैटिन के कुशन पर शिव-पार्वती का चित्र बनाया।

लक्ष्मी वह चित्र महिला-कला-केन्द्र में दिखाने ले गई, वहाँ वह दस रुपये में तुरन्त बिक गया तथा ऐसे कुशनों की और माँग हुई। लक्ष्मी ने सफेद सैटिन का एक थान खरीद लिया, उसके कुशन और पर्स सीकर उन पर हैंडल और डोरी लगाकर तैयार कर दिये। कुछ पर सुधांशु ने चित्र पेंट किये और कुछ पर लता ने कसीदा काढ़ा। सब चीजें तैयार हो जाने पर लक्ष्मी उन्हें महिला-कला-केन्द्र में रख आई। वहाँ वे लागत से दुगने दाम में बिकीं। इससे लक्ष्मी को ५५ रु० लाभ हुआ। इसमें से ५) उसने महिला-कला-केन्द्र के गरीब फंड में दे दिये। अब लक्ष्मी अपने बच्चों के सहयोग से १००) महीना कमाने लग गई है।

एक साल से मनोहर बाबू को भी सप्ताह में दो दिन (शनिवार-इतवार को) ट्यूशन का काम मिल गया है। वे दो घंटा पढ़ाते हैं, उन्हें ३०) महीना मिल जाते हैं। इस प्रकार उनके परिवार के सभी व्यक्ति परिश्रमी हैं। बूढ़ी माँ जी भी दोपहर को चर्खा लेकर बैठ जाती हैं। इसी साल उन्होंने दो खेस बुनवाये हैं।

अब पिछले महीने लक्ष्मी ने एक गाय ले ली है। माता जी सुबह गाय की सानी कर देती हैं। साथ में सुधांशु मदद करता है। गाय ६ सेर दूध देती है। तीन सेर दूध मनोहर बाबू का दोस्त खरीद लेता है। इस प्रकार लगभग गाय का खर्चा निकल आता है। केवल दो रुपये मासिक उसकी चराई के ग्वाले को अवश्य देने पड़ते हैं। अब तो मनोहर बाबू के घर पर खाने-पीने की बड़ी मौज है। हर इतवार को खीर या रबड़ी बनती है। शाम को ४ बजे जब बच्चे स्कूल से लौट कर आते हैं तो लक्ष्मी उन्हें दूध की खीर, फिरनी, गेहूँ का दलिया, इसी प्रकार की कुछ न कुछ चीज खाने को देती है।

पहले जो ३०) महीना दूध पर खर्च होता है, उसमें से १५) महीना लक्ष्मी ने फल के लिए और बढ़ा दिए हैं। अतएव अब उनके यहाँ रोज एक रुपये का फल आता है लक्ष्मी जानती है कि मौसमी फल सस्ते और अच्छे मिलते हैं। गर्मियों में ककड़ी, खीरा, खरबूजे, आम, जामुन अदल-बदल कर मँगा लेती है। जाड़ों में केले, सन्तरे, पपीता तथा सूखा मेवा मँगा लिया जाता है। गाजर, नींबू, टमाटर व आँवला सस्ता भी होता है और विटामिन की दृष्टि से लाभदायक भी बहुत है। इस लिए इसका प्रयोग लक्ष्मी के घर में बहुतायत से होता है। ककड़ी, गाजर, चुकुन्दर तथा प्याज की सलाद वे

दोनों समय काफी मात्रा में नियम से खाते हैं। उनका कहना है कि सलाद जल्द हज्म हो जाती है और यह दाँत तथा पेट दोनों के लिए लाभदायक है। खरबूजा या आम की मौसम में रात को पुडिंग के बदले वे फल ही खाते हैं। केले के संग मलाई बहुत स्वाद लगती है। रात को लक्ष्मी केवल एक रसेदार भाजी ही बनाती है, साथ में सलाद, रायता तथा फल या आमरस होता है। इस प्रकार एक तो उसे शाम को काफी अवकाश भी मिल जाता है और भोजन हलका होने के कारण नींद भी अच्छी आती है।

आत्मनिर्भर बनें—

लक्ष्मी के घर रात का भोजन जाड़ों में ७।। और गर्मियों में ८ बजे सब खा लेते हैं। उसके पश्चात् लक्ष्मी और मनोहर बाबू बाहर घूमने चले जाते और दोनों बच्चे साढ़े नौ बजे तक पढ़ते हैं। शनिवार और इतवार को या छुट्टी वाले रोज लता और सुधांशु अपने पड़ौस के बच्चों को इकट्ठा करके अपनी



दादी से कहानी सुनते हैं। इस प्रकार उन्हें रामायण व महाभारत की बहुत सी कहानियाँ याद हो गई हैं। आठ बजे कहारिन आती है और बर्तन माँज-कर चौका लीप-पोत कर साफ कर जाती है। माँ जी एक सेर दूध पीने के लिए रख देती हैं और बाकी सुबह के दही के लिए जमा देती हैं। ९ बजे बाहर से लौट कर लक्ष्मी सब को एक-एक प्याला दूध पीने को देती है और

बिस्तरे आदि ठीक करके दो गिलास पानी ढक कर पास की तिपाई पर रख देती है। इसके बाद रात्रि में साढ़े नौ बजे परिवार के सब लोग इकट्ठे बैठकर भगवान की आरती करते हैं तथा कुछ देर भगवद् चर्चा होती है। दस बजे बच्चे सोने चले जाते हैं तब लक्ष्मी आधा घंटा रामायण पढ़ती है।

इतवार के दिन उनके घर काम की विशेष धूम होती है उस दिन गोदाम की विशेष सफाई होती है। अचार-मुरब्बों को धूप लगाई जाती है। गेहूँ, बेसन या मसाला पिसाया जाता है। घर के जाले उतारे जाते हैं। काँच के तथा पीतल के बर्तन बिम से साफ किये जाते हैं। सुधांशु व लता दोपहर को रेशमी कपड़े धोकर शाम को उन्हें इस्त्री कर लेते हैं। लक्ष्मी धोबी को केवल वे ही कपड़े देती है जिन्हें भट्टी चढ़ाने की जरूरत होती है। रेशमी या छींट के कपड़े धोबी खराब कर लाता है। गर्म पानी में लक्स डालकर उसकी झाग से रेशमी कपड़े धोने से उनमें एक विशेष चमक आ जाती है और रंग-दार कपड़ों का रंग भी लक्स में निखर जाता है। साबुन की जो झाग बचती है उसमें झाड़न आदि धो लिये जाते हैं। चतुर लक्ष्मी इस प्रकार किफायत करके जो धन बचाती है उसे वह अपने बच्चों व पति को अच्छा भोजन देने पर खर्चती है।

लक्ष्मी के घर कुछ भी काम की चीज फेंकी नहीं जाती। भाजी के छिलके व दाल के छिलके, गेहूँ चावल की फटकन, बासी रोटी, चोकर जूठन आदि वह अपनी गाय की सानी में डाल देती है। मनोहर बाबू के पड़ोसी मित्र के घर से भी इसी प्रकार की चीजें गाय के कुंड में डाल दी जाती हैं। इससे गाय अपनी सानी बहुत स्वाद से खाती है। तिल का तेल लक्ष्मी छः महीने भर के लिए इकट्ठा ही कोल्हू से निकलवा लेती है। इससे उसे सस्ता व खालिस तेल मिल जाता है। इसी तिल के तेल में से दो-चार बोतलें आँवले का तेल सिर में लगाने के लिए वह घर पर ही तैयार कर लेती है। खली कुछ तो उनके उबटन के काम में आती है बाकी गाय को खिला दी जाती है।

लक्ष्मी ने दूध बेचकर २०) रु० महावार करके साल में १२०) रु० बचाये थे। ८०) रु० उसमें और डालकर उन्होंने अपने बैठक के लिए नया फरनचर ले लिया। इतवार के दिन मनोहर बाबू और सुधाँशु गाय के घर की विशेष सफाई करते हैं। फिनायल के पानी से उसके रहने के स्थान को धोते हैं। गर्मियों में कभी-कभी गाय को मल-मल कर भी नहलाते हैं। माँ जी

आटे का पेड़ा घी लगाकर गाय को खिलाती हैं और शाम को लक्ष्मी जब दूध दोहती है तो उस दिन सचमुच में दूध ज्यादह होता है। माँ जी का कहना है कि गाय की सेवा कभी व्यर्थ नही जाती। मनोहर बाबू यह सुन कर हँसते हुए कहते हैं—"हाँ माँ जी, आराम और सेवा से तरोताजा होकर मनुष्य भी अधिक काम करता है, इसी प्रकार आज स्नान, मालिश तथा अच्छा भोजन खाकर हमारी गाय का उत्पादन भी बढ़ गया है तो कुछ आश्चर्य की बात नहीं।"

लक्ष्मी के घर इतवार की रात को भोजन के स्थान में केवल फल और दूध खाते है। दोपहर का खाना उस दिन कुछ विशेष रूप से तैयार किया जाता है, इसलिए शाम को कुछ पकौड़ी, समोसे या चीले आदि खाकर सब कोई शरबत या दूध में थोड़ी-सी चाय डाल कर पी लेते है। शाम का समय दोस्त मित्रों के यहाँ अथवा सिनेमा आदि जाने के लिए निश्चित है। लक्ष्मी गृह कार्य में बहुत निपुण है, इसलिए महिला-समाज की प्रधान उसे अपनी विशेष बैठक में बोलने के लिए बहुत आग्रह के साथ बुलाती है। महिने में एक बार लक्ष्मी इस महिला-समाज में भी जाती है। उसके व्याख्यान का भी सब पर बहुत प्रभाव पड़ता है। क्योंकि वह स्त्रियों को गृहस्थी के लाभ की बहुत-सी बातें बताती है जिनको कि वह खुद कसौटी पर कस चुकी है। कभी-कभी लक्ष्मी को पड़ोस के दुख-दर्द में भी शरीक होने के लिए जाना पड़ता है। ऐसे समय में लता शाम का भोजन बना लेती है। उस दिन मनोहर बाबू भोजन की विशेष बड़ाई करके लता को प्रोत्साहन देते है और माँ जी भी कहती हैं—"भला हमारी लता क्यों पीछे रहने लगी, आखिरकार चतुर माँ की बेटी भी तो चतुर ही होगी।"



लक्ष्मी व्यवहार-कुशल हैं—

लक्ष्मी ने लता को भोजन के पोषक तत्वों की विशेषता समझा दी है। रसोई की सम्भाल, भोजन की रक्षा, पकाने व परोसने में भी उसे खूब निपुण बना दिया है। लक्ष्मी का कहना है कि जिसके घर में पाक विद्या में चतुर तथा घर सँभालने वाली गृहिणी होगी उस घर में गरीबी तथा रोग कभी आ ही नहीं सकते। क्योंकि मनुष्य जैसा खाता है वैसा ही उसका स्वास्थ्य और बुद्धि होती है।

लक्ष्मी ने अपने पति की कमाई तो सार्थक की ही है साथ ही अपने उद्यम से चार पैसे भी कमा लिए हैं। मनोहर बाबू लक्ष्मी को अपना साहूकार कहते हैं, उनको जब भी पैसे की अचानक जरूरत पड़ती है, वह लक्ष्मी से माँग लेते हैं। माँ जी भी अपनी लक्ष्मी बहू से इतनी खुश हैं कि उन्होंने लाड़ से उसके कई नाम रखे हुए हैं। कभी तो लक्ष्मी-बहू कह कर पुकारती हैं, कभी अन्नपूर्णा रानी। लक्ष्मी भी अपनी विनम्रता दिखाने के लिए कहा करती है—"माँ जी यह सब आपका ही प्रताप है। आप अच्छी थीं तो मैं भी अच्छी बन गई, अगर आप और सासों की तरह बहू व बेटी में भेदभाव करने वाली या बहू की पड़ोसियों से निन्दा करने वाली होतीं तो मेरे मन में भी शायद दरार पड़ जातीं। आपके आशीर्वाद व प्रेम से ही गृहस्थी में बरकत है।"

अपने माँ-बाप के सदृश ही सुधांशु और लता भी नेक और होनहार हैं। सुधाँशु हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आता है। उसे हाय्यर सेकन्डरी में स्कॉलरशिप मिलने की पूर्ण आशा है, उसका विचार डाक्टर बनने का है। लता ने इस साल नवीं कक्षा में गृहशास्त्र लिया है। उसे इसमें सबसे अच्छे नम्बर आते हैं। उसकी अध्यापिका का कहना है कि गृहशास्त्र का ज्ञान केवल उस विषय की किताब पढ़ने से नहीं आ सकता। लता घर पर हर काम में माँ का हाथ बटाती है। इसी लिए उसे सब काम का व्यावहारिक ज्ञान है। उसे बुनाई, कटाई, सिलाई, कपड़ा धोने, बीमार की सेवा, भोजन बनाने में पूरे-पूरे नम्बर मिलते हैं।

कन्या को सुगृहिणी बनायें—

काश कि लक्ष्मी जैसी गृहिणी घर-घर हों। मेरा अभिप्राय यह है कि यदि आप यह चाहती हैं कि आपकी कन्या का गृहस्थ-जीवन सुखी हो तो

उसे सफल गृहिणी बनने की ट्रेनिंग दें। यह बात भली प्रकार सिखायें कि गृहस्वामी की आमदनी कम होने पर भी वह किस प्रकार अपनी गृहस्थी को ठीक से चला सकती है ताकि भोजन की समस्या सन्तोषजनक ढंग से हल हो सके। माताओं की अज्ञानता के कारण अनेक बच्चे पौष्टिक भोजन के बिना शक्तिहीन होकर मौत के पंजे में कसे हुए हैं। मामूली मौसमी बीमारियाँ आती हैं और ये बच्चे बीमारियों के कीड़े से लड़ नहीं सकते, क्योंकि वह दुर्बल हैं, उनके शरीर में संचित शक्ति नहीं है, उनके भोजन में पोषक तत्वों का अभाव है। इस कारण से उनके शरीर के कोष दुर्बल हैं। इसलिए भोजन की समस्या ठीक से सुलझाने की शिक्षा प्रत्येक कन्या को अवश्य दी जाये। उन्हें यह सीखना चाहिए कि कम आमदनी में भी आवश्यक जरूरतों को कैसे पूरा किया जा सकता है। केवल पति की आमदनी के भरोसे बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। प्रत्येक गृहिणी का यह फर्ज है कि वह अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करे। इसके लिए यह जरूरी नहीं कि वह बाहर दफ्तरों में नौकरी करने जाये। आय बढ़ाने के लिए कई उपयोगी गृहोद्योग हैं जिनका उल्लेख आगे किया गया है।

भोजन के विषय में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें—

अगर आप चाहती हैं कि आप के बच्चों को भर पेट पौष्टिक भोजन मिले तो इन बातों का ध्यान अवश्य रखें कि शरीर-रक्षा और स्वस्थ बने रहने के लिए किस प्रकार के भोजन की आवश्यकता है। आयु व ऋतु अनुकूल भोजन बनायें। अन्य जरूरतों से भोजन की जरूरत सर्वप्रधान और महत्वपूर्ण है इसलिए पहले इसको पूरी करके तब अन्य जरूरतों पर पैसा खर्चें। सुगृहिणी के कर्तव्य को भली प्रकार निभायें। लक्ष्मी का उदाहरण आप के सामने है। आपने देखा कि लक्ष्मी ने अपने प्रयत्नों से घर का कितना सुन्दर प्रबन्ध किया। वह अपने बच्चों, पति व माँ जी को सन्तुलित भोजन देती है, उसने खाने-पीने की अच्छी आदतें डाली, इससे कम पैसे में ही शरीर की सब आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं। इस के अतिरिक्त लक्ष्मी ने समय और घर की सुव्यवस्था का महत्व भी समझा। घर का काम खुद करके उसने नौकरी की तनखाह बचाई, साथ ही अवकाश के समय का सुन्दर सदुपयोग कर सौ रुपया महीना उपार्जन भी कर लिया। साथ ही साथ अपने बच्चों को उसने आदर्श गृहस्थ बनाने की ट्रेनिंग भी दी।

स्त्रियों के लिए सबसे बढ़िया काम है घर की सँभाल। जो स्त्रियाँ १५०) की नौकरी के लोभ में अपने बच्चों व घर की व्यवस्था को नौकर के भरोसे छोड़कर दिन भर बाहर रहती हैं, वे कमाती नहीं उल्टा गँवाती हैं। कारण नौकर के हाथों दुगुना खर्च होता है, बच्चों की बेपरवाही होती है और घर में बरकत नहीं रहती। नौकर के हाथ का भोजन नीरस तथा बे-बरकती होता है। और जो बरबादी होती है सो अलग।

घर की दिनचर्या ऐसी रखी जाये कि सब काम समय पर हो, अवकाश के समय का सदुपयोग हो सके तथा दिन-रात चूल्हा-चक्की में न लगा रहना पड़े। पाश्चात्य देश में मध्यवर्ग के लोगों के यहाँ नौकर नहीं हैं। वहाँ गृहिणी सब काम खुद ही करती है। तिस पर भी उन्हें सामाजिक तीज व आमोद-प्रमोद के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसका कारण यह है कि उनके भोजन में आडम्बर नहीं है। उनकी दिनचर्या नियमित है और प्रत्येक व्यक्ति गृह प्रबन्ध में सहयोग देता है।

१८. क्या आप नौकरों से परेशान हैं ?

वह जमाना जल्द आने वाला है जब कि नौकर रखना साधारण गृहस्थ के लिए सम्भव नहीं होगा। एक तरह से यह होगा भी अच्छा। गृहिणी अपनी जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने की योग्यता प्राप्त करेगी, परिजनों में आत्म-निर्भरता आयेगी। पर यदि आप नौकर रख सकती हैं तो उनके प्रति इंसानियत का व्यवहार करें।

नौकर हमारे परिवार का एक अंग है, वे हमारी सेवा करते हैं, अपना घरबार छोड़कर अपनी रोजी कमाने के लिये परदेश में मारे-मारे फिरते हैं। अगर हम उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं करते तो यह मनुष्यता के प्रतिकूल है।

प्रायः देखने में आता है कि नौकरों का रोना घर-घर है। मालिक से पूछो तो वे उन्हें, कामचोर, स्वार्थी, गन्दे, झूठे, दगाबाज तथा अविश्वासी कहते हैं। अगर नौकर से पूछो तो वे अपने मालिक के हजार दोष गिना देते हैं। नौकरों की आम शिकायत मालकिन के प्रति होती है। अगर मालकिन घर की निगरानी रखती है, प्रत्येक वस्तु की देखभाल, छानबीन और पूछ-



ताछ करती है तो नौकर ऐसी मालकिन को कभी पसन्द नहीं करते। आम नौकरों की यह राय है कि नौकरी करने के लिए सबसे अच्छा घर वह है,

जहाँ मालकिन न हो। मालिक या तो कुआँरा हो या विधुर हो। उनकी राय में मालकिन तो सभी किच-किच करने वाली होती हैं।

परन्तु नौकरों की सुविधा के लिये मालकिन घर तो नहीं लुटा देगी ? विशेष कर के आजकल के जमाने में जब कि प्रत्येक वस्तु चौगुनी कीमत देने पर भी नहीं मिलती। जबकि खाद्य पदार्थों की कीमत छः गुना बढ़ गयी है। तथा जीवन का मापदण्ड तेजी के साथ ऊपर उठ रहा है। मकान का किराया, कपड़ों के दाम, बच्चों की शिक्षा सब के दबाव से गृहस्थ कुचला जा रहा है, अगर गृहिणी अपने घर की देखभाल नहीं करेगी तो घर कैसे चलेगा ? भला नौकर को क्या चिन्ता है, उसे तो भर पेट दो बार रोटी और चाय-पानी मिलता ही है, महीने के अन्त में ३० रुपये उसके बचे हुए ही हैं। मुसीबत तो गृहस्वामी की है जो कि १० रुपये महीना भी नहीं बचा पाता।

नौकरों पर निर्भर रहने से—

आजकल वही गृहस्थी नौकर रख सकता है जिसकी आमदनी कम-से-कम ८०० रुपये महीना हो। एक नौकर रखने से हमें निम्नलिखित असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

१. नौकर की तनख्वाह ३० रुपये, साथ ही उसको साफ रहने की ताकीद करने पर कपड़े, तथा साबुन और हजामत का खर्च भी देना पड़ता है।

२. दिन भर में एक नौकर कम-से-कम आध सेर अनाज खाता है। फलस्वरूप नौकर की खुराक तथा चाय-पानी का खर्च मिला कर ३० रुपये आपको और पड़ा।

३. अगर आप भोजन स्वयं पकाती हैं तो ईंधन, घी, अनाज आदि का खर्च किफायत से करेंगी जिससे आसानी से ४० रुपये माहवार बचत हो जायगी, परन्तु जब नौकर खर्च करेगा तो वह ४० रुपये और अधिक ही करेगा। इस प्रकार ८० रुपये का आपको नुकसान उठाना पड़ेगा। अतएव नौकर को रखने का खर्च आप को १५० रुपये तक पड़ा।

४. इसके अतिरिक्त मन-पसन्द का काम नहीं होगा, आप नौकर की मोहताज हो जायेंगी।

५. पाक-विद्या एक कला है, भोजन सफाई तथा चतुराई से पकाने पर ही उसका पौष्टिक तत्व बच पाता है, परन्तु नौकर भाजी काटते और

पकाते समय इन दोनों ही बातों का ध्यान नहीं रखता।

६. भोजन परोसते समय भी वह अपने लिये अधिक हिस्सा रखने की कोशिश करेगा। लुका-छिपाकर पतीले में ही मुँह लगाकर दूध पी लेगा। अपनी रोटी के आटे में घी गूँधकर पका लेगा। खीर, हलवा या अन्य स्वादिष्ट पदार्थ में से अपना हिस्सा पहले ही से निकालकर छिपा लेगा।

७. इसके अतिरिक्त आपके लाख तकाजे पर भी नौकर न तो रोज नहाता है न कपड़े ही बदलता है। उन्हीं कपड़ों से सो जाता है और उन्हीं से जंगल-पानी जाता है, तथा उसी तरह आपकी रसोई में काम करने लगता है।

८. शारीरिक सफाई के अतिरिक्त नौकर में मानसिक पवित्रता का भी अभाव है। कई बच्चे नौकरों की संगति में ही दुराचारी हो जाते हैं। अगर इनका मेडिकल मुआयना कराया जाये तो सौ में से ९० प्रतिशत नौकरों को छूत की बीमारियाँ निकलेंगी। आपकी गैरहाजिरी में यदि नौकर आपके गुसलखाने का साबुन या तौलिया अथवा कंघी का भी दुरुपयोग करता हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

९. आजकल घर छोटे-छोटे हैं, परिजनों के रहने के लिये भी स्थान नहीं, फिर भला नौकर को कैसे कोठरी दी जाय ? पर जो नौकर बाहर रहता है, एक तो वह समय पर काम पर हाजिर नहीं होता, दूसरे घर की बहुत कुछ चोरी करके सामान घर रख आने की उसे सुविधा रहती है।

१०. मर्द नौकर के घर में रहने से स्त्रियों की उठने-बैठने की सुविधाएँ नष्ट हो जाती हैं।

११. घर की बहुत-सी चोरियाँ भी नौकरों के भेदी बनने से ही होती हैं। इसके अतिरिक्त घर की बहुत-सी बातें, झगड़े तथा आर्थिक स्थिति को नौकर ही ऊजागर करते हैं।

आत्मावलम्बी बनें—

उपरोक्त असुविधा से बचने के लिए आपको घर के कामों के विषय में जहाँ तक हो सके आत्मावलम्बी होना चाहिये। इस विषय में हम पाश्चात्य गृहिणियों की गृह-व्यवस्था से बहुत कुछ सीख सकती हैं। वहाँ पर किसी भी मध्यम वित्त वाले गृहस्थी के घर नौकर नहीं होता। उनके यहाँ चूल्हे गैस या बिजली से जलते हैं। प्रत्येक घर में आपको फ्रिजिडेयर

मिलेगा। घर के सभी प्राणी भोजन एक साथ निश्चित समय पर ही करते हैं। अतएव गृहिणी को दिन भर चूल्हे के पास इन्तजार में नहीं बैठना पड़ता है। घर की सफाई तथा बर्तन धोने में प्रत्येक परिजन हाथ बटाता है। केवल छोटे बच्चों की देखभाल माँ पर होती है। उनके बच्चे भी नियमित दिन-चर्या के आदी होते हैं। पाश्चात्य देश में कपड़े धोना, इस्त्री करना, बाजार हाट आदि का काम भी स्त्रियाँ ही करती हैं। यह सब करते हुए भी, वे हर शनिवार को परिवार के साथ आमोद-प्रमोद के लिए समय निकाल लेती हैं।

गृह-व्यवस्था में सुधार—

नौकर न रखकर आप जो बचत करती हैं उसी रकम से आप बिजली के चूल्हे, कुकर या फ्रिजिडेयर कुछ सालों में खरीद सकती हैं।

सभ्यता के विकास के साथ अब इस बात का तकाजा है कि भारतीय गृहिणियाँ भी अपनी गृह-व्यवस्था में सुधार करें। एक नियमित दिनचर्या बनायें। प्रत्येक वस्तु करीने से रखें। भानमती के पिटारे सदृश व्यर्थ की सामग्री से घर न भरें। स्थानाभाव के कारण जहाँ तक हो सके घर में केवल उपयोगी व आवश्यक क्स्तुओं का ही संग्रह करना चाहिए। अभी घर-घर में गैस के चूल्हों की सुविधा तो नहीं हो सकती परन्तु इकमिक या आनन्द कुकर तथा प्रेशर कुकर तो अनेक गृहस्थी खरीद सकते हैं। नौकर की एक मास की तनख्वाह बचाकर कुकर तथा प्लेटें खरीदी जा सकती हैं। पीतल की थाली और कटोरियाँ माँजना असुविधाजनक होता है, साथ ही उनकी कलई निकल जाने पर वे गन्दे दीखते हैं। फिर थाल में तीन-चार कटोरियाँ लगा कर खाना परोसना और खाना दोनों आडम्बरपूर्ण हैं। इसमें अधिकांश भोजन व्यर्थ जाता है। टेबुल पर कुकर के डिब्बों में से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता अनुसार गर्म-गर्म भोजन परोस लेना चाहिये। इस प्रकार एक प्लेट तथा कटोरी या छोटी सूप प्लेट से प्रत्येक व्यक्ति का काम हो जाता है। भोजन भी व्यर्थ नहीं जाता। प्लेटों को एक तसले में गर्म पानी और साबुन लगा कर धोना भी सहज है। कुकर के डिब्बे भी साबुन लगाकर भली प्रकार धोये जा सकते हैं। कुकर में खाना पकाने से उसके विटामिन भी सुरक्षित रहते हैं, साथ ही उसमें पका हुआ खाना बहुत साफ और स्वास्थ्य-प्रद होता है। एक बार कुकर चढ़ा देने के पश्चात् गृहिणी निश्चिन्त होकर दूसरी ओर ध्यान दे सकती है। रोटी बनाने तथा चाय बनाने का काम

अँगीठी पर किया जा सकता है। इस प्रकार ईंधन का खर्च आधा रह जाता है। यह बात मैं व्यक्तिगत अनुभव से कहती हूँ कि मैंने जब से कुकर पर खाना बनाना आरम्भ किया है, मेरे ईंधन का खर्च आधा हो गया है और साफ तथा पौष्टिक भोजन पाकर परिजनों का स्वास्थ्य भी उन्नति कर गया है।

अपना पलंग बिछाना, नहाने के बाद कपड़े धोने, जूते साफ करना ऐसे काम तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं करने चाहिये। अगर परिवार बड़ा है और काम की अधिकता है तो पार्ट-टाइम नौकर रखा जा सकता है, जो कि बर्तन माँजने तथा झाड़ू देने का काम कर दे। राशन तथा ईंधन खुद खरीद कर मजदूर से उठवा लायें। ताजी भाजी तरकारी घर के दरवाजे पर नित्य फेरी वालों से ले लेवें। अन्य रसद महीने के आरम्भ में किसी बड़ी दूकान से खरीदी जा सकती है।

यदि नौकर रखें—

इतनी व्यवस्था करने पर भी अगर आप को दिन भर के लिए एक नौकर की आवश्यकता महसूस हो तो कोई विश्वासी और भला नौकर रखें, जिसकी कोई जमानत दे सके। आप भोजन पकाने का काम स्वयं करें परन्तु मसाला पीसना, भाजी काटना, आग जलाना, झाड़ू देना आदि काम उसके जिम्मे कर दें। एक बार नौकर को भली प्रकार समझा दें, बार-बार उस पर झुंझलायें नहीं। काम बिगड़ने पर उसे उसकी भूल ठीक से समझा दें। प्रत्येक नौकर को नये घर में १०-१५ दिन काम समझने में लग जाते हैं। अगर नौकर नेक और आज्ञाकारी है तो उसे धीरे से काम सिखाया जा सकता है। उसे गुलाम या दास के सदृश दुत्कारें नहीं। उसके दुःख-सुख और कष्ट को समझें। बीमार होने पर उसकी उपेक्षा न करें। परन्तु पथ्य-पानी का प्रबन्ध कर दें। इससे अनुगृहीत होकर वह स्वामीभक्त बन जायगा। अपने फटे-पुराने कपड़े मरम्मत करके उसको तथा उसके बच्चों को भी दें। अगर आपने उसके साथ खुराक देनी तय की है तो भर पेट तो उसे देना ही होगा। गेहूँ नहीं है, तो जवार और चना भी कभी-कभी दिया जा सकता है। अगर घर के सभी लोग कभी-कभी चना और जवार खायें तो नौकर को बुरा नहीं लगेगा। जब कभी कोई अच्छी चीज पके उसे थोड़ी-सी जरूर देनी चाहिये, नहीं तो उसकी भी नीयत लगी रहती है। नौकरों से घर की बात करनी या किसी

की निन्दा करनी अथवा अनचाहे परिजन के प्रति दुर्व्यवहार करने अथवा अविनीत होने के लिये प्रोतसाहन देना भारी मूर्खता है। इन भूलों का कभी-कभी भारी दुष्परिणाम निकलता है।

नौकर को कभी-कभी छुट्टी भी देनी चाहिए। उसे भी खेल-तमाशे में जाने, मित्रों से मिलने आदि के लिए अवकाश चाहिए। उसका भी सामाजिक जीवन है। पुराना नौकर जो कि आपके घर का एक प्राणी बन गया है, जिसने अपनी सेवा तथा कर्तव्यपरायणता से आपको सन्तुष्ट कर दिया है, उसका महत्व आप भी समझें उसकी तनखाह की तरक्की कर दें। यदा-कदा इनाम भी दें। विश्वासी तथा आज्ञाकारी नौकर को अपनी भूल से खो न दें।

अपने घर की सुव्यवस्था आत्मनिर्भरता तथा नौकर से काम लेने की योग्यता इन तीनों बातों का सुन्दर समन्वय ही नौकरों की समस्या को हल कर सकता है। इसके अतिरिक्त एम्पलायमेंट एक्सचेंज सदृश कुछ प्राइवेट संस्थायें भी होनी चाहिएँ, जिसके द्वारा नौकरों को ट्रेनिन्ङ्ग मिले तथा नौकरी दिलाई जाय। नौकर की जिम्मेदारी भी इसी संस्था पर रहे। नौकर के हकों की रक्षा करने का भार भी इन्हीं पर हो। इस प्रकार ट्रेनिन्ङ्ग पाये हुए नौकर अपने काम की जिम्मेदारी समझेंगे और मालिकों को भी इन नौकरों को रखने में सुविधा होगी।

१६. नारी की अर्थ-पराधीनता

नारी की सबसे बड़ी लाचारी—

नारी की सबसे बड़ी लाचारी उसकी आर्थिक परनिर्भरता है। लाचारी में किसी के अधीन रहना या एकान्तिक रूप से निर्भर रहना न केवल



पुरुष के लिए परन्तु स्त्री के लिए भी सम्मानजनक नहीं है। स्त्री-पुरुष एक दूसरे के सच्चे मित्र और पूरक तभी हो सकते हैं जब कि दोनों को लाचारी या दबाव के कारण कर्तव्य न करना पड़े पर स्वेच्छा से दोनों अपने-अपने क्षेत्र में सम्मानजनक ढंग से फर्ज अदा करते हुए गृहस्थी की उन्नति करें। नारी की लाचारी, दुर्बलता और निर्भरता पुरुष की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है। वह तेजी के साथ आगे नहीं बढ़ पाता। एक बोझा उसे पीछे को खींचता-सा रहता है। जहाँ तक परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ हैं, पुरुष को प्रायः वे अकेले ही ढोनी पड़ती हैं।

नारी को अपनी इस निर्भरता का मूल्य भी चुकाना पड़ता है वह खामोश होकर पुरुष का अत्याचार सहती है। छाती पर पति सौत लाकर बिठा देता है, पत्नी कुछ नहीं कर सकती। पति का घर छोड़ कर जाये भी तो कहाँ ? पीहर में कितने दिन गुजर हो सकती है ? जब तक माँ-बाप जीते हैं—और उनके पास पैसे हैं—लड़की का गुजारा हो जाता है। परन्तु सारी उम्र तो माँ-बाप नहीं बैठे रहते। मुकद्दमा करके पति से खर्चा लेना सहज नहीं है। फिर हर महीने खर्चा वसूल करना भी तो कोई खेल नहीं है। अब जब कि विशेष विवाह विधेयक तथा तलाक कानून बन गये हैं, नारी की अर्थ-पराधीनता का दुष्परिणाम और भी नग्नता के साथ सामने आ रहा है। स्त्री को उससे लाभ के बदले हानि ही होगी। पुरुष कमाता है, उसके पास जब

तक धन और बल है अपना घर फिर से बसाने में उसे कोई कठिनाई नहीं होगी। किसी की परित्यक्ता पत्नी, यदि उसके बाल-बच्चे भी हैं तब तो उसका परिवार फिर से बसना कठिन ही नहीं एक तरह से असम्भव ही है। कुँवारी कन्याओं की ही शादी होनी कठिन हो रही है। जब कि इतना दहेज भी दिया जाता है तब भी कमाऊ वरों के सौ नखरे होते हैं। फिर परित्यक्ता पत्नी वैसे ही 'सेकैन्ड हैंड' कहलायेगी उस पर उसके पीछे यदि बच्चे हुए तो उसे भला कहाँ आश्रय मिल सकता है ?

नारी अर्थोपार्जन की योग्यता प्राप्त करे—

ऐसी सूरत में अब नारियों को अर्थ-स्वातन्त्र्य प्राप्त करने की भरसक चेष्टा करनी चाहिए। इसके लिए नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना पड़ेगा (१) कन्याओं को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार ऐसी शिक्षा दी जाये कि वे मौका आने पर कुछ अर्थोपार्जन कर सकें। यह जरूरी नहीं है कि हर एक स्त्री बी० ए०, एम० ए० ही पास करे या डाक्टर, प्रिन्सीपल और टीचर ही बने। इन दोनों क्षेत्रों में तो स्त्रियाँ काफी छा गई हैं। फिर इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करनी हर एक के बूते का काम भी नहीं है। उपयोगी गृहोद्योग के विषय में आगे जाकर बताऊँगी, जिनके जरिये कि नारियाँ अपने अवकाश के समय कुछ धन पैदा कर सकती हैं, यहाँ पर कुछ अन्य धन्धों का उल्लेख करतीं हूँ जिन की ट्रेनिंग पाकर स्त्रियाँ धन कमा सकती हैं (१) होटल का काम—होटल में मैनेजर से लेकर—परिचारिका (वेट-रस) तक के भिन्न-भिन्न काम हैं जो कि स्त्रियाँ बहुत सुघड़ाई से सँभाल सकती हैं। (२) कलाकार—गाना-बजाना, चित्रकारी, अभिनय सजावट का काम करना, विवाह-शादी, उत्सवों में प्रबन्ध करने का काम। (३) दर्जी का काम—कटाई और सिलाई का काम, मशीन पर मोजे बनियान और दरियाँ आदि बुनना। (४) नर्स, टीचर, आया या भोजन पकाने का काम। (५) टेलीफोन गर्ल, स्टेनों, प्रेस-रिपोर्टर, टिकट-चेकर, कंडक्टर, टैक्सी ड्राइवर, टाइपिस्ट, सेल गर्ल रिसैप्सनिस्ट, लेखिका, संपादिका, इंश्योरेन्स एजेन्ट, फोटोग्राफर आदि। (६) स्त्रियाँ ऐसे काम भी आसानी से कर सकती हैं कि अपने अवकाश के समय घरों में काम आने वाली चीजें यथा प्रसाधन की चीजें, कपड़े, रसद, सजावट आदि की चीजें, पुस्तकें आदि के आर्डर इकट्ठे करके दुकानदारों को दें और इस में उन्हें काफी कमीशन भी प्राप्त हो सकती है।

जीविका उपार्जन करना सम्मान की बात है—

बहुत से लोगों का ख्याल है कि इस प्रकार का काम करने से स्त्रियों के स्त्रीत्व पर आँच आयेगी। यह धारणा अब दिनों दिन कम हो रही है। जो स्त्रियाँ पैसे-पैसे के लिए लड़ती-झगड़ती हैं, घर की चीजें चोरी-चोरी बेचती हैं, झूठा हिसाब बना कर पति को ठगती हैं, ताश और जुआ खेल कर पैसा कमाना बुरा नहीं समझतीं, घर में आये गए की चीजें उठा लेती हैं, दुकानों पर खरीदने का बहाना करके चीजों पर हाथ साफ करती हैं या इसी प्रकार के अन्य हथकंडों से धन कमाना चाहती हैं उनसे तो वे स्त्रियाँ लाख दर्जे अच्छी हैं जो मेहनत-मजदूरी से धन कमाती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि लड़कियों को बचपन से ही हम इस बात की शिक्षा दें कि वे जब बाहर जायें सलीके से बात करें, अपनी मानमर्यादा की रक्षा करती हुई लोगों में मिलें-जुलें और जरूरत पड़ने पर अपने सामने एक उच्चादर्श और आत्म-विश्वास रखकर जीवकोपार्जन कर सकें।

स्त्रियों की आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनाने के लिए दूसरी बात है कि उन्हें सम्पत्ति अधिकार मिलना चाहिए। उन्हें सम्पत्ति की सम्भाल करनी सिखाई जाये। इस विषय में उन्हें कानूनी जानकारी भी होनी चाहिए। (पुस्तक के अन्त में मैंने सम्पत्ति-अधिकार कानून का उल्लेख किया है।) मितव्ययता नारी का सबसे बड़ा गुण है। देखा-देखी जेवर और कपड़ों की हवस करना ठीक नहीं। यदि महिलाएँ आर्थिक सुरक्षा चाहती हैं तो तड़क-भड़क से बचें, मेहनत करें और धन तथा समय का मूल्य समझें।

ध्यान रखने लायक तीसरी बात यह है कि माता-पिता को चाहिए कि कन्या को दहेज इस रूप में दें कि मुसीबत के समय उनके काम आ सके। ब्याह में जहाँ तक हो सके फिजूल खर्ची रोकी जाए। धूम-धड़ाके और दावतों पर अधिक पैसा खर्चना फिजूल है। एक ही बार बहुत से जेवर और कपड़े बनाने भी ठीक नहीं। कपड़े छोटे हो जाते हैं या उनका फैशन बदल जाता है। यही हाल जेवरों का होता है, उनकी सम्भाल की अलग परेशानी रहती है। वक्त पर उन्हें बेचने जाओ तो आधी कीमत नहीं मिलती। ऐसी सूरत में ब्याह के अवसर पर कन्या को जो कुछ दिया जाये आधे से अधिक नकद के रूप में दिया जाये और इस रकम से पोस्टल सर्टिफिकेट खरीद दिये जाएँ, जिन्हें कि जहाँ तक हो सके नियमित समय पूरा होने पर ही तुड़ाया जाए।

गृहिणी के श्रम का मूल्य—

स्त्री अपना खून-पसीना एक करके किफायत से गृहस्थी चलाती है, निस्वार्थ भाव से सब की सेवा करती है, सब के आराम का ध्यान रखती है, पर इसका उसे कुछ मूल्य नहीं मिलता। कितना अच्छा हो कि अपनी-अपनी औकात के मुताबिक हर एक पति प्रति मास अपनी पत्नी को जेब खर्च दे। उसे जन्मदिवस, उत्सवों तथा तीज-त्यौहारों पर भी पीहर और ससुराल से कुछ मिलता ही रहता है। इस प्रकार उसकी निज की कुछ सम्पति भी हो सकती है। यह सम्पति आपत्काल में परिवार के ही काम आयेगी। पति के बीमार या बेरोजगार होने पर यह रकम वरदान साबित होगी। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी बहुत अच्छा होगा। आम तौर पर जिन स्त्रियों के पति मित्रवत् व्यवहार नहीं करते या परिवार में जिनका आदर नहीं होता, वे नारियाँ अपने गृह प्रबन्ध और पति की ओर से उदास रहने लगती हैं। उन्हें गृहस्थी में कुछ विशेष दिलचस्पी नहीं रहती। उनकी यह धारणा बन जाती है कि मुझे अपने पति की कमाई से क्या लाभ ? जितनी सेवा में यहाँ करती हूँ उतनी किसी पराये की भी करूँ तो खाने-पहनने भर को तो वहाँ भी मुझे मिल जायेगा। उसके जीवन में अपनापन, विश्वास, सम्मान और धन की कमी के कारण एक ऐसी कटुता भर जाती है कि गृहस्थी से उसका मन उचटा-उचटा रहता है। इससे गृहस्वामी को आर्थिक लाभ और पारिवारिक आनन्द दोनों बातों का घाटा रहता है। स्त्रियों की प्रसन्नता में ही गृहस्थी की कुशल है। तभी महानुभावों ने कहा है कि नारी की पूजा होनी चाहिए। उसे धन, आभूषण और उपहारों से प्रसन्न रखना चाहिए। क्यों कि जहाँ नारी प्रसन्न रहती है वहीं लक्ष्मी बसती है।

कुछ लोगों की ऐसी आशंकाएँ हैं कि आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होकर नारी उच्छृङ्खल हो जायेगी। इस विषय में मैं श्री दिवाकर जी के लेख से कुछ अंश साभार उद्धृत करती हूँ, जिसमें उन्होंने नारी के अर्थ स्वातन्त्र्य की बहुत अच्छी पैरवी की है और लोगों की निर्मूल धारणाओं का भी समाधान कर दिया है।

पति-पत्नी अपना अपना अलग व स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हैं और जहाँ भी दाम्पत्य-स्वतंत्रता पर कुछ बन्धन लगता है वहाँ पति और पत्नी दोनों पर ही समान रूप से यह बन्धन लगता है या लगना चाहिए। यहाँ दोनों समान रूप से स्वतंत्र हैं और यदि परतंत्र हैं तो भी समानरूप से ही परतंत्र हैं।

वास्तव में दाम्पत्य परतंत्रता नहीं है बल्कि स्वतंत्रता के अंतर्गत ही यह एक प्रकार की प्रबन्ध-व्यवस्था है। व्यक्ति स्वभाव से स्वातन्त्र्य प्रिय है। डोरी को एक सीमा तक खींचा जाय तो ठीक, अन्यथा अधिक खींचने से वह टूटेगी ही। इसी तरह दाम्पत्य अनुचित रूप से मानव-जीवन को बाँधेगा तो स्वतंत्रता की भावना व वृत्ति विद्रोह करेगी, इसकी प्रतिक्रिया उल्टी ही होगी। अतः दाम्पत्य की श्रेष्ठता इसी में है कि उसके बँधनों में इतना खिचाव न हो कि पति-पत्नी की स्व-अपेक्षित स्वतंत्रता ही मिट जाय और व्यक्तित्व का विकास ही वहाँ अवरुद्ध हो जाय, साथ ही उसके बंधनों में इतनी ढिलाई न हो कि परापेक्षित जीवन में उच्छृङ्खलता व अव्यवस्था आ जाए। दाम्पत्य परतंत्रता और व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता, इन दोनों के सामंजस्य में ही दम्पति का सच्चा स्वेच्छित सहयोग है और इसी में दाम्पत्य-प्रेम की निष्पति व दाम्पत्य-जीवन की सफलता है।

स्वावलम्बन और अर्थोपार्जन--

'बस, यहीं हम नर-नारी-समभाव के सिद्धाँत पर आते हैं और हमें इस सत्य का साक्षात्कार होता है कि नारी नर पर एकांतिक रूप से निर्भर रहे, इससे यह समानता नष्ट होती है, और फिर, आर्थिक दृष्टि से वह पूर्णतया नर की आश्रिता बनकर रहे, इसमें तो वह अपना स्वत्व व व्यक्तित्व ही गँवाती है। भारतीय नारी ऐसा ही करती रही है, बल्कि उससे ऐसा ही कराया जाता रहा है। ऊँची-ऊँची दुहाइयाँ देकर उसे यही सिखाया गया है कि वह बचपन में पिता के, यौवन में पति के और वृद्धावस्था में पुत्र के आधीन रहे, वह कभी स्वतन्त्र न हो। लज्जा उसका भूषण है। परदे की बीबी बनने में ही उसका शील है। पति ही उसका सर्वस्व व आराध्य देव है, भगवान है। पति के लिए ही जीना और पति के लिए ही मरना उसका परम कर्तव्य है। आत्मसमर्पण व आत्मोत्सर्ग में ही उसकी महत्ता है। पति से अलग वह कुछ नहीं है। उसका अपना अलग व्यक्तित्व ही नहीं है। वह पति के व्यक्तित्व का अर्द्धांश मात्र है या पति के व्यक्तित्व का अर्धांग मात्र है, पति के व्यक्तित्व में ही उसका व्यक्तित्व समाविष्ट है, अतः अलग उसे सम्पत्ति देने में औचित्य ही क्या हो सकता है ? बस इस तरह सम्पत्ति पर उसे अधिकार नहीं दिये गए और कुछ दिये भी गए तो बराय नाम और वह भी अहसान या रियायत के तौर पर। फिर धनोपार्जन का अधिकार तो उसे क्या

मिलता ? गरज़ यह कि हर तरह नारी को असहाय व पराश्रित बनाकर, पुरुष की एक रस-केलि पुत्तलिका बनाकर, उसके स्वत्व को ही पीस डाला गया, उसके अपने व्यक्तित्व को ही मिटा दिया गया। आज इस स्थिति का भान होने लगा है पर हम देखते हैं कि नारी को सम्पत्ति-विषयक अधिकार ही देने का शोर ज्यादह बुलन्द है। कुछ सहृदय पुरुष भी जब नारी के इस अति शोषण व उत्पीड़न से दुखी होकर अन्याय के प्रतिकार की व प्रायश्चित की बात कहते हैं तो प्रायः वे सम्पत्ति-विषयक अधिकार ही नारी को देने पर जोर देते हैं। पर सम्पत्ति पर अधिकार वास्तविक हो, स्थायी हो तथा उसका भविष्य कंटकाकीर्ण न हो या खतरे से खाली हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि नारी धनोपार्जन करे। सम्पति पर ही अधिकार होने से नारी में या उसकी स्थिति व मनोवृत्ति में ऐसी क्रान्ति नहीं आ सकती कि वह पुरुष के समकक्ष गौरव के साथ खड़ी हो सके। इसके लिए धनोपार्जन का सूत्र उसे अपने हाथों में लेना होगा। अर्थोपार्जन सम्पत्ति का जन्मदाता है। धन या सम्पत्ति से जीवन की सुविधाएँ मिल सकती हैं, अच्छे और बढ़िया भोजन, वस्त्र व आभूषण उपलब्ध हो सकते हैं, पर यही अर्थ-स्वातन्त्र्य नहीं है। वह सम्पत्ति स्व-उपार्जित न होने से स्वावलम्बन की वह ऊँची अनुभूति जो व्यक्तित्व के सच्चे विकास के लिए अनिवार्य है, वहाँ न हो सकेगी। आत्म-गौरव स्वावलम्बन के बिना नहीं टिक सकता। सच्ची स्वतन्त्रता, आत्मगौरव पूर्ण स्वावलम्बन में ही है। हाथ में पैसा हो पर पैसा कमाने का अधिकार न हो तो इससे अच्छा यह है कि हाथ में पैसा भले ही न हो पर पैसा कमाने का अधिकार हो। अपने पैरों पर ही खड़े होने में जो आत्मविश्वास की भावना है, जो स्वाभिमान व आत्मगौरव का भान है, वही तो एक अनमोल रत्न है और नारी यह रत्न पाये तभी उसका वास्तविक कल्याण है। शरीर को ही खुराक न मिले, मन और भावना की भी भूख मिटे, यह विकास व उन्नति के लिए आवश्यक है और यह तभी सम्भव है जब कि सम्पत्ति में ही नहीं, सम्पत्ति-निर्माण में भी नारी का हाथ हो।

अधिकारों की खींचातानी—

'कहा जाता है कि सम्पत्ति पर अधिकार पाने से या धनोपार्जन करने से नारी घर की रानी न रह पायेगी तथा अधिकारों की इस खींचातानी से गृह-शान्ति मिट जायगी। पर वास्तव में यह भय निराधार है। स्वार्थी पुरुष

नारी को झूठी रानी या स्वामिनी बनाकर और वृथा सन्तोष देकर बहकाता रहा है और कहता रहा है कि ऐसी स्थिति में उसे और चाहिए ही क्या ? पर परावलम्बन, पराश्रय और पराधीनता रानी या स्वामिनी होने के मूल में हो तो उसमें तथ्य ही क्या हो सकता है ? पति देव या राजा साहब रूठ जाए तो रानीजी का रानीपन धरा ही रह जाए, वे उसी क्षण भिखारिणी बन जाएँ, दासी से भी गई बीती हो जाएँ। दुर्भाग्य से पति देवता कूच कर जायें तब तो यह घर की रानी तुरन्त ही राँड और डायन बन जाए। देवर, जेठ व ससुर, सास या पुत्र के टुकड़ों पर पलनेवाली एक नौकरानी ही बनकर रह जाय। निश्चय ही जहाँ वास्तविक अधिकार नहीं हैं, अधिकार का झूठा दिखावा ही है, वहाँ कैसी रानी या स्वामिनी ? दासी ही वहाँ हो सकती है, भले ही उसे रानी, स्वामिनी, मालकिन कुछ भी कह दिया जाय।

रहा प्रश्न गृह-शान्ति व दाम्पत्य-प्रेम के नष्ट होने का। पर यह आशंका भी निर्मूल है। जैसा कि हम पहिले कह आये हैं आदर्श दाम्पत्य पति-पत्नी समभाव या नर नारी-समानता पर ही स्थित होकर टिक सकता है। आज का दाम्पत्य एक मालिक और गुलाम के बीच है, बराबरी के दो मित्रों के बीच नहीं है, इसलिए उसका नव-संस्करण हो तो वह आवश्यक और उचित ही है। वास्तव में अधिकारों की यह खींचातानी तभी तक है जब तक विषमता है या जबतक एक पक्ष त्रस्त, शोषित व अधिकार वंचित है। समानता आते ही यह संघर्ष न रहेगा और तभी पति-पत्नी एक प्राण, दो शरीर बन सकेंगे। नर और नारी का स्नेहमयी बंधन अमिट और अटूट है। आखिर पुरुष उसे छोड़कर जायगा कहाँ ? उसे माँ की—नारी की—गोद में शरण लेनी होगी, उसकी स्नेह-स्निग्ध छाया में ही उसे आश्रय लेना होगा और नारी भी पुरुष को छोड़कर कहाँ जायगी ? फिर, हृदय की व तप्त शरीर के रोम-रोम की भूख कहाँ रहने देगी इन्हें दूर-दूर या एक-दूसरे से खिंचे हुए ? वास्तव में नर-नारी के पारस्परिक नैसर्गिक आकर्षण में जो अपरिमित शक्ति है, वह दोनों के बीच संघर्ष, कलह या अशान्ति के विरुद्ध बड़ी-से-बड़ी गारन्टी है। इस आकर्षण में आज अस्वाभाविकता आ गई है और उसमें ही संघर्ष व विनाश के बीज हैं। अधिकारों की यह खींचातानी इस अस्वाभाविकता को दूर कर, संघर्ष व विनाश के बीजों को नष्टकर, दाम्पत्य को सच्चे और वास्तविक अधिकारों पर ही स्थित करने के लिए है। थोड़े समय का यह संघर्ष

दीर्घ कालीन दृष्टि से संघर्ष दूर करने के लिए ही है। व्यक्तित्व व परम्परा का संरक्षण व विकास प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार है। नारी को यह अधिकार मिले, वह अपना नैतिक और मानसिक स्तर ऊँचा उठा सके, वह अपनी वास्तविक इच्छाओं अभिलाषाओं व हसरतों का खून करने की मजबूरी में न रहे, वह शोषण अन्याय या अत्याचार की लपटों में झुलसकर भस्मसात् न हो, उसके सुशिक्षित, सुसंस्कृत व सभ्य होने के तथा व्यक्तित्व के विकास के मार्ग में जितनी बाधाएँ है वे न रहें, वह अपने पैरों पर खड़ी होकर स्वाभिमान व गौरव के साथ अपना मस्तक ऊँचा रख सके, तब इससे नर-नारी का आकर्षण व प्रेम, परावलम्बन, दासता, कृतज्ञता, असहायता आदि के सभी विकारों से विहीन विशुद्ध ही बनेगा। वहाँ संघर्ष कैसा ? वहीं तो सच्चा स्वेच्छित सहयोग सुलभ और सम्भव है।

कार्यक्षेत्र का बँटवारा--

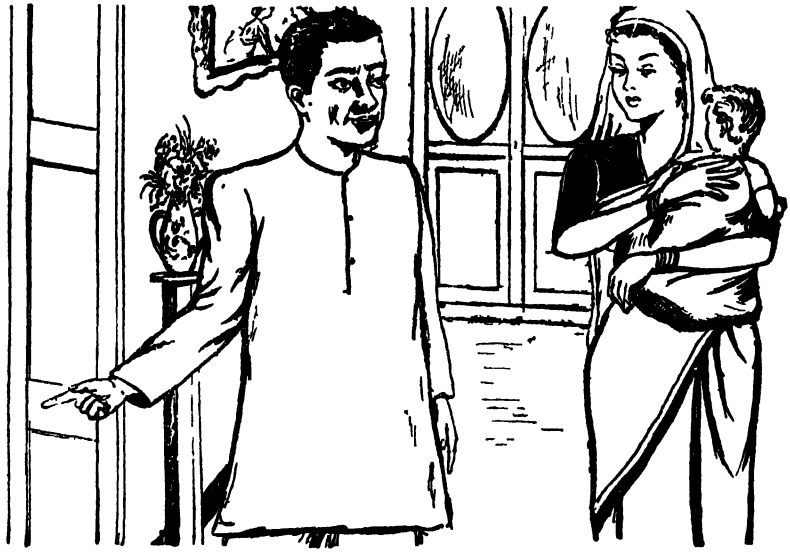
कहा जाता है कि पुरुष का कार्यक्षेत्र घर के बाहर रहे और नारी का कार्य-क्षेत्र घर के भीतर रहे, समाज सुव्यवस्था की दृष्टि से यही उचित है और इसलिए जहाँ तक नारी को सम्पत्ति-विषयक अधिकार देने का प्रश्न है, वह उचित ही है पर वह धनोपार्जन करे, यह किसी भी तरह सराहनीय नहीं है। पर यहाँ दृष्टिदोष ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि माता होने के कारण नारी का कर्त्तव्य सन्तान का पालन-पोषण व गृह-व्यवस्था है ही और मानव-निर्माण के महान कार्य में तो उसका सहयोग अनिवार्य है और अमूल्य भी है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि नारीके इस अमूल्य सहयोग के लिए हम उसे पारितोषिक न देकर उल्टा दंड ही दें। आखिर, उस पर यह बंधन क्यों लगाया जाय कि उसका कार्यक्षेत्र घर में ही सीमित हो। नारी चौबीस घंटे और बारहों महीने घर के भीतर ही अपनी शक्तियों को खपा दे, वही अपनी सब आशाओं, आकाँक्षाओं, भावनाओं व आदर्शों को बाँधकर जकड़ दे, इसमें क्या सार है ? उसका भी अपना एक व्यक्तित्व है। वह दुनिया के लाखों करोड़ों व्यक्तियों में से ही है। वह राष्ट्र की नागरिक है। वह समाज का अंग है। वह परिवार की समस्या है। उसके भी अपने मित्र व सम्बन्धी हैं। वह भी दीन-दुखी भाइयों व बहिनों की सेवा व सहायता करने की भावना रखती है। वह भी देशसमाज के नव-निर्माण में व विश्व शान्ति के सद-प्रयत्न में अपना हाथ बँटाने के लिए उत्सुक है। वह भी दूसरों के काम आने या

परोपकार करने की लालसा रखती है। न जाने उसके क्या-क्या स्वप्न हैं, क्या-क्या आदर्श हैं ? आखिर पुरुष के समान वह भी एक मानव है। उसके पास भी हृदय है और मस्तिष्क है। अनुभूतियाँ व विचारधारायें उसे भी अन्दोलित करती हैं और प्रेरणायें देती है। ऐसी स्थिति में यह कहाँ का न्याय है कि घर की चहारदीवारी में ही उसका स्वत्व व व्यक्तित्व घुट-घुटकर निष्प्राण बन जाये, उसकी उमंगों और हसरतों का खून हो जाये, उसके व्यक्तित्व का प्रस्फुटन व विकास रुक जाये और यह केवल इसलिए कि घर के बाहर उनका कार्यक्षेत्र नहीं है। इतिहास साक्षी है कि अनेक नारियों ने साहित्य, समाज व राजनीति के रंगमंच पर गौरवपूर्ण पार्ट अदा किया है। आज का युग भी ऐसी नारियों से शून्य नहीं है।'

उपरोक्त विवेचन से लोगों की यह धारणा निर्मूल प्रमाणित हो जाती है कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर नारी उच्छृंखल हो जावेगी। इसमें सन्देह नहीं व दाम्पत्य जीवन की सफलता इसी में है कि बंधनों में इतना खिचाव न हो कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा विकास ही रुक जाये। यदि नारी पुरुष पर एक बोझ है तो उसकी समानता और स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है। स्त्री को आर्थिक रूप से पराधीन रखकर पुरुष ने उसे पंगु बना रक्खा है। अज्ञानता अशिक्षा और भीरुता ने उसकी रही-सही अक्ल भी मार दी है। एक समय था जब कि पर्दे में रह कर पति परमेश्वर को पूजने में ही नारी को अपने सतीत्व की सार्थकता प्रतीत होती थी। उसका जीवन का सुख, सौभाग्य और ऐशो-आराम पति के जीवन तक ही सीमित थे। पति की मृत्यु के बाद वह परिवार, समाज और देश पर बोझ बन कर, रो-पीट कर जिस-किस तरह से जीकर अपने दिन पूरा करती थी।

परिजनों द्वारा पीड़ित नारियों के अनेक उदाहरण आपको मिल जायेंगे। नारी के इस उत्पीड़न से कई समझदार पुरुष दुखी हुए। उन्होंने उनके हक में आवाज उठाई। पर पुरुष-समाज अपने सहज प्राप्य अधिकारों को छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। आज जब कि नारी को पुरुष के बराबर अधिकार मिल रहे हैं, उन्हें भी जीविकोपार्जन की सुविधाएँ और सम्पत्ति अधिकार मिल रहे हैं तो कई दकियानूसी पुरुष सनातन धर्म रसातल की ओर जाते प्रतीत हो रहे हैं। वह नारियों की जागृति को कोस रहे हैं। उन्हें यह बात नागवार प्रतीत होती है कि जिन नारियों को हम गृहलक्ष्मी, हृदय

की रानी, माता, पूज्या तथा सती-साध्वी कह कर पूजने चले आ रहे है उन्हें और किस बात की कमी रह गई है ? सोचिये, यदि पति देवता रूठ जाये तो गृहलक्ष्मी की जो दुर्गति घरों मे होती है वह क्या किसी से छिपी है। घर के



राजा के तेवर बदल जायें तो रानी भिखारिन बन कर रह जायेगी। पति की आँखे मुँदी नही कि सास-ससुर, देवर-जेठ बहू को डायन, कलमुँही, अभागिन आदि शब्दों से विभूषित कर घर से निकालने मे देर नही करेगे। उसे सिवाय अपनी माँ के और किसी का आश्रय नही मिलेगा।

एक बहन की जीवन घटना उल्लेख करती हूँ। इस महिला (देवहूति) के पति की बजाजी की एक बड़ी दुकान थी। दुकान मे दो भाई और एक मित्र साझेदार थे। देवहूति के कोई सन्तान नही थी। अपनी बहन की लड़की गोद ली हुई थी। पति के जीवन-काल में देवर व मित्र सभी बड़ी भाभी का ऐसा आदर करते थे मानो सीता-लक्ष्मण का दृष्टान्त सामने प्रत्यक्ष हो। रहना-सहना, हिसाब-किताब सब साझा था। एक दिन हृदय-गति रुक जाने पर देवहूति के पति का अचानक स्वर्गवास हो गया। देवरों ने उसी रात हिसाब-किताब में हेर-फेर कर भाई के नाम कर्जा दिखा दिया। गोद ली हुई बेटी को उसके असली माँ-बाप के भिजवाने का तकाजा किया।

इससे देवहूति को बहुत बुरा लगा । उस बिचारी को फुसलाकर जरूरी कागजों पर दस्तखत करवा लिये और बाद में उसे फूटी कौड़ी भी नहीं दी। अब बेचारी वही दुलारी भावज दूसरों की मोहताज बनकर मुसीबत में दिन काट रही है ।

पराधीनतावश यदि नारी दासता को स्वीकार करे हुए है तो इसमें पुरुष के पौरुषत्व की कोई शान नहीं है। ऐसी पराधीन नारी सहचरी और सखी के पद का गौरव नहीं बढ़ाती। पति-पत्नी का जीवन प्रेम का सौदा है, स्वेच्छा से स्वीकार किया हुआ बन्धन है। दोनों का क्षेत्र और योग्यता भिन्न-भिन्न होते हुए भी वे एक-दूसरे से घटकर या बढ़कर नहीं है, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। हमारे देश में पुरुषों की प्रगति इसलिए भी रुकी हुई है कि उन्हें परिवार का बोझा पीछे को खींचता है। कोई जोखिम, या साहस का काम करने से पुरुष इसलिए भी हिचक जाता है कि एक तो परिवार की जरूरतों को पूरा करने का ठेका उसका होता है, दूसरे उसके बिना परिवार की नैया मंझधार में डूब जाती है ।

नारी जब खुद कमायेगी या उसकी अपनी सम्पत्ति होगी तो उसे पैसा कमाने का कष्ट और अपव्यय करने की मूर्खता दोनों का पता चलेगा। भारतवर्ष में मजदूर वर्ग में तो महिलायें पति के साथ मिलकर कमाती हैं, इसलिए उनके वर्ग में सामाजिक पराधीनता अधिक नहीं है। अज्ञानता और संस्कारवश चाहे पुरुष उन पर अपना दबाव रख ले, परन्तु आर्थिक दृष्टि से वे पुरुष पर निर्भर नहीं हैं। इसलिए उन्हें कमाई के कारण कभी दबना नहीं पड़ता। उच्च वर्ग में जहाँ पुरुष बड़ी-बड़ी नौकरियों और व्यवसाय में दिन भर व्यस्त रहते हैं उनकी स्त्रियाँ खा-पीकर आलस्य और मुटाई से फूल-कर कुप्पा बनी हुई हैं। इस वर्ग की विलासी स्त्रियाँ धन की दासता के कारण अपने जीवन को नष्ट कर रही हैं। यदि नारी धनोपार्जन की क्षमता पैदा करे तो उसकी बुद्धि और योग्यता का भी विकास होगा। वह जीवन को सही ढंग से बिताना सीखेगी। परिश्रम का मूल्य आँक सकेगी और परिवार व्यवस्था, बच्चों की शिक्षा और मनोरंजन के आयोजन में अपने पति के साथ मिलकर, सहयोग देकर वह गृहस्थी को अधिक सुखद बनाने की क्षमता प्राप्त कर सकेगी।

२०. स्त्रियाँ और नौकरी

स्त्रियाँ नौकरी करें या न इस विषय पर लोगों का काफी मतभेद है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि नारियों का कार्यक्षेत्र अधिकांश रूप से घर



ही है। बच्चों के पालन-पोषण, गृहस्थी की व्यवस्था, रसोई की सार-सँभाल, आदि काम ही इतना हो जाता है कि जो महिलाएँ अपने गृहिणी के कर्तव्य को सुचारु रूप से करती हैं, उन्हें घर से बाहर नौकरी करने का अधिक अवकाश नहीं मिलता। इसलिए अगर वे अपने अवकाश के समय को उपयोगी गृहोद्योग में लगायें तो उनकी आमदनी बढ़ सकती है। स्त्रियों के लिए अनेक उपयोगी गृहोद्योग हैं जिनका उल्लेख मैं इस लेख के अन्त में विस्तारपूर्वक करूँगी। अभी नीचे मैं एक शिक्षित बहन के विचार उद्धृत करती हूँ। इस समझदार बहन ने स्त्रियाँ नौकरी करें कि नहीं, और अगर करें तो अपने गृहिणी कर्तव्य को किस प्रकार निभायें इसका अच्छा विवेचन किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि नारी आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ले तो उसका पारिवारिक और सामाजिक रूप से शोषण बन्द हो जायेगा। और वह पुरुष की सच्ची सहचरी प्रमाणित हो सकेगी। स्त्री का नौकरी करना तभी सम्भव हो सकता है जब कि पति और परिजनों का सहयोग उसे मिला हो। यदि परिजन उसकी आलोचना करते हैं, महिलायें उसके आर्थिक स्वतन्त्रता पर ईर्ष्या करती हैं और पति पत्नी को यदा-कदा ज़लील करता रहता है तब तो स्त्री की परेशानियों की हद नहीं रहेगी। जो स्त्री दिन भर ऑफिस या स्कूल में काम कर के थकी-हारी घर लौटेगी उस पर घर के सभी कामों

की जिम्मेदारी डालनी मूर्खता है। ऐसी सूरत में पति का कर्तव्य है कि वह हाथ बटाये। पति-पत्नी दोनों मिलकर गृहस्थी की व्यवस्था और बच्चों की देख-भाल करें। कमाऊ स्त्री को भी अपने कमाऊपन की धौंस नहीं जमानी चाहिए। वह कमाती है तो किसी पर एहसान नहीं है। अपनी योग्यता का वह सदुपयोग कर रही है, यही अनुभव कर उसे प्रसन्न होना चाहिए। ऊषा बहन के शब्दों में—

'आज के विकासवादी युग में, जब कि स्त्रियाँ प्रगति की ओर कदम बढ़ा रही हैं, यह एक जटिल प्रश्न हो गया है कि उन्हें नौकरी करनी चाहिए या नहीं।

मेरा यह विचार कभी नहीं कि सभी स्त्रियाँ निश्चित रूप से नौकरी करें। जहाँ स्त्रियों के नौकरी करने में अधिक असुविधाएँ हों, अथवा जहाँ इसकी कोई आवश्यकता न हो, वहाँ स्त्रियों को घर का काम छोड़ कर नौकरी नहीं करनी चाहिए। स्त्री घर में रह कर ही अनेक ऐसे कार्य कर सकती है, जिनसे उसके पति, बच्चों तथा परिवार के अन्य लोगों को सुख पहुँचे।

पर समस्या यह है कि आज हमारे देश में ऐसी एक भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि नारी को नौकरी करनी ही नहीं चाहिए, चाहे घर में खाने के लाले भी क्यों न पड़ रहे हों। इस मत के समर्थक कहते हैं कि नौकरी करने से उसकी घर-गृहस्थी को नुकसान पहुँचने की आशंका रहती है। पर हम इस भ्रान्त धारणा को तर्क की कसौटी पर कसे बगैर स्वीकार नहीं कर सकते। सवाल सिर्फ यह है कि नौकरी करके भी स्त्री एक कुशल गृहिणी बनी रह सकती है अथवा नहीं? नौकरी करने की ओट में कहीं उसका उद्देश्य कुशल-गृहिणीत्व का बाना उतार फेंकना तो नहीं है?

सर्वप्रथम यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि 'कुशल गृहिणी' से हमारा क्या तात्पर्य है। इस विषय में मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगी कि कुशल गृहिणी वही है जिसके गृह में किसी प्रकार की कलह नहीं होती और जिसके परिवार के सभी व्यक्ति प्रसन्न रहते हैं।

जीवन का मेरुदण्ड है—धन या अर्थ। आज के इस भौतिकवादी युग में, धन के अभाव में जीना तक कठिन है। ऐसी दशा में यह कोई बुद्धिमानी नहीं कि बच्चे भूख से बिलखते रहें और बेकार माँ खड़ी-खड़ी आँसू बहाया

करे या कि सान्त्वना के दो-चार शब्द सुना दिया करे। यहाँ पर कुशल गृहिणी का यह पहला कर्त्तव्य हो जाता है कि वह रोते-बिलखते बच्चों को रोटी दे।

इस सिलसिले में मैं एक शंका का समाधान कर देना आवश्यक समझती हूँ कि नौकरी करने का यह अर्थ नहीं कि स्त्री दिन-रात घर से गायब रहे। साधारणतया लोग स्त्रियों के नौकरी करने के विपक्ष में यही तर्क उपस्थित करते हैं कि नौकरी करने वाली स्त्री का घर से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रह जाता है, बच्चों को माँ का सामीप्य नहीं मिल पाता है, आदि-आदि। पर मैं तो समझती हूँ कि दिन-भर आफिस में ड्यूटी देकर भी एक कुशल गृहिणी प्रातः एवं सायं घर का काम भली-भाँति देख सकती है।

और यदि नौकरी करने पर नारी घर का काम न भी कर सके, तो वह किसी नौकर अथवा सेविका को रख कर उससे घर का काम करा सकती है, ऊपर से देखभाल वह स्वयं कर सकती है। यह सही है कि ऐसी स्थिति में उसे नौकर को कुछ देना पड़ेगा और इस प्रकार व्यय बढ़ जाएगा। पर ध्यान से देखने पर स्पष्ट हो जाएगा कि बात ऐसी नहीं है। उदाहरणार्थ—गृहस्वामी दो सौ रुपये कमाता है और स्वामिनी १५०), कुल आय हुई २००) + १५०) = कुल ३५०)। अब यदि नौकरानी को यह परिवार ५०) दे भी देता है, तो कुल आय अर्थात् वास्तविक आय २००) के स्थान पर ३००) हो जाती है। स्पष्ट है कि इससे दो लाभ होते हैं: एक तो वास्तविक आय बढ़ती है; दूसरे, अनपढ़ स्त्रियों की बेकारी की समस्या हल होती है।

जहाँ तक बच्चों का प्रश्न है, मैं तो समझती हूँ कि बच्चे का माँ से कुछ समय तक अलग रहना ही हितकर है। माँ की दुर्बलता के कारण, जिसे हम वात्सल्य कहते हैं, बच्चा प्रायः बिगड़ जाता है। सेविका यदि बच्चे की देख-रेख करती है तो यह समस्या दूर हो जाती है। ऐसी स्थिति में तो माँ का नौकरी करना बच्चे के लिए वरदान स्वरूप हो जाता है, हानि का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि स्त्रियाँ भी यदि नौकरी करने लगेंगी तो पुरुषों और स्त्रियों में होड़ हो जाएगी। परन्तु ऐसे बहुतेरे काम हैं जिन्हें केवल स्त्रियाँ ही कर सकती हैं, और पुरुषों से अच्छा कर सकती

हैं। दूसरी ओर कुछ विशेष कामों में पुरुष अधिक दक्ष होते हैं। इस कारण होड़ का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जैसे—चाय के बगान का काम, टेलीफोन-ऑपरेटरी, और लड़कियों के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का काम ऐसे हैं। जिन्हें महिलाएँ ही अधिक कुशलता से कर सकती हैं। इन कार्यों को करने से स्त्रियाँ स्वावलम्बी हो जाएँगी और हमारे देश की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी।

आये दिन पैसों के मामले को लेकर मैंने पति-पत्नी में झगड़े होते देखे हैं। पति की यह शिकायत होती है कि वह कमा कर लाता है, दिन-भर काम करता है, स्त्री कुछ नहीं करती। वह उसे पीटता है, गाली देता है एवं नाना प्रकार के वाद-विवाद दोनों के बीच होते हैं। पत्नी भी अपने में एक प्रकार की हीनता का अनुभव करती है और अपने पति को आश्रित समझने लगती है। इसका प्रभाव आने वाली सन्तान पर बुरा पड़ता है। मैं तो समझती हूँ कि स्त्रियों का नौकरी करना ही इस समस्या का एकमात्र निवारण है।

और यदि सच पूछा जाए तो आज के इस आर्थिक संघर्ष के युग में यह सम्भव नहीं कि कोई हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे। वह वक्त बीत चुका जब एक आदमी कमाता था, और चार-छः आदमी बैठे-बैठे खाते थे। आज के युग में हर व्यक्ति को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बूढ़ा हो या जवान—काम करने की आवश्यकता है। ऐसा किये बिना न तो देश का उत्पादन बढ़ सकता है, न लोगों का जीवन ही सुखी हो सकता है।

आज भारत की जनसंख्या पैंतीस करोड़ है, जिसमें प्रायः पचास प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। यदि सभी स्त्रियाँ हाथ-पैर मोड़ कर चुपचाप घर में बैठी रहती हैं, तो इसका मतलब है कि देश की आधी आबादी देश के उत्पादन में कोई हिस्सा नहीं लेती। पूरे दिन न सही, कुछ ही घण्टे भी यदि स्त्रियाँ काम करें, तो देश का उत्पादन काफी बढ़ सकता है।

आखिर रूस, चीन, इंगलैंड तथा अन्य देशों की स्त्रियाँ भी तो नौकरी करती हैं। वे भी घर-गृहस्थी का इन्तजाम करती हैं। फिर हमारे देश की स्त्रियाँ ही क्यों नौकरी नहीं कर सकतीं ? क्यों वे राष्ट्र के उत्थान में अपना सहयोग नहीं दे सकतीं ?

कुछ लोग कहते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करना हमारे

लिए हितकर नहीं। पर मेरे विचार में तो किसी की भी अच्छाइयों को अपनाने में कोई हानि नहीं है।

'आज पाश्चात्य देश सभी क्षेत्रों में हमसे उन्नत हैं। इसीलिए कि वहाँ का प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपने राष्ट्र के उत्थान में कन्धे-से-कन्धा भिड़ा कर काम कर रहा है—अपने देश की सम्पत्ति बढ़ा रहा है। पर भारत, जो कभी उन्नति के उच्चतम शिखर पर था, जिसके आगे अन्य सभी राष्ट्र अपना शीश झुकाया करते थे, आज अवनति के गहन गर्त्त में जा गिरा है। इसका एक बहुत बड़ा कारण है स्त्रियों का परावलम्बी होना। यदि वे अपने पैरों पर खड़ी होकर नौकरी करें—देश के उत्पादन मे वृद्धि करें, तो हम भी उतने ही सुखी और सम्पन्न हो सकते हैं जितना कि संसार का कोई दूसरा राष्ट्र।'

इसमें कोई सन्देह नहीं कि दाम्पत्य-सुख को सुरक्षित रखने के लिए भी यह बहुत जरूरी है कि पत्नी भी आर्थिक कठिनायों को हल करने को पति का हाथ बटाये। बेरोजगारी के कारण दाम्पत्य प्रेम पर काफी ठेस लगती है। यह सोचना भूल है कि कमाने का काम केवल पुरुषों का ही है। स्त्रियाँ भी अपने अवकाश का सदुपयोग कर घर की आमदनी को बढ़ा सकती हैं। जिन बहनों को नौकरी करने की सुविधा नहीं है, वे निम्नलिखित गृहोद्योगों द्वारा धनोपार्जन कर सकती हैं। अपने परिश्रम की कमाई बहुत ही प्यारी होती है। यदि बहनें धनोपार्जन करने लगेंगी तो धन का सदुपयोग उनकी समझ में जल्द आ जायेगा और उनकी सामाजिक स्थिति भी सुधर जायेगी।



अवकाश के समय में गृहोद्योग अपनायें—

गृह-उद्योग से हमारा अभिप्राय है ऐसी छोटे-मोटे कामों से जो बिना ही किसी विशेष साधन सुविधा के बिना ही थोड़ी-सी पूंजी से ही अवकाश में सहूलियत से हो सकते हैं। निश्चय ही ये गृह-उद्योग जीवनोपार्जन के कार्य में पूरक होते हैं। भारत में आदिकाल से स्वावलम्बन के लिए ग्रामों में लोग और खास कर महिलाएँ इन उद्योगों में व्यस्त रही है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से नारी नर की सहायक मानी गई है। वह गृहिणी और गृहस्वामिनी जैसे अत्यन्त आदरपूर्ण सम्बोधनों से सम्मानित की जाती रही है। हमारे वैदिक और पौराणिक ग्रंथ इस बात की पुष्टि करते हैं कि जिस समाज में नारी सम्मानित नहीं की जाती और संतुष्ट नहीं रखी जाती उस समाज का पतन अवश्यंभावी है।

निश्चय ही प्रत्येक परिवार में नारी ही गृह की व्यवस्थापक और संचालक हुआ करती थी। त्यौहारों और समारोहों के अवसर पर उसकी कार्यपटुता वांछनीय थी। इसीलिए कुटुम्ब की ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति नारी ही करती थी। उसे हर तरह से कार्य-कुशल, उद्योग-पटु, व्यावहारिक और कला-कुशल होना पड़ता था, जिसकी शिक्षा उन्हें अपनी माताओं से ही प्राप्त होती थी।

प्राचीन काल में—

पुराने जमाने से ही अध्ययन अध्यापन के साथ प्रत्येक नारी गृह-उद्योगों के रूप में गो-पालन, पशु-पक्षी पालन, दस्तकारी, वस्त्र-रचना, रस्सा खिलौने और अन्य शृङ्गार के उपादानों को तैयार कर तथा मिट्टी के बर्तन बनाना, वस्त्र साफ करना, दूध, घी और पकवान आदि तैयार करना सीखा करती थी। चित्र-लेखन, चित्रकारी, नृत्य, संगीत और पुष्प-चयन आदि में भी वे दक्ष थीं। घर को सजाना, मंडप बनाना, रंगमंच की व्यवस्था करना, शहद, फल-फूल और तरकारी का उत्पादन करना और ऐसे ही अन्य छोटे-मोटे घरेलू धन्धों में रुचि रखा करती थीं। इससे निश्चय ही परिवार में आर्थिक रूप से वे बोझ न रह कर सहायक सिद्ध हुई। नारियों की ऐसी कला-कुशलता तथा उद्योग-कुशलता का प्रमाण हमें बहुत से पौराणिक कथाओं में मिलता है। शिशु-पालन, आयुर्वेद तथा सामान्य चिकित्सा की तो बात ही क्या, वे वैशेषिक ज्ञान भी रखती थीं। गोपियों का गृह-उद्योग,

गोपालन स्वतः सिद्ध है। इसी तरह अनेक संवादों में स्त्रियों की पटुता का हमें जगह जगह उल्लेख मिलता है। पुराने नाटकों में रंगमंच की रचनाओं में नर्टी की प्रधानता स्पष्ट है। वैवाहिक अवसरों पर जो मंत्र उच्चारित किये जाते हैं उनमें गृह-स्वामिनी के कर्त्तव्यों का काफी उल्लेख है।

आधुनिक आवश्यकताएँ—

आजकल स्त्रियों के लिए जटिल जीवन के पथ में अनेक नये अवसर उपलब्ध हो गये हैं। प्राचीन गृह-उद्योगों को यदि हमें विकसित करना है तथा उनसे समयानुकूल वृद्धि करना है तो नारियों का ध्यान हमें पुनः इस ओर आकृष्ट करना होगा, जिससे हमारी सांस्कृतिक परम्परा कायम ही न रहे वरन् उसका दिन-पर-दिन विकास हो। आज हमारे देश में स्वावलम्बन अत्यावश्यक है। राजनीतिक और आर्थिक संकटों ने अर्थात शरणार्थियों की समस्या और मुद्रा के फैलाव ने यह आवश्यक-सा कर दिया है कि परिवार की आय गृह-उद्योगों की सहायता से बढ़ाई जाय।

दस्तकारियाँ—

इन उद्योगों को कई श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जैसे—वस्त्र-उद्योग, भोजन-उद्योग, खिलौना-उद्योग, दैनिक आवश्यकता उद्योग और विलास सामग्री-उद्योग।

वस्त्र-उद्योग में चर्खा चलाना काफी महत्व का काम है। इसके लिए केवल अवकाश की आवश्यकता है। अभ्यास हो जाने पर घण्टे दो घण्टे चर्खा कात कर स्त्रियाँ घर में कपड़े का खर्च कम कर सकती हैं। इसके लिए न बहुत बड़े साधन का झंझट है न बड़े कौशल की आवश्यकता।

इस उद्योग में दूसरा स्थान सिलाई का है। मशीन खरीदने की सामर्थ्य जिस परिवार में हो उसे एक सिलाई की मशीन जरूर रखनी चाहिए। इससे पहले तो घर की सिलाई के खर्च में ही काफी बचत हो जायगी और यदि कहीं हाथ में सफाई आ गई तो आय का यह बहुत ही अच्छा साधन सिद्ध होगा। एक होशियार स्त्री ५, ६ घण्टे काम करके किसी भी क्लर्क या स्कूल की अध्यापिका से अधिक कमाई कर सकती है।

तीसरा स्थान बुनाई का है। स्वेटर, मोजे, शाल आदि की बुनाई से जहाँ घर का खर्च बचेगा वहाँ यदि उसे व्यापारिक ढंग से किया जाय और इसमें नई-नई डिजाइनें निकाली जायँ तो कोई भी स्त्री घर का काम निपटा

कर १०० रुपये महीने कमा सकती है।

इसी प्रकार गद्दे, रजाई, तकिये, कुशन, साइकिलों की गद्दियाँ आदि तैयार करके उन्हें बेचने पर काफी आय हो सकती है। कपड़े की धुलाई, रंगाई तथा रफू करने का काम भी बहुत सुविधाजनक है।

खाद्य-सम्बन्धी उद्योग—

भोजन सम्बन्धी उद्योग में भी आमदनी की गुंजाइश है। प्रायः देखा जाता है पापड़, आचार, मुरब्बे, शरबत, केक, नानखताई, नमकीन, मिठाई आदि बनाने में कुछ स्त्रियाँ खास तौर पर कुशल होती हैं। परन्तु उनकी यह चतुराई सीमित रहती है। उनके परिवार के लोग, मित्र वर्ग और रिश्तेदार ही उसका आनन्द उठा सकते हैं। यदि उद्योग के रूप में इसे अपनाया जाये तो जहाँ इन स्त्रियों को आर्थिक लाभ होगा वहाँ समाज में स्वादिष्ट भोजन सर्वसाधारण के लिए सुलभ हो सकेगा। इसी प्रकार डेयरी, पौल्ट्री और प्लान्ट और नर्सरी का काम भी छोटे पैमाने पर भली-भाँति वे स्त्रियाँ चला सकती हैं, जिनके मकान के साथ थोड़ी बहुत जमीन हो। उन्हें सूखी हुई तरकारियों का उद्योग भी लाभप्रद हो सकता है। डिब्बों में बन्द साफ भोजन सामग्री, मेवे आदि पैक करके बेचना भी उपयोगी हो सकता है।

अन्य आवश्यक उद्योग—

खिलौने बनाने का उद्योग भारत का पुराना उद्योग है और मिट्टी, लकड़ी आदि के खिलौने अब भी काफी मात्रा में देश में बनते हैं। कपड़े के खिलौने भी आजकल बहुत लोकप्रिय हो गये हैं। कपड़े के खिलौने बनाना बहुत सरल है और यदि इस धन्धे को स्त्रियाँ अपना लें तो इसमें बहुत लाभ की गुँजाइश है।

कई एक धन्धे तो ऐसे हैं जिनको कि हमारी ग्रामीण बहिनें काफी बड़े पैमाने पर करती हैं, जैसे खिलौने बनाना, अनाज साफ करना, दूध-दही, घी-शहद का धन्धा, मोती गूँथना, रेशम के कीड़े पालना, कसीदा करना, रस्सी बाँटना, भाजी-तरकारी, फूल-फल का व्यवसाय इत्यादि, दैनिक आवश्यकता की चीजों के गत्ते के बक्स बनाना, फर्नीचर रंगना, लिफाफे तैयार करना, लेटर पैड आदि बनाना, कपड़े के बटन बनाना, जिल्दसाजी करना, नेवार बुनना ऐसे काम हैं जिनमें न तो बहुत धन की आवश्यकता है और न

परिश्रम की।

—इसी प्रकार विलास की वस्तुओं में बिन्दियाँ बनाना, गहने गूँथना, तरह-तरह के गजरे, मालाएँ, रक्षा-बन्धन, बैज आदि बनाना, सिगरेट और बीड़ी बनाना, कपड़ों पर कसीदा काढ़ना, धोतियों पर पाईपिंग लगाना, मेज-पोश साड़ी के फीते आदि बनाना, कपड़े की छपाई करना, सुन्दर रूमाल तैयार करना ऐसे काम है जिनके लिए नारियाँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

कम आमदनी वाले परिवारों का आर्थिक स्तर ऊपर उठाने के लिये सरकार ने भी स्त्रियों के लिये कुछ गृहोद्योगों की सुविधायें जुटाई है। बड़े शहरों में कई संस्थायें भी महिलाओं को इस विषय में जानकारी और सुविधायें देती हैं। बम्बई, कलकत्ते और दिल्ली जैसे बड़े नगरों में कुछ कोपरेटिव स्टोर भी खुले है। यहाँ पर अपने अवकाश के समय महिलायें अपनी-अपनी रुचि और योग्यता अनुसार काम बाँट लेती हैं यथा—अचार डालना, पापड़-बड़ी बनाना, साबुन बनाना, हाथ की चक्की से आटा, बेसन तथा मसाला पीस कर तैयार करना। ऐसी काम की चीजों की मांग और खपत भी बहुत होती है।

परन्तु यह सब तभी सम्भव है जब लोगों में सहयोग और एक-दूसरे को सहायता करने का भाव प्रबल हो। इसके लिए हर मुहल्ले, गाँव, नगर आदि में ऐसे संगठनों का निर्माण होना चाहिए जो इन सभी उद्योगों को संगठित करके काम करने वाले व्यक्तियों और तैयार माल की खपत पर विचार करें और इन उद्योगों को उन्नत, लोकप्रिय और लाभकारी बनाने में सहायता करें।

२१. सास-बहू के झगड़े

देखने-सुनने में आता है कि सास-बहू के झगड़ों के कारण अनेक घर तबाह हो जाते हैं। ब्याह से पहले जो लड़का घर भर का प्यारा और माँ के कलेजे का टुकड़ा, बहनों का दुलारा और बाप की आशा-उम्मीदों का केन्द्र-बिन्दु बना होता है, ब्याह के बाद यदि सास-बहू में न बनी और बेटे ने माँ की तरफ न ली तो वही लड़का नालायक, जोरू का गुलाम आदि विशेषणों से विभूषित कर दिया जाता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पारिवारिक कलह ने हमारे घरों की सुख शान्ति और एकता को नष्ट कर रखा है। स्त्रियों की धारणा है कि पुरुषों ने उन्हें कुचला है, पर यदि न्याय की बात कही जाय तो सच्चाई तो यह है कि स्त्रियाँ ही स्त्रियों पर अत्याचार करती हैं, उनकी प्रगति में रोड़े अट-



काती हैं, एक दूसरे की प्रशंसा और सफलता पर कुढ़ती हैं और साम, दाम, दंड द्वारा अपने अधीनस्थ नारी को नीचा दिखाने से नहीं चूकतीं। समाज कभी उभर नहीं सकता यदि परिवार में लोग एक दूसरे को सहयोग नहीं देंगे और दकियानूसी ख्यालात छोड़ कर नई पौध को पनपाने के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार नहीं करेंगे। अतएव इस बात की बहुत जरूरत है कि आज जो माँ है उसे कल सफल सास बनाने की भी चेष्टा करनी होगी।

समझदार सास—

जो माताएँ यह चाहती हैं कि उनके परिवार में हेल-मेल बना रहे और सास-बहू का नाम बदनाम न हो, उन्हें मेरी यह सलाह है कि लड़के का विवाह करने से पहले वे अपना मानसिक सन्तुलन को बहू के स्वागत के अनुकूल बना लें तथा कुछ सफल सासों के अनुभव से लाभ उठायें। मैं नीचे एक तुलनात्मक दृष्टान्त देती हूँ।

वासन्ती और फूलवन्ती नाम की दो महिलाएं देवरानी-जिठानी थीं। वासन्ती का पति आढ़त की दूकान करता था जब कि फूलवन्ती का पति वकील था। वासन्ती के तीन बेटे और एक बेटी थी—फूलवन्ती के दो बेटे और एक बेटी थी। फूलवन्ती ने अपने बेटे का विवाह जब कि लड़का एम० ए० में पढ़ता ही था एक धनाढ्य घराने में कर दिया। बेटे के ससुराल से दहेज में भी खूब आया। सास-ससुर दोनों ने सोचा हम शहरी हैं, गाँव के रिवाज कुछ नहीं करेंगे, हमारी बहू-पढ़ी लिखी है, अतएव पर्दा नहीं करायेंगे। ब्याह में जो लोग आये हुए थे उनमें से कई एक को फूलवन्ती के भाग्य पर ईर्ष्या भी बड़ी हुई। बहू का पर्दा उठा दिया गया था इस बात को लेकर भी काफी चर्चा हुई। इधर ससुर को इस बात का बड़ा चाव था कि हमारी बहू पढ़ी-लिखी सुघड़ और सुन्दर है। उनके खानदान में न तो कोई लड़की पढ़ी-लिखी थी न कोई और बहू ही शिक्षित थी। उनकी अपनी लड़की १५ वर्ष की थी पर अभी पाँचवी कक्षा में ही पढ़ती थी। उसे ब्याह-शादियों में सजवज कर जाने, गीत गाने, औरतों के से नाजनखरे करने का चाव था। न उसमें कोई गुण था न शऊर। बहू की तुलना में लड़की बहुत फूहड़ दिखाई पड़ने लगी।

वकील साहब ने दो-चार बार अपनी पत्नी को कुछ डांटा-डपटा भी कि 'तुम्हें कुछ शऊर नहीं है कि लड़की को क्या कुछ सिखाना चाहिए। उसने भी पराये घर जाना है न तो उसमें कुछ गुण है न ढंग। देखो बहू (शान्ता) को, लड़की से कुल चार वर्ष ही तो बड़ी है, उसने बी० ए० पास कर लिया है। गाने-बजाने, सीने-पिरोने सब में चतुर है। बात चीत करने में तो लड़के से भी अधिक होशियार है।'

सास व नन्द को यह बातें अच्छी नहीं लगीं। उन्हें ऐसा लगा कि बहू के आने से हमारी कद्र कम हो गई है। अपनी गलती समझ कर कुछ

तरक्की करने की अपेक्षा, उन्होंने यह सोचा कि बहू की निन्दा करके उसे ससुर की नजरों में गिराया जाये तो ठीक है। बस रात को जब खाना खाकर ससुर छत पर हुक्का पीते उस समय सास ने कान भरने शुरू किये कि 'आपको पता नहीं है, बहू बहुत चालाक है। लड़के को उसने अपने मोह में फँसा लिया है। देख लेना अब लड़के का पढ़ाई में मन नहीं लगेगा। वह कल ही मुझ से कह रहा था कि इस शुक्रवार को कालिज न जाकर सोमवार को जाऊँ तो क्या हर्जा है ? इसकी पढ़ाई-लिखाई अब सब चौपट ही समझो। हरदम बहू के कमरे में बैठा रहता है। अब तो अपनी बहन-भाइयों से भी नहीं खेलता। कहता था कि बहन को बोर्डिंग में दाखिल करवा दो, घर पर उसकी पढ़ाई नहीं होती। मैंने तो कह दिया—न लल्ला हम तो अपनी लड़की को नजरों से दूर नहीं करेंगे। बोर्डिंग में लड़कियों का चाल-चलन ठीक नहीं रहता। लड़की के घर में रहने से तेरी औरत को क्या तकलीफ है ? लो भला देखो तो सही, अब बहू के आने पर बहन को देश निकाला देने की सोची है ? अभी तो हम जीते हैं। वासन्ती की बहुओं को देखो। घर का सारा चौका-बर्तन, पिसना-कूटना करती हैं। रोटी खुद पकाती हैं। हमारे लल्ला की बहू तो नाखूनों में रंग पोत कर दिन भर कलम हाथ में पकड़े पेज काले करती रहती है। मैंने लल्ला से पूछा था कि यह क्या लिखा है ? बोला—'माँ, लेख लिखती है।' होगी पढ़ी-लिखी पर हमारी राय में तो धोबी के कपड़े भी ठीक से नहीं लिख पाती। क्योंकि इसके लिखे कपड़े कभी पूरे ही नहीं निकलते।'

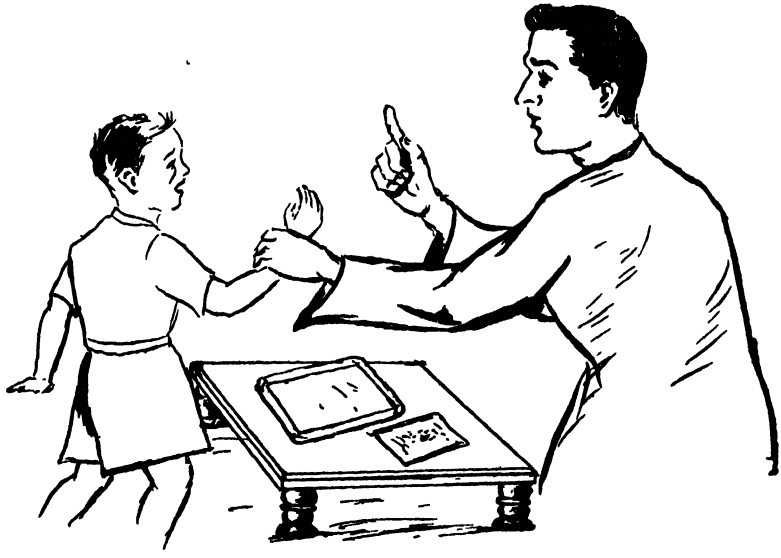
बस इसी तरह रोज-रोज कान भर-भर कर गृहस्वामी के मन में यह धारणा बिठा दी गई कि बहू निकम्मी है, चालाक है, बदमिजाज है, उसे अपनी अमीरी का घमण्ड है पर पीहर से जो जेवर आये, उनमें खोट अधिक है। पोशाक हल्की व सस्ती दी हैं। मिठाई डालडा में बनाकर दी थी। देख लेना अब घर में मेल-मिलाप नहीं रहेगा। लड़के को उसने सम्भाल लिया है। लड़के का मन फेर देगी और घर में फूट पड़ जायेगी।

धीरे-धीरे ससुर का व्यवहार भी बहू के प्रति कठोर हो गया। और दशहरे की छुट्टियों में जब लड़का घर आया तो माँ-बाप व बहन ने बहू के विरुद्ध शिकायतें जड़नी शुरू कीं। लड़का हैरान था। रात को उसने अपनी पत्नी से कैफियत तलब की। पत्नी बोली—'मेरी तो समझ में खुद ही नहीं

आता कि यह मामला क्या है'।

लड़के ने अपनी माता को भी समझाया—"अम्मा तुम भोली हो, लोगों के सिखाये में आ जाती हो। देखो चाची को, उसकी किस्मत को तो तुम सराहती हो, पर उसकी नीति क्यों नहीं अपनाती ? उसकी बहुएँ गरीब घर की हैं, पढ़ी-लिखी नहीं हैं, देखने-सुनने में भी मामूली हैं, पर चाची हमेशा उनकी बढ़ाई करती रहती है। जरा सी सेवा कोई कर दे, सराहती नहीं थकती। जो कुछ उसे कहना होता है घर के अन्दर बिठाकर प्यार से समझाती है। मजाल है जो नन्दें भावजों से बेअदबी कर जायें। उनके पीहर से सेर चीज आती है तो बाहर सवा सेर कह कर बखानती है। हमारे घर में भगवान ने सब कुछ दिया पर समझदारी के बिना सब गुड़ गोबर हो गया। तुम तो अपनी बहू का सोना, हगना-मूतना सब जाकर पड़ौस में कह आती हो। सुलोचना (बहन) ने भी तुम्हें खुश करने का अच्छा तरीका ढूंढ निकाला है। तुम्हारे कान भरती रहती है तो तुम खुश रहती हो।

मैंने एक दिन छोटे भय्या को पढ़ाई के पीछे डाँट दिया था तो तुम्हारे



पास एक-एक सौ-सौ शिकायतें लगाईं। अब क्या मैं पराया हो गया ? बहन-भाइयों को मेरा कुछ रोकना-टोकना भी बुरा लगने लगा। मैं तो अभी शादी करना चाहता नहीं था। तुम्हीं उतावली थीं। अब जब से शादी हुई है घर

में किसी के लिए चैन ही नहीं रहा। मैं तो आगे से छुट्टियों में घर नहीं आने का।"

लड़के की ये सब बातें अपने ढंग से बदल कर माँ ने ससुर और अड़ौस-पड़ौस में कहीं। इससे बहू की और भी बदनामी हुई कि जो लड़का ब्याह से पहले गऊ था अब अपनी औरत के सिखाये में आकर माँ से खूब लड़ने लगा है। इन सब बातों का परिणाम वही हुआ जो होना था। कालिज खुलने पर लड़का जब जाने लगा तो बहू को बिठा कर सास-ससुर ने खूब खरी-खोटी सुनाईं। पढ़ाई को कोसा गया। जमाने का रोना रोया गया। उसी महीने भाई की शादी थी। इसलिए बहू अपने पीहर चली गई। वहाँ कुछ दिन बाद जब उसके माँ-बाप को सब बातों का पता चला तो उन्हें अपनी इस गलती पर बड़ा पछतावा हुआ कि लड़का जब तक बसरे रोजगार नहीं था उससे अपनी लड़की की शादी करके गलती की। खैर शान्ता एम० ए० में दाखिल हो गई। ससुर ने इसमें अपनी हतक समझी कि हमसे बिना पूछे, हमारी आज्ञा लिये बिना समधी ने बहू को कालिज में दाखिल क्यों करा दिया।

उन्होंने अपने लड़के को लिखा कि बहू आगे पढ़ेगी, एम० ए० में प्रथम पास होगी और तू यदि थर्ड डिविजन में पास हुआ तो तेरी बदनामी होगी। अधिक पढ़-लिख कर बहू सिर पर चढ़ेगी। सुना है कि उसका इरादा नौकरी करने का है। फिर भला ऐसी औरत कहीं मर्द के काबू में रहती हैं? देख लेना तुझ से घर का धन्धा करवाया करेगी।

इस पर लड़के ने अपने ससुर को शान्ता की पढ़ाई बन्द करने को लिखा। पर ससुर समझदार थे, उन्होंने जमाई को लिख भेजा कि अभी आप एम० ए० पास करके विलायत बैरिस्ट्री करने जायेंगे। इसमें चार साल लग जायेंगे। शान्ता (लड़की) कालिज में दाखिल तो हो गई है, केवल मन बहलाने के लिए, परीक्षा तो शायद ही दे।

अब सास की शिकायतों की गठरी दिन-पर-दिन भारी होने लगी कि 'जब से बहू का घर में पाँव पड़ा है नुकसान-ही-नुकसान हो रहा है। वकील साहब एक बड़ा मुकद्दमा हार गये। घर में चोरी हो गई। अकाल वर्षा से फसल मारी गई। लड़की सीढ़ी पर से गिर पड़ी उसके पाँव की हड्डी टूट गई। मैं तो दो साल से बीमार ही हूँ। हमारी गैया का बछड़ा मर गया,

मकान की छत बैठ गई। वासन्ती की तीनों बहुओं की गोद भर गई है। वह गोदी में दो-दो पोते खिला रही है और इधर हमारी बहू तो पढ़-पढ़ कर बाँझ हो गई है।"

उसकी ऐसी बातें सुनकर समझदार पड़ौसिनें पीठ पीछे हँसतीं कि चाँद-सी बहू घर आई, पर इन लोगों ने कद्र न जानी। बहू-बेटे का हँसना-बोलना, पास बैठना, साथ घूमने जाना तो फूटी आँख सुहाता नहीं था और पोतों की लालसा करती है। चाची (वासन्ती) के भाग्य को देखकर ताई

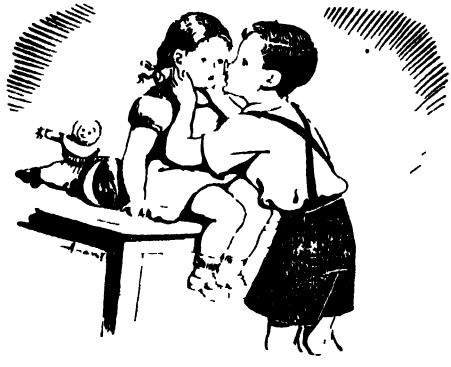


(फूलवन्ती) को हिरस तो होती है पर चाची जैसी गृहनीति में चतुर विरली ही कोई स्त्री होगी। चाची बहुओं से इतना काम लेती है, पर नरमाई से। बेटी रानी, लक्ष्मी बहू, सोना बहू, कहते दुलारते वह थकती नहीं। जब लड़कों का काम से लौटने का समय होता, बहुओं के पीछे पड़ जाती कि जाओ मुँह-हाथ धोकर कपड़े बदल कर तैयार हो जाओ। पिछवाड़े के दरवाजे से निकल कर लल्ला के सँग घूम आओ। छुट्टी वाले रोज बेटे घर पर खाना खाते हैं, तो बहुओं को सास थाल सजाकर अपने-अपने कमरे मे खाना खाने की सलाह देती है।

उसे इस बात की बड़ी समझ है कि बहुओं को यदि खुश रखूंगी तो

बेटे अपने वश में रहेंगे। बहुओं को पहनाने, उढ़ाने का और पोते-पोतियों को खिलाने-पिलाने का लाड करना वासन्ती कभी नहीं भूलती। अपनी बहुओं की कोई शिकायत उसने गृहस्वामी से कभी नहीं की। वह भली प्रकार समझती है कि इससे अपनी ही अयोग्यता प्रकट होती है। मौहल्ले की दो-चार स्त्रियों ने झगड़ा कराने के इरादे से वासन्ती के पास उसकी बहुओं की यदि कभी शिकायतें जड़ी भी तो वासन्ती ने हँसकर यह कहकर सबको चुप करा दिया "भई, मेरी बहुएँ तो हीरा हैं। अभी उम्र ही क्या है। अनुभव से सब परीक्षाएँ पास हो जायेंगी। भूल करके ही दुनिया सीखती है।"

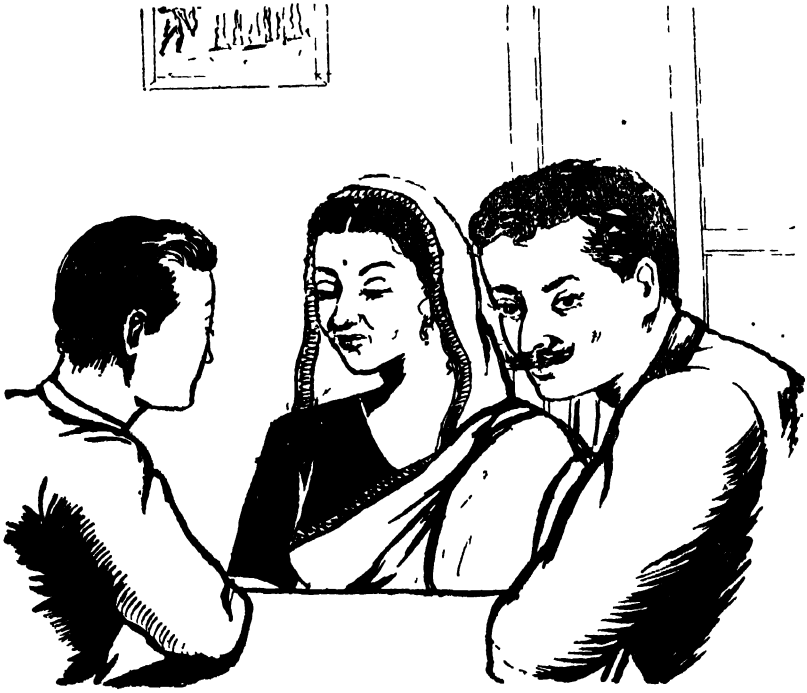
और सचमुच में आज वासन्ती के घर में बरकत, एकता और सुख-शान्ति है, बहुएँ समझदार हैं। परस्पर दुःख-सुख में हाथ बटाती हैं। उनके बच्चे भी हेल-मेल से रहते हैं। जब कि फूलवन्ती ने अपनी मूर्खता से बहू-बेटे का विश्वास खो दिया। रमेश (लड़का) पढ़ लिख गया पर कई साल उसकी नौकरी नहीं लगी। घर पर ही रहता था। बाप के संग मिलकर वकालत चलाने की कोशिश भी उसने की। पर बाप हमेशा बेटे की गलतियाँ निकाला करता। सास को यह गिला था कि बेटा ससुर से लड़-झगड़ कर बहू को विदा करा लावे और तब मैं बहू की गत बनाऊँ। पर रमेश (लड़का) एक ही बात पर अड़ा रहा कि जब मैं खुद कुछ कमाता नहीं तो परिवार का बोझा क्यों बढ़ाऊँ? मन-ही-मन वह यह बात भली प्रकार समझता था कि शान्ता (पत्नी) के आने से गृह-कलह और बढ़ेगी।



इन्हीं दिनों फूलवन्ती का दूर का एक भाँजा उसी शहर में पुलिस सब इंस्पेक्टर होकर आया। पहली तनखाह मिली तो मौसी और सुलोचना के लिए पन्द्रह-पन्द्रह रु० की एक-एक साड़ी से आया। बस फूलवन्ती की नजरों में मनोहर (भांजे) से बढ़ कर और कोई होनहार नवयुवक ही न रहा। उसकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए बहू के रोने रोया करती। कहती "बहू

की किस्मत ही खोटी है, नहीं तो भला मेरा बेटा एम० ए० पास करके क्या आज डिप्टी कमिश्नर न लगा होता ? ऐसी कुलच्छनी बहू आई कि घर की सुख-शान्ति सब नष्ट हो गई।"

रमेश ने एक दो बार माँ से कहा भी कि 'आप मनोहर के संग सुलो-



चना को घूमने-फिरने मत भेजा करें। मुझे उसकी नियत अच्छी नहीं दिखती।' पर माँ को बेटे की यह बात अच्छी नहीं लगी। सुलोचना भी खूब रोई-धोई कि भय्या बेबात नाराज रहते हैं। खुद तो कभी सिनेमा तमाशे ले ही नहीं जाते, पर अगर कोई और ले जाता है तो इन्हें नाहक को बुरा क्यों लगता है ?

फूलवन्ती को अपनी गलती व बेपरवाही का उस समय पता चला जब मनोहर की बदली वहाँ से हो गई और सुलोचना को तीन महीने का गर्भ रह गया। संयोग से उन्हीं दिनों पन्द्रह दिन की गर्मियों की छुट्टियों में शान्ता भी ससुराल आई हुई थी। घर का काम बहू पर डालकर सास हरिद्वार

नहाने चली गई। लौट कर आने पर उसे सारी गड़बड़ का पता चला, जबकि सुलोचना ने इस बात की जिद्द पकड़ी कि वह शादी मनोहर से ही करेगी। सास ने सारा दोष बहू के सिर मढ़ दिया और ससुर से बोली—"मैं तीर्थ गई हुई थी तभी पीछे से बहू ने सुलोचना को खूब आजादी दे रखी होगी। अपने मियाँ को लेकर दिन भर पड़ी रहती होगी, लड़की की निगरानी ही नहीं रखी।"

जब मनोहर को सुलोचना से शादी करने के लिए कहा गया तो वह साफ मुकर गया। हारकर दौड़-धूप करके किसी तरह गर्भपात कराया गया और लड़की का ब्याह एक गरीब तथा अधिक उम्र के व्यक्ति से कर दिया, जोकि रेलवे में सवा सौ रु० पर क्लर्क लगा था। शादी के बाद सुलोचना ने अपनी सास की ऐसी दुर्दशा की कि बेचारी को घर से निकाल दिया। अब वह अपने छोटे बेटे के पास गाँव में रहती है। इधर पति-पत्नी में अकसर लड़ाई रहती है। फूलवन्ती लड़की को दोष न देकर गरीबी को दोष देती है कि दामाद गरीब है इसीलिए लड़की के सब अरमान अधूरे रह गए। अब सुलोचना चार बच्चों की माँ है। मनोहर का आना-जाना फिर शुरू हो गया है। सुलोचना का पति सब देखता व समझता है पर करे क्या, लोक-लाज के मारे चुप है। सुलोचना का छोटा भाई माँ-बहन के सिखाये में है। भाई की इज्जत नहीं करता। रमेश और शान्ता दोनों इस समय हरदोई में स्कूलों में काम कर रहे हैं। दोनों को चार सौ रु० मिलते हैं। अब उनके दो बच्चे हैं। पर सास, ससुर नन्द व देवर अभी भी उन्हें चैन से नहीं रहने देते। सब लोगों के पास निन्दा करते हैं कि 'दोनों जन कमाते हैं—हमें कुछ नहीं देते। बेटे की कमाई हाथ पर धर कर न देखी। हमें किसी बात की कमी तो है नहीं, पर अरमान तो होते ही हैं। ऐसी चालाक बहू आई कि बेटा भी छीन लिया अब कि छोटे बेटे का ब्याह ऐसे घर करूँगी कि घर भर जायेगा। मोटर और हवेली लूँगीं दहेज में।

फूलवन्ती ने अपनी बहू के सँग क्या-क्या दुर्व्यवहार किया यह पूरा किस्सा तो एक उपन्यास है। यहाँ तो इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि फूलवन्ती ने अपनी गलती से एक अच्छी बहू और आज्ञाकारी पुत्र का विश्वास खो दिया और कुल की बरबादी और बदनामी हुई सो अलग। अपनी लड़की को ऐसी बुरी शिक्षा दी कि उसने अपना मानसिक व चारित्रिक सौन्दर्य

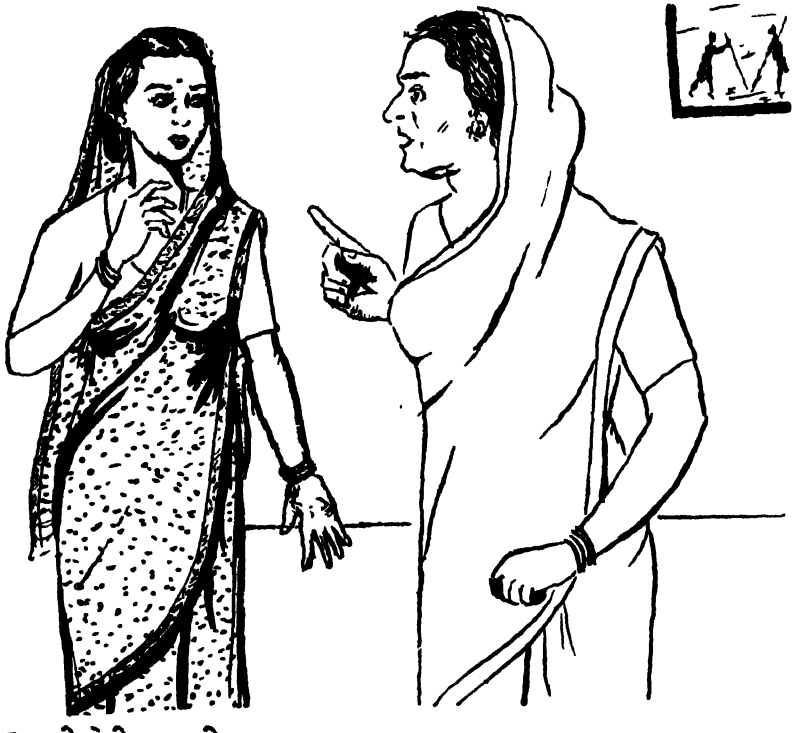
नष्ट कर दिया और अपने पति के जीवन को किरकिरा कर छोड़ा है।

पर समझदार सास वासन्ती ने कभी ऐसी गलती नहीं की। वह तो अपनी सहेलियों को हमेशा अच्छी सिखावन देती है कि—'यदि अपना मान-सम्मान बनाये रखना चाहती हो तो कान की कच्ची कभी मत बनना। इधर-उधर की सुनकर बहू के प्रति मन में मैल रखना भूल है। बहू को बेटी की तरह लाड़-दुलार करो। उसे भी गृहस्थी चलाने के तौर-तरीके सिखाओ। अनुभव तथा बड़ों के सहयोग से बहुएँ गृहकार्य में दक्ष हो जाती हैं। बहू-बेटे का प्यार व दुलार देखकर सुखी हो। छोटे बच्चों को भाई-भावज का सम्मान करने की ताकीद करो। नवविवाहित बहू-बेटे को साथ खाने-पीने, घूमने-फिरने का मौका दो। माताओं को नवदम्पति के रंगीन सपनों को सजीव बनाने में सहयोग देना चाहिए। अपने जीवन के कटु अनुभवों की प्रतिक्रिया बहू-बेटे के जीवन में मत होने दो। इसके विपरीत अपने अधूरे अरमानों को उनके जीवन में पूरे होते देखकर सन्तुष्टि अनुभव करो। बहू के पीहर वालों का सम्मानजनक ढंग से उल्लेख करो। हास-परिहास करो पर चुभता हुआ व्यंग नहीं। अपनी बहू की दूसरों से तुलना करके उसकी न्यूनताओं की ओर संकेत मत करो। अगर बेटा बहू के लिए इन्तजार कर रहा है तो उसे काम में अटका कर जाने में देरी मत करवाओ। बहू के दोषों व भूलों की चर्चा दूसरों से मत करो। अपने बेटे की नजरों में बहू को कभी मत गिराओ। मन में मैल रखकर ऊपर से मीठी-मीठी बातें करने की नीति छोड़ दो। क्योंकि छल-कपट का व्यवहार अधिक दिन टिकता नहीं है। बेटे के कसूर करने पर बहू को खरी-खोटी मत सुनाओ। दूसरों के सौभाग्य की चर्चा करके अपने दुर्भाग्य पर शोक मत प्रकट करो।'

इसमें सन्देह नहीं कि जो माताएँ वासन्ती की सलाह मान कर चलेंगी। उनकी बहू-बेटे के सँग अच्छी बनी रहेगी।

संयुक्त परिवार में सबसे बड़ा झगड़ा तो सास-बहू का है। यह बात नहीं कि हमेशा सास ही बुरी होती है। बाज-बाज बहुएँ भी अधिकार प्राप्त करने और अपने स्वार्थ के लिए सास की बड़ी दुर्दशा करती हैं। ऐसी स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब कि सास आर्थिक रूप से पुत्र पर निर्भर हो। यदि सास ने अपने राज्य-काल में जब कि ससुर जीते थे और लड़का

अभी पढ़ता ही था बहू को सताया होगा, तो अपने राज्य में कई बहुएँ सास से बदला लेने में कसर नहीं उठा छोड़तीं।



आज की बेटी कल की बहू—

हमारे देश में कन्याओं को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। गाना-बजाना, सीना-पिरोना और खाने-पकाने की भी शिक्षा दी जाती है। परन्तु एक बात की भूल माताएँ प्रायः कर जाती हैं, लाड़-चाव के मारे वे अपनी बेटी के बराबर किसी को समझतीं ही नहीं। घर में भावज के संग कैसा व्यवहार करना चाहिए, बड़े-बूढ़ों का सम्मान, छोटे बच्चों के संग प्रेम, धीरज के साथ पेश आना, अड़ौस-पड़ौस के संग मेल-मिलाप से कैसे रहना चाहिए इन जरूरी बातों की कोई विशेष शिक्षा लड़कियों को घरों में नहीं दी जाती। इस विषय में बहुत हद तक माताएँ ही दोषी हैं। वे क्या-क्या भूलें करती हैं, उसका उल्लेख मैंने आगे एक लेख में किया है। माँ से बढ़ावा पाकर लड़की भावज को सताती है। उसके पीछे सी० आई० डी०

सी लगी रहती है। भाभी किस को पत्र लिख रही है ? भाई ने आज भाभी को क्या लाकर दिया ? भाभी से कौन मिलने आया ? भाभी भाई से आज क्या कह रही थी, आदि बातों की खबर नन्दरानी माँ को नमक-मिर्च लगाकर देती हैं।

अपनी लाड़ली बेटी से यह चुगल-चपटी सुनकर सास गरजकर कहती है—"अच्छा, यह बात है ! आने दे लल्ला के बाप को तेरे भाई को डाँट न पिलवाई तो कहना। भिखमंगे घर की लड़की, और मिजाज इतना ! हमारे भोले लड़के ने अपने ससुराल वालों को बड़ा सिर चढ़ाया हुआ है। और उस कलूटी मुँह झौंसी बहू को तो मैं अभी ठीक करती हूँ।"



घर में महाभारत मचवा कर आग लगाने वाली जमालो (नन्द) एक ओर खड़ी तमाशा देखती है। भाई का अदब करना इसे नहीं आता। पिता की तो लाड़ली ठहरी। तुनकमजाजी इतनी कि अड़ौस-पड़ौस कुछ कह दें तो माँ महाभारत मचा देती है। अब जब इस प्रकार की बिगड़ी हुई लड़की ब्याह कर ससुराल जाने लगती है तो उनकी माता जी उन्हें पहले ही पक्की कर देती हैं। 'बेटी, यह पकड़ अपनी चाबी, अपनी चीजें सँभाल कर रखना। साड़ी कपड़े सब रोज बदल-बदलकर पहनती रहियो। मैंने नकद रुपया भी शेयर के रूप में दिया है। तेरा पैसा जमा रहेगा। जरा सावधानी से रहना ससुराल में। तेरी तीन नन्दें हैं। कहीं ऐसा न हो कि तेरी चीजों पर चील-झपटा मारें। ज्यादह मुँह मत लगाना उन्हें। लड़के (जमाई) को रिझाये रखियो। वह तेरी मुट्ठी में रहेगा तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता तेरा।'

बस इस प्रकार सिखा-पढ़ाकर भेजी हुई लड़कियाँ ससुराल में जाकर किसी को चैन क्यों लेने देंगी ? जब वह अपने पति को बहन का लाड़ करते या अपनी माँ से दुलार दिखाते देखेंगी तो अपने कमरे से ऊपर जाकर चद्दर

तानकर लेट जायँगी। जब पति महोदय कमरे में आयँगे तो मुँह लपेटे पड़ी रहेंगी। पति हैरान होकर कहता है कि अभी तो तुम अच्छी भली खाना खाकर आई हो। उस समय तो सिर दर्द नहीं था। अच्छा लाओ सिर दबा दूँ। गोली खा लो। अमृतांजन मल दूँ ? यह बातें सुनते ही बहूरानी का पारा चढ़ जाता है—"हाँ हाँ, तुम्हें मेरा दुख-दर्द तो कुछलगता ही नहीं। मेरे पास बैठने की कहाँ फुरसत है। ग्यारह बज गये अब सोने की फुरसत मिली है ? हटो छोड़ो मेरी चादर। मुझे तुम्हारे यह झूठे चोंचले अच्छे नहीं लगते। तुम्हारे यहाँ सब कोई मुझ पर हँसते हैं, मेरा मजाक बनाते है। मुझे तो मेरे पीहर भिजवा दो।" पत्नी के ये शब्द सुनकर पति तो घबड़ा जाता है। उसकी समझ में नहीं आता कि किसका पक्ष ले किस का नहीं।

सास-बहुओं के इस झगड़े में पति की जिन्दगी बरबाद हो जाती है। चाहे सास सताई जाय चाहे बहू दोनों ही बातें बुरी हैं। पूजनीय सासों से हाथ जोड़कर मेरा यह कहना है कि वह जिस तरह का व्यवहार अपनी लड़की से खुद करती हैं और चाहती हैं कि उनकी सास भी करे, उसी तरह का व्यवहार वे खुद अपनी बहू से करें। सोचिये जो बहू घर में आती है, भविष्य में वह आपका स्थान लेने वाली है। आपके पोते-पोतियों को माँ बनेगी, आपकी बेल बढ़ायेगी, आपके पुत्र की सेवा करेगी। ऐसे महत्वपूर्ण प्राणी का उचित स्वागत होना चाहिए। यदि आपकी सास ने आपके साथ दुर्व्यवहार किया है, तो उसका बदला अपनी बहू से लेना क्या उचित है ? आप अनुभवी हैं, गृहिणी और मातृत्व-पद से गौरवान्वित हैं, बेटे की माँ हैं, तभी आपको आज यह दिन देखना नसीब हुआ कि पराये घर की बेटी आपकी सेवा करने, हाथ बटाने, आपके घर आई है। आप उस लक्ष्मी का ठीक से स्वागत करें। उसे अपने प्यार और दुलार से सराबोर कर दें। यौवन में प्रत्येक प्राणी प्यार का भूखा होता है। आपकी बहू आपका प्यार पाकर गद्‌गद् हो जायगी और आपका आशीर्वाद पाने की चेष्टा करेगी।

बहू के अनबन होने के कारण—

१. यदि सास लेने-देने के पीछे उसके पीहर को जली-कटी सुनाती है।

२. दहेज में मिली चीजों की आलोचना करती तथा परखती है।

३. बरातियों के आदर-भाव में जो कमी रह गई है उसके ताने देती है। वहू को दहेज या ससुराल से मिली हुई चीजों को हथियाने की कोशिश

करती है।

४. नन्द और देवर को बहू के साथ दुर्व्यवहार करने या उसकी आलोचना करने को उकसाती है।



५. पास-पड़ौस तथा ससुर और लड़के से बहू की निन्दा करती है।

६. बहू और बेटे का हँसना-बोलना, घूमना-फिरना और हास-परिहास उसे फूटी आँखों न सुहाता हो।

७. इस कोशिश में रहती है कि बहू-बेटे को साथ-साथ घूमने-फिरने, मनोरंजन में शरीक होने और खाने-पीने का मौका न दिया जाये।

८. लड़का जब बहू का लाड़-दुलार करे तो सास बुरा माने।

९. घुमा-फिरा कर बहू की आलोचना करे या उस की व्यर्थ में निन्दा करे।

१०. बहू के गुणों पर पर्दा डालकर बुराइयों की ओर परिजनों और अड़ौस-पड़ौस का ध्यान आकृष्ट करे।

११. अपने लड़के, परिजनों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए तबियत खराब या सिर-दर्द का बहाना करके पड़ी रहे और सारा काम बहू पर डाल दे।

१२. ऊपर से तो मीठी बातें करे पर पीठ-पीछे बहू का बिगाड़ करे।

१३. बेचारी नादान, नासमझ कम उम्र की बहुओं को अपने सुझाव और दबाव में रखने के प्रयत्न में डाँट-डपट और ताड़ना करे।

१४. सुनहले और मधुर दिनों में बहुओं के मन में जो सुखद सपने जागे हों उन्हें अपनी कठोरता, और उपेक्षा से नष्ट करती रहे।

१५. जो अभाव अपने यौवनकाल में बना रहा हो उसके लिए बहू पर कुढ़े।

१६. ससुर या परिजन यदि बहू के गुणों की प्रशंसा करें तो चिढ़े।

१७. गृहस्थी के सब अधिकार अपने हाथ में रखना चाहे।

अच्छी बहुएँ तभी बन सकती हैं जब कि माताएँ अपनी बेटियों को अच्छी बनायेंगी। जब अपनी बेटियों को आप ही लाड़ से बिगाड़ देंगी तो वह आगे जाकर कर्तव्यपरायण बहू, माँ और गृहिणी कैसे बन सकती है। मैं आगे सास और बहू का प्रतिनिधित्व करने वाली दो महिलाओं के अनुभव देती हूँ आशा है कि समझदार बहनों को उससे अपना कर्तव्य समझने में मदद मिलेगी। मेरी राय में चाहे सास सताई जाये चाहे बहू दोनों ही बातें परिवार के लिए अशान्तिकर हैं।

बड़ों को चाहिए छोटों की भूलों को क्षमा करें और छोटे-बड़ों की मान-मर्यादा बनाये रखें तभी परस्पर हेल-मेल और प्यार बना रह सकता है। बहू अपने नये खून के जोश में पति के प्यार के बल पर ऐंठती है, जब कि सास को अपने गृहिणी पद और बेटे की पूजनीय माँ होने का गुमान है। वह देखना चाहती है कि 'देखें बेटा अब जोरू का कहना मानता है कि माँ के पद को मान देता है'। इसी कशमकश में लड़के की बुरी दशा हो जाती है। वह उस दिन को रोता है जब कि उसका विवाह हुआ था। न तो वह पत्नी को कुछ कहना चाहता है न माँ को कहने का साहस कर सकता है। बस अपने सिर को पीटकर दुखी होता है। बहू कहती है कि 'सब दुखों का मूल है सम्मिलित परिवार में रहना। अलग हो जाओ तो सब मुसीबतों से पिण्ड छूट जाये।'

उसके दिमाग में पति की यह बात नहीं आती कि 'अलग कैसे हो जाऊँ, माँ ने पाल-पोस कर इतना बड़ा किया। ये नन्हे-नन्हे बहन-भाई मेरा ही मुँह निहारते हैं। इनका और कौन सहारा है? साथ रहने में हमें और इन्हें दोनों को लाभ है। दो घर का खाने का खर्चा कहाँ से आयेगा?

इधर माँ कहती है—'यह पढ़ी-लिखी, सयानी लड़कियाँ घर में जब ब्याही आती हैं तो घर तीन-तेरह करके धर देती हैं ?' माँ को कौन समझाये कि घर में दासी नहीं अपितु जीवन-संगिनी चाहिए। जो कि पढ़ी-लिखी हो, जमानें के साथ कदम धर के चल सके।

इन सब मुसीबतों से तभी छुटकारा हो सकता है जबकि माताएँ अपनी बेटियों को बहू, पत्नी, गृहिणी और माँ के कर्तव्यों को पालन करने की शिक्षा देंगी।

हमारी देश की संस्कृति आदर्श प्रधान होने के कारण गृहस्थ-जीवन में त्याग, सेवा और सहनशक्ति पारिवारिक जीवन की आधार शिला बनी हुई है। जिन परिवारों में सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली नहीं है, वहाँ पर भी कुटुम्ब का जो सामाजिक जीवन और परस्पर जिम्मेदारियाँ हैं उनसे बचा नहीं जा सकता। जरूरत तो इस बात की है सास और बहू दोनों सहयोग और सहन-शीलता से पारिवारिक सुख-शान्ति को बनाये रखें और साथ ही व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के महत्व को भी न भुलायें। सास का यह आशा करना कि जैसी मेरी दिनचर्या है या जिन बातों में मेरी दिलचस्पी है, केवल वही बहू की भी हों,भूल है। इसी प्रकार की अनाधिकार चेष्टा से बहू की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है, परिणाम स्वरूप गृह-कलह होती है। जो माताएँ जमाने के साथ चलना जानती हैं, वे इन गढ़ों से बच निकलने में सफल होती हैं।

२२. अपना-अपना दृष्टिकोण

सास और बहू के झगड़ों के लिए कौन दोषी है यह कहना तो कठिन है, क्योंकि देखने में तो यह आता है कि बलवान ही दुर्बल को दबाता है। यदि सास के हाथ में घर की बागडोर और थैली है तो वह अपनी इच्छा और आदर्श के अनुकूल बहू को चलाना चाहेगी, पर यदि बहू गृहस्वामिनी है और सास बेटे की कमाई पर निर्भर है तो बहू अपना दबदबा बनाये रखना चाहेगी। ऐसे भी सौभाग्यशाली विरले परिवार हैं जहाँ सास-बहू मेल-मिलाप और परस्पर सहयोग से रहती हैं। यदि बहू, माता के प्रेमपूर्ण त्याग का महत्व तथा मातृत्व पद के गौरव को समझती और आयु को मान देती है तो सास के प्रति कभी अन्याय हो ही नहीं सकता। कई सासें अपनी बहुओं से इसलिए रुष्ट रहती हैं कि जिस तरह की पाबन्दियाँ उन्होंने जब कि वे बहू थीं सिर झुका कर स्वीकार की थीं, आजकल की बहुएँ नहीं करती हैं। उन्होंने सास के कटुवचन, नन्द की धाँधली, देवर के अपशब्द सब चुपचाप सहे, घर से बाहर बिना इजाजत के पाँव नहीं रखा, सास को ही सर्वेसर्वा माना। उनकी



राय में—आजकल की बहुओं में न तो शर्म है, न सहनशक्ति। पति के साथ घूमने-फिरने का शौक है, दुनिया भर के उनके नखरों का ही अन्त नहीं है। इनसे भला कैसे निर्वाह हो ? हमने भी बच्चे पाले हैं, पर इनकी तरह उन्हें पाबन्दियों से नहीं जकड़ा। 'बच्चा प्यार से बिगड़ जायेगा, उसकी जिद्द पूरी करने से वह सिर पर चढ़ जायेगा, नानी-दादी बच्चों को बिगाड़ कर रख देती हैं' यह बात तो सासों के लिए असहनीय हो जाती हैं। वे अपने को अनुभवी माताएँ समझती हैं। इसलिए बच्चों के कारण भी कभी-कभी बहू-बेटे के सँग माँ की कहासुनी हो जाती है।

मैं नीचे दो बहनों के विचार लिखती हूँ एक ने सास की पैरवी की है और दूसरे ने बहू की वकालत।

सास का दृष्टिकोण—

'आजकल जन-सामान्य के साथ-ही-साथ समाचार पत्रों में भी बहुओं के प्रति सासों के अत्याचारों की चर्चा बहुत सुनाई पड़ती है। निस्सन्देह ही निरपराध बहुओं के प्रति सासों का अत्याचार अत्यन्त ही घृणास्पद एवं गर्हित है। छोटे-बड़े, ऊँच-नीच सभी वर्गों में इस प्रश्न ने एक विषम समस्या का रूप धारण कर लिया है, एवं इनके समूल नाश के लिए सभी प्रयत्नशील नजर आते हैं। लेकिन समाज के इस एकतरफा विचार का मैं प्रबल विरोध करती हूँ। बात जरा समझाकर कहूँ। बहुओं के प्रति सासों की यातनाएँ ही हम लोगों के लिए अत्यन्त कष्टदायक हो जाती हैं, किन्तु क्या आप इस बात से इनकार करेंगे कि घर-घर में ऐसी बहुत-सी बहुएँ हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए सुखी संयुक्त-परिवार में फूट डालकर उन्हें अलग कर दिया, दुःखी बना दिया है। उन्होंने अनेक स्नेही पुत्रों को उनकी हिताकांक्षिणी, गर्भधारणी माताओं से अलग कर दिया है। आज जो लोग सासों की बुराई करने में कुछ भी कसर उठा नहीं रखते, सच पूछा जाय तो वे गलती पर हैं। उन्हें कभी बहुओं की बुराई करते नहीं देखा गया है। उनका यह एकांकी दृष्टिकोण किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता, ताली दोनों हाथों से ही बजती है, एक से नहीं।

आजकल हम देखते हैं कि स्नेहमयी सहधर्मिणी के स्थान पर शृंगार-प्रेमी, विलासिनी एवं फैशन की गुलाम स्त्रियाँ घर-घर में अपना अधिकार स्थापित करती जा रही हैं। उन सहोदर भाइयों को, जो एक ही, माँ की गोद में पले हैं और बचपन में एक साथ खेले हैं, आज एक ही घर में स्थान नहीं मिल पा रहा है। केवल अपनी पत्नियों के कारण ही उन्हें अलग-अलग घरों में रहना पड़ रहा है। संयुक्त-परिवार-प्रथा में बहुत से दोष होने पर भी सामाजिक जीवन की नीव दृढ़ रखने के पक्ष में उसकी उपयोगिता से शायद ही कोई इनकार करे। लेकिन आज की नये युग की फैशनपरस्त एवं विलासिनी बहुओं के प्रयत्नों से, उनके आचार-व्यवहार से कितने ही सुखी संयुक्त परिवार विभक्त एवं नष्ट हो गये हैं।

जो दो भाई सदा से साथ खेले-कूदे, पढ़े-लिखे, जिन्होंने साथ-साथ

जीवन के अभी तक के सुख-दुःख देखे, उन्हीं में एक भाई को सुख से रहते, जीवन के सभी सुखों का उपभोग करते एवं दूसरे को गरीबी की चक्की में पिसते देखकर किस सहृदय का हृदय करुणा से नहीं भर आयेगा। सच पूछा जाय तो इसके मूल में केवल 'पत्नी' ही है। आजकल हर जगह स्व-तन्त्रता, स्त्री-पुरुष के समान अधिकार, एवं नारियों का देश-प्रेम तथा देश के लिए आत्मत्याग इत्यादि बातें प्रायः ही सुनाई पड़ती हैं। किन्तु हमें तब बहुत दुःख होता है कि जब हम देखती हैं कि वे बहनें जो विवाह से पूर्व उपर्युक्त बातों की तारीफ करते, उनके पक्ष में भाषण देते एवं देश के लिए आत्मत्याग का प्रचार करते नहीं अघाती थीं वही जब विवाहित अवस्था में 'बहू' बनकर गार्हस्थ्य संसार में प्रवेश करती हैं तब अपने पति के सहोदर भाई-बहनों के लिए आत्मत्याग करने की बात भुलाकर, उन लोगों को पैतृक गृह एवं स्नेहमयी-माता की गोद से हटाने की चेष्टा करने में प्रयत्न-शील हो जाती हैं। जो बाद में परिवार रूपी छोटे से घेरे के अन्दर ही आत्मत्याग नहीं कर सकतीं, वे ही देश-प्रेमी एवं देश के लिए आत्मत्याग की बात किया करती हैं, यह कितनी हास्यजनक स्थिति है ? माता जब देखती है कि 'बहू' परिवार में आकर उसके स्नेह के पात्र बेटे को उससे अलग कर दे रही है, उसकी स्वर्ग-सी सुन्दर गृहस्थी में आग लगाये दे रही है, तब वह कभी-कभी 'बहू' के प्रति कटु-व्यवहार भी कर बैठती है। स्नेहान्ध माताओं को नम्र एवं शिष्ट व्यवहार के लिए सभी लोग उपदेश देने लग जाते हैं पर उन बहुओं के स्वार्थी आचरण एवं व्यवहार की ओर कोई इंगित भी नहीं करता। जो युवतियाँ कुछ समय पहले देश के लिए आत्म-त्याग की बात कहकर सभा-समितियों में वाह-वाही लूटा करती थीं, वे ही 'बहू' रूप में परिवार में प्रवेश करके सामाजिक जीवन की बुनियाद संयुक्त-परिवार-प्रथा को तोड़ कर श्मशान सदृश दृश्य का आयोजन करती हैं।

आज की युवती कल की बहू एवं भविष्य की सास है, अतएव बहुओं को दायित्व सासों से कई गुना अधिक हैं। आज की बहुएँ अगर अपने व्यव-हार के सम्बन्ध में सतर्क हो जायँ तो भविष्य में सासों के अत्याचार की बात फिर सुनने को भी नहीं मिलेगी। बहनें जितनी देश के लिए त्याग की बात किया करती हैं, उनसे यह विषय सोचने के पहले मैं तो यही कहूँगी कि उससे कई गुना अच्छा यह होगा कि परिवार में बहू बनकर प्रवेश करके

सामान्य परिवार के साथ आत्मोत्सर्ग की चरम मात्रा दिखायें।'

बहू का दृष्टिकोण—

'सास केवल सास ही नहीं होती, वह माँ भी है। सासें यह भूल जाती हैं कि कभी मैं भी बहू थी। तब मुझे कठोर यातना एवं कड़े शासन के अन्दर रहना पड़ता था तो कितना दुःख होता था। कभी-कभी मैं भी सास से झगड़ पड़ा करती थी, नन्द को भला-बुरा कह दिया करती थी, देवर को झिड़क दिया करती थी आदि बातें उसके सास बनते ही समाप्त हो जाती हैं।

बहू चरणों की धूल बन कर रहे, सासों को इतने से ही सन्तोष नहीं होता। वे यहाँ तक चाहती हैं कि बहू मेरी ही नहीं मेरी छोटी बच्ची और बच्चों तक की दासी बनी रहे, मेरे बच्चे चाहे जितना अत्याचार क्यों न करें उसे चूं तक नहीं करना चाहिए।

बहू १५ या १६ साल की ही क्यों न हो उसे सास की बातें बर्दाश्त करनी पड़ेंगी। उसकी लड़की या लड़का बहू से उम्र में चाहे ६-७ वर्ष बड़े ही क्यों न हों बहू के सामने बच्चे हैं। उन्हें कुछ कहने का बहू को क्या अधिकार? और जो लड़की या लड़का उस बहू से उम्र में छोटे पड़ते हैं उन सबों का तो कहना ही क्या है। अब देखिये जो उम्र में बड़े हैं उनकी भी



डाँट-डपट उस बहू को सुननी पड़ती है और जो छोटे हैं उनकी तो बात ही न्यारी है। छोटे बच्चों की इच्छा का जरा भी विरोध अगर बहू करती है तो वे डण्डा, ढेला आदि खींचकर मार देते हैं। इस पर सास हँसती है और उस बच्चे को शाबासी देती है।

वही सास जब अपनी बेटी को उसकी ससुराल भेजती है और कुछ दिन बाद वह बेटी पत्र द्वारा या लौट कर आने पर अपनी माँ से कहती है कि मुझे मेरी सास बहुत दुःख देती है, तब वह लड़की की सास को गाली देने लगती है, चार औरतों में बैठ कर उसकी शिकायत करती है, पत्र द्वारा लड़की की सास को अपमानित करती है और अपनी लड़की को कभी नहीं भेजूंगी कह कर धमकी तक देती है।

किन्तु अपने स्वभाव को नहीं बदलती। वह यह नही समझती कि इसी प्रकार का अत्याचार मैं भी किसी की लाड़ली बेटी पर करती हूँ।

सासें यह भूल जाती हैं कि जब मैं जवान थी तब किस तरह जीवन व्यतीत करती थी पर बहू के अरमानों की वह उपेक्षा करती है।

सास-बहू के झगड़े में केवल सास और बहू ही नहीं हैं इसके अन्दर अभिनय करने वाले, नन्द, देवर, देवरानी, जेठानी, ससुर जी और नन्हें-नन्हें बच्चे भी हैं। कुछ सासें ऐसी भी हैं जिनको कई बहुएँ हैं। वे सासें क्या करती हैं कि उनमें से दो बहुओं को अधिक चाहेंगी, उनका बहुत पक्षपात करेंगी। ऐसी हालत में जो और बहुएँ हैं उनका ईर्ष्या करना स्वाभाविक ही है। इससे आखिर में यहाँ तक नौबत आ जाती है कि बँटवारा हो जाता है। सास अपनी बेटी को सीख देती है कि तुम बहू का कहना मत करना, यदि वह तुझे कुछ कहे, तुम मुझ से कहना, मैं उसे ठीक करूँगी। देवर माँ के कहने से हमेशा सिर पर चढ़ा रहता है। भोजन मिलने में जरा भी देर हुई कि झट स्कूल भाग जायगा। अब माँ आफत मचा देगी—"लड़का बिना खाये स्कूल चला गया, चुड़ैल बैठी रहती है, लड़कों को समय पर खाना बना कर नहीं देती, अब तू अपना पेट भर ले"—आदि बातें कह कर हल्ला मचायेगी।

यदि इस पर बहू कह देगी कि "क्या करूँ अम्मा, बैठी थोड़े ही रहती हूँ, काम ही तो करती थी, भोजन में पाँच ही मिनट की देर थी"।

अब इतना कहना ही उसके लिए घोर अपराध हो जाता है और सास बिगड़ कर कहती है—"चुड़ैल जा यहाँ से, जहाँ काम न हो वहाँ चली जा, मेरे घर में रहेगी तो काम ही करना पड़ेगा, लड़के-लड़कियों की डाँट सहनी पड़ेगी, चली जा अपने बाप के घर वहीं बैठे-बैठे खाना मिलेगा, बड़ी धन्ना सेठ की बेटी बनी है"।

देहातों में कभी-कभी तो सास बहू को बड़ी मार मारती है। पति-देव से कह कर भी माँ डँटवाती और मरवाती है। सास की शिकायत पर देहातों के बहुत से ससुर भी बहू को डण्डे से बड़ी मार मारते हैं। बेटा संकोच के मारे अपने बाप को कुछ नहीं कहता है यह हाल है। हमारे निम्न मध्यम वर्ग की बहुओं का।'

यह तो हुई कटु आलोचना या सीरियस वकालत, अब जरा एक

परिहास प्रिय बहू रानी का दृष्टिकोण भी समझने की चेष्टा करें। इस बहन ने व्यंग मिश्रित परिहास में अपनी नन्दरानी याने सास की मंत्राणी और सी. आई. डी. को प्रसन्न करने का एक अनोखा तरीका बताया है। इस में कोई सन्देह नहीं कि यदि नन्दरानी आप से प्रसन्न हो जायें तो फिर ससुराल में आप का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। खुशामद से तो भगवान भी प्रसन्न हो जाते हैं फिर नन्दरानी तो मानवी ठहरी। यदि सास समझदार है तो इस खुशामद को झट रोक देगी, पर नासमझ सास और लाड़ से बिगड़ी हुई नन्द इसमें अपनी शान समझेगी और आप को एक समझदार विनम्र बहू पाकर अपनी अहंभावना और अधिकार प्रियता की सन्तुष्टि अनुभव करेंगी।

'तीन साल के करीब हुए जब मैं अपनी भाभी के साथ उनकी एक मारवाड़िन सहेली के घर गई थी। भाभी को नमस्ते करने के बाद उसने मेरे पैर छूने की कोशिश की। मैं पीछे हट गई। मेरी भाभी बोलीं—"बहन जी! यह क्या करती हो यह तो तुम से कई साल छोटी है।"

मारवाड़िन बड़ी हँसमुख थी। पीढ़े पर बैठते हुए बोली—"अरे बहन जी, छोटी है तो क्या हुआ नन्द तो है 'साँप सास कै जायो कै छोटो कै बडो ?"

"ओहो!! तो आप मेरी तुलना साँप के जाये से कर रही हैं!" मैंने भी हँसकर कहा। अप्रतिभ हुए बिना ही उन्होंने कहा—

"मेरा मतलब है जो साँप का या सास का जाया हो वह छोटा हो या बड़ा समान रूप से वन्दनीय होता है।"

"छिपा अर्थ यह निकलता है कि दोनों समान रूप से डसते हैं, क्यों भाभी ?" मैंने हँसकर पूछा। इस पर हम तीनों खूब दिल खोलकर हँसीं।

मारवाड़िन भाभी ने तीन साल पहले जो कहावत कही थी आज उसका असली अर्थ समझ में आ सका है जब कि खुद मुझे इन साँप के (क्षमा कीजिएगा) सास के जायों से व्यवहार करने का मौका मिला है। यहाँ पर अपनी बीती सुना कर बहनों का समय खराब करने का मेरा मन्तव्य कदापि नहीं है मैं तो केवल कुछ ऐसी काम की बातें बताऊँगी जिन से सास के जायों के सम्पर्क में आने वाली बहनें कुछ लाभ उठा सकें।

सास के प्रधान जाये (मेरा मतलब आपके पति से है) को छोड़

दीजिए क्योंकि वह सास का कम और आपका अधिक बन चुके हैं बाकी रहे देवर-जेठ तथा छोटी-बड़ी नन्दें ! सम्भव तो यही है कि आपका जेठ अपनी गृहस्थी लेकर अलग बस गया होगा। अगर ऐसा नहीं भी है तो भी आप तो हमेशा उनमें और अपने में कपड़े की दीवार ताने रहती हैं (मेरा मतलब घूँघट से है) इस लिए उधर से 'काटना' या 'डसना' असम्भव-सा ही है या यों कह लीजिए कि शंका कम ही है। अब आती हैं बड़ी नन्दें जिनके ज्यादा से ज्यादा ससुराल चले जाने की सम्भावना है कभी कभार आई भी तो अधिक सम्भावना यही है कि वह आपको काटने या डसने का प्रयत्न कम ही करेंगी क्योंकि वह खुद 'सास के जायों' से पीड़ित हैं और दुःखी को दुःखी से सदा प्यार हो सकता है। रहे देवर सो वे बेचारे तो नाश्ता करके चले गये पढ़ने या किसी और काम पर, शाम को कहीं खेलने चले गये रात को घर तब आये जब उन्हें नींद सता रही थी। कभी आप से उनकी भेंट हो, ज्यादा से ज्यादा एकाध मजाक कर देंगे। अब सास का एकमात्र जाया, जो रह जाता है वह है आपकी छोटी नन्द और उसकी तुलना आप निर्भय हो कर उस 'साँप के जाये' से कर सकती हैं जो यदि काट ले तो उसका कोई इलाज नहीं। देखिये ! यह तुलना कहीं उनके या उनकी माँ के या उनके भाई के सामने निर्भय होकर न कर बैठियेगा नहीं तो···? परिणाम आप शायद जानती ही होंगी। हाँ, अपने दिल के अन्दर यह तुलना आप सौ बार कर सकती हैं।

क्या आप चाहती हैं कि आप एक सम्मिलित आदर्श परिवार की सदस्या हों ? आप के परिवार में हमेशा सुख और शान्ति बनी रहे ?—तो आपको सिर्फ एक काम करना होगा वह यह कि आप हर सम्भव तरीके से अपनी इस अतिप्रिय, सुकुमारी, सुशील नन्द फूलरानी को खुश रक्खें जिससे कि कभी क्रुद्ध होकर वह आपको डसने का ख्याल ही न करे। अगर कहीं उन्होंने डस लिया तो समझ लीजिये दुनिया में प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जायेगा। (आप मरे जग परलै होई)। जरूरी नहीं कि आपकी नन्द सुकुमारी हो, सुशील हो और आप को प्रिय ही हो। वह लम्बी, तगड़ी, काली कलूटी, पहलवानों के से हाथ-पाँवों वाली, मुँहफट, राक्षसी का लघु संस्करण भी हो सकती है। परन्तु आप को हमेशा उसे सुकुमारी, सुशीला, कोमलांगी तथा अपनी प्रियतमा ही समझना चाहिए। साँप के जायों को खुश करने के

लिए लोगबाग कई ब्रत करते हैं, बाँबी पर श्रद्धा से फूल चढ़ाते हैं। आपको भी ऐसा सब करना ही पड़ेगा। आपको अपनी छोटी नन्द रानी से हमेशा इस तरह व्यवहार करना चाहिए कि सब समझें जैसे आपके हृदय में नन्द-प्रेम का अथाह सागर लहरा रहा है और आप अपने व्यवहार से सिर्फ उसका छोटा-सा प्रदर्शन ही कर पाती हैं और उस व्यवहार के कुछ ढंग मैं यहाँ आपको बताना आपना कर्तव्य समझती हूँ।

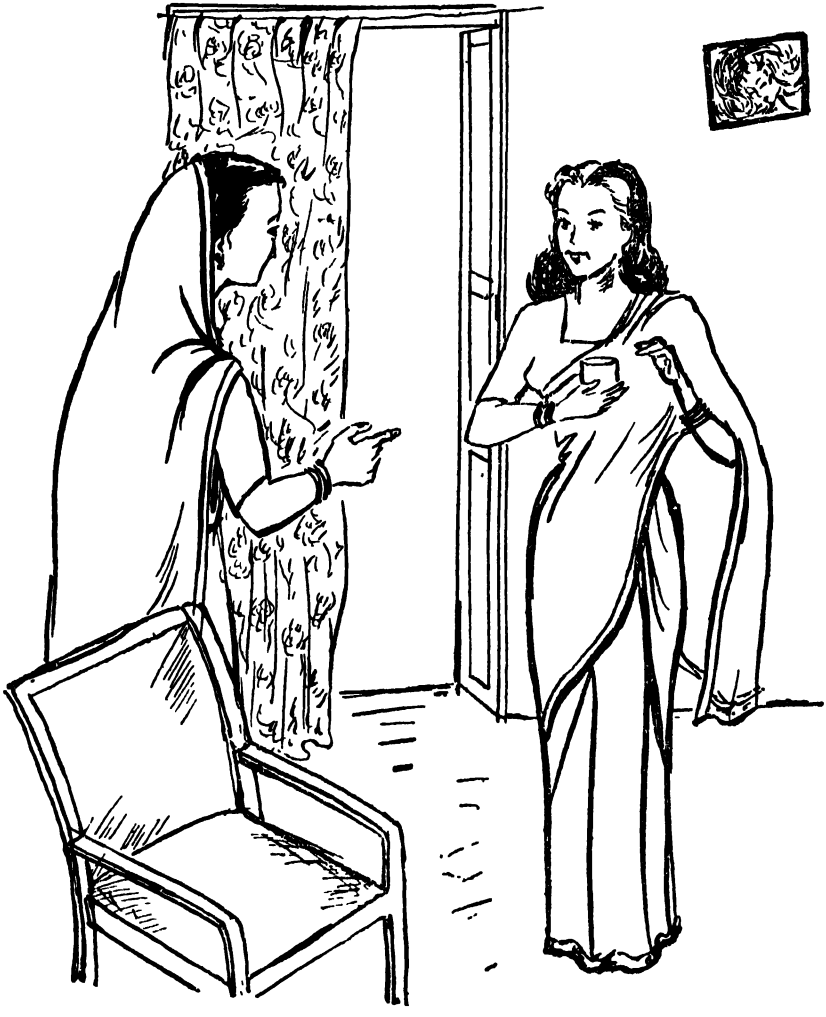
आप यह कभी न ख्याल कीजिए कि आप की नन्द को रसोई, सिलाई तथा दूसरे घरेलू कामों में होशियार तथा स्वावलम्बी होना चाहिए। यह आपका कर्तव्य नहीं है कि आप उसे इस प्रकार की कोई शिक्षा देने का प्रयत्न भी करें। रसोई के पास तो उन्हें कभी भी फटकने न देना चाहिए; (लेकिन जब कभी सर्दियों में वे आग तापने आयें तब न रोकिये) अगर कभी वह बर्तन मलने, आटा गूँधने या सब्जी काटने या दाल बीनने के उद्देश्य से रसोई के द्वार तक आयें भी तो फौरन उन्हें वापिस कर दीजिए। बड़े प्यार से कहिये "न···न···बीबी जी तुम न हाथ लगाओ···हाय हाय तुम्हारे नाखूनों में राख फँस जायगी···तुम्हारे हाथ काले हो जायेंगे···या तुम्हें स्कूल-कालिज में देर हो जायगी" इसी तरह का चापलूसी से भरा कोई और वाक्य···।

पढ़ने का और आपकी छोटी नन्द का बहुत गहरा सम्बन्ध है इसलिए आपका कर्तव्य है कि आप उनके स्कूल या कालेज गमन के कम-से-कम आध घण्टा पहले तक; गर्म-गर्म पकौड़ी—या—पराठे या समोसे—या दूसरी किसी मजेदार चीज के साथ, चाय तैयार रखें। नाश्ता या रोटी तैयार करते वक्त आप को अपनी छोटी नन्द की रुचि का हमेशा ख्याल रहना चाहिए—नहीं तो—अब बार-बार क्या बताऊँ की वह डस लेंगी।

शायद आपकी नन्द क्लास में हमेशा कमजोर रहती है और इस वार्षिक परीक्षा में तो वह फेल भी हो गई है—इस समय आपका कर्तव्य है कि आप बिना सोचे-समझे अध्यापिकाओं···स्कूलों···देश की शिक्षा-प्रणाली आदि को गालियाँ देना शुरू कर दें। अगर गालियाँ देना आपके ख्याल में असभ्यता है तो कुछ-न-कुछ बुरा-भला जरूर ही कह डालिए नहीं तो···। अब आप अपने आप समझ लीजिए।

इस समय आपका कर्त्तव्य हो जाता है कि आप किसी-न-किसी तरह अपनी 'फूल-सी सुकुमार' नन्द के दुःखी दिल को राहत पहुँचायें।

नन्द रानी के स्कूली कोर्स की सारी सिलाई आपको बाखूबी अपने हाथों करके देनी होगी, साथ ही इस बात का प्रमाण देना होगा कि आपने भी अपनी सारी सिलाई अपनी भाभी से बनवायी थी, चाहे आपका आदर्श यह रहा है कि स्कूल का सारा काम छात्रा को खुद ही करना चाहिए।



खुदा न करे आपकी नन्द रानी को सर्दियों के मौसम में बिस्तर से निकलते ही कोई कम्बख्त छींक आ जाय। अगर आ ही गई है तो प्राथमिक

उपचार के तौर पर उसे उसी बिस्तर में लिटाकर ऊपर से लिहाफ उढ़ा दीजिए, अच्छी तरह ! (देखिए कही साँस न घुट जाय) अब तो जरूर ही श्रीमती नन्द रानी को जुकाम हो जायेगा और साथ-साथ बुखार भी आने लगेगा साथ-साथ सिर-दर्द···दाँतों में दर्द···नाक में पीड़ा आदि तमाम बीमारियाँ हो जायेंगी। उनकी इस खतरनाक बीमारी के दौरान में आपके निम्नलिखित कर्तव्य हैं।

(१) जहाँ तक हो सके उन्हें बिस्तर से न उठने दें, अगर कहीं ठण्ड वगैरा लग गई तो बीमारी और भी खतरनाक हो जा सकती है।

(२) आप घन्टे आध घन्टे के पश्चात् कभी चाय, कभी खशखश का हलवा···(अधिकतर उनकी रुचि की चीजें) कभी दाल, कभी जूस लेकर हाजिर रहें (बेशक आप जानती हैं कि जुकाम के लिए सौ दवाओं की एक दवा है निराहार व्रत · लेकिन इसका जिक्र कभी किसी के सामने न करिये) अरी बहू रानी ! तुम्हारी नन्द का जुकाम बढ़ता है तो तुम्हारी बला से; तुम्हें देखना तो यह है कि तुम्हारे व्यवहार से तथा सेवा से तुम्हारी सास के दिमाग का टेम्परेचर कितना घटता है।

(३) बेशक घर वालों की ओर से डाक्टर को बुलवाया गया है, थर्मामीटर लगाकर बुखार की जाँच कर ली गई है फिर भी आपका जो कर्तव्य है उससे परे न हटिये बार-बार उनकी नब्ज लेकर हाथ में देखें—नाड़ी की गति की पहचान न हो तो भी कहिये, हाय ! हाय ! ! नब्ज कितनी तेज चल रही है।

जब तक उनकी शादी नहीं हुई तब तक तो वे निश्चित रूप से बच्ची ही हैं (भले ही उनके मोटापे—अशिक्षा या दूसरी किसी वजह से वर मिलने में देर हो गई हो) लेकिन शादी के बाद आप यह न समझिए कि वह अब आपको तरह औरत बन गई हैं और उन्हें ससुराल में कुछ कर्तव्य निभाने चाहिएँ। आप हमेशा उन्हें बच्ची ही समझिए। जब कभी वह ससुराल से आकर अपना दुःख-सुख अपनी माँ के पास रोया करें तो आप न सिर्फ एक योग्य श्रोता की तरह उसे सुने ही बल्कि उनकी बातों को ताईद भी करें, साथ-साथ उनकी सास नन्द की बुराई व अपनी नन्द के रूप गुण की प्रशंसा जी भर के करें। साथ-ही-साथ हो सके तो अपनी नन्द की सास या नन्द (जिन्हें आपने देख रखा हो) के कुछ उपनाम रख लीजिए, जैसे मोटी हो तो

'मोटल्ली' या 'पंसेरी', दुबली हो तो 'सलाई', लम्बी हो तो 'सीढ़ी' नाटी हो तो 'चक्की' आदि-आदि। ऐसा करने का फायदा आपको यह रहेगा कि आप की सास तथा नन्द हमेशा आपके बस में रहेंगी। यदि आप यह सब करने में, असमर्थ हैं तो आपका भला इसी में है, सास-ननद का अत्याचार चुपचाप सहती रहें, क्योंकि सागर में रह कर मगर से बैर करना मूर्खता है, बाम्बी में रहकर साँपों से बैर करना मूर्खता है ठीक उसी तरह ससुराल में रहकर सास के जायों से बैर करना मूर्खता है।

लेकिन ऐसा नहीं होता कि कोई सम्पूर्ण जाति ही बस क्रूर हो, न सारे साँप डस कर प्राण लेने वाले होते हैं। साँपों की भी कई किस्में होती हैं जैसे कहते हैं पनिहारा (पानी में रहने वाला साँप) अगर डस भी ले तो मृत्यु निश्चित नहीं होती, बस इसी तरह की कई छोटी नन्दें होती हैं। यह तो संस्कार का फल है। अगर आपकी सास उदार व सन्तुलित विचार धारा की हैं तो काटने का गुण छोटी नन्द में कदापि न होगा। शिक्षा के साथ ही संस्कार भी यदि आप में हैं तो आप भी एक अच्छी ही नन्द बनेंगी और नहीं तो (माफ कीजिएगा) अपने दाँव आप भी किसी को डस लेंगी क्योंकि आखिर आप भी तो हो सकता है किसी की छोटी नन्द हों।'

२३. संयुक्त परिवार में बहूरानी का बर्ताव

कन्याओं के दिल में बचपन से ही यह बात बिठा दी जाती है कि सास मानो कोई हऊआ है, जो कि उसे मार-मार कर ठीक करेगी, कसूर करने



पर जेलर की तरह पेश आयेगी। इसी अभिप्राय से लोक गीत भी गाये जाते हैं—'सास-नन्द मेरी जन्म की बैरिन'। कई लोगों की यह धारणा है कि खून के रिश्ते में ही सच्चा प्यार हो सकता है। यह बात सच नहीं है। पति और पत्नी में खून का सम्बन्ध न होते हुए भी कितना अटूट प्रेम होता है। संसार में सबसे अटूट सच्चा रिश्ता है मित्रता का। पति-पत्नी भी वही सुखी और सन्तुष्ट हैं जिनमें परस्पर मित्र-भाव है। मित्र का प्रेम एकतरफा नहीं होता। बच्चे बड़े होकर मित्र के समान ही होते हैं। यदि यही स्नेह, विश्वास

माता-पिता अपने बच्चों के प्रति प्रदर्शन कर सकें तो परिवार में झगड़े ही न हों।

नारियों को भगवान ने शरीर और मन से कोमल बनाया है। यदि आज-कल की शिक्षति बहुएँ अपने कर्तव्य को ठीक से निभायें तो संयुक्त पारिवा-रिक जीवन का नव-निर्माण हो सकता है। आमतौर पर देखने में आता है कि बहू की देवर और ससुर तो प्रशंसा करते हैं, पर नन्द और सास उससे रुष्ट-सी रहती हैं। इसकी शुरूआत होती है जब कि दहेज में से बहू की प्रिय साड़ियाँ या और कोई बढ़िया चीज नन्द हथियाना चाहती है। आजकल तो यह रिवाज प्रायः नहीं रहा, पर यदि नन्द ने एक-आधी चीज ले भी ली तो बहू को गम खा जाना चाहिए। उसी के भाई की कमाई बहू ने सारी उम्र सँभालनी है। थोड़ा-सा देकर बहुत-कुछ उसे मिलेगा। आरम्भ के कुछ दिन ही बहू का व्यवहार परखा जाता है। इसलिए किसी का हृदय न दुखे, कोई बुरा न माने इस बात की चेष्टा बहू को करनी चाहिए।

यदि पति नौकरी पेशा है और दूसरे शहर में नौकरी करता है तब तो अधिक असुविधा ही नहीं होती। यदि सास-नन्द कुछ कहें-सुनें तो भी गम खा जाना उचित है। बहू को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं जरा-सी भूल पर उम्र भर की बुराई न मिल जाये।

सुबह उठकर सास-ससुर के पाँव छुए, बच्चों से राम-राम करे, बहू की इस शीलता का सब पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। घर में कोई बड़े-बूढ़े मिलने आयँ उनके भी पाँव पड़ना चाहिए। आजकल जब कि पढ़ी-लिखी लड़कियों के मिजाज सात आसमान पर चढ़े रहते हैं यदि कोई बहू बड़ों के पाँव पड़ती है तो परिजन उसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। 'देखो हमारी बहू अमीर घर की बेटी है, बी० ए० पास है, पर बड़ों के पाँव पड़ती है'। इस बात को देखने-सुनने वाले सभी प्रशंसा करते हैं। इसमें बिगड़ता कुछ नहीं है, और ढेरों बढ़ाई मिल जाती है।

बात का बतंगड़ बनाकर अपने पति को न सुनायें। यह माना कि पति आपके दुःख-सुख के साथी हैं, परन्तु आप उन्हें जरा-जरा सी बात सुना कर परेशान न करें। अपनी सहनशक्ति और चतुराई से खुद ही पारिवारिक झगड़े निबटा लें। दो मीठे वचन बोलकर झगड़ा बढ़ने ही न दें। दिन भर का थका-माँदा पति घर लौटकर, आप से प्यार, सहयोग आनन्द और जीवन-

स्फूर्ति प्राप्त करने की आशा रखता है। 'मेरा सिर दुखता है, तुम्हारी बहन



माँ ने मुझे सताया है, जिठानी झगड़ा करती है' आदि उलाहने यदि वह आप से सुनेगा तो इसके दो परिणाम होंगे। या तो वह आपको सब झगड़ों का मूल समझेगा और आपको व्यवहार बुद्धि से हीन मानकर आपकी योग्यता और सहयोग में सन्देह करने लगेगा अथवा उसका मन अपने माँ-बाप, भाई-बहन और परिजनों से फट जायेगा। फिर आये दिन घर में कलह मची रहेगी। इससे आपका दाम्पत्य-जीवन भी दुखी हो जायेगा। पति से झगड़े की बात उसी समय कहें जबकि उसके सहयोग से पारिवारिक झगड़े सुलझने की सम्भावना हो। अपने पक्ष को मजबूत बनाने या परिवार को दो दलों में बाँटने के लिए पति के कान कभी न भरें।

सोचिए कभी आप भी सास बनेंगी, उस समय यदि आपकी बहू आकर अपने पति को आपके विरुद्ध सिखाये-पढ़ाये तो आप को कितना दुःख होगा ? जिस पति को आप प्राण से अधिक प्यार करती हैं, उसके माता-पिता का जो कि उस रत्न के जन्मदाता है क्या आपको अपमान करना शोभा देता है ? जिस माँ की गोदी में वह पला है, जिसने खुद दुःख सहकर पुत्र के सुख का पहले ध्यान रखा है यदि कोई पुत्र ऐसी तपस्विनी माँ के प्रति पत्नी के सिखाये में आकर दुर्व्यवहार कर सकता है तो विश्वास रखिये वह किसी दिन अपनी पत्नी के साथ भी बेवफाई कर सकता है। माँ का स्थान पत्नी नहीं ले सकती, अतएव परस्पर ईर्ष्या करने का सवाल ही नहीं उठता। पति जब अपनी सास और साली तथा साले का आदर और प्रेम करता है तब तो बहू को बुरा नहीं लगता, फिर भला सास, नन्द, देवर के प्रति पति का प्रेम-प्रदर्शन क्यों असहनीय होना चाहिए ?

देखने में आता है कि शुरू-शुरू में लाड़ में आकर बहुएँ पहले तो अपने पीहर के रिश्तेदारों की बहुत-सी बातें नन्द-देवर को बता देती हैं, फिर जब उन्हीं बातों को लेकर नन्द-देवर ताने देते हैं कि तुम्हारे तो पीहर का रिवाज ही लोगों से झगड़ा करना है—तब यह ताने सुनकर बहू फिर चिढ़ कर रह जाती है। इसलिए समझदारी इसी में है कि न तो अपने पीहर की बेमत-

लब की बातें ससुराल वालों से कहीं जायँ और न ससुराल की बातें पीहर में सुनाई जायँ। याद रखें पीहर में उसी बेटी का अधिक आदर होता है जिसे कि ससुराल से आदर, प्यार मिला होता है।

बहू को चाहिए कि ससुराल में सब के सम्मान का ध्यान रखे। बच्चों से प्यार से बोले। नौकरों से भी तमीज से बात करे। यही छोटी-छोटी बातें हैं जिनसे बहू के स्वभाव की परख की जाती है।

कई रिश्तेदार ऐसे भी होते हैं कि ऊपर से मीठी-मीठी बातें करके सास-बहू का भेद पता लगा लेते हैं और इधर की उधर जढ़ कर दोनों में लड़ाई करा देते है। ऐसे रिश्तेदारों से काम पड़ने पर विनम्रता से बोलें, पर घनिष्ठता न पैदा करें। बहू को इस बात की विशेष चौकसी करनी चाहिए कि सास-नन्द की बुराई किसी से न करे। अगर बहू की गलती नहीं है तो देखने वाले लोग सब उसी की प्रशंसा करेंगे और गलती करने वाला शर्मिन्दा होकर हार मान जायेगा। सचाई ज्यादह देर तक छिपी नहीं रहती। बाहर के लोग आपके परिवार की निन्दा, बुराई सुनकर कुछ खास मदद नहीं कर सकते उल्टा कोई आप को बुरा कहेगा कोई सास को। इससे जग-हँसाई अलग होगी। पारिवारिक झगड़े तो सहयोग और धीरज से ही मिटाये जा सकते हैं। इसमें सहिष्णुता और समझदारी की जरूरत है। पति आपके सब से बड़े मित्र और हितैषी हैं। उन्हें अपनी अड़चनें बतायँ, पर उलाहने के रूप में नहीं, सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से।

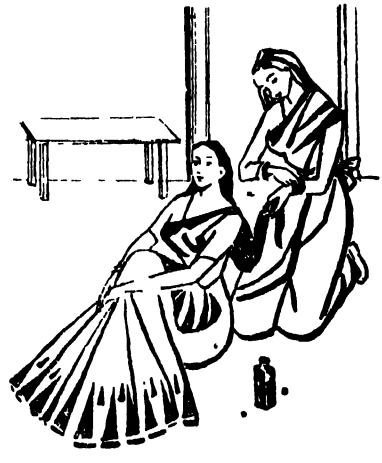
अपनी सेवा और शीलता से सबको प्रसन्न रखें। आपने गृहस्थ-जीवन में प्रवेश किया है, घर का काम-काज, पारिवारिक जिम्मेदारियों में हाथ बँटाना आपका धर्म है। यदि आप गृहस्वामिनी का पद सँभालना चाहती हैं तो अपनी सास जी को गृह-भार से मुक्त करें। अधिकार बिना सेवा के नहीं मिलता। परिजनों के खाने-पीने, घर की सफाई, बच्चों की पढ़ाई का भार सँभालें। काम सब को प्यारा है, चाम नहीं। यदि आप चाहें कि ससुराल घर में केवल सजी-धजी गुड़िया बनी-बैठी रहें और लोग आपके रूप की प्रशंसा ही करते रहें तो यह तरीका कुछ ही दिनों में आपको परिजनों का अप्रिय बना देगा।

अपनी सास-नन्द को खुश रखें, ससुर का आशीर्वाद लें, देवर का ध्यान रखें। इन सबके मुख से आपकी प्रशंसा सुनकर आपके पति गद्‌गद् हो

जायेंगे और स्वयं को किस्मत वाला समझ आपकी प्रशंसा करते नहीं अघायेंगे।

यदि घर में आपको किसी की गंदी या बेपरवाही की आदतें पसन्द नहीं हैं तो उनकी आलोचना मत करें। आपका देवर जब देखेगा कि मैं अपनी चीजें इधर-उधर पटक जाता हूँ पर भाभी रोज आकर उन्हें सँभालती है तो उसे अपनी बेपरवाही पर शर्म जरूर महसूस होगी। यदि इस पर भी वह न माने और केवल आप को धन्यवाद देकर हँसकर चल दे तो आप दुलार से झिड़कती हुई कहें—"भैया यहाँ खाली धन्यवाद देने से तो काम नहीं चलेगा। तुम्हें अपनी भाभी का भी ध्यान रखना चाहिए। मुझे तुम्हारा कमरा गन्दा अच्छा नहीं लगता। यदि अपना काम खुद नहीं सँभालोगेतो फिर अपनी भाभी का काम ही तो बढ़ाओगे। भला, मुझे कष्ट देना क्या तुम्हें अच्छा लगता है ?" आपकी ऐसी मीठी झिड़की सुनकर देवर आपकी खुशामद-मिन्नत करेगा—"मेरी अच्छी भाभी, अब की माफ कर दो, कान पकड़ा, आयन्दा से अपनी चीजें इधर-उधर नहीं फेंक कर जाया करूँगा।"

जरा-जरा सी सेवा मन को मोह लेती है। पति नहाने जा रहे हैं उन के कमीज में बटन लगा दें, गुसलखाने में तौलिया टाँग आयें। देवर को हजामत के लिए गर्म पानी दे आयें। उसके धुले कपड़े आलमारी में सजा दें। ससुर का हुक्का ताजा कर दें। खाना खा चुकने के बाद उनके कुल्ला करने के लिए गर्म पानी-तौलिया लेकर खड़ी रहें, सास के सिर में कभी-कभी तेल मल दें। छोटी नन्द की चुटिया कर दें। आपके द्वारा की गई ऐसी छोटी-छोटी सेवाएँ आपको परिवार का प्रिय बना देंगी।



सास या पति की आज्ञा लेकर ही कहीं घूमने-फिरने जायँ। जो परिवार का हित चाहने वाले न हों उनसे हेलमेल न बढ़ायें। प्रत्येक परिवार की अपनी नीति, मर्यादा तथा कुछ आदर्श होते हैं उन्हें यथा सम्भव बनाये रखना बहू का फर्ज है।

गुरूजनों के सामने शील और संकोच के साथ उठना-बैठना और हँसना-बोलना चाहिए। इस से बहू का लिहाज बना रहता है और बड़ों के सम्मान की रक्षा होती है। बड़ों के सामने बड़-बड़ करना और मुँहजोरी करना कुलीनता के लक्षण नहीं हैं। रूठकर या रो-धोकर सब को परेशान करना मूर्खता है। किसी बात पर हठ करके खाना-पीना छोड़ देना या पीहर भेज दो कि रट लगा छोड़ना ठीक नहीं। इस से आप के सास-ससुर और पीहर वाले दोनों ही परेशान होंगे। ऐसी मूर्खता वे ही नवयुतियाँ करती हैं जिनका मानसिक-स्वास्थ्य ठीक नहीं होता, जिन्हें बचपन में अपने मनोवेगों पर काबू रखना नहीं सिखाया जाता। मानसिक-स्वास्थ्य नाजुक होने से स्त्रियाँ बड़ी विचित्र हरकतें करने लगती हैं। रोना, चिल्लाना, सिर पीटना, हाय-तोबा मचाकर लोगों को इकट्ठा कर लेना, फिर आप भूखे रहना, मुँह लपेटकर पड़े रहना, हर दम उदास रहना, स्वयं को दुखी, अभागी तथा उपेक्षित अनुभव करना आदि हरकतों से वे अपना तथा परिवार का सुख नष्ट कर देती हैं।



कभी-कभी ऐसा होता भी है कि परिवार पर कोई निपत्ति पड़ती है, तो अन्धविश्वासी लोग यह कहने की भूल कर बैठते हैं—'इस बहू का पाँव परिवार के लिए कल्याणकारी नहीं रहा'। ऐसी बात सुनकर बहू को बुरा लगना स्वाभाविक ही है, पर समझदार स्त्री वही है जो इन कटु आलोचनाओं को चुपचाप सह ले। समय आयेगा जब उसे अपनी इस तपस्या का फल मिलेगा। परिवार में यदि कभी आर्थिक कठिनाई उत्पन्न हो जाये तो बहू को अपने सहयोग और धीरज से उसे सरल करने की कोशिश करनी चाहिए न कि केवल एक आलोचक बनी रहे।

खाना पकाने, सीने-पिरोने, बुनने, घर सजाने तथा अतिथि-सत्कार करने में बहू को चतुर होना चाहिए। उसे सलीके से बातचीत करना, वेश-भूषा सँवारनी तथा सुघड़ाई से काम समेटना भी आना चाहिए। इसके बिना वह सफल गहिणी नहीं बन सकती।

अपने पीहर के हरदम गीत गाते रहना और घुमा-फिराकर ससुराल वालों की न्यूनताओं को जताना मूर्खता है। निर्लज्जता और वाचालता कुल-बन्धुओं को शोभा नहीं देती। आचरण की सभ्यता बहू के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। अपने पति की सच्ची सहचरी और विश्वासपात्र बनें। उसकी आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक कठिनाइयों को समझें और हाथ बटायें। फिजूलखर्ची तथा स्वार्थिन पत्नी पति के लिए एक मुसीबत बन जाती है। अपने स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखें। धर्मपरायण और सदाचारी बनें। प्रत्येक काम समय पर करें ताकि मनोरंजन, आराम और पति के मनबहलाव के लिए आपको समय मिल सके।

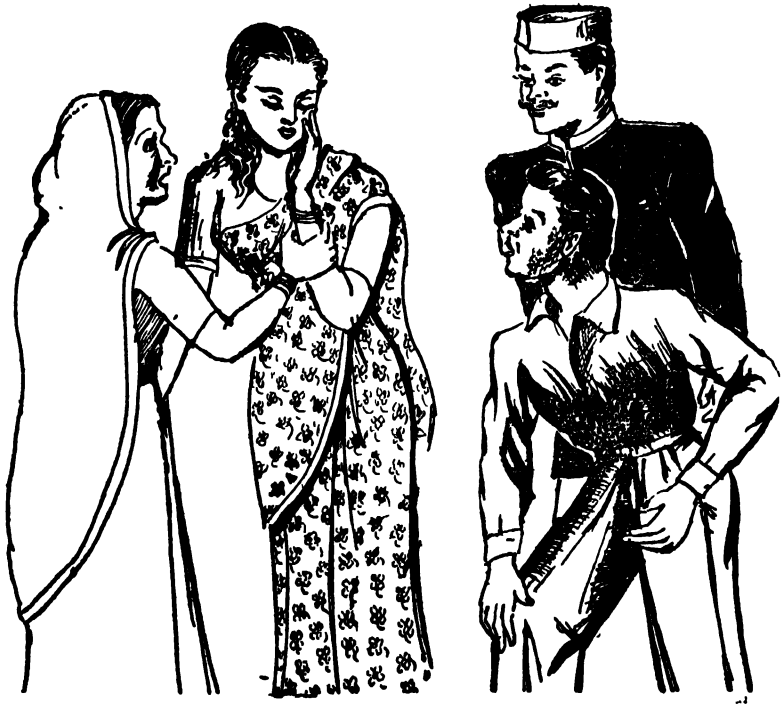
यदि परिवार में सास के अतिरिक्त जिठानियाँ भी हैं तो उन्हें प्रसन्न करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप उनके बच्चों को प्यार करें,



उनको नहलायें, खिलायें-पिलायें, समय पर उन्हें तैयार कर दें, उनकी पढ़ाई और खेल में दिलचस्पी लें। जब उनकी माँ बिगड़े तो बच्चे को बहला लें, समझा दें। लाड़-दुलार से उनका प्रेम और विश्वास प्राप्त करें। यदि आप जिठानी, नन्द और सास के छोटे बच्चों को अच्छी लगेंगी तो उनकी माताओं का स्नेह आप पर अवश्य बना रहेगा। किसी सयाने का कहना है कि किसी स्त्री के मन के जीतने का सबसे अच्छा सरल तरीका है—'उसके बच्चों में दिलचस्पी लेना'। शिक्षा की सफलता इसी में है कि वह व्यक्ति को व्यवहारकुशल और समाज में अपना स्थान बनाने की योग्यता प्रदान करे।

२४. अपना पूत पराया ढींगर

एक कहावत है 'अपना पूत पराया ढींगर'। अपनी सन्तान चाहे कितनी भी बुरी हो वह अच्छी और प्यारी लगती है, उसके प्रत्येक अपराध क्षम्य दीखते हैं। परन्तु पराये बच्चे का छोटे-से-छोटा अपराध भी हिमालय सदृश गुरुतर लगता है। अगर इस पक्षपात का प्रत्यक्ष उदाहरण देखना हो तो किसी नासमझ गृहिणी का बेटी और बहू के प्रति व्यवहार देखें। अपनी कन्या को कोई बेकायदा काम करते देख माता तरह देती रहती है। भाई या बाप को



टोकते देख यह कह देगी—क्या करूँ, हर समय कन्या के पीछे लगना ठीक नहीं है। वह भी तो जमाने के साथ ही है, किस-किस बात के लिए हटाऊँ ? औरों को करते देख उसका भी तो मन कर ही आता है। परन्तु जब बहू का प्रश्न

आता है तो वही स्नेहमयी जननी बड़ी दृढ़ता के साथ नादिरशाही शासन करती है। अपनी कन्या की गुणावली और बहू की बुराइयाँ, यही तो दो मुख्य विषय हैं उसकी बातचीत के। कन्या और बहू में उसे आकाश-पाताल का अन्तर दिखाई देता है। कन्या को मेम रखकर अंग्रेजी बोलना भी सिखाई जायगी, सब अंग्रेजी तरीके भी उसे आने चाहिएँ, क्योंकि वह आज के जमाने की लड़की है और आज के जमाने के किसी नवयुवक से उसका विवाह होगा। अभी भावज की तरह उसे बर्तन साफ करने से लेकर रसोई के प्रत्येक काम तथा भोजनादि बनाना सीखने की आवश्यकता नहीं। उसे तो 'आपरेन' बाँध कर अंग्रेजी चूल्हों पर अण्डा-मुर्गी बनाना ही आना चाहिए। माता ने अपनी कल्पना के अनुसार ही अपनी प्यारी लाड़ली की भाग्य-रचना की है। उसका भविष्य मानों मुसीबतों, असफलता, निन्दा, तकलीफ, निर्धनता आदि से कोसों दूर होगा।

अगर बहू पढ़ने अथवा किसी कला का शौक रखती है, चाहे वह योग्यता और बुद्धि में कन्या से अच्छी ही हो तो भी उसे चारों ओर से उपेक्षा ही मिलेगी! सासरानी आँखें घुमा कर गाल पर हाथ रख कर कहेगी—"अब तू शादीशुदा और बाल बच्चों-वाली है। तुझे लड़कियों के शौक शोभा नहीं देते हैं। पढ़-लिखकर हमें बहुत तार देना है, आगे ही चैन न लेने देती है, पहिले गृहस्थी सम्भालनी तो सीख ले"। घर में चार मेहमान आये हैं, बहू के हाथ के कढ़े हुए टेबिल-क्लाथ, पर्दे, पलंग-पोश आदि बिछे हुए हैं, स्वादिष्ट खाद्य-सामग्री मेज पर सजी है। मेहमानों से पूछे जाने पर कि यह सब किस ने बनाये हैं—सास जी बहू रानी की उपस्थिति में ही इन सब बातों का श्रेय अपनी कन्या को देंगी। बहू बिचारी सुनती है और आह खींचकर चुप हो जाती है।

माता ढाल है—

घर की सब सुविधाएँ और आराम कन्या के लिए हैं, परन्तु बहू के साथ अन्यायपूर्ण और दासी का-सा व्यवहार होता है। कन्या के मुख से निकलते देर नहीं कि वस्तु उपस्थित की जाती है, परन्तु बहू को उन वस्तुओं का भी उपयोग करने का अधिकार नहीं जो कि उसके माँ-बाप ने दहेज में दी थीं। उन वस्तुओं के भी तोड़ने, बेपरवाही से पहिनने आदि का नन्दरानी को ही पूर्णाधिकार है। मजाल है भावज माथे पर शिकन भी डाल जाय, क्योंकि

माननीया नन्द सब चीजें पटक कर मुँह फुला कोप धारण कर लेंगी। घर में एक कोहराम मच जायगा। नन्द को नाराज करना पानी में रह कर मगर से बैर मोल लेने से कम नहीं है। बहू घर में गृहस्वामिनी नहीं अपितु दासी बनाने के लिए लायी जाती है। उसका यह साहस करना कि दिन में १-२ घन्टा बैठ कर अपने पति से कुछ पढ़ ले अथवा बातचीत करले, निर्लज्जता की हद समझी जायगी, और नन्दरानी सजधजकर अपने भाई के दोस्तों अथवा सहेलियों के भाइयों आदि के साथ ताश खेलती है। उसका हँसना-बोलना एक हद तक मर्यादा को भी तोड़ देता है। घनिष्टता के साथ-साथ हँसी-ठठोली की नौबत भी आती है। धार्मिक शिक्षा से शून्य ऐसी बेटियाँ कभी-कभी फिसल भी जाती हैं। परन्तु सलामत रहे मातारूपी ढाल जो कन्याओं के प्रत्येक पाप पर पर्दा डाल देती हैं और अपनी कन्या को भोली, सीधी, नादान, अबोध आदि कह कर तथा लड़के के सिर सारा दोष मढ़ अपने मन का गुबार निकालकर साँत्वना दे लेती हैं।

कभी भी उन्होंने सोचा है कि हमारे नित्य के व्यवहार में अनुचित पक्ष-पात, आदि से इन कन्याओं की आत्मिक, शारीरिक, धार्मिक शिक्षा पर कितना कठोराघात होता है ? इनको हम स्वार्थी, दम्भी, अन्यायी, आरामतलब, जिद्दी आदि बनाकर संसार रणस्थली के कितना अयोग्य बना देती हैं !

अब जब यह बिगड़ी हुई नन्दरानी ससुराल जाती हैं तो वहाँ कुछ और ही रंगत दिखाती हैं। अपनी आदर्शवादिनी सास इन्हें पसन्द नहीं आती। देवरानी, जेठानी को यह गँवार समझती हैं। अपनी भाभी पर जो अत्याचार करती रहीं, उन्हें ही अपनी विनम्र नन्द भी फूटी आँखों नहीं सुहाती। किसीने एक कही कि चार सुनाईं। मायके में नन्दरानी आये दिन अपनी गरीब भावज को यही कह-कह कर धमकियाँ दिया करती थी कि 'खबरदार जो हमारे भाई को सिखाया कि अलग हो जाओ, माँ-बाप ने उसे पालपोस कर इतना लायक बनाया है, कोई तेरे लिए ?' पर जब खुद ससुराल आयीं तो सम्मिलित कुटुम्ब में रहना उन्हें अपनी स्वतन्त्रता में बाधक लगता है। अब पति से रोज इसी बात के लिए झगड़ा है कि अलग हो जाओ। दाल न गली तो लड़-भिड़ कर मायके आ गईं। माँ ने सुना तो सारा दोष समधियाने पर धरा।

जमाई के सर—

अगर बाप भाई ने समझाने की चेष्टा की तो उन्हीं को गृहिणी ने डाँट-

कर चुप कराया कि—'अभी तो मैं जीती हूँ, मेरे मरने के बाद भाई-भावजों का राज्य हो जायगा, तब तो मेरी दुलारी को तुम लोग घर में भी न घुसने दोगे। इसके ससुराल वाले ही बुरे हैं। उनके साथ जितनी हो उतनी ही थोड़ी है। मैंनें अपनी कन्या को कभी पानी का गिलास भी उठाने को न कहा। वहाँ सास उससे खाना परोसने को, नन्द जिठानी के बच्चों को पढ़ाने को कहती है। उसका दिमाग कोई फालतू है ? एक १०-१५ रुपये का मरदुओं से मास्टर नहीं रखा जाता ? यहाँ उसने अच्छा खाया पिया है। मोटरों की सैर की है, वहाँ उनके बंगले में एक टाँगा भी तो नहीं है। जमाई भी ढूँढ़ा तो गरीब-सा। आजकल २५०) में भला क्या बरकत ? यह तो सोचता नहीं कि अभी जरा-सी बच्ची तो है, खाने-खेलने के दिन हैं। कभी सिनेमा-तमाशे ले जाये। उसके परिवार वाले तो इसे देखकर जलते हैं, पर इसके पति को तो चाहिए कि इसका मन बहलावे, लाड़चाव करे। कोई अफसर दामाद ढूँढ़ते तो लड़की की कदर भी करता। ऐसे बुद्धू पति को पाकर भला कन्या क्या सुखी होगी ?'

भला सोचिये अब माता की इस अनुचित सहानुभूति को पाकर कन्या क्यों न और सिर चढ़ेगी ?

माताओं का प्रेम-स्रोत अपनी कन्याओं की ओर को ही बहता है। क्या ही अच्छा होता कि उसकी एक धारा बहुओं की ओर भी बह जाती। वे तो यह समझतीं है कि बहू को तो दुख-सुख अनुभव करने की शक्ति ही नहीं है। निरादर से उनको खेद नहीं होता, प्रेम आदर से उन्हें सुख नहीं, दिन रात उन्हें सीधी टेढ़ी बातें सुनाने में ही सास जी को आनन्द आता है। उनकी सास ने उन्हें जो कुछ दुख दिया होगा, उसका बदला वह सूद समेत अपनी बेगुनाह बहू से लेंगी। नौकरों-चाकरों सबके सामने उसे घुड़की मिलती है। तिल का ताड़ बनाकर पास-पड़ौस में उसकी सुकीर्ति गाई जाती है। जो लड़के विवाह के बाद अपने बाप पर ही आर्थिक रूप से निर्भर हैं उनकी पत्नियों के कष्टों का तो कुछ कहना ही नहीं।

जोरू का गुलाम—

माता अगर किसी की बहू-बेटी को कुछ पहिने देखेगी तो झट उसके मन में यह अरमान आयेगा कि अब कि त्यौहार पर अपनी बेटी को अवश्य ही ऐसी चीज ले दूँगी। अगर समर्थ से अधिक कन्या को देते देख भाई अथवा बाप ने कुछ कहा तो उनको मुँहतोड़ जवाब सुना, चुप करा देगी। परन्तु में

यह पूछती हूँ कि कभी किसी सास के मन में बहू के लाड़-चाव करने का, उसे पहिनाने-उढ़ाने का भी शौक हुआ है ? बहू तो यहाँ तक बुरी है कि अपना प्राणों सम प्रिय बेटा यदि उसे जरा भी प्रेम दिखावे या उससे सहानुभूति रखे तो वह भी निकम्मा है और जोरू का गुलाम आदि उपाधियों से अलंकृत किया जाता है।

घर में अपनी धाक बनाये रखने के लिए नन्द-देवर, भाई और भावज की ओर से माँ का मन खट्टा करने की सर्वदा चेष्टा करते रहते हैं। इसका फल यह होता है कि घर में दो पार्टियाँ हो जाती हैं। एक ओर तो भाई और भावज, दूसरी ओर विवाहित तथा अविवाहिता कन्याएँ, कुँवारे बेटे और माँ। बाप विचारा जिस पार्टी से अधिक प्रभावित हुआ उधर ही झुक जाता है। इस दलबन्दी से घर की संगठन-शक्ति नष्ट हो जाती है।

अतः ऐसी सासों से मेरा यह अनुरोध है कि अगर वह घर में मेल और शान्ति चाहती हैं, पुत्र को आज्ञाकारी और ताबेदार बनाये रखना चाहती हैं, तो उन्हें चाहिए कि वह बहू को भी प्यार करें, उसके साथ भी हमदर्दी दिखाएँ और उसके अरमानों को कुचलें नहीं। गरीबी और दुःख काटना कठिन नहीं है, अगर परिजनों का स्नेह और सहानुभूति मिली हो तो एक ही थाली में दो जने रूखी रोटी भी खाकर तृप्त हो सकते है। परन्तु अगर उसी में एक का हिस्सा तो पूरियाँ हों तथा दूसरे की सूखी रोटियाँ तो वह गले से उतरनी कठिन होती हैं।

निर्बल को कलपा कर कभी कोई सुखी नहीं हुआ है। वह चाहें चुप रहें पर उसकी सन्तप्त आत्मा की पुकार भगवान के कानों में जाती है। किसी ने कहा है—

"निर्बल को न सताइये, वाकी मोटी आह,
मुई खाल की साँस से लोह भस्म हो जाय।"

मैं अनेकों ऐसे परिवार को जानती हूँ कि जिन्होंने अपनी बहुओं को सताया तो उनके पाप उनकी कन्याओं के आगे आये। धार्मिक और आदर्श भावना से शून्य उनकी कन्याएँ न केवल अपना ही परन्तु अपने परिवार वालों का जीवन भी दुखदायी बना देती हैं।

स्नेहमयी जननियों से फिर मेरी प्रार्थना है कि वह अपने कर्तव्य को समझें। अपनी सन्तान की प्रथम और आदर्श गुरु वही हैं उनको सहन-शक्ति,

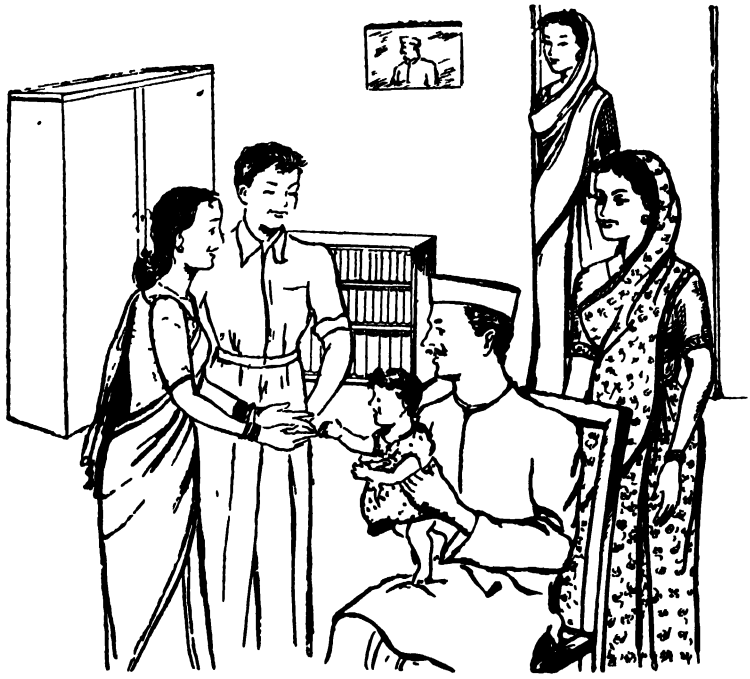
त्याग, उदारता तथा चरित्र-बल का पाठ वही पढ़ा सकती हैं। यदि माताएँ रूढ़िवादिता छोड़कर नवयुग की विचारधारा को समझ कर चलें तो पारिवारिक कलह कम हो सकती है। अब बहू और बेटी में भेद करना मूर्खता है। यदि आप बेटे का प्रेम बनाये रखना चाहती हैं तो बहू का मन जीतें। उसे अपने प्रेम और अनुभव से मोहित कर दें। यदि किसी कारण से आप बहू के साथ नहीं निभा सकतीं तो एक ही छत के नीचे रह कर रोज की किटकिट से यह लाख दर्जे अच्छा है कि उसे अलग कर दें। सम्भव है अलग होकर आपके सहयोग और अनुभव का अभाव उसे खले, आप के प्रेम का मूल्य वह समझे। हर एक व्यक्ति को अपने ढंग से रहने का अधिकार है। विरोधी विचार-धाराओं में संघर्ष हो ही जाता है। मैं इस कथन से बिल्कुल सहमत हूँ कि—

'दो विरोधी विचारधाराओं का संघर्ष, जो पुरातन और नवीन का संघर्ष है, प्रत्येक परिवार में आवश्यक रूप से वर्तमान रहता है। यदि दोनों पक्ष इतने उदार हैं कि साथ रहकर एक-दूसरे के विकास को चोट न पहुँचाएँ या दूसरे की भावनाओं का उतना ही आदर करें जितना अपनी भावनाओं का करते हैं तो फिर परिवार में संघठित होकर रहना उनके जीवन में कोई विरोध नहीं पैदा कर सकता। किन्तु यदि उचित भाव-नियंत्रण का अभाव हो, मानसिक जगत का आदर कर सकने का औदार्य न हो तो ऐसी परिस्थिति में क्या यह अधिक अच्छा नहीं होगा कि दोनों पक्ष एक-दूसरे की आँखों से दूर रहकर सम्मानित उन्नति करें। प्रायः ऐसा देखा गया है कि अलग हो जाने पर बिलकुल टूटे हुए सम्बन्ध भी पुनः स्थापित हो जाते हैं और यह दूरी अनावश्यक कटुताओं और क्लेशजनक स्थितियों के परिमार्जन में सहायक सिद्ध होती है।'

२५. सम्मिलित-परिवार का नव-निर्माण

भला क्यों--

आजकल बहुत कम नव दम्पत्ति सम्मिलित पारिवारिक जीवन को पसन्द करते हैं। प्रथम तो नवयुवक विवाह तभी करते हैं जब कि वे कमाने लगे हों और कन्या के माता-पिता भी अब ऐसा ही वर ढूंढ़ते हैं जो अपने पाँवों



पर खड़ा हो। यह आम शिकायत है कि सास, नन्दों वाले घर में यदि बहू को जब कि उसका पति पढ़ता हो, उनका मोहताज होकर रहना पड़ता है, उसका जीवन दूभर हो जाता है। ऐसे उदाहरण देखने में कम नहीं मिलेंगे, जहाँ बहू को अकेले ही घर का सारा धन्धा सम्भालना पड़ता है। वह सुबह मुँह अंधेरे

उठकर चूल्हा जलायेगी, नाश्ता तैयार करेगी, उसके बाद खाना पकाने के पश्चात सब को जिमाकर तब कहीं आधा दिन बीते खुद खाने बैठेगी। तीन बजते-बजते दोपहर का चौका उठा कि शाम का चाय पानी का दौर लगा, और रात की रसोई खतम होते-होते ११ बजें, तो भी जल्दी ही समझो। दोपहर को घड़ी भर बहू अगर खाली बैठी दिखाई दो, सास ने आवाज लगाई—'बहू जरा मेरे सिर में तेल तो लगा दे'। छोटी ननद आई—'ओ भाभी, जरा हमारे स्कूल की सिलाई तो खतम कर दो, कल दिखानी है।' बड़ा देवर आया—'भाभी कितनी बार कहा है, हमारा स्वेटर अधूरा पड़ा है, परसों मैच है, उसे कल तक जरूर खतम कर देना।'

बेचारी बहू किस-किस का काम करे ? यथाशक्ति सब का करने पर भी उसे यश नहीं मिलता। ब्याह से पहले उसने सितार बजानी सीखी थी, जब से ब्याही आई है सितार कोने में ही पड़ी है, उस पर गर्द की परत चढ़ी हुई है। अगर किसी तरह समय निकालकर सितार बजाने लगे, तो सास नन्दों की आलोचना का ही अन्त न होगा—"अरी बहुरिया क्या गजब आ गया। यहाँ सारा काम पड़ा है, मेरे बुढ़ापे के हाथ-पाँव हैं, कितना काम करूँ, मेरी टहल भला क्या करोगी तुम्हें तो गाने-बजाने से ही फुरसत नहीं। माँ-बाप ने लाड़ली को सारंगी थमाकर यहाँ भेज दिया, अच्छा होता कुछ घर का धन्धा सिखाया होता। मैं न बताऊँ तो रसोई बनानी भी न आये…"

पर यही उपदेश प्रवीण माताजी अपनी बेटी के प्रति अति दयालु और विचारशील जननी बन जाती हैं। बेटी २० वर्ष की होने को आ गई, पर कालेज जाने और बनाव-शृङ्गार करके सखी-सहेलियों के संग चुहलपने से ही उसे अवकाश नहीं मिलता। उसको गृह-कार्य में दक्ष बनाने की माताजी को कभी सूझी ही नहीं। लाड़ली को रसोई में देख, घबड़ाकर कह उठती है—'अभी नन्ही मुन्नी है, हट परे चौके में क्या कर रही है, हाथ जल जायेंगे, पढ़ाई करते-करते ही दिमाग खाली हो गया, यहाँ धुएँ में आँखें फोड़ने आई है। चल वहीं मेज पर खाना भिजवाती हूँ। खेलने-खाने के दिन हैं, अभी से चूल्हा-चक्की में सिर देने की जरूरत नहीं है।'

बाप खाना खाने आये हैं, बेटी ने जाकर पानी का गिलास रख दिया, चटनी, मुरब्बा लाकर परोस दिया, बस बाप समझते हैं हमारी बेटी बड़ी सयानी है। घर के काम में हाथ बटाती है।

छोटे-छोटे बहिन-भाई भी बड़ी नन्द के सिखाये में भाभी के पीछे सी० आई० डी० के सदृश लगे रहते हैं। भाभी ने क्या खाया, आज किसे पत्र लिखा, भैय्या ने भाभी को क्या लाकर दिया आदि रिपोर्ट नोन-मिर्च लगा कर पहुँचानी इन्हीं बच्चों का काम है। माँ समझती है मेरे बच्चे बड़े चतुर हैं। क्या उसने कभी यह भी सोचा है कि अपने बच्चों की इस प्रकार की लगाई-बुझाई प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देकर वह उनके चरित्र का कितना पतन कर रही है ? बड़े होकर भी वे पर-छिद्रान्वेषी बने रहेंगे। बचपन की कुटिलता, चुगलखोरी, द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, पर-पीड़न आदि दुर्गुण उनको आगे जाकर कभी भी एक सरल हृदय नागरिक नहीं बनने देंगे? कोई आश्चर्य नहीं, यही बाल-गोपाल बड़े होकर अपनी पत्नी का पक्ष लेकर अपनी कुटिलता प्रिय माता की न केवल उपेक्षा ही करेंगे अपितु अपमान तक करने से भी नहीं चूकेंगे।

गृहिणी घर की रानी है। अगर वह बहू और बेटियों के साथ एक-सा व्यवहार करें, तो सम्मिलित परिवार-प्रणाली बहुत कुछ सफल हो सकती है। कहते हैं कि एक म्यान में दो तलवारें रखी जा सकती हैं, पर एक घर में दो स्त्रियाँ चैन से नहीं रह सकतीं। इसके मूल में स्त्रियों की सहज ईर्ष्यालु प्रवृत्ति कहर मचाती है। गृहस्वामिनी ने अपनी सास के हाथों जो अत्याचार सहे हैं, उनका बदला वह अपनी बहू पर निकालती है, क्योंकि पुरुषों ने स्त्रियों का क्षेत्र केवल घर की सीमा के अन्दर ही रख, उनकी दिलचस्पी और कार्य-क्षेत्र के दायरे को बहुत संकुचित कर दिया है अतएव घर में प्रधानता प्राप्त करने के लिए उसमें परस्पर द्वन्द्व चलता है। अगर ससुर कमाता है और पुत्र आर्थिक रूप से उसके अधीन है तो बहू की दुर्दशा होती है, अगर पुत्र का राज्य घर में चलता है और बहू घर की कर्ताधर्ता है, तब माता को अधीन होकर रहना पड़ता है, सास ससुर के कान भरकर अपना जोर जमाती है, जब कि बहू बेटे को सिखाकर माँ-बाप से उसका मन फिराती है।

इकाई को बनाये रखने के लिये—

ये दोनों प्रवृत्तियाँ ही बुरी हैं, चाहे बूढ़ी माँ सताई गई हो या नवयौवना बहू की उमंगें कुचली गई हों। आजकल घरों की तंगी और आर्थिक कठिनाइयों को देखते हुए यह वांछनीय है कि सम्मिलित कुटुम्ब-प्रणाली को सफल बनाया जाय। इससे खर्चे की बचत भी बहुत होगी। मान लें तीन परिवार

हैं, तीनों मिलकर ३००) मासिक किराया देकर एक अच्छा-बड़ा घर ले सकते हैं, जबकि दिल्ली जैसे शहर में १००) में उन्हें अलग-अलग केवल दो-दो कोठरियों का घर मिलेगा। उन सबके लिए एक रसोई, एक ड्राइङ्ग रूम और एक डाइनिंग रूम पर्याप्त होगा। अगर घर की तीनों स्त्रियाँ काम बाँट लें, एक ही नौकर रखकर ऊपर के काम का सहारा लिया जा सकता है। इस प्रकार दो नौकरों की तनख्वाह बच जायेगी। यहाँ तक कि तीनों परिवार एक मोटर का खर्चा भी मिल-जुल कर सम्भाल सकते है। गृह-व्यवस्था में परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है। एक कोओपरेटिव संस्था के ढँग पर सम्मिलित परिवार का गृह-प्रबन्ध होना चाहिये। मान लें किसी घर में दो बहू-बेटे, और चार छोटी नन्द-देवर है। कमरों का बँटवारा इस प्रकार हो कि दोनों बहू-बेटों को दो कमरे दे दिये जायँ, बच्चों के लिए एक कमरा और एक कमरा गृहस्वामी और स्वामिनी को मिले। एक कमरे में ड्राइंग रूम और खाने-पीने का प्रबन्ध कर लिया जाय। घर का काम योग्यता और सुविधानुसार बाँटना उचित होगा। अगर घर में एक नौकर है, उसके जिम्मे झाड़-पोंछ और ऊपर का काम सौप दिया जाय। जबकि दोनों बहुएँ और सास मिलकर रसोई, बच्चों की देखभाल, पढ़ाई और खाना परोसना, कपड़े धोना, तथा सिलाई-बुनाई का काम सँभाल लें। चतुर गृहिणी इस बात का अवश्य ध्यान रखे कि जब बेटों के घर आने का समय हो बहुओं को उससे कुछ पहिले ही उनके स्वागत की तैयारी करने की छुट्टी दे दे।

हर एक दम्पत्ति का यह मन होता है कि हम साथ खायें, साथ घूमने जायँ। अतएव बच्चों को पहले खिलाकर, भोजन सभी साथ में खायें तो भी मित्रता और प्रेम का एक सुन्दर वातावरण घर में बना रहता है। भोजन के समय ही सभी परिजनों को एक साथ खाने-पीने और हँसने-बोलने का अवसर मिलता है। दिल खोलकर बातचीत करने और हास्य-विनोद में दिल की छिपी नाराजगी मिट जाती है। जिन घरों में पर्दे का रिवाज हो, वहाँ पुरुष एक साथ भोजन करें और सास बहुओं को लेकर भोजन करे, इसमें भी बहुत कुछ आनन्द बना रहता है।

गृहिणी को चाहिए पारी-पारी से बहुओं को अपने पति के साथ बाहर घूमने-फिरने के लिए न केवल अवसर ही दे परन्तु प्रोत्साहित करे। अगर कोई बहू गाने-बजाने या चित्रकारी की शौकीन है, उसे इसमें उन्नति की

सुविधा दे। सास-बहू के घर के झगड़ों की चर्चा किसी अड़ौस-पड़ौस में नहीं करनी चाहिए। इसमें जग-हँसाई होती है। जहाँ तक हो सके आपस में ही झगड़े का निपटारा कर लेना चाहिए। सास यह सोचे कि अभी यह नादान है, अनुभव और परिपक्वता से समझ आजाये। बहुओं को भी यह याद रखना चाहिए कि यह हमारी माता तुल्य है, हमारे पूज्य पति की जननी है, सभ्यता और धर्म के नाते यह हमारी मान्य है। जिस घर मे सास बहू का दुलार करती है और बहू सास का मान करती है, वहाँ कभी झगड़ा होता ही नहीं।

बहू-बेटों की पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक स्वाधीनता नष्ट हो, इस बात का सास-ससुर को विशेष ध्यान रखना चाहिये। जमाना पलटा खा रहा है। साथ ही लोगों के आदर्श और विचार भी बदल रहे हैं। अतएव गृहिणी के जमाने में जो बात निर्लज्ज समझी जाती थी अब वही सभ्यता मानी जाती है। पहले जमाने में अपने बच्चों को माँ-बाप के सामने गोदी में लेना निर्लज्जता समझी जाती थी। जो लड़का अपनी स्त्री की बीमारी या आराम का ध्यान रखने की चेष्टा करता वह जोरू का गुलाम समझा जाता था, पर अब ये सब दकियानूसी ख्यालात छोड़ने पड़ेंगे। अगर सास-ससुर जमाने के साथ चलेगे तभी वह बहू-बेटियों के विश्वासपात्र तथा मित्र बन सकेंगे।

अब बहू-बेटे पर नादिरशाही शासन करने का ख्याल छोड़ना होगा। पिछले जमाने की बात और थी। उन दिनों लड़के-लड़की के माँ-बापों के सहमत हो जाने पर गुड्डे-गुड़ियाँ सदृश्य उनका विवाह कर दिया जाता था। आजकल आपका बेटा अपनी पसन्द की जीवन संगिनी ढूँढ़ कर लाता है, आप भी अपनी बेटी को उसके होने वाले पति के रूप, गुण, स्वभाव आदि परखने का मौका देती हैं। विवाह से पहले लड़के-लड़कियों को अपनी राय देने का मौका दिया जाता है। फिर विवाह के बाद उनसे वही पुराने आदर्श और रिवाज की पाबन्दी करवाना भूल है।

माँ-बाप का यह कर्तव्य है कि अपने बच्चों को इस योग्य बनायें कि उनका शारीरिक और मानसिक विकास पूर्ण रूप से हो सके, वे अपने डैनों पर उड़ना सीखें, बड़े होकर अपना बोझा खुद सँभालें। बच्चों के आगे उनका अपना भविष्य है, उसके जिम्मेदार वे खुद बन सकें। माँ-बाप के त्याग

या कर्तव्यपरायणता का यह मतलब नहीं है कि वे अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर औलाद के लिए अपने बुढ़ापे को दुखदाई बना लें। बुढ़ापे में सन्तान का मोहताज नहीं होना चाहिए, सम्मिलित पारिवारिक जीवन की असफलता का एक यह भी बड़ा भारी कारण है।

जब लड़के कमाते हों, और यदि वे माँ-बाप के साथ रहना चाहें, उनको चाहिए कि वे घर के किराये, नौकर-चाकर, रसोई का खर्च अपने मेहमान और दोस्तों का आकस्मिक खर्च आदि में हिस्सा बटायें। अच्छा हो कि घर के खर्च का हर मास हिसाब रखा जाय और अपने-अपने हिस्से का खर्च बेटे अपनी माँ को महीने के आरम्भ में ही दे दें।

घर-प्रबन्ध में अगर कोई परिवर्तन करना उपयुक्त समझा जाय, शान्ति से बैठकर सब जने राय दें और जिधर बहुमत हो वह फैसला सबको मान्य होना चाहिए।

माता-पिता और बहू-बेटों की परस्पर शासक और शासित की भावना न रखकर मित्र के सदृश रहना चाहिए। परस्पर एक दूसरे के दुख-सुख में सहयोग देने, घर के छोटे बच्चों में दिलचस्पी लेने और एक दूसरे की सुविधा और मान-सम्मान का ध्यान रखने से यह मित्रता बनी रहनी सम्भव है। पारिवारिक कल्याण की भावना की ओर सभी जागरूक रहें। एक दूसरे की बुराई को भूलकर, गुणों की प्रशंसा करने का अवसर ढूंढ़ना चाहिए।

सास-ससुर और बहू-बेटे दोनों दलों के पूर्ण सहयोग से ही सम्मिलित पारिवारिक जीवन सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं। अगर सास-बहू की कटु आलोचक है या बाप बेटे के प्रति उदासीन है, उस स्थिति में संयुक्त परिवार का प्रयत्न ही व्यर्थ है या एक पार्टी दूसरे पर आर्थिक रूप से निर्भर है और अनचाहा बोझ है, वहाँ भी असफलता और अशान्ति ही रहेगी। अगर परस्पर विचार और आदर्शों में इतनी भिन्नता और अन्तर है कि एक दूसरे के रंग-ढंग फूटी आँख नहीं सुहाते, उस दशा में भी एक ही घर में रहना असम्भव है।

अगर कोई काम बाध्य होकर करना पड़े, वहाँ उत्साह फीका पड़ जाता है। जिस परिवार में माँ-बाप ने अपने बाल-बच्चों के संग मित्रतापूर्ण व्यवहार रखा है, जमाने के परिवर्तनों के साथ वे भी बदल गये हैं, अपनी

सन्तान के नवीन दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करते गये, उस परिवार में परस्पर सहयोग और प्रेम बना रहा है। बचपन में जो, माँ-बाप पथ-प्रदर्शक के रूप में थे अगर वे ही आगे जाकर बच्चों के हितैषी सलाहकार और मित्र बन जाते है तो इससे अधिक सुन्दर प्राचीन और अर्वाचीन प्रतीकों का संगम भला कहाँ हो सकता है।

आज घर-घर में इसी सुन्दर संगम को सफल बनाने की चेष्टा की जानी चाहिए। इससे पारिवारिक असुविधाएँ बहुत कुछ हल हो जायेंगी। नवयुवक समाज पहले आदर्श सम्मिलित परिवार स्थापित करने में सफल होने की चेष्टा करे, बाद में आदर्श नगर और देश बनते देर न लगेगी। देश के नव-निर्माण में पहले गृहस्थी का नव-निर्माण होना अधिक जरूरी है। वृद्ध और नवयुवकों का जब पूर्ण सहयोग होगा, समाज की बहुत-सी कुरीतियाँ भी दूर हो जायेंगी। नवयुवकों का सहयोग पाकर वृद्ध अपने में नवजीवन की स्फूर्ति अनुभव करेंगे, जब कि अनुभवी वृद्धों के साए में रहकर नवयुवक गुमराह होने से बच जायेंगे। अतएव आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थी का नव-निर्माण तेजी के साथ किया जाय।

२६. हमारी बालिकाएँ और वयःसन्धिकाल

वयःसन्धि का समय बहुत ही नाजुक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। अगर इस काल में माताएँ कन्याओं का ठीक ढंग से मार्ग-प्रदर्शन करने में असफल रहती हैं तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास असन्तुलित ही रह जाता है। अधिक प्रेम और बेकायदा लाड़ प्यार कन्याओं को उच्छृङ्खल बना देता है और अधिक रोक-टोक और आलोचना उन्हें कटु, प्रतिक्रियावादी, उदास, सुस्त तथा नीरस बना देती है। इस आयु में माताओं को अपनी कन्याओं के प्रति एक हमदर्द एवं समझदार सखी की तरह व्यवहार करना चाहिए, ताकि अपने हृदय की उथल-पुथल तथा शारीरिक समस्याओं के विषय में वे अपनी माता से निस्संकोच कह सकें। इस प्रकार उनका मन भी हल्का हो जायेगा और स्वयं को एक सच्ची हमदर्द और शुभ-चिन्तिका के हाथों में छोड़कर वे अपने को सुरक्षित अनुभव करेंगी। युवावस्था में किसी का विश्वास, प्रेम और प्रशंसा पाने की प्रबल कामना जागृत हो जाती है। यह स्वभाविक ही है। इसलिए माताओं को चाहिए कि इस प्रकार का व्यवहार करें कि कन्या की कोमल भावनाओं को ठेस न लगे। उन्हें कुसंग से बचाकर अच्छी हमजोलियों से मिलने, खेलने तथा प्रेम-प्रदर्शन करने की सुविधाएँ दें। इस आयु में सखी-प्रेम बहुत महत्व रखता है। दूसरी बात यह है कि कन्या को दिलचस्प कामों में व्यस्त रखा जाये। आलस्य और अकेला-पन इस आयु में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकर है।



आनेवाले आवश्यक शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों की उन्हें सही और ठीक ढंग से जानकारी दो जाय नहीं तो बचपन की अज्ञानता का फल उन्हें आगे जाकर भोगना पड़ता है।

हमारे देश में १२ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक की आयु तक कन्या का

वय:सन्धिकाल समझा जाता है। खान-पान, रहन-सहन, घर का वातावरण तथा खानदानी विशेषता इन सब बातों पर कन्या के यौवन का उभार निर्भर होता है। जैसे ही यौवन के कुछ चिह्न शरीर में दृष्टिगोचर हों। माता का यह कर्तव्य है कि वह कन्या को नारी के शारीरिक धर्मों का ज्ञान करवा दे। मुझे कई एक ऐसी अबोध कन्याओं का पता है जो प्रथम बार ऋतुमती हुई तो इतनी घबड़ा गई कि घण्टों रोती रहीं। किसी किसी ने तो यह समझा कि उनके अन्दर कोई फोड़ा फूट पड़ा है। कई को यह गलतफहमी हो गई कि वे किसी भयंकर बीमारी की शिकार हो गई है।



जिन कन्याओं का १२-१३ वर्ष की आयु में मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है, वे एक दो बार अनियमित रूप से रजस्वला होती है। इस तथ्य का एक कन्या को पता नहीं था। जब दो-तीन मास उसका मासिक धर्म बन्द रहा तो वह बहुत डर गई, क्योंकि उसने सुन रखा था कि गर्भ रहने पर ही मासिक धर्म बन्द होता है। वह एक एंग्लो-इंडियन बालिका थी। वह अपनी माता के पास गई और उससे अपनी चिंता प्रकट की। उसकी माता बहुत ही शक्की स्वभाव की थी। उसने उसे लॉछन लगाना आरम्भ किया और कहा बता, तूने किस लड़के से हेल-मेल बढ़ाया और उससे तेरी कहाँ तक घनिष्ठता है ? असल में बात कुछ नहीं थी। कन्या बहुत ही अबोध थी। अपनी माँ की डाँट-डपट से उसे इतना दु:ख हुआ कि वह पुरुषों की छाया से भी डरने लगी और उसने आजीवन विवाह नहीं किया।

हमारी अधिकांश बालिकाएँ अज्ञानतावश भी दु:ख सहन करती हैं। अशिक्षित होने के कारण वे उसी को अपना भाग्य तथा विधि का विधान समझ लेती हैं। इन बालिकाओं के अलावा हमारी अधिकांश शिक्षित बालिकाएँ भी यौवनावस्था के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन से बिलकुल ही अनिभिज्ञ है। माता के द्वारा यह ज्ञान उन्हें बड़ी सरलता से प्राप्त हो सकता है जिससे भविष्य में उन का जीवन सुखमय हो सके। एक षोडशी के जीवन में यौवनावस्था

में पदार्पण करते समय कुछ अकस्मात परिवर्तनों के कारण एक बहुत ही कठिन अटपटी स्थिति पैदा हो जाती है।

यौवनावस्था के प्रथम चिह्न मासिक धर्म तथा कुछ शारीरिक उभार और परिवर्तन हैं। उनके साथ उनके जीवन का रंग ही कुछ बदला हुआ सा जान पड़ता है। मनोवैज्ञानिक 'बेल' का कहना है 'शरीर की कुछ ग्रंथियों के कारण ही युवती की भावना में अन्तर दृष्टिगोचर होने लगता है। इस समय की भावुकता का कारण उनका यौवन है जिसका सम्बन्ध अण्डाशय के रासायनिक स्राव से है। इस भावना के साथ ही युवती पुरुष जाति की ओर आकर्षित हो जाती है। काम की इच्छा बाहरी उत्तेजना के बिना भी उत्पन्न हो सकती है।'

इस चंचलता के साथ ही इन्द्रियों में भी चैतन्य का अनुभव होने लगता है। इस भावना के वशीभूत हो युवती अपने उद्‌गार बाहर निकालने का प्रयत्न करती है। इस समय एक योग्य पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती है। यह अवस्था जीवन में स्वाभाविक ही है। हमारे समाज में यह समस्या पहले इस रूप में कभी नहीं उठी क्योंकि अधिकाँश जातियों में प्रायः यौवनावस्था में पदार्पण करते ही कन्या विवाह-बन्धन में बाँध दी जाती थी और अपने पति को ही गुरू समझ अपनी सब समस्याएँ सुलझा लेती थी। शिक्षक और माता-पिता का धर्म है कि इस अवस्था को स्वाभाविक तथा प्राकृतिक समझकर कन्या को इस प्रकार की शिक्षा दें कि वह अपना चित्त किसी उपयोगी कार्य की ओर लगा सके। युवकों से पृथक रखने और धार्मिक बन्धन के कारण ऐसी भावना उत्पन्न न होंगी यह सोचना ठीक नहीं, इसका होना स्वाभाविक है इसे रोका नहीं जा सकता। सुन्दर वातावरण के द्वारा हम मस्तिष्क को भटकने से रोक सकते हैं और अच्छा मार्ग दिखा सकते हैं। इसी का हमें अधिक ध्यान रखना चाहिए।

यौवनावस्था में स्त्री प्रायः पुरुष जाति को आकर्षित करने का प्रयत्न करती है। कभी बराबर हँसकर और इसके विपरीत कभी रोने का स्वाँग कर वह पुरुष को अपनी ओर खींचना चाहती है। अपने रोने का कारण उसे स्वयं भी विदित नहीं होता। पूछने पर यही उत्तर मिलता है—'पता नहीं क्यों मेरी रोने की ही इच्छा होती है।' उपर्युक्त भावों द्वारा वे प्रेम और दया की कामना करती हैं। यह भावना इतनी तीव्र हो जाती है कि निराश होने पर उनकी दशा शोचनीय हो जाती है। कभी वे अपने से ऊँची श्रेणी वाले पुरुषों

को बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखती है और उनके सम्मुख नीचे से नीचा काम करने में भी उन्हें गर्व होता है। यह भी प्रेम प्राप्त करने का एक ढंग है। उपर्युक्त बातों द्वारा हमें यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि उन्हें किसी और उपयोगी कार्य में लगाना परम आवश्यक है। जिनका जीवन बेकार बँधा हुआ नहीं है उनके लिए यह इतना कठिन नहीं, किन्तु जो विचित्र स्वभाव की हैं वे तो वास्तविकता को भूलकर एक कल्पना का ही संसार अपने लिए रच लेती हैं।

कुछ काल बाद उन्हें यर्थाथता की अनुभूति होती है और उनका आकर्षण पुरुष की शारीरिक सुन्दरता पर प्रायः निर्भर हो जाता है और वही उनका आदर्श बन जाता है। कभी वे अपने से कहीं बड़े वयस वाले व्यक्ति के प्रेम में दीवानी हो जाती हैं। मानसिक अनुसन्धान के अनुसार उपर्युक्त बातें बिलकुल स्वाभाविक समझी गई हैं।

मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के द्वारा यह कहा गया है कि प्रायः युवती अपना अधिकाँश समय एक काल्पनिक सुन्दर स्वप्न की रचना में ही व्यतीत करती है। उसीसे उसे सन्तोष प्राप्त होता है। उसके स्वप्न अधिकतर भावुक होते हैं। यह अवस्था कुछ अधिक वयस के लोगों में नहीं पाई जाती और न इसमें कुछ सार ही होता है। इसकी नींव ही निराली है। इस भावना में एक प्रकार की घबराहट भी रहती है। इस घबराहट का कारण अज्ञानता ही है।

उपर्युक्त बातों के पूर्ण ज्ञान द्वारा हमें यह भली प्रकार विदित हो जाना चाहिए कि यौवनावस्था के विकारों को सावधानी से हटाकर अपनी बालिका का चित्त हम ऐसी दिशा में आकर्षित करा दें कि वह एक स्वस्थ और होनहार युवती बन सके।

कन्याओं का मानसिक स्वास्थ्य—

ग्रन्थियों के स्राव के कारण वयःसन्धिकाल में कन्याओं का मानसिक स्वास्थ्य भी गड़बड़ा जाता है। कन्याएँ सुघड़ और सुन्दर हों इसी पर उनके जीवन की सफलता निर्भर नहीं है, पर इस बात की भी बहुत जरूरत है कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी सुन्दर हो। देखने में आता है कि बहुत-सी बहनें अपने शारीरिक रूप-रंग की अधिक परवाह करती हैं, पर उनका मानसिक रूप बहुत कुरूप होता है। शारीरिक स्वास्थ्य का निखार जैसे व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देता है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य भी स्वभाव

के आकर्षण को बढ़ा देता है और व्यवहार को सन्तुलित बनाये रखता है। जिन कन्याओं को अपने मनोवेगों पर काबू रखना नहीं आता वह व्यवहार-ज्ञान से शून्य होती हैं। अवसर देखे बिना भोंडे ढँग से वह दूसरों की आलोचना कर अपना द्वेष, ईर्ष्या, और क्रोध प्रकट कर देती हैं। उनकी कुढ़न और असहिष्णुता की कमजोरी छिपी नहीं रहती। उनका प्रेम आसक्ति का रूप धारण कर लेता है और उनका मोह उनको हित-अहित का ज्ञान भुला देता है।

मानसिक अस्वस्थता—

मनोवेगों के ऐसे तूफानी प्रदर्शन का कारण बचपन की कुछ समस्याएँ होती हैं। उपेक्षित, दवाई हुई, तिरस्कृत कन्याएँ बड़ी होकर मानसिक अस्वस्थता का शिकार होती हैं। उनके दबे हुए मनोवेग प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट होते हैं। इसके अतिरिक्त अधिक लाड़-दुलार से सिर पर चढ़ाये हुए बच्चे ढीठ, दम्भी, असहनशील तथा नाजुक मिजाज बन जाते हैं। मैंने देखा है कि ऐसी कन्याओं का पारिवारिक जीवन बहुत विफल रहता है। वे संयुक्त पारिवारिक जीवन में निभ नहीं सकतीं, और अपने पति से आये दिन उनकी खटपट रहती है। अधिक दुलार से उनका मिजाज सात आसमान पर चढ़ा रहता है। दूसरों में दोष निकालने की प्रवृत्ति होने के कारण अपने पति तक की कोमल भावनाओं को ठेस पहुँचाते उन्हें दुःख नहीं होता। कलह के बिना उनकी दिनचर्या अधूरी रहती है। नीचे मैं कुछ उदाहरण मानसिक अस्वस्थता के देती हूँ। जिनसे आपको सब बातें स्पष्ट हो जायँगी—



मालती अपने माँ-बाप की इकलौती बेटी थी। माँ ने मोह में पड़कर मालती को लाड़-प्यार में सिर पर चढ़ा लिया। वह बचपन से मनमौजी बन गयी। प्रत्येक बात में पहले अपना लाभ सोचती। सब के प्यार पर मेरा हक है, सब सुविधाएँ मेरे लिए हों, सब बातों में मुझे प्रधानता मिले, जो मुझे अच्छा लगे सब लोग वही करें और कहें, सब मेरी हाँ-में-हाँ मिलायें, ऐसा

वह चाहती थी। पढ़ने-लिखने में उसका जी नहीं लगता था। वह मैट्रिक में तीन बार फेल हुई। हर बार अपनी विफलता का दोष दूसरों पर मढ़ देती, 'टीचर ने कुछ पढ़ाया ही नहीं था', 'इस साल कोर्स से बाहर पूछा गया', 'इस साल पेपर बहुत कड़ाई से जाँचे गये', अन्त में 'स्कूल खराब है, यहाँ कुछ पढ़ाई नहीं होती' कहकर मालती ने स्कूल भी छोड़ दिया।

दो-तीन साल वह बैठी रही। जब शादी की बातचीत चली तो मालती की माँ को अपनी लाड़ली के लिए एक ऐसे घर की तलाश थी जहाँ उनकी लाड़ली सब पर हुकूमत कर सके और जहाँ सास का दुखड़ा न हो। संयोग से ऐसे घर मालती का विवाह हुआ जहाँ उसकी सास मर चुकी थी और दो छोटे भाई और थे। मालती में इतनी सहनशीलता कहाँ कि वह छोटे देवरों की शैतानियाँ क्षमा कर देती। हार कर बच्चों को उनके मामा के यहाँ भेज दिया गया। फिर आये दिन ससुर की शिकायतें जड़ी जाने लगीं कि 'ये देर से आते हैं—पूजा-पाठ में बैठे रहते हैं।' फिर पुराने नौकर को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया। चौबीस घण्टे की कचकच से तंग आकर एक-दो बार पति ने मालती को समझाने की चेष्टा की, पर मालती लगी कर्कशा की तरह लड़ने। घर में उसके कोई नौकर नहीं टिका, ससुर किसी आश्रम में जाकर रहने लगे, पति अधिक समय आफिस में रहते थे। अड़ौस-पड़ौस के लोगों से मालती की बनती न थी—बस सामाजिक 'बायकाट' किये जाने पर मालती का जीवन दूभर हो गया। वह कुढ़-कुढ़ कर आधी हो गयी। दिन-रात रोती रहती, पति को जली-कटी सुनाती, आत्महत्या की धमकी देती और एक दिन सचमुच में उसने कुएँ में गिर कर आत्महत्या कर ली।

राधा को अपने रूप का बड़ा घमण्ड था। मेरे सामने किसी दूसरे के रूप-गुण की कोई भला कैसे प्रशंसा कर सकता है ? उसकी छोटी बहन देखने में साधारण थी, पर थी वह गुणवती। पढ़ने-लिखने, घर के काम-धन्धे में चतुर थी। उसका जीवन बड़ा सफल रहा, पर राधा ने ईर्ष्या और असहन-शीलता के कारण अपना जीवन दुःखी बना लिया। जिस-तिस के रूप की आलोचना करने में वह हिचकती नहीं। अगर उसका पति अपनी भावज, साली या किसी पड़ौसिन के गुणों की तारीफ कर देता तो बस उसी दिन घर में महाभारत मच जाता। पति पर हजार तोहमतें जड़ दी जातीं।

शान्ति जल्दी घबड़ा जाती है। जरा-सा दुःख पड़ा नहीं कि वह अधीर

हो जाती है। एक बार उसके बच्चे को टाइफाइड हो गया। उसके पति की जान आफत में आ गयी। शान्ति दिन-रात चिन्ता में डूबी रहती, न उसने खाने की परवाह की, न सोने की। जब उसके पति समझाते कि तुम्हारा इस तरह दिन-रात चिन्ता में घुलने से तो बच्चे का कुछ भला होगा नहीं, उल्टा तुम्हारा उतरा हुआ मुँह, आँखों में आँसू देख बच्चा घबड़ा जाता है। डर के मारे उसका आत्म-विश्वास कम हो रहा है। मुसीबत के समय धीरज रखना चाहिए ताकि पूरी शक्ति से उसका मुकाबला किया जा सके। पर शान्ति की समझ में यह बात नहीं बैठी। एक दिन थकावट से चूर शान्ति को रसोई में चक्कर आ गया। चौखट पर जाकर उसका सिर टकराया। पन्द्रह दिन तक वह बिस्तर पर पड़ी रही।

ज्ञानवती बहुत ही नाजुक मिजाज है। यदि उसकी माँ, दादी, बुआ या सहेलियाँ उसे हँसी-मजाक में भी कुछ कह दें तो वह दस-दस दिन तक मुँह फुलाये फिरती है। वह अपनी गलती कभी नहीं स्वीकार करती। इसी कारण उसकी किसी से नहीं बनती।

कमला वैसे बड़ी दयालु है, परन्तु उसका गुस्सा बड़ा तेज है। जरा-सी बात उसकी मरजी या शान के खिलाफ हो जाय तो वह आपे से बाहर हो जाती है। बात की जाँच किये बिना वह जो सामने पड़ा उसी पर उबल पड़ती है। बच्चों को पीट देगी, जो हाथ में आया वही उठा कर मार देगी। गुस्से में आकर वह अपने गुरुजनों को बुरा-भला कह बैठती है। उसके पति को कमला के स्वभाव की यह तेजी बहुत अखरती है। वह कई बार कह चुका है कि 'तुम लाख सुन्दर और गुणवती हो, पर तुम्हारे इस एक दोष ने सब पर पानी फेर दिया है।'

सरोज किसी के संग समझौता नहीं कर सकती, दूसरों की सलाह या सुझाव उसे कभी स्वीकार नहीं। सोचे-समझे बिना वह दूसरों की बात को काटने की चेष्टा में रहती है। दूसरे की सही बात न सुनकर वह अपनी गलत बात का ही समर्थन करती जायगी। कोई उसकी बात को झूठी साबित कर दे, यह उसे सहन नहीं है।

स्नेह, दूसरों की प्रशंसा, सफलता और सम्मान देखकर मन-ही-मन कुढ़ती है। उसे दूसरों को नुकसान पहुँचाने, उनकी निन्दा और आलोचना करने

में आनन्द आता है। उसका स्वभाव छिद्रान्वेषी है। दूसरों के सुनाम और नेकी पर वह कालिख पोतने की ताक में रहती है। बच्चों और नौकरों से घर का भेद पूछेगी फिर मौका देखकर लोगों से लड़ाई छेड़ देगी और उनको व्यंग तथा तानों से छेदेगी। अड़ौस-पड़ौस के सब उससे कतराते हैं। घर वाले उसे सनकी कहते हैं। खुशामद से खुश हुई तो अपना सब कुछ दे देगी पर यदि किसी बात से चिढ़ गयी तो घर वालों को गालियाँ देने लगेगी।



उपर्युक्त सभी बातें मानसिक कुरूपता के चिह्न हैं। इस कुरूपता ने महिलाओं के बाह्य सौन्दर्य को नष्ट कर दिया है। उनके परिजन उनसे परेशान हैं। पति या भाई-बाप उन्हें अपने साथ बाहर या मित्रों में ले जाकर खुश नहीं, क्योंकि उन्हें यही डर लगा रहता है कि न जाने किस समय इनको सनक उठ खड़ी हो और ये भोंड़े ढंग से अपना क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि प्रकट करने लगें।

इनकी सखियाँ इनसे कतराती हैं। समाज में ये अप्रिय हैं। रूप-रंग और हुनर होते हुए भी इनका व्यक्तित्व फीका-फीका है, भला क्यों ? पुष्प की सुन्दरता ही काफी नहीं उसमें सुगन्ध भी होनी चाहिये। सो मानसिक सुन्दरता या स्वास्थ्य एक ऐसी ही सुगन्ध है जो प्रत्येक नारी के व्यक्तित्व को सुगन्धित बनाती है, उसको व्यावहारिक कुशलता प्रदान करती है और जीवन को सफल तथा आकर्षक बनाती है। मनुष्य समाजिक प्राणी है। जब तक किसी महिला को समाज के संग हिल-मिल कर रहना नहीं आता उसका कल्याणकारी रूप सामने नहीं आता। दूसरों को निभाने के लिए प्रेम, सेवा, दया, धीरज और सहनशीलता का होना बहुत जरूरी है। आजकल हमारे पारिवारिक जीवन की असफलता का सबसे बड़ा मुख्य कारण यह भी है कि कन्याओं को मानसिक स्वस्थता बनाये रखने की शिक्षा नहीं दी जाती।

२७. माताएँ पथ-प्रदर्शक बनें

वयःसन्धि की अवस्था में कन्याओं के जीवन में १२ वर्ष से लेकर १५ वर्ष तक की आयु में जो महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं उनके परिणामस्वरूप बाल्यकाल की अल्हड़ता और युवावस्था के रंगीन स्वप्न एक अजीब उलझन पैदा कर देते हैं। इससे उनका मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ा जाता है। अकारण ही कभी अचानक रुलाई आ जाती है, कभी एक खीझ और झुँझलाहट लिए हुए असन्तोष मन में भर जाता है और कभी अकारण ही एक प्रसन्नता हृदय को गुदगुदा देती है। इस समय एक योग्य पथप्रदर्शक की आवश्यकता होती है। यह जिम्मेदारी माँ, बड़ी बहन या भावज पर आ पड़ती है। जो कोई भी कन्या की संरक्षिका हो, उसका यह कर्तव्य है कि जब कन्या १०-११ वर्ष की हो जाय, अच्छी पुस्तकों, उपदेशात्मक कहानियों, आदर्श चरितावलियों तथा व्यक्तिगत अनुभव और आदर्शों द्वारा उसका मन पवित्रता और आदर्श जीवन की सुन्दरता और सार्थकता की ओर आकर्षित करे। इस प्रकार उसे आनेवाले परिवर्तनों के लिए शनैः शनैः तैयार करे। शारीरिक विज्ञान, नारीत्व, मातृत्व तथा वैवाहिक जीवन का महत्व प्रत्येक कन्या को माता द्वारा ही समझाया जाना उपयुक्त होगा; परन्तु इस बात की विशेष सावधानी रखनी होगी कि उसका व्यवहार कन्या के प्रति बहुत सहानुभूति पूर्ण हो। अन्यथा कन्या डर से अपनी माँ से बहुत-सी बातें छिपाकर अपनी सहेलियों से जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करेगी।



प्रायः देखने में आता है कि जब कन्या इस वयःसन्धि की अवस्था को पहुँचती है, तो बहुत-सी अज्ञान माताएँ उन पर अधिक कड़ाई से शासन

करने में विश्वास करती हैं। अपने ऊपर माँ की डाँट-डपट बढ़ती देख तथा अकारण ही झिड़कियाँ और रोक-टोक होते देख कन्या का मन असन्तोषी हो विद्रोह करने लगता है। फलस्वरूप वह अपनी माँ से दूर-दूर रहने की चेष्टा करती है और उसे अधिकांश समय सखी-सहेलियों के साथ गुजारना अच्छा लगता है। वह भाई और बाप के दो प्रशंसा के शब्दों को सुन सहर्ष उनका काम तत्परता से कर देगी; पर माता की डाँट-डपट से उसका मन कुण्ठित हो उठता है। माँ के इस असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार और कन्या की नासमझी से माँ और बेटी के बीच एक अभेद्य दीवार-सी खड़ी हो जाती है, जिसका परिणाम बहुत बुरा होता है। कन्या या तो माँ की अवहेलना करने लगती है, जिससे माता के दिल में भी कटुता आ जाती है, अथवा डर और असन्तोष से कन्या का जीवन घुटने लगता है, जो उसकी स्वस्थ बढ़न और जीवन के स्वाभाविक विकास के लिए हानिकारिक है।

माता की ऐसी भूलों से ही मैंने कई घरों में अशान्ति फैली हुई देखी है। कानपुर में हमारे पड़ौस में एक महिला रहती थी। उनके पति प्रोफेसर थे। परिवार में २० वर्ष का बड़ा लड़का तथा १६ और १४ वर्ष की दो कन्याएँ थी। बड़ी लड़की पढ़ने में अधिक होशियार और समझदार होने के कारण भाई की अधिक दुलारी थी। छोटी बहन सिलाई और गृह-कार्य में अधिक रुचि रखती थी, अतएव माँ का उसपर अधिक प्रेम था। जब तक बहनें छोटी थीं, तब तक तो माँ का पक्षपात कुछ अखरता नहीं था ; परन्तु जब बड़ी लड़की वयःसन्धि की अवस्था पर पहुँची, तो माँ अज्ञानवश उस पर अधिक कड़ाई और डाँट-डपट करने लगी। सहानुभूति के लिए बहन भाई के पास अपना दुःख रोती तथा माँ के पक्षपात की आलोचना करती। इस बात को लेकर माँ-बेटी में मनोमालिन्य बढ़ गया। छोटी बहन माँ की अधिक विश्वसनीय बन गई। भाई के बोर्डिंग-हाऊस में चले जाने पर बड़ी बहन को अपना दुख-सुख कहने को कोई साथी न रहा। वह माँ से अधिक खिंची-खिंची रहने लगी। उसे सुधारने के लिए माँ ने एक गलत तरीका पकड़ा। वह छोटी बहन की अपने पति के पास बढ़ाई और बड़ी की कड़ी आलोचना करती। फलस्वरूप बड़ी लड़की अन्दर-ही-अन्दर घुलने लगी और उसे हिस्टिीरिया के फिट आने शुरू हो गए। घर-गृहस्थी तथा माँ-बाप और बहन से उसे एक प्रकार की नफरत-सी हो गई। मिजाज चिड़चिड़ा

हो गया। मुँह मुरझा गया। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण पढ़ाई-लिखाई में भी मन न लगता। जब कभी भाई छुट्टियों में घर आता, उसकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए यह कन्या और भी रोती। रोते-रोते उसे फिट आ जाते। रोग अधिक बढ़ता देखकर बाप ने भाई-बहन का पास बैठना बन्द करा दिया। भाई अपनी इस बहन का कुछ-कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने में सफल हुआ था। उसने अपनी मौसी को जो कि एक समझदार स्त्री थीं, इलाहाबाद से बुलाकर माता-पिता को समझाकर इलाज के बहाने बहन को उनके साथ भेज दिया। बातचीत तथा हँसी-खेल में परस्पर एक मित्रतापूर्ण समझदारो पैदा करने के बाद मौसी ने कन्या के मन की बहुत-सी बाते जान लीं। कुछ ही दिनों में कन्या की सब बीमारी दूर हो गई। पर जब भी माँ के पास भेजने की चर्चा चलती, वह उदास हो जाती। बाद में एक योग्य वर ढूँढ़, पिता की रजामन्दी ले, कन्या का विवाह कर दिया गया और अब तो वह एक स्वस्थ और कर्त्तव्यपरायण माता है।

वयःसन्धि की अवस्था में शरीर की कुछ ग्रन्थियों के सक्रिय होने से कन्याओं की भावनाओं और काया में परिवर्तन होता है। उसकी इस समय की भावुकता का कारण उसका यौवन है, जिसका सम्बन्ध अण्डाशय के रासायनिक स्राव से है। चंचलता के साथ ही अंगों और इन्द्रियों में एक प्रकार की चैतन्यता और प्रफुल्लता भर जाती है। इन्हीं परिवर्तनों के कारण युवती अपने उद्‌गारों को प्रकट करने की चेष्टा करती है। कभी हँसकर और कभी रोने का स्वांग रचकर वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। अपने रोने का कारण उसे स्वयं ही पता नहीं होता। इन अकस्मात् परिवर्तनों से वह खोई-खोई सी रहतो है। पूछने पर यही उत्तर मिला है कि पता नहीं, मेरा मन अंदर से रोता-रोता सा क्यों रहता है ? उपयुक्त भावों द्वारा वह प्रेम और दया की कामना करती है। भावना इतनी तीव्र होती है कि निराश होने पर उसकी दशा शोचनीय हो जाती है। अतएव समझदार माता का यह कर्त्तव्य है कि वयःसन्धि आने पर कन्या के साथ बहुत ही सहानुभूति तथा प्रेमपूर्ण व्यवहार करे। इस समय कन्या की शक्ति, रुचि तथा उत्साह को किसी विशेष कार्य में केन्द्रीभूत करना परमावश्यक है। पढ़ने-लिखने, सीने-पिरोने, गृह-कार्य, गाना-बजाना, नाच, नाट्य-कला, चित्रकारी आदि जिस किसी ओर भी उसकी अभिरुचि दिखे, उसमें उसे

उत्साहपूर्वक लगा देना चाहिए।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि युवती प्रायः अपना अधिकतर समय एक कल्पनिक सुन्दर स्वप्न की रचना में ही व्यतीत करती है। इसमें उसे एक प्रकार का सन्तोषप्रद आनन्द मिलता है। उसके वे स्वप्न अधिकतर मनोनीत और भावपूर्ण होते हैं। इन रंगीन स्वप्नों में छोटी उम्र की युवतियाँ ही डूबी रहती है। इसकी नींव ही निराली है। इस भावना में एक घबराहट भी मिली होती है। विवाह हो जाने पर मनचाहा साथी पाकर उसका यह प्रेम यथार्थता का अनुभव करता हुआ एक स्थिर धारा में बह निकलता है। इस अवस्था में युवतियों का पुरुष के प्रति आकर्षण होना अथवा उनसे अपने रूप और गुणों की प्रशंसा सुनने की चाह होना स्वाभाविक ही है। कन्याओं में अपने सुन्दर भविष्य को सफल बनाने की भावना बड़ी प्रबल होती है। बुद्धिमती माताएँ उनके भावों के विकारों को दूर करके एक योग्य पथ-प्रदर्शक का कर्त्तव्य करती हुई, इस सुखद स्वप्न को सफल करने में उन्हें सहयोग दें।



आज से २५ पूर्व माताओं के लिए कन्याओं की समस्या उतनी कठिन नहीं थी, जैसी अब है। यौवनागमन के पहले ही उनके विवाह का प्रबन्ध कर दिया जाता था। इससे पूर्व कि युवावस्था के शारीरिक परिवर्तन उन्हें उलझनों में डालें, उनकी सभी समस्याएँ पति द्वारा सुलझा दी जाती थीं। चहारदिवारी में माता-पिता की कड़ी देखभाल में पली उन युवतियों को जीवन के प्रलोभनों से संघर्ष करने का अवसर ही नहीं आता था। पर आजकल यह बात नहीं है। कन्याओं के विवाह की समस्या उतनी सरल नहीं रही। अब सामाजिक तथा आर्थिक स्थितिओं के कारण पूर्ण युवती होनेपर ही उनके विवाह की सम्भावना है। पर्दे की प्रथा भी अब हटती जा रही है। कन्याओं को पढ़ने-लिखने, पहनने- ओढ़ने तथा मिलने-जुलने की सुविधा अब अधिक है। अतएव अब उन्हें प्रलोभनों का भी सामना करने का मौका

मिलेगा, इससे वे अछूती नहीं रह सकतीं; परन्तु बिना माता के सहयोग के वे इन प्रलोभनों से बचकर नहीं निकल सकतीं। इसलिए माताओं को चाहिए अपनी कन्याओं के साथ एक प्रकार का सखी-भाव स्थापित करें; उन्हें स्कूल, कालेज, मार्ग तथा भीड़-भाड़ में शीलता पूर्ण व्यवहार करना सिखायें। अपने भाई-बहनों तथा अन्य युवक सम्बन्धियों के सामने ठीक ढंग से उठना-बैठना और बातचीत करने का सलीका उन्हें आना चाहिए।

आजकल के रीति-रिवाजों को दोष देने से अथवा शिक्षा और आजादी को बुरा-भला कहने से माताएँ कन्याओं को गुमराह होने से नहीं बचा सकतीं और न ही अपने जमाने की खूबियों को बखानतीं तथा आजकल के जमाने को कोसती हुई वे अपनी जिम्मेदारियों से ही बरी हो सकती हैं। आवश्यकता तो अब इस बात की है कि वे अपनी अनुभव तथा व्यवहार-बुद्धि के सहारे कन्याओं को ठीक रास्ते ले चलें। उनकी भूलों को हमदर्दी के साथ सुधारें और उन्हें सही ढंग से शिक्षित करके कर्त्तव्य-पथ पर बढ़ने के लिए उत्साहित करें।

एक बार मैंने अपने एक सम्बन्धी नवयुवक से अविवाहित रहने का कारण पूछा तो बोला—"कोई मन लायक मिली नहीं, इसी कारण अभी तक विवाह नहीं कर सका।"

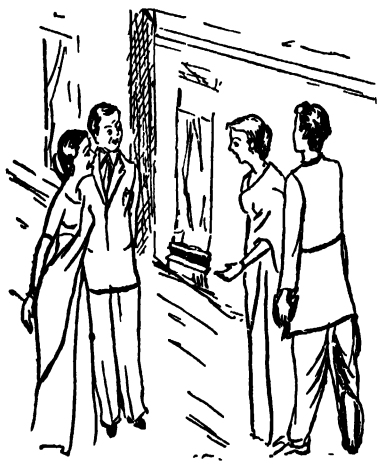
"परन्तु तुम्हारे जैसे कमाऊ और सच्चरित्र सज्जन के लिए क्या कन्याओं का अभाव है ?" मैंने पुनः आश्चर्य से पूछा।

"शायद बात ठीक उल्टी भी हो सकती है कि मैं स्वयं को किसी के अनुकूल नहीं बना सका हूँ।"

"क्या पहेली बुझा रहे हो।" मैंने फिर टोका।

"पहेली नहीं सच बात कहता हूँ। आजकल की शिक्षा ने नारी के नारीत्व का ही हरण कर लिया है। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं अपनी शारीरिक और मानसिक उन्नति करने या स्वयं को एक सफल जीवन-सहचरी, आदर्श माता तथा उपयोगी नागरिक बनाने के ध्येय से नहीं, अपितु डिग्री की दुम लगाकर, अपनी चटक-मटक तथा यौवन के सहारे एक कमाऊ नवयुवक को पति के रूप में फँसाने के लिए, ताकि बाद में उसकी कमाई पर गुलछर्रे उड़ा सकें। ऐसी स्त्रियाँ बच्चों को आया की गोद में डाल तथा रसोई का भार 'खानसामे' के जिम्मे छोड़ सारा दिन गप्प-शप्प तथा शापिंग और आराम में गुजार देती हैं या फिर शाम को क्लब में जाकर ब्रिज खेला या डांस किया

तथा अपनी चटख-मटख तथा शोखपन से दस अन्य नौजवानों को अपनी ओर आकृष्ट कर अपनी पापुलेरिटी का सिक्का जमा दिया। ऐसी पत्नी से तो मेरी निभने से रही। इन लोगों ने कम पढ़ी-लिखी परन्तु सन्तोषी घरेलू स्त्रियों के जीवन में भी असन्तोष पैदा कर दिया है। वे सोचने लगी हैं कि ये रंग-बिरंगी तितलियाँ कितनी आजाद तथा सुखी हैं! हमारा तो जीवन ही व्यर्थ जा रहा है। इसलिए आये दिन वे भी अपने पतियों से लड़ती हैं कि 'खैर मनाओ मैं एक सीधी-सी मिल गई हूँ कि जिस करवट बिठाते हो बैठती हूँ, अगर कोई नई रोशनी की मिल जाती तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाता।' कुछ पतियों ने तंग आकर दखल देना ही छोड़ दिया है, फलस्वरूप ये अर्धशिक्षित नारियाँ भी बिना सोचे-समझे फैशन का रंगीन चश्मा लगाकर भेड़-चाल का अनुकरण कर रही हैं। यह सब देखकर मैं सोचता हूँ कि अनब्याहा ही अच्छा, ब्याह कराकर नाहक की मुसीबत कौन गले बाँधे ?"



शिक्षा का उद्देश्य समझें—

अधिकांश नौजवान इसी प्रकार का अनुभव कर रहे हैं। कुछ तो विवाह से डरे हुए हैं, कुछ नई रोशनी की चकाचौंध में आकर पहिले तो बँध गए पर बाद में जीवन की कड़वाहट से घबड़ा उठे हैं। आजकल की नवयुवतियाँ अपने लक्ष्य से भटक रही हैं। इस समय देश के पुनर्निर्माण में, समाज को सुसंगठित करने, संस्कृति का पुनरुत्थान करने तथा बच्चों के चरित्र निर्माण में माताओं के सहयोग की बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षा की प्रणाली में भी सुधार वांछनीय है। आधुनिक ढंग की स्त्री-शिक्षा परिवार, समाज और देश में कहाँ तक सुख और शान्ति फैलाने तथा स्त्रियों के चरित्र विकास में कहाँ तक सफल हुई है यही देखना है। सोलह सत्तरह वर्ष की आयु तक कन्याएँ कालिज में आती हैं। स्कूलों की शिक्षा भी ऐसी होती है कि किताबी ज्ञान तथा रटाई और सिर खपाई करके वह जिस-किस तरह से मैट्रिक या हायर सैकन्डरी परीक्षा पास

कर पाती हैं। अगर इन कन्याओं का इंटैलिजैंट टैस्ट लिया जाय तो बहुत कम लड़कियाँ पास हो पायेंगी। उनका साधारण ज्ञान, किसी विषय पर अपना दृष्टिकोण प्रकट करने की योग्यता, किसी प्रश्न को स्वयं सुलझाने की बुद्धि तथा भाव प्रकाशन शक्ति बहुत ही कम विकसित प्रतीत होती है। उनका व्यक्तित्व बहुत दबा-दबा सा रहता है। उनकी बातचीत तथा मुहावरे और हरकतें उनकी शीलता पर चोट करती हैं। कहने को तो स्कूलों में डोमेस्टिक साइंस तथा नर्सिंग और फर्स्टएड भी सिखाई जाती है, परन्तु इन विषयों का कन्याओं को कुछ व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो पाता। अधिकांश सिलाई वे अपनी भाभी या माता की मदद से पूरी करती हैं। साल भर में दो-तीन कपड़े सीने मात्र से या सप्ताह में एक बार खीर, दलिया बनाने से सिलाई या भोजन बनाना नहीं आ सकता। कन्याओं की पढ़ाई का कैरीकुलम लड़कों के कैरीकुलम से भिन्न होना चाहिये। उन्हें स्कूल में इस प्रकार की शिक्षा दी जाय कि वे सभी विषयों का अपनी मातृभाषा में साधारण ज्ञान प्राप्त कर सकें। साहित्य और कला में विशेष उन्नति करें, साथ ही शिशु पालन, घर का हिसाब-किताब रखना, घर सजाना, किफायत से गृह-व्यवस्था करनी, तीज-त्यौहार तथा अन्य सांस्कृतिक बातों का महत्व, सभा-सोसाइटी में व्यवहार करना, प्रीति-भोज आदि का आयोजन, अतिथि सत्कार, किसी छोटी-मोटी संस्था या सभा का संचालन, साहित्य-गोष्ठी या उत्सवों का आयोजन, समाज की उन्नति तथा ग्राम सेवा का काम आदि की शिक्षा भी उन्हें भली प्रकार दी जाय।



क्या आपकी कन्या की शिक्षा सोद्देश्य है ?—

यदि केवल नौकरी पाने या दिखावटी आकर्षण बढ़ाने की दृष्टि से ही कन्याओं को शिक्षा दी जाती है तो उससे उनका चरित्र-विकास नहीं हो सकता। कन्या की रुचि, योग्यता तथा रुझान का अध्ययन करने के

पश्चात् तद्नुरूप विषयों का चुनाव होना आवश्यक है। लगभग ८० प्रतिशत कन्याओं का कैरियर विवाह करके जीवन-निर्वाह करना होता है। किसी पुरुष की कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने का किसी भी स्त्री को कोई अधिकार नहीं है, जब तक कि उसके बदले में वह भी सुचारु रूप से गृहस्थी की सँभाल तथा बच्चों का पालन-पोषण ठीक ढंग से करती हुई अपने पति का मुसीबतों में हाथ न बटाये, समाज में अपने पति को गौरवान्वित न करे तथा इस प्रकार अपनी सेवा-परायणता, प्रेम, सदाचार, सहनशक्ति तथा त्याग का परिचय देती हुई अपने परिवार तथा समाज की उन्नति न करे।

स्कूली शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् कन्याओं की बुद्धि तीव्रता (इन्टैलिजैण्ट टेस्ट) और कार्य-कुशलता की भी परीक्षा होनी चाहिए। जो कन्याएँ अधिक मेधावी हैं वे तो डाक्टरी अथवा उच्च शिक्षा के लिए जा सकती हैं, परन्तु अधिकांश कन्याएँ, जिन्होंने आगे जाकर विवाह करना है, उन्हें कुछ इस प्रकार के गृह-उद्योग सीखने चाहिएँ जिनके द्वारा अपने अवकाश के समय में वे धनोपार्जन कर सकें; तथा निस्सहायावस्था में अपने बच्चों का भी पेट भर सकें यथा—बागबानी; दूध की डेरी चलाने का काम; मुर्गा-मुर्गी तथा अन्य पशु-पक्षी पालकर धनोपार्जन करना; होटल चलाना; या पेयिंग गेस्ट रखकर आमदनी बढ़ानी; कसीदे और कढ़ाई-बुनाई का काम; आचार; चटनी, मुरब्बे, बड़ी, पापड़, मिठाई आदि बनाना; रँगाई-धुलाई का काम, मिट्टी के खिलौने अथवा अन्य इसी प्रकार के गृहोद्योग जिनमें अपने अवकाश का समय लगाया जा सकता है। अपने मौहल्ले के विक्रय केन्द्र में तैयार माल को विकवाने का प्रबन्ध किया जाय। इस केन्द्र का भार कुछ ऐसी चतुर स्त्रियों पर हो जो व्यापार सम्बन्धी ज्ञान रखती हों तथा टाइप करना तथा हिसाब-किताब रखना जानती हों। मौहल्ले की योग्य स्त्रियाँ मिल कर अपने इस केन्द्र को सफल बनाने और ग्राहकों की माँग को समझकर तदनुसार माल तैयार करवाने का जिम्मा लें। इस प्रकार गृहोद्योग की उन्नति भी होगी, साथ ही सस्ता माल भी मिलेगा। इसके अतिरिक्त जो स्त्रियाँ गाने-बजाने, चित्रकारी, गृह की सजावट, बच्चों की सँभाल, नर्सिंग तथा अन्य इसी प्रकार के कामों में होशियार हैं वे भी अपने अवकाश के समय में अपनी योग्यता के बल पर धन और सुनाम दोनों कमा सकती हैं।

कुशल गृहिणी बनाने के लिये—

हमारे देश में अधिकांश स्त्रियाँ अपना अवकाश का समय गप्पों में गुजारती हैं। अच्छा हो कि अवकाश के समय का सदुपयोग करने की शिक्षा उन्हें स्कूलों में ही दी जाय। साथ ही खेल-कूद तथा व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य की उन्नति की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाय। इसके अतिरिक्त दूरंदेशी, तात्कालिक बुद्धि, कार्य-कुशलता, हाजिर-जवाबी, भाषण देने की योग्यता आदि की भी परीक्षा ली जाय। इस प्रकार की शिक्षा मिलने पर कन्याओं के स्वास्थ्य तथा स्वभाव दोनों में लचक आ जायगी और वह परिस्थिति के अनुकूल बनकर काम कर सकेंगी। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् अपने शिक्षण को कार्यान्वित करने के लिए कन्याओं का गुट बनाकर अपने अड़ौस-पड़ौस में तथा छुट्टियों में अपने गाँवों में जाकर सामाजिक सेवा करनी चाहिए। वे अपने परिवार की अशिक्षित प्रौढ़ स्त्रियों का भी सहयोग प्राप्त करें, साथ ही उनमें भी पढ़ने-लिखने का शौक पैदा किया जाय। यह काम पढ़ी-लिखी कन्याओं का है कि अपनी माँ, काकी, भाभी, मौसी आदि को भी प्रगतिशील बनाकर अपने साथ ले चलें। अन्यथा वे लंगर बनकर प्रगतिशीलों को पीछे खीचेंगी। अगर इन प्रौढ़ स्त्रियों को थोड़ी-बहुत शिक्षा देकर शिशु पालन तथा नर्सिंग के काम की शिक्षा दी जाय तो समाज का बहुत कुछ उपकार हो सकता है। इससे बच्चों तथा माताओं का स्वास्थ्य उन्नति कर जायेगा तथा घरों और मौहल्लों में अधिक सफाई रहने लगेगी।



बारह वर्ष तक की आयु तक लड़के-लड़कियों को सह-शिक्षा दी जा सकती है, इसी प्रकार कन्याओं की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी लड़कों के कालिजों में ही हो सकता है। इस समय देश को कन्याओं के लिये कालिज नहीं अपितु स्कूलों की आवश्यकता है तथा आत्म-निर्भर होने और अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करके कुछ आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति

करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए ऐसे गृहोद्योग-शिक्षा केन्द्र तथा कला-केन्द्रों की अधिक माँग है, जहाँ पर दो साल कन्याएँ इस प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें कि उनका जीवन उपयोगी बन जाय, वे अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारियों को भली प्रकार सँभाल सकें और सच्ची सहचरी, आदर्श माता तथा उपयोगी नागरिक बन कर सफल जीवन व्यतीत करने में सफल हो सकें। विवाह से पूर्व ऐसे केन्द्रों में दो साल ट्रेनिंग प्राप्त करना प्रत्येक कन्या के लिए अनिवार्य होना चाहिए ताकि प्रत्येक नौजवान को, जो कि इन केन्द्रों में शिक्षा प्राप्त कन्या से विवाह करे, इस बात का पूरा भरोसा हो कि मेरी पत्नी सच्चे अर्थ में जीवन-सहचरी प्रमाणित होगी, मेरे परिश्रम की कमाई उसके हाथ में जाकर सार्थक हो सकेगी। कन्याओं की स्कूली शिक्षा में सुधार होने पर ही परिवार तथा समाज का नव-निर्माण होना सम्भव होगा, पर इसके लिए माताओं का सहयोग बहुत जरूरी है।

स्त्री शिक्षा के विषय में बहन सुचेता कृपलानी के विचार उल्लेखनीय हैं। वह कहती हैं कि स्त्री और पुरुष को समान राजनीतिक अधिकार हैं, अब प्रश्न हमारे सामने यह है कि क्या स्त्री के लिए कोई विशेष शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। मैं चाहती हूँ कि स्त्रियों को किसी भी ऐसी शिक्षा से वंचित न किया जाय जिसके लिए उसमें योग्यता और रुचि है। कोई भी स्त्री यदि विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त करने योग्य हो तो उसे वह अवसर अवश्य मिलना चाहिए। मेरा विश्वास है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद अधिकतर स्त्रियाँ घरेलू जिन्दगी बितायेंगी। इसलिए उन्हें ऐसी शिक्षा भी अवश्य दी जानी चाहिये जिससे वे भली-भाँति अपना घर चला सकें और अच्छी गृहिणी और माता बन सकें। गृह-विज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, शिल्प-कला आदि की पूरी शिक्षा उन्हें मिलनी चाहिये। बचपन से ही ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये जिससे भविष्य में वे समाज में अपना उचित स्थान ले सकें और अपने कर्तव्य सुन्दरता से निभा सकें।

माताओं की जिम्मेदारी—

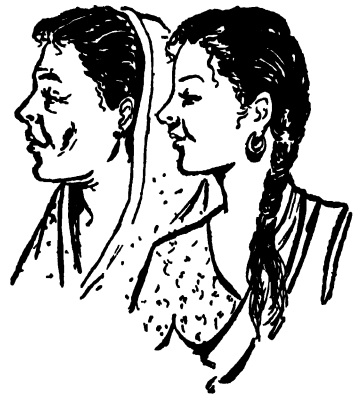
कन्या की शिक्षा ठीक ढंग से हो रही है कि नहीं, इस विषय में माता की विशेष जिम्मेदारी है। केवल स्कूली शिक्षा से समस्या हल नहीं हो सकती। जब तक परिवार में नव-निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण और उदाहरण पेश नहीं किया जाता कन्याएँ कसौटी पर खरी नहीं उतर सकतीं। जरू-

रत तो इस बात की है कि पहले जीवन का ठीक ध्येय समझने में भूल न की जाये, तभी शिक्षा का ठीक चुनाव और उद्देश्य पूर्ण हो सकता है। जो माताएँ अर्थ-प्रधान संस्कृति की पुजारिन हैं, वे अपनी बच्चियों को उसी प्रकार का पाठ पढ़ायेंगी। पर धर्म प्रधान संस्कृति की पुजारिन माताएँ अपनी कन्याओं को ऐसी आदर्श शिक्षा देंगी कि वे एक सफल गृहिणी, समझदार माँ और कर्तव्यपरायण पत्नी बनकर अपने परिवार और समाज में बरकत, खुशहाली और सौन्दर्य बिखेरती हुई जीवनयापन कर सकें। अतएव कन्याओं की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उनके उपरोक्त ढँग से सफल जीवन बिताने के योग्य बना दे।

देखने में आता है कि गृहिणी के कर्तव्य निभाने की योग्यता न होने के कारण पढ़ी-लिखी और खाते-पीते घर की शिक्षिता कन्याओं के लिए गृह-व्यवस्था का भार सम्भालना एक मुसीबत का कारण बन जाता है। इसलिए घर-वर के चुनाव के विषय में उनकी शर्तें होती हैं कि लड़का कोई अफसर हो, जिसके पास मोटर, बंगला और नौकर-चाकर भी हों। वह खुद भी किसी चलचित्र के हीरो की तरह रूपवान, साहसी, रोमेंटिक और खुश मिजाज हो। ये सब शर्तें पूरी न हो सकने के कारण कई कन्याओं की विवाह योग्य आयु बीत जाती है, परिणाम-स्वरूप बाद में उनका जीवन समाज के आलोचना का विषय बन जाता है।

२८. कौन उत्तरदायी है ?

कहावत है—'एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।' इसी प्रकार आजकल कुछ ऐसी पढ़ी-लिखी तितलियाँ भी निकली हैं, जिन्होंने शिक्षा तथा शिक्षित बहिनों का नाम कलंकित कर रखा है। यह तितलियाँ सम्मिलित कुटुम्ब में रहकर खुश नहीं होतीं। घर का काम इनसे होता नहीं। अपने गुरुजनों के प्रति इनके हृदय में आदर अथवा प्रेम का भाव है ही नहीं। यही वजह है कि उनकी नसीहत उन्हें कटु लगती है। आदर्श पति से उनका तात्पर्य ऐसे पुरुष से है जो उनकी हाँ में हाँ मिलाकर सब कर्तव्यों की ओर से अपना मुँह फेरकर केवल इनके सुख का साधन बना रहे।



अब इनकी दिनचर्या भी जरा सुन लीजिये। सुबह सात-आठ बजे सो कर उठीं। महीन-सी आवाज में पुकारा—"बैरा, चाय लाओ।" पलंग पर ही देवी जी के लिए चाय आ गई। उसके पश्चात बाथरूम में घुसीं तो दो घण्टे पश्चात् सजधजकर निकलीं। इन्हें इस रूप में देखकर तो कोई यही कहेगा कि स्टेज पर अभिनय करने के लिए कोई अभिनेत्री सजी है। मोटर मँगवाई और अपनी जैसी दो-चार सहेलियों के घर चक्कर लगा कर १२ बजे तक लौटीं। आते ही खानसामे को हुकुम हुआ—मेम साहिब के लिए टेबल तैयार करो। पति महाशय ऑफिस में बैठे हैं, काम-काज के आदमी घेरे हुए हैं। परन्तु खाने की टेबल पर मेम साहिब की घण्टी की आवाज सुन कर मजाल है कि वह हाजिर न हों। श्रीमती जी की इच्छा के विरुद्ध करना



घर में कलह पैदा करना है। भोजनोपरान्त चार बजे तक आराम करने के पश्चात् फिर शृंगार-घर में दो घण्टे समय लगा, टेनिस रैकेट हाथ में उठा श्रीमती जी अब क्लब की ओर चलीं। जाते समय पति महाशय से एक बार पूछ लिया, 'डार्लिंग, क्या तुम आ रहे हो ?' बिचारे डार्लिंग को अवकाश हुआ तो साथ हो लिये अन्यथा मेम साहिब अकेली ही चल दीं। हर्ज भी क्या है, क्लब में क्या मनबहलाव के लिए नवयुवक कम हैं ? एक ही मनुष्य की संगति में दिन भर रहकर जी भी तो ऊब जाता है। क्लब में १, २ घण्टा ब्रिज खेलीं। उनकी गपशप भी अन्य स्त्रियों की निन्दा, वस्त्राभूषण, घुमा-फिराकर अपनी बढ़ाई आदि तक ही सीमित रहती है।

घर आकर पतिदेव से वस्त्राभूषणों के लिए झगड़ा किया, 'मेरे पास तो आजकल के लेटेस्ट डिजाइन के कपड़े आदि ही नहीं हैं, क्या पहन कर चार लोगों में जाऊँ ?' महीने के आरम्भ में वेतन आने पर मेम साहिब जी शापिंग को गईं, आधी से अधिक कमाई अनावश्यक फैशन और मनबहलाव की वस्तुओं के भेंट होगई। श्रीमान जी की भला क्या मजाल है कि वह अपने पसीने की कमाई को इस प्रकार स्वाहा होते देख चूं भी कर जायें। वह बिचारे कर्जे की चिन्ता में घुले जाते हैं, पर वहाँ है कौन जो उनसे हमदर्दी करे। अपने सूने-पन में वह अकेले ही कलेजा थामकर रह जाते हैं। अपनी किस्मत को रोते हैं और कोसते हैं—उस शिक्षा को जिसको पाकर यह स्त्रियाँ अपने को शिक्षित कहने का साहस करती हैं तथा घर की बरबादी का कारण और गृहस्वामि के लिये एक बोझ बनती हैं।

इससे पहले कि यह बात मैं आपको बताऊँ कि इसका उत्तरदायी कौन है, मैं दो शब्द सद्शिक्षा के विषय में कहना उचित समझती हूँ। सद्शिक्षा वही है। जिससे हमारी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति हो, किताबी शिक्षा के साथ ही साथ जो हमें आज्ञाकारी सन्तान, आदर्श पत्नी, योग्य गृहिणी तथा कर्तव्यपरायण माता बनना सिखाये। स्त्री परमात्मा की सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है। उसके ऊपर गृहस्थ तथा समाज का बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। मर्यादाभ्रष्ट होकर वह उसी प्रकार अपने दोनों कुलों को नष्ट करती हैं जैसे मर्यादा को उल्लंघन करके बहने वाली सरिता अपने कूलों को।

कन्याओं की शिक्षा केवल स्कूलों से ही आरम्भ नहीं होती। उनकी शिक्षा का अधिकांश भाग घर की शिक्षा पर भी निर्भर होता है। कन्याओं को

फिजूलखर्ची, आरामतलब, फैशनेबल बनाने के लिए कोई भी विद्यालय अपनी गाँठ से पैसा नहीं खर्च करता, इन सब बातों के लिए उन्हें घर से ही सुविधाएँ मिलती हैं। स्कूल में वे जो शिक्षा प्राप्त करती हैं, उसको कार्यरूप में परिणित करने के लिए उत्तम क्षेत्र उनके लिए घर ही है। उदाहरणार्थ उन्हें स्कूल में यदि गृहशास्त्र, शिशु-पालन, सिलाई आदि की शिक्षा दी जाती है, तो सप्ताह में कठिनता से एक बार भोजन पकाने का अवसर आता है, दो बार सिलाई का। ४५ मिनट के घण्टे में अध्यापिकाओं ने उन्हें उस विषय में थोड़ा-सा बता दिया, अब यह माताओं का कर्तव्य है कि वह अपनी कन्याओं की रसोई के कार्य में कुछ मदद लें, उन्हें घर का हिसाब रखना सिखायें। छोटे बहिन-भाइयों के तथा अपने भी कपड़े जो उनसे बन सकें सिलवायें। छुट्टी के दिन घर की सफाई करने आदि में उनका सहयोग लें।

माताओं की यह भी चौकसी होनी चाहिए कि हमारी कन्या अपने भाई, भावज, चाची, ताई आदि गुरुजनों से किस प्रकार व्यवहार करती है ? उसकी सखी सहेलियों का आचरण कैसा है ? वह अपनी पढ़ाई-लिखाई का सदुपयोग करती है या नहीं। यह बातें ऐसी हैं, जो कि माताओं के सुधारे ही सुधर सकती हैं और इनके लिए एकमात्र वही उत्तरदायी हैं। मातायें अपनी भूल और बेपरवाही को कल के दिन शिक्षा अथवा शिक्षालय पर मढ़ें तो यह उनकी सरासर भूल है। परन्तु अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि माताएँ स्वयं ही अपनी कन्याओं को घर के कामों से बचाती हैं। वे अपनी कन्याओं पर अपना रौब या शासन रख ही नहीं सकती। ज़िद् करके, रो-धोकर कन्यायें जो चाहें उनसे करवा लेती हैं। मातायें ही अपनी कन्याओं को फिजूलखर्च और फैशन का पाठ पढ़ाती हैं। जब कन्यायें आये दिन अपनी माता को पिता से खर्च के पीछे लड़ते देखती है तो भला क्या वह यह सब न सीखेंगी ?

अपने मन को सान्त्वना देने के लिए लोग स्कूलों को ही दोषी ठहराते हैं, परन्तु मैं तो सबसे अधिक गृहशिक्षा को ही इस विषय में उत्तरदायी ठहराऊँगी। आप दही को काँसे के बर्तन में रखें और चाँदी के में भी। चाँदी के बर्तन वाला दही शुद्ध और विकाररहित रहेगा परन्तु काँसे वाला दूषित होकर हरा हो जायगा। अंग्रेजी में एक कहावत है—जिसका अर्थ है कि हमारी आदतें ही हमारा स्वभाव बनाती हैं। कन्याओं की अच्छी बुरी आदतें माता के सहवास में रहकर पड़ती हैं।

दक्षिण भारत की स्त्रियाँ अधिक शिक्षित पर साथ-ही-साथ बड़ी सुगृहिणी पाई गई हैं। वे अपनी गृहस्थी को थोड़े से खर्चे से ही बड़ी सुचारू रूप से चलाती हैं। माताओं में धर्मनिष्ठा होने के कारण उनकी सन्तान भी धर्मज्ञ, संयमी तथा भारतीय संस्कृति पर गौरव करने वाली पाई गई है। पर मुझे यह कहते दुःख होता है कि कानवेंट स्कूलों में पढ़ी अधिकांश कन्यायें अपनी संस्कृति और मर्यादा को भूलकर बड़ी तेजी से पाश्चात्य सभ्यता की ओर दौड़ रही हैं। शिक्षा और फारवर्डनेस से उनका तात्पर्य अंग्रेजी में गिटपिट करना तथा फैशनेबिल बनकर अपने कर्तव्य की उपेक्षा करना या आर्य ललनाओं के आदर्श को ताक में रखकर सभा-सोसाइटी में निर्लज्जता पूर्ण व्यवहार करना है। इस प्रकार की जो बहिनें हैं, वे कहने को तो हैं शिक्षिता, परन्तु उनमें इतनी योग्यता भी नहीं—कि अपने छोटे बहिन-भाइयों तथा बच्चों को धैर्य तथा प्रेमपूर्वक पढ़ा सकें। जब उनकी पढ़ाई का इतना भी लाभ नहीं, तो उनकी शिक्षा का आखिर कहाँ उपयोग होगा ?

उन्हें पता होना चाहिए कि जिन पाश्चात्य बहिनों की वे नकल कर रही हैं वे अपनी सन्तान की शिक्षा तथा गृह-कार्य के उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझकर निभाती हैं। समय और नियमों की पाबन्दी, ईमानदारी, सहकारिता, धर्म में दृढ़ता, देशभक्ति आदि उनमें ऐसे कई गुण हैं, जो कि हम उनसे सीख सकती हैं। केवल फ़ैशन की नकल कर हमारी दशा उस कौए की सी होगी, जो कि मोरों के पंख लगाकर मान पाने के लोभ से स्वजातीयता को भूल मोरों में जाकर अपमानित हुआ था।

अन्त में मैं फिर माताओं से कहूँगी कि वे अपनी कन्याओं को अनुचित लाड़ में बिगाड़कर उनके पैरों पर कुल्हाड़ी न मारें। उनकी बेपरवाही और ढिलाई से कन्याओं का भविष्य दुखद हो जायगा। यदि माताएँ अपना उत्तरदायित्व समझने लगें तो शिक्षा का प्रश्न बहुत कुछ हल हो जाय।

साथ ही मैं अपनी शिक्षिता बहनों से भी यह प्रार्थना करूँगी कि वे इस प्रकार की तितलिओं का बहिष्कार करें। शिक्षित समाज में लज्जित होने से उनके हौसले टूट जायेंगे। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, जिस कार्य को चार आदमी बुरा कहें, जिससे हमारी नाक कटे, उसके करने का साहस हम नहीं कर सकते। समाज की उपेक्षा करना अपने आपको उससे तोड़ना है, जो कि किसी भी सामाजिक व्यक्ति के लिए बड़ा भारी दंड है।

इस मंहगाई के जमाने में इस बात की और भी अधिक जरूरत है कि कन्याएँ गृह-कार्य में दक्ष हों। ताकि मेहनत की कमाई इस ढंग से खर्च करने की योग्यता उनमें हो कि परिवार के खाने-पीने, बच्चों की पढ़ाई और साफ-सुथरा कपड़ा पहनने की समस्या हल हो जाये। यह तभी सम्भव है कि जब कि अपने हाथ से काम करने में पढ़ी-लिखी बहनें हीनता का अनुभव नहीं करेंगी। रोटी पकाने, परोसने, बर्तन साफ करने के तरीकों में सुधार करें, ताकि काम करते समय उन्हें गन्दगी या असुविधा अनुभव न हो। पर घर का काम नौकरों पर छोड़ देना गृह-कर्त्तव्य की उपेक्षा करना और मेहनत की कमाई का अपव्यय है।

मैंने देखा है बड़े-बड़े अफसरों की स्त्रियाँ दिन भर खटिया तोड़ा करती हैं। उन्हें अपने घर की चाबियों का भी पता नहीं होता। आधी रात के समय आँधी-पानी में जब वे अपने पति और बच्चे के साथ घर पहुँचती हैं तो बाहर के ताले की चाबी को गुच्छे में ढूंढ़ निकालना एक समस्या हो जाती है। उतनी देर वर्षा में भीगते हुए पति और बच्चा गृहिणी की योग्यता पर आश्चर्य करते हुए चुप-चाप खड़े रहते हैं। और जब पता चलता है कि असली गुच्छा कमरे के अंदर मेज पर ही रह गया और ताला दबा कर बंद कर दिया गया था तब तो आप उनकी परे-शानी की कल्पना कर सकते हैं।



ऐसी पत्नी अपने पति के जीवन में केवल एक रंगी-पुती गुड़िया मात्र बनकर रह जाती है। पति की मुसीबत को वह बटा सकेगी, ऐसी आशा करनी ही व्यर्थ है। उल्टा उन्हें असुविधा न हो इसी चिंता में पति महोदय परेशान रहते हैं।

२६. क्या आपका भी ऐसा ही कटु अनभव है ?

वर ढूंढने में परेशानी क्यों ?—

जिस घर में विवाह योग्य कन्याएँ है, उनके पालकों को इस बात का पूरा अनुभव होगा कि कन्या का विवाह सम्बन्ध करते समय उन्हें कितनी



परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वर पक्ष का अप्रिय, नकारात्मक निर्णय सुनकर उनका मन टूट जाता है, वे हतोत्साहित हो जाते है। फलस्वरूप उन्हें अपनी प्यारी लड़की कलेजे पर बोझ प्रतीत होने लगती है। घर भर को यह चिन्ता लगी रहती है कि किस तरह किसी योग्य वर से इसका विवाह कर के सुख की साँस लें। जिस लड़की को लाड़-दुलार से पढ़ाया, लिखाया, अच्छा खिलाया-पिलाया, पहनाया-उढ़ाया और सुख-सुविधाओं का ध्यान रख कर पाला-पोसा, आज उसी दुलारी को योग्य लड़के देखकर अस्वीकार कर जाते हैं, यह दुःख की बात है। माँ-बाप की यह शिकायत है कि 'देखने-सुनने में साधारण लड़के भी बस यही चाहते है कि हमें हूर की परी मिल जाये। क्या कहीं कोई कारखाना है जहाँ सुन्दर नयन-नकश घड़े जाते है ? रूप-रंग तो बदला नहीं जा सकता। जैसा भगवान ने दिया वैसा है। फिर रूप रंग तो चार दिन की चाँदनी है, उम्र के साथ सब नष्ट हो जायेगा।'

जिन माँ-बाप को उपरोक्त ढँग का कटु अनुभव हुआ है उनसे मेरी

पूर्ण सहानुभूति है। पर वे यह बात भूल जाते हैं कि भगवान ने नारी को एक स्वाभाविक आकर्षण और मोहकता प्रदान की है। यदि बचपन से कन्याओं के व्यक्तित्व का बराबर ठीक से विकास किया जाये, यदि माताएँ कन्या के पालन-पोषण, खान-पान, दिनचर्या आदि में भूल न करें, यदि वे उनके शील, संकोच और सुरुचि को बनाये रखें तो प्रत्येक कन्या एक विशेष प्रकार का स्वाभाविक आकर्षण लेकर खिले। पर अधिकांश माताएँ इस ओर अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर जाती हैं। आपने देखा होगा कि माली नन्हे पौधे के थाले को सँवारता है, सींचता है, उसे तीव्र गर्मी-सर्दी से ओट में रखता है तब जाकर बरसों परिश्रम व निगरानी के बाद वह पौधा एक सुन्दर पेड़ के रूप में फल और फूलों से सजकर बगीचे की शोभा बढ़ाने योग्य होता है। जब एक निर्मूक पौधे को पूर्ण रूप से खिलाने के लिए इतना परिश्रम करना अनिवार्य है फिर भला एक कन्या के व्यक्तित्व को उभारने में माता की कितनी जिम्मेदारी होनी चाहिए, यह समझने-सोचने की बात है।

कमी किधर है ?—

मैं आते-जाते बस में कन्याओं को गौर से देखती हूँ। उनके चेहरों का अध्ययन करती हूँ, उनकी वेशभूषा को परखती हूँ। नित्य ही इस प्रकार इन सजीव अधखिली कलियों को परखने, समझने और उनके विकास संबन्धी गलतियों का अध्ययन करने का मुझे मौका प्रायः मिलता है। मुझे यह देखकर दुख होता है कि अधिकांश कन्याएँ सच्चे अर्थ में कली की तरह आकर्षक रूप से नहीं खिल रही हैं। कारण जो देखने में सुन्दर हैं भी उनका रूप रंग भी गलत ढंग की वेशभूषा और बनाव-शृङ्गार के, कारण फीका पड़ा प्रतीत होता है। यथा अधिक चटख रंग वाले कपड़े या विपरीत रंग की बेमेल पोशाक ने उनके आकर्षण को दबा रखा है। किसी लड़की के बाल बनाने का ढंग गलत होता है, कोई अपने चेहरे के अनुरूप माँग नहीं निकालने से आकर्षण खो बैठी है, कोई मुँह बिचका कर बात करती है, किसी के बैठने-खड़े होने का ढंग दोषपूर्ण है, कोई हँसते समय अधिक मुँह खोलती है, किसी के हावभाव हास्यस्पद हैं। किसी कन्या का मुँह तो सुन्दर होता है पर मुटापे के कारण वह बेडौल और आकर्षणहीन प्रतीत होने लगती है। तंग पोशाक उनके मुटापे को और भी प्रकट करती है। ऐसा लगता है मानो गोल तकिये पर तंग गिलाफ चढ़ा हो। कुछ कन्याएँ जिनका रंग उतना गोरा

नहीं है, पर यदि वह अपनी त्वचा की ठीक से सार-सँभाल करें तो अच्छी दिखें। कान के पीछे मैल, कोहनियाँ और नाखून मैल से पटे हुए और मुहासों या ब्लेक पोर्स से उनकी त्वचा खराब हो जाती है। कई कन्याएँ पसीने या मुँह की गंध के कारण अपने पास बैठे व्यक्ति के लिए असहनीय हो जाती हैं। कुछ कन्याओं को शील संकोच बनाये रख कर बातचीत करनी ही नहीं आती—भीड़ में भी वे जोर-जोर से इठला-इठला कर बोलती हैं, उनका दुपट्टा गले में रस्सी सरीखा पड़ा रहता है। उनका खुला भारी सीना बेहूदा दीखता है, पर उन्हें अपने आसपास की दुनिया की कोई होश ही नहीं होती। ऐसी कन्याएँ चाहे कितनी भी सुन्दर क्यों न हों स्त्री सुलभ लज्जा का अभाव होने के कारण वे आकर्षण हीन ही प्रतीत होती हैं।

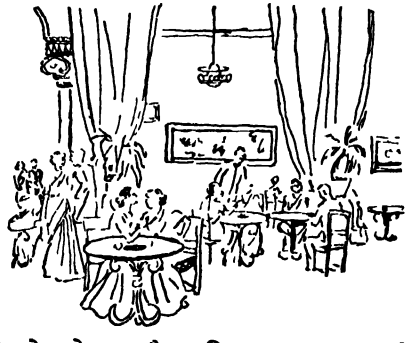
कौन दोषी ?—

कन्याओं में यह सब कुरूपता जन्म से नहीं अपितु पालन-पोषण विषयक असावधानी से पैदा होती हैं। बचपन में कन्याएँ १०-११ वर्ष की आयु तक यदि पतली हैं तो अचानक उनका मोटा हो जाना ठीक नहीं है। माना कि वयःसन्धि की आयु में कन्याएँ कुछ भर जाती हैं, पर उनका सुडौल होना स्वाभाविक और बेहद जरूरी है। यदि किसी परिवार में मुटापा है तब तो माता को और भी सावधानी बरतनी चाहिए कि कन्या को ऐसा भोजन दिया जाये कि बदन में चर्बी बढ़ने न पावे। गलत ढंग के भोजन और दिनचर्या से चर्बी उत्पन्न करने वाली ग्रन्थियाँ जब एक बार सक्रिय हो जायें फिर उन्हें काबू में करने के लिए काफी प्रयत्न करना पड़ता है। जो कन्या विवाह से पहले मोटी हो उसका विवाह होने तथा माँ बनने के बाद पसर कर बेबे बनने की पूरी सम्भावना होती है। मैंने कई नवयुवकों को कन्या के मुटापे से डर कर भी नकारात्मक उत्तर देते सुना है। एक सच्ची घटना सुनाती हूँ।



श्रीमती सिंह के तीन लड़कियाँ और दो लड़के हैं। मिस्टर सिंह एक रिटायर्ड सिविल सर्जन हैं। उनके परिवार में सभी जन लम्बे और तगड़े हैं। लड़कों के लिए लम्बा, चौड़ा व तगड़ा होना तो ठीक ही है तिस पर दोनों लड़के अच्छे कमाऊ हैं और दोनों अपने लिए सुन्दर पत्नियाँ ढूँढ़ने में सफल हुए हैं। पर जब लड़कियों के विवाह का सवाल आया तो बाप व भाइयों की पोजीशन अच्छी होने और दहेज अच्छा मिलने की संभावना होने पर भी कोई सुन्दर, कमाऊ नवयुवक उन कन्याओं से विवाह करने को राजी नहीं हुआ। डील-डौल में लम्बी होने के बावजूद भी वे मोटी थीं। दो-चार लड़कों से नकारात्मक उत्तर सुनकर बड़ी कन्या ने तो विवाह का इरादा ही छोड़ दिया और उसने डाक्टरी पास करके अपना क्लिनिक खोल लिया। बीच वाली लड़की के नयन-नकश अच्छे थे। सम्भव है विवाह से पहले वह कुछ पतली हो, पर अब तो दो बच्चों की माँ बन कर वह पूरी बेबे लगती है। उसका पति कद में उसके बराबर, रंग का साँवला और सिर से गंजा है। ससुर की मेहरबानी से उसी शहर में केमिस्ट की एक दूकान खोलकर अपनी रोजी कमा रहा है।

पर उनकी तीसरी लड़की का विवाह कहीं जमता ही नहीं। वैसे रंग में यह लड़की अपनी दोनों बहनों से गोरी है पर मोटाई के कारण वह भद्दी दिखने लगी है। एक बार मेरी सहेली के एक देवर से उसकी बात-चीत चली। देवर आर्मी में कैप्टन था। देखने में सजीला नौजवान। कसा हुआ, सुता हुआ बदन, मझोला कद-काठ, गोरा रंग घुँघराले बाल। लड़के को लड़की के पिता, भाई भावज, आदि से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा घरबार अच्छा है, लड़की देख ली जाये। एक रेस्टोरेन्ट में चाय के समय सब इकट्ठे हुए। लड़के को देखकर तो लड़की प्रसन्न हो गई, पर लड़के ने जब लड़की देखी तो उसकी सारी उमंगों पर पानी फिर गया। वैसे हम लोग भी वहाँ थे। मुझे पहली बार उस लड़की को देखने का मौका मिला था। एक ओर



उस कन्या और उसके परिजनों से मेरी पूरी सहानुभूति थी, पर दूसरी ओर यह भी विचार मन में आया कि यह जोड़ी बेजोड़ रहेगी।

लड़की वालों ने लड़के की सम्मति जानने का भार मुझे दिया। लड़के का जवाब एक ही था—"बहन, आप कैसे मुझ से ऐसी आशा कर सकती हैं कि में हाँ कह दूं ? आप ही सोचिये कि हम दोनों के कद काठ में कितना अन्तर है। ऐसा बेमेल विवाह क्या सफल हो सकता है ? जिस कन्या में कौमार्य अवस्था में कुछ आकर्षणनहीं, उसके संग मै जीवन-यापन या प्रेम-भाव कैसे बनाये रख सकता हूँ ?"

उसकी बात कटु होते भी सच थी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि लड़की की माँ को इतना शऊर होता कि लड़की को वेश-भूषा व मेकअप ठीक से करने की जानकारी दे सकती, उसे ऐसा भोजन खिलाती जिससे चर्बी न बढ़ती तो आज उस कन्या का सम्बन्ध उस नौजवान से हो जाता। लड़के के इनकार का खास हेतु यह था कि जो इस उम्र में इतनी मोटी है, जिसके घर में मुटापे की टेंडेंसी है वह कन्या जरूर विवाह के बाद मोटी हो जायेगी। कोई भी नवयुवक ऐसी कन्या से विवाह नहीं करना चाहेगा जो कद काठ में बेडौल हो, जिसे पहनने-ओढ़ने का शऊर न हो और जिसकी चाल-ढाल, बातचीत में आकर्षक न हो।

माताओं का कर्त्तव्य—

आज इस बात को ६ वर्ष बीत गये, वह कन्या अभी तक कुंआरी है—और विवाह न होने के कारण वह अपने जीवन के प्रति और भी उदासीन हो गई है। अपनी उम्र से अब वह दस वर्ष बड़ी लगती है। सोचने की बात तो यह है कि कन्याओं का रूप-रंग और आकर्षण की रक्षा न करने से उनके भविष्य जीवन का सुख नष्ट हो जाता है। यदि किसी तरह से विवाह हो भी जाये तो भी आगे जाकर उनके दाम्पत्य-जीवन में कटुता और असन्तोष पैदा होने की सम्भावना रहती है। इसलिए माताओं को चाहिए कि वह अपने कन्या के रूप-रंग, वेशभूषा, कद-काठ और आदतों के विषय में विशेष रूप से चौकस रहें। जिस तरह पुरुष के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह स्वस्थ और कमाऊ तथा विद्वान हो, उसी प्रकार कन्या के लिए भी यह बहुत आवश्यक है कि वह आकर्षक, मधुर, सुडौल, शीलवती और सुघड़ हो। प्रत्येक माता यदि चेष्टा करे तो वह ऐसी कन्याओं की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त

कर सकती है। पर इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि वह स्वयं भी चतुर व्यवहार कुशल और सौन्दर्य की रक्षा करना जानती हो। उसे रूप को निखारने, गुणों को विकसित करने, वेशभूषा और ठीक से सजने-सँवरने की जानकारी हो। किस समय, किस कद-काठ और रंग पर कैसी वेशभूषा सजेगी, किस समय कितना बनाव-शृङ्गार करना उचित होगा इसकी जानकारी यदि माताओं को नहीं है तो भला वह अपनी कन्या को क्या सिखायेंगी ? जमाना तेजी के साथ बदल रहा है। तद्नुसार ही सामाजिक रीति-रिवाज और रुचि में भी परिवर्तन आ रहा है, अतएव माताओं को रूढ़िवादिता छोड़ कर अपनी कन्याओं में ऐसे संस्कार, रुचि और आदतें पैदा करनी हैं जो आधुनिक हों, पर साथ ही कल्याणकारी और सुरुचिपूर्ण भी हों। ऐसी बातों की जानकारी के लिए तद्विषयक साहित्य पढ़ें, अनुभवी बहनों की सूझ-बूझ और जानकारी से लाभ उठायें। माँ बन जाना एक बात है पर उस कर्तव्य को निभाने के लिए योग्यता प्राप्त करना दूसरी बात है। हमारे यहाँ अधिकांश गृहिणियों का पढ़ना-लिखना, अध्ययन और कुछ सीखते रहने का शौक विवाह के बाद मानो समाप्त ही हो जाता है। यही कारण है कि वे अपनी कन्याओं को जो चाहिए सिखा नहीं पातीं। जमाने के साथ चलने में वे स्वयं भी पिछड़ी रहती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अधिकांश प्रौढ़ महिलाओं का सामाजिक और दाम्पत्य-जीवन अधूरा रह जाता है। उनकी अज्ञानता, फूहड़पन और असुन्दरता परिवार की प्रगति में बाधक प्रमाणित होती है। गृहस्वामी जब देखता है कि उनकी कन्या अपने स्वाभाविक आकर्षण, सुडौलता और सुघड़ाई के अभाव में योग्य वर पाने में असफल रहती है तो उसे अपनी पत्नी पर कुढ़न आती है। वह सोचता है यदि मेरी पत्नी समझदार होती तो क्या वह लड़की को आकर्षक और सुघड़ बनाने में असफल रहती ? मैं नीचे स्वलिखित "नारी का रूप शृङ्गार" पुस्तक से एक उद्धरण देती हूँ, उससे इस विषय में माताओं के कर्तव्य का स्पष्टीकरण होगा—

कौन से मौके पर कैसी वेश-भूषा धारण करनी, किस हद तक सजना संवरना इसका ज्ञान माताओं को अपनी बच्चियों को अवश्य देना चाहिए। छोटी आयु की कन्याएँ फूल की तरह सजी हुई अच्छी लगती हैं पर किशोरी आयु की कन्याओं की वेश-भूषा साफ-सुथरी और सादी ही अच्छी लगती है। युवतियों की तरह सजना-संवरना उन्हें शोभा नहीं देता। उनकी पोशाक

सुरुचिपूर्ण, सामाजिक मर्यादा के अनुकूल और अच्छी सिली होनी चाहिए ताकि वे स्मार्ट दीखें, पर फैशनेबुल नहीं। उनका व्यक्तित्व साफ सुथरा हो, उनके बाल ठीक से गुथे हों। यदि आपकी कन्या युवती है तो उसे सुरुचिपूर्ण बनाव शृङ्गार करने का तरीका बतायें। उनका 'मेक-अप' बिल्कुल हल्का होना चाहिए। चेहरे पर पाउडर दिखाई नहीं पड़े, लिपस्टिक भी ऐसी हल्की हो कि होठों का गुलाबी रंग स्वाभाविक लगे। आँखों में सुरमा, माथे पर छोटी-सी बिन्दी और मौसम तथा समय उपयुक्त पोशाक की किस्म और रंग हो। कन्याओं को चोली पहनने की आदत अवश्य डालें इससे उनका वक्षस्थल सुडौल बना रहेगा, पर वक्षस्थल दुपट्टे या साड़ी से ढका रहना चाहिए। नोकदार चोलियाँ पहनकर उनका प्रदर्शन करना नारी-सौन्दर्य की मर्यादा के विरुद्ध है।



कन्या को बातचीत करने का तौर-तरीका समझायें। प्रत्येक बात का अपनी समझ के मुताबिक उत्तर देना, मौलिक विषयों पर बातचीत करना और चार लोगों में शिष्टाचार के संग व्यवहार करना, मोहक अदा के साथ भाव-प्रदर्शन करना, चलना, मुस्कराना आदि से ही एक युवती के कुल घराने, शिक्षा और किस ढंग से उसका पालन-पोषण (Bringing up) हुआ है आदि बातों का लोग अन्दाज लगाते हैं। आजकल पर्दा प्रथा तो रही नहीं। युवती कन्याएँ घर और बाहर दोनों जगह नवयुवकों के सम्पर्क में आती हैं। ऐसी सूरत में उन्हें इस बात की समझदारी होनी चाहिए कि वे अपने व्यवहार और बातचीत में शील, संकोच का ख्याल बराबर रखें। आप उन पर भरोसा रखें पर साथ ही इस बात की चौकसी भी रखें कि कन्याएँ गुमराह तो नहीं हो रहीं, उनकी संगति तो अच्छी है और वह अपनी जिम्मेदारी को समझती है।

अगर माताएँ उपरोक्त ढंग से अपना कर्तव्य निभायें तो इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आज जो अनेक अविकसित व्यक्तित्व वाली कन्याएँ दिखाई

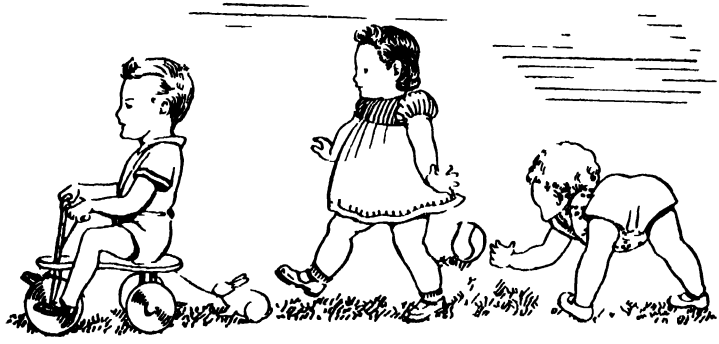
पड़ती हैं, और जिनके माँ-बाप के लिए उनका विवाह सम्बन्ध एक समस्या बना हुआ है, उनकी संख्या में काफी कमी हो सकती है। यह सच है कि परं सुन्दरी तो लाखों में एक ही होती है, परन्तु सुहावनी जिसे अंग्रेजी में 'प्लेजेंट' कहते हैं अधिकांश कन्याएँ प्रतीत हो सकती हैं यदि उनकी माताएँ उनके व्यक्तित्व का ठीक से विकास करने में सफल हो सकें।

बालिकाओं के रूप और आकर्षण की रक्षा करने और उसे निखारने के लिये माताओं को आरम्भ से ही चेष्टाशील होना चाहिये। यदि शिशु-बालिका को एक ही करवट अथवा उसे ढीली खटिया पर सुलाया जायेगा तो उसके अंगों को बनावट एकसी, सुडौल नहीं बनी रहेगी। त्वचा, दाँतों और केशों की सार-सँभाल भी छुटपन से करने से ही वे सुन्दर और दोषरहित बने रह सकते हैं। काया को सुडौल और व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिये कन्याओं का भोजन, दिनचर्या और वेशभूषा, बातचीत, चालढाल सभी निर्दोष होनी बहुत जरूरी हैं।*

* इस विषय में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये लेखिका की पुस्तक "नारी का रूप-शृङ्गार" अवश्य पढ़ें।

३०. बेचारे ये बच्चे!

इस अध्याय में यह तो सम्भव नही है कि शिशु-पालन पर विस्तारपूर्वक लिखा जा सके। पर ऐसी विषय परिस्थितियों का उल्लेख सक्षेप मे किया



जायगा जिनके प्रस्तुत होने पर बच्चों की पालन-पोषण विषयक समस्याएँ जटिल हो जाती है। यदि माता या पिता ऐसी परिस्थितियों मे समझदारी से काम न ले तो बच्चों की बहुत बरबादी होती है। वे समस्यापूर्ण बन जाते है। उनका स्वभाविक विकास रुक जाता है। परिस्थितियों के आगे लाचार होकर वे या तो दब्बू बन जाते है अथवा प्रतिक्रियावादी। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे बच्चे ही बाद मे सामाजिक जीवन की व्यवस्था और शान्ति को नष्ट कर देते है जिससे सामाजिक वातावरण गदला बन जाता है।

निम्नलिखित परिस्थितियाँ बच्चे के शान्तिमय जीवन मे गडबड़ पैदा कर देती है—माँ का स्वर्गवास या बच्चे के पालन-पोषण की व्यवस्था ठीक से न कर के माता का अधिक समय घर से दूर रहना, विमाता द्वारा सताया जाना, पिता का अधिक काल के लिये परदेश मे रहना अथवा पिता की छत्र छाया का सिर पर से उठ जाना, माता-पिता का सम्बन्ध-विच्छेद होने पर, अङ्गहीन बच्चे, किसी की दत्तक सन्तान बनने पर।

अनुभवी लोगों का कहना है कि माँ चाहे पीसन-कूटनहारी ही हो, वह बिना बाप के बच्चों को मेहनत-मजदूरी करके भी पाल लेती है, परन्तु बाप राजा होकर भी बिना माँ के बच्चों को तरसा देता है। पुरुष कहने को तो

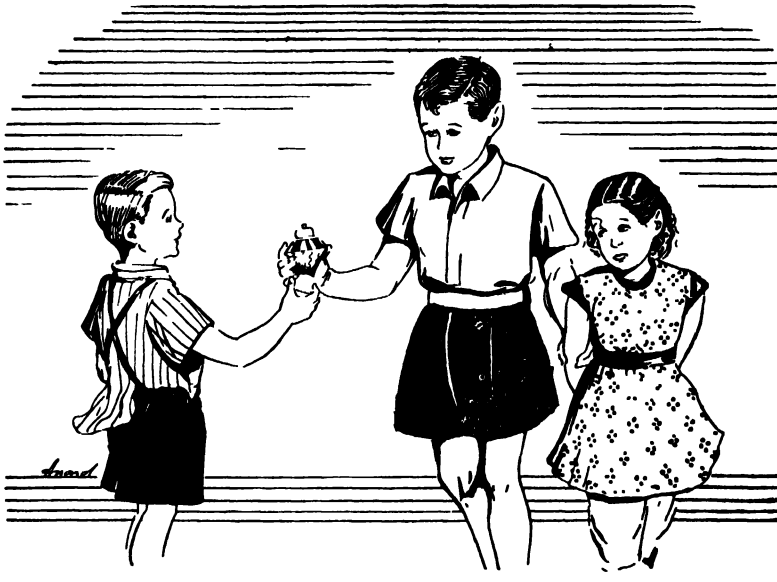
समर्थवान और बुद्धिमान है, परन्तु घरेलू मामलों में उसकी नकेल स्त्री के हाथ में होती है। स्त्री जिन सगे-सम्बन्धियों की ओर कृपालु होती है, उसी ओर पति का मन भी पसीजा रहता है। अपने छल-कपट तथा प्रपंच से वह सगे माँ-बाप बहिन-भाई की ओर से भी पति का मन फेर देती है। घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं, इस प्रकार के उदाहरण अड़ौस में नहीं तो पड़ौस में मिल जायँगे। इस के लिए पुरुष भी एक हद तक दोषी हैं। वे अपनी नकेल स्त्रियों के हाथ आँख मींचकर क्यों पकड़ा देते हैं ?

संसार में माता का स्नेह बच्चों के लिए वरदान रूप है। किसी ने ठीक कहा है, 'माता बिन आदर कौन करे ! बादल बिन सागर कौन भरे ?' जिन बच्चों को बचपन में ही माता के स्नेह से वंचित होना पड़ता है उनकी सी दैन्य दशा और किनकी हो सकती है ? माँ का सूखा हाथ फिरने मात्र से बच्चा हरा-भरा हो जाता है। कसूर पर माँ चाहे कितनी सजा दे ले, परन्तु उसकी मार की जितनी चोट बच्चे पर पड़ती है, उससे कुछ अधिक ही वेदना माँ भी अनुभव करती है। बच्चे को मार कर वह स्वयं सन्ताप से भर उठती है। मार खाकर भी बच्चा परे नहीं होता। उसके मन में दरार नहीं आती। एक मूक भाषा में दोनों एक दूसरे के प्रेम की सत्यता को समझते हैं और स्वीकार करते हैं। पंजाबियों के कथनानुसार 'अपनी अम्मड़ी लावे खल्लड़ी, फेर अम्मड़ी दी अम्मड़ी' अर्थात् अपनी माँ चाहे खाल उतार ले परन्तु फिर भी उसकी ममता मिट नहीं जाती। सन्तान की वेदना से वह तड़प उठती है। माँ सदृश कल्याण कामना करने वाली भला और कौन होगी! मानव के रोम-रोम में माँ का कल्याण रूप समाया हुआ है। तभी तो दुःख पड़ने पर उसके मुख से निकल पड़ता है—'हाय माँ!'

ये बे माँ के—

माँ के मरने के पश्चात् बच्चे की दशा एक कवचहीन सैनिक के सदृश हो जाती है। मातृहीन बालक संसार में अपने को अकेला तथा निस्सहाय समझने लगता है। उसका तो मानो नीड़ ही उजड़ गया, अब किसके गर्म-नर्म सीने के नीचे दबकर वह बेफिक्री से सोयेगा ? अब किस का ममता-भरा हाथ उसके सिर पर फिरेगा ? असफल होने पर कौन उसकी पीठ पर हाथ फेरकर आगे बढ़ने की हिम्मत बँधायेगा ? माता के स्नेह से वंचित होकर बच्चे के विकास का सन्तुलन ही बिगड़ जाता है। पर बहुत कम पिता बच्चे

के इस अभाव को इस तीव्रता के साथ यथार्थ रूप में समझने का दिल रखते हैं। बच्चे के खाने-पीने, रहने और सोने की व्यवस्था हो जाने पर तथा उसे अपनी संगी-साथियों में खेलते देख बाप समझता है कि यह तो अपनी माँ

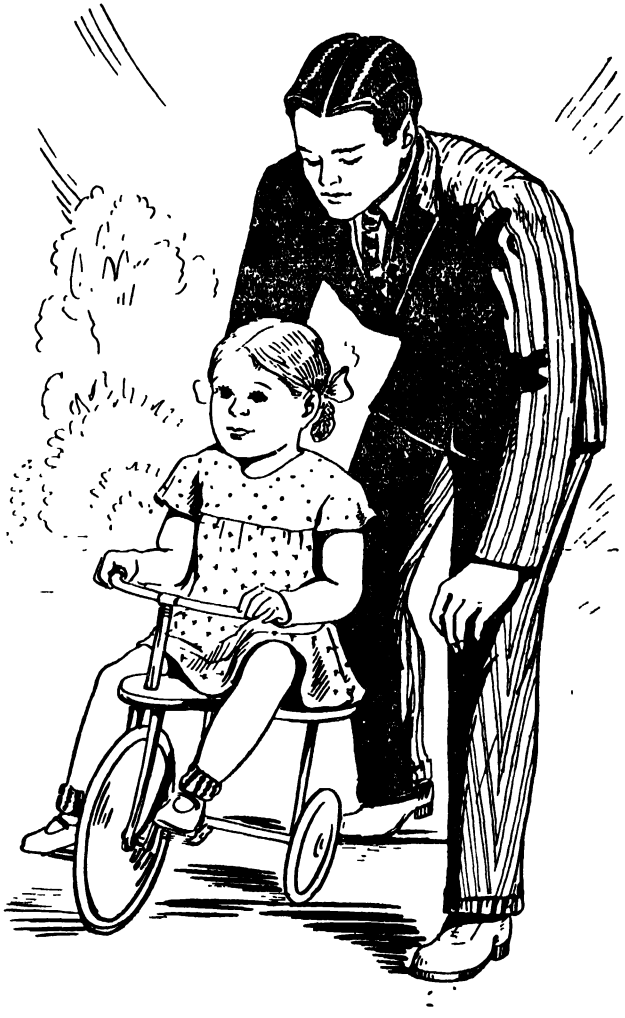


को भूल गया है, और जैसे-जैसे समय गुजारेगा इसका यह घाव बिल्कुल मिट जायगा। परन्तु उसका इस प्रकार सोचना गलत है। माँ का अभाव जीवन भर नहीं मिटता। बचपन में उसके स्नेहामृत से वंचित होकर, बड़े होकर भी मनुष्य की आत्मा एक अभाव का अनुभव करती रहती है। वह अपनी स्त्री की सेवा और स्नेह में भी माँ की ममता को खोजता है, अगर उसकी पत्नी कर्तव्यपरायण तथा प्रेमालु हुई तब तो उसके बचपन के घाव के निशान बहुत कुछ मिट जाते हैं, अन्यथा यह घाव एक सैप्टिक फोड़े के सदृश जीवन भर असन्तोष का मवाद बहाता रहता है।

बच्चे के लिए शारीरिक आघात से भी अधिक भयंकर मानसिक आघात होता है। किसी बच्चे की अगर माँ मर जाय तो माता के प्रेम के अभाव में सभी सुविधाओं के बावजूद भी वह मुरझाने लगता है। माँ के बिना वह स्वयं को खोया-खोया और असुरक्षित अनुभव करता है, मृत्यु उसके लिए एक पहेली प्रतीत होती है। उसे माँ की पिछली बातें याद आती

हैं कि जब माँ बीमार थी और मुन्ना हल्ला करता था तो माँ खीज कर कहती थी—'क्यों मेरा सिर खा रहा है ? मैं तो दर्द के मारे मरी जा रही हूँ, तूने तो मुझे सता दिया, मर जाऊँ तो जान छूटे, तब तुझे पता चलेगा !'

बेचारा बच्चा रात के अँधेरे में तकिये में मुँह छिपाकर सुबक-सुबक कर रोता है, वह समझता है शायद मुझ से नाराज होकर ही माँ मुझे छोड़कर चली गई है। इसी बीच में कुछ दिन बाद वह देखता है कि दूसरी माँ आ गई है। पर वह इस माँ को अपनी माता के रूप-रंग स्वभाव से बिल्कुल भिन्न पाता है। कुछ साल बाद वह देखता है कि माँ के सिखाये में आ-कर उसका प्यारा पिता भी उसके प्रति दिन-पर-दिन कठोर होता जाता है। मुन्नी (सौतेली बहन) को पिता-जी दुलारते हैं पर उसे दुतकारते हैं। बेचारा मुन्ना स्वयं को असहाय पाकर जीवन के प्रति उदास-सा हो जाता है। प्रेम, प्रोत्साहन, ममता तथा मित्रता



के अभाव में उसकी शक्तियाँ मंद पड़ जाती हैं। अबतक जो मुन्ना होशियार, हँसमुख तथा तेज और स्वस्थ समझा जाता था, वही भौंदू, सुस्त, चिड़-चिड़ा और रोगी दीखने लगता है। घर के प्रतिकूल वातावरण ने उसके जीवन वृक्ष की हरियाली को नष्ट कर दिया है। उसका हृदय फोड़े के सदृश दुखता रहता है, पहले जिन बातों की वह परवाह भी नहीं करता था, अब उन्हीं बातों से उसे व्यथा होती है।

वह स्कूल से अपने सहपाठी चुन्नू के संग आता है। मार्ग में चुन्नू का घर पड़ता है उसकी माता दरवाजे पर खड़ी चुन्नू की राह देखती रहती है। चुन्नू लपक कर माँ की ओर बढ़ जाता है। माता भी उसके सिर पर हँस कर दुलार से हाथ फेरती है और प्यार से थपकी मार कर कहती है—"अरे तू स्कूल में क्या स्याही पीता है, देख तो दाँतों में भी स्याही लगी हुई है ?" चुन्नू हँस कर अन्दर भाग जाता है, क्योंकि उसे पता लग गया है कि उसकी दीदी चौके में गर्म-गर्म कचौड़ियाँ बना रही है। बेचारा मुन्ना यह सब देखता है और उसके हृदय में एक कसक उठती है और उसके मुँह से एक आह निकल पड़ती है—'हाय माँ! तू कहाँ है ? मुन्नू दिन पर दिन मुरझाता जाता है। आज वह लखपति का बेटा हो कर भी अपने को दरिद्र समझता है—'मेरा कौन है ? मुझे कौन प्यार करता है ? मेरी किसको फिक्र है ? मेरी सफलता से किस को खुशी है ? असफल होने पर भी अब कौन मुझे प्रोत्साहन देगा ?' आदि उधेड़बुन में वह पड़ा रहता है। बच्चे के लिए माँ की ममता एक ऐसी चीज है उसकी समता संसार में कोई नहीं कर सकता।

जिन बच्चों की माँ मर जाती है उनकी सी दयनीय दशा किसी की नहीं। बहुत कम पिता बच्चे के इस अभाव का अन्दाज लगा कर उसकी पूर्ति करने की चेष्टा करते हैं। एक बार कुछ बच्चों को उनकी माताओं से अलग करके अधिक सुविधाएँ देकर एक नर्सरी में रखा गया। बाद में वही सुविधाएँ उन्हें उनकी माता की देख-भाल में दी गई। जाँच करने पर पता चला कि माताओं से बिछुड़ कर कई बच्चे तो सुविधाओं के बावजूद भी दुबले और चिड़चिड़े हो गए, परन्तु माता की देख-रेख में वही सुविधाएँ पाकर वे कुछ ही दिनों में सन्तोषजनक तरक्की कर गए। तभी बड़ी-बूढ़ियाँ कहती हैं कि अपनी माँ तो चाहे सूखा हाथ ही फेर दे, तब भी बच्चा पनप उठता है।

कई पुरुषों के लिए तो अपनी स्त्री के रिक्त स्थान को भरना इतना

सरल प्रतीत होता है, मानों एक पुरानी जूती के टूट जाने पर दूसरी बढ़िया जूती कुछ अधिक पैसे देकर खरीदना। और इस अमानुषिक व्यवहार को वह एक ही दलील देकर पुष्ट करना चाहते हैं—'क्या करता ? ब्याह करना ही पड़ा, आखिर बच्चों को कौन सम्भालता ?' ऐसे भी उदाहरण आपको मिल जायँगे जहाँ तेरहवीं के बाद ही विवाह की चर्चा शुरू हो जाती है। मनुष्य को पालतू कुत्ते के मरने का अरमान होता है पर जिस स्त्री के साथ कुछ वर्ष गुजरे, जिसने अपने तन, मन और पैतृक धन, सभी को पति पर न्यौछावर कर दिया, भला उसके लिए क्या पुरुष के हृदय में इतनी भी इज्जत नहीं कि उसके प्रेम का स्वाँग कुछ दिन तो रच सकता ? तभी तो स्त्रियाँ कहती हैं, 'अरे मर्द की जात का एतबार ही क्या, आज मेरी आँख बन्द हुई और कल दूसरी माँ इस घर में आजायेगी और उसके आते ही बाप तीसरा बन जायेगा। ये चाची-ताई ही कह उठेंगी कि ब्याह करो, लड़कियों का क्या घाटा है, अभी उम्र ही क्या है ? अगर बड़ी बहिनें और माँ-बाप हुए तब तो फिक्र करने की कोई बात ही नहीं, वे ही सब प्रबन्ध कर देंगे। क्योंकि उन्हें चिन्ता है कि कहीं हमारा बेटा या भाई कहीं बहक न जाय, किसी को घर में न बिठा ले, बिरादरी में नाक कटेगी। लड़के-लड़कियाँ ब्याहने से रह जायँगे। पुरुष कितना दुर्बल चरित्र और वासना का दास है !'

बस हिन्दू-समाज में किसी की बीवी मर जाय, तो काहे की चिन्ता। सलामत रहें रिश्तेदार तथा गरीब लड़कियों के माँ-बाप, अपने पास रुपया-पैसा हो तो लड़की वाले घेरे रहते हैं। उन्हें तो पूरा विश्वास है कि हमारी लड़की तो लाड़ली बनकर रहेगी। ऐश करेगी। पहली के बच्चों का अव्वल तो उन्हें पता नहीं दिया जाता है, अगर एक-आधे के होने का पता भी चला तो उसे कुछ दिनों के लिए नानी, दादी के जिम्मे कर दिया जाता है। अब भला सोचिए माँ से वंचित होकर बच्चा, बाप और अपने घर से भी वंचित कर दिया जाता है। बाप यह नहीं सोचता कि माँ के मरने के बाद उसका यह फर्ज है कि अपने दुलार, प्यार तथा सहानुभूति और देख-भाल से मातृ-प्रेम के अभाव की भी पूर्ति करे। बच्चे का विश्वास और सुरक्षा की भावना बनाये रखे। उल्टा अपने दूसरे विवाह में उसे बाधा रूप समझ, वह उसकी अपेक्षा करने लगता है। आज अनेकों घरों में विमाता के अत्याचार में बाप का सहयोग अथवा अनुमोदन या मचलापन देखकर यह स्वीकार करना पड़ता है कि पुरुष के

हृदय में बच्चों के प्रति ममता नाम की कोई सरसता ही नहीं है, वह तो स्त्री



को प्रसन्न करने के लिए, उसका अनुराग प्राप्त करने के लिए ही बच्चों को दुलारता है। आगे जाकर सन्तान को सुयोग्य देख, कुल का नाम उजागर करने का हेतु समझ, वह चाहे उनकी कद्र करने लगे परन्तु नालायक औलाद को माँ के अभाव में बाप घर से प्रायः धक्का ही दे देता है।

एक तो पत्नी व्रत पुरुष बहुत कम मिलेंगे। अतएव यह सुझाव देना कि स्त्री के मरने पर विवाह ही न किया जाय व्यर्थ ही है। परन्तु निम्नलिखित स्थितियों में विवाह करना मूर्खता है—

यह गलती न करें—

१. अगर बड़ी सन्तान की आयु १६ वर्ष से ऊपर हो या पिता की आयु ४५ वर्ष के लगभग हो तो विवाह करना उपयुक्त नहीं। कारण ? जिस पुरुष ने १५ या २० वर्ष गृहस्थ-जीवन भोग लिया, उसके लिए तृष्णा और भोग-विलास के पीछे बावला बने फिरना मूर्खता है। इस उतरती आयु में विवाह करके वह अपनी जिम्मेदारियाँ बढ़ा लेगा, जिसके कुफलस्वरूप उसका बुढ़ापा चैन से नहीं बीतेगा। साथ ही वह अपनी पहली सन्तान के विश्वास और सहयोग को भी खो बैठेगा। दूसरे विवाह के बाद जो नये परिवार का विस्तार होगा, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते-करते ही उसका दम निकल जायगा। वह आयुभर गृहस्थी के झंझटों और जिम्मेदारियों से मुक्ति न पा सकेगा।

२. वह पुरुष जिसकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं है, दूसरे

विवाह के जंजाल में कभी भूलकर भी न पड़े। अच्छा हो कि गृहस्थी की देख-भाल रिश्ते की कोई वृद्ध स्त्री, विधवा बहिन-भौजाई, चाची-ताई अथवा कोई और गरीब विश्वासी स्त्री के सुपर्द करके, बच्चों को स्कूलों में भर्ती करवा दे। बड़ी लड़की छोटे बच्चों को सँभाल ले। ऐसे अवसर पर घर का सबसे छोटा बच्चा, नानी, दादी, बुआ या मौसी के जिम्मे भी किया जा सकता है। बच्चों का प्रबन्ध करने में आरम्भ में चाहे कुछ असुविधा हो, परन्तु दूसरा विवाह करके नई गृहस्थी की जिम्मेदारियों की तुलना में वह मुसीबत बहुत कम होगी।

३. जिस पुरुष का अधेड़ उम्र में ही स्वास्थ्य ठीक न हो, उसे विवाह करने का कोई अधिकार नहीं है।

४. जो पुरुष अपने धंधे में इतना अधिक उलझा रहे कि उसे पत्नी की दिलजोई के लिए पर्याप्त समय का अभाव हो, उसे भी दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए। पहली पत्नी तो वर्षों से साथ रहकर, आदत और स्थिति से परिचित होकर, तद्नुसार व्यवहार करने की अभ्यस्त हो जाती है, परन्तु दूसरी पत्नी उपेक्षा के लिए तैयार होकर नहीं आती। प्रौढ़ावस्था में विवाह करने पर पुरुष को अपनी जवानी की कमी अधिक समय तथा धन देकर तथा स्त्री के नाज़ोनखरे उठाकर और दिखावटी दिलजोई तक करके पूरी करनी पड़ती है। ऐसी दशा में जिनके पास धन अथवा समय का अभाव होगा, वे दूसरी पत्नी की वफ़ादारी को अधिक दिनों तक कायम रख सकेंगे, इस विषय में सन्देह ही है।

५. जिस व्यक्ति के तीन-चार बच्चे हों, तथा सम्मिलित पारिवारिक जीवन हो, उन्हें भी विवाह करने की आवश्यकता नहीं। उन्हें जीवन में सूनापन या गृहस्थी की सँभाल की समस्या भी परेशान नहीं करती।

६. जिसने अपना जीवन समाज तथा देश की सेवा अथवा किसी विशेष ध्येय की प्राप्ति में लगाया हो, उसे भी दुबारा गृहस्थी के जंजाल में फँसने की आवश्यकता नहीं। वे अपने जीवन का एकाकीपन, मित्रमंडली, क्लब तथा अन्य मनोरंजकों द्वारा दूर कर सकते हैं। सच्चरित्र आदर्शवादी पुरुषों को बहिन, माँ, भाभी तथा सखी के रूप में भी महिलाओं की मित्रता और प्रेम प्राप्य है। नारी के इस प्रकार के स्वस्थ प्रेम और मित्रता की होड़ वासनामय आसक्ति नहीं कर सकती। यह आत्मा को आनन्दविभोर करने वाला होती है और वह केवल शरीर तक ही सीमित है।

विधुर ध्यान रखें—

जिस पुरुष के आगे उपरोक्त कोई भी असुविधा न हो और वह विवाह करने की प्रबल आवश्यकता अनुभव करता हो, उसे भी विवाह से पहले निम्न-लिखित बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए—

१. विवाह में जल्दबाजी कभी न करें। प्रायः देखने में आया है कि जिन पुरुषों की पहली पत्नी अनपढ़, कुरूप अथवा फूहड़ या बीमार होती है, वे महीने दो महीने के अन्दर ही दूसरा विवाह कर लेते हैं। अपनी पूर्व पत्नी के प्रति उनकी यह उपेक्षा और दूसरे विवाह का चाव इतना स्पष्ट होता है कि समाज पुरुषों की बेवफाई की चर्चा किये बिना नहीं रहता।

२. एक विधुर को विधवा से ही विवाह करना शोभा देता है। क्वारी कन्या से विवाह करने का उसे अधिकार नहीं होना चाहिए। विवाह की इच्छुक कई विधवाएँ, उपयुक्त पति के अभाव में पुनर्विवाह नहीं कर पातीं। अगर विवाह के इच्छुक विधुर उस ओर ध्यान दें तो दोनों की समस्या सरलता से हल हो सकती है।

३. दूसरी पत्नी की आयु में अधिक-से-अधिक ७ या ८ वर्ष का अन्तर हो, साथ ही स्वास्थ्य और रूप में भी अधिक अन्तर न हो, अन्यथा घर में बुढ़ापे के ब्याह का तमाशा बन जायेगा।

४. अच्छा हो कि अपने परिचितों या रिश्तेदारों में से ही इस प्रकार की कोई स्त्री मिल जाय, जो कि बच्चों के प्रति सहज ही प्रेमालु हो। साथ ही विमाता के कर्तव्य से भली प्रकार परिचित हो। उसमें सहनशक्ति तथा उदारता भी हो। चंचल और चिड़चिड़े स्वभाव की आदर्शहीना ईर्ष्यालू स्त्री विमाता बनकर बहुत मुसीबत ढाती है।

५. दूसरे विवाह के इच्छुक पुरुष को अपने पहले बच्चों की शिक्षा का सुचारु प्रबन्ध पहले ही से कर देना चाहिए। बच्चों की जिम्मेदारी भी उसी को सँभालनी होगी। दूसरी माँ को इस विषय में जिम्मेदार बनाना भूल है। बच्चों को माँ का मोहताज करने ही से घर में असन्तोष का बीज पनपता है। पिता बच्चों को साथ में लेकर भोजन करे। उनके कपड़े तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति का स्वयं ध्यान रखे। कहते हैं कि सौत तो आटे की भी बुरी, सौतिया डाह स्त्री को सौतेले बच्चों के प्रति सहज ही ईर्ष्यालू बना देता है। मानवीय दुर्बलताओं का शिकार सभी प्राणी सहज ही हो जाते हैं, ऐसी

अवस्था में दूसरी माँ को ही सब बदनामी आती है। परन्तु अधिकांश अपराध पिता का ही होता है। अगर बाप समझदार है तो वह दूसरी पत्नी तथा बच्चों



से एक-दूसरे के प्रति केवल सद्व्यवहार की आशा करेगा, अगर बच्चे बड़े हैं तो मित्रतापूर्ण शिष्ट व्यवहार बना रहे, यही वांछनीय है। माँ और बच्चे से प्रेम का झूठा अभिनय करवाकर गृह-स्वामी स्वयं को ठगाता है। विमाता जहाँ अति उदारचेता होती हैं, वह अपने मन के भेदभाव को दबाकर परिजनों को प्रेम डोरी में बाँध रखने की कोशिश करती है, अगर सौतेले बच्चे समझदार और सुयोग्य हुए तो वे विमाता के इस सद्व्यवहार से प्रभावित होकर परिवार के अवश्य ही सच्चे मित्र और हितैषी बने रहेंगे।

६. अपनी दूसरी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए पहली पत्नी की बुराई या मजाक कभी भूलकर भी न करें, और न ही अपने बच्चों की बुराई करने का विमाता को प्रोत्साहन दें। गृहपति स्वयं ही निरपेक्ष होकर विमाता और बच्चों के व्यवहार को परखे तथा दोनों को अलग-अलग समझाये।

७. अगर दूसरी पत्नी से भी एक-दो बच्चे हो जायँ तो इस बात की यथाशक्ति चेष्टा की जाय कि सौतले बहिन-भाइयों में परस्पर स्नेह तथा मान-सम्मान बना रहे। अगर बहिन-भाई एक होंगे तो आगे जाकर विमाता घर की एकता नष्ट नहीं कर सकती। प्रायः देखने में आता है कि कई मूर्ख

स्त्रियाँ अपने बच्चों के मन में पहले भाई-बहिनों के प्रति इतना मैल भर देती हैं कि पिता को भविष्य अन्धकारमय दीखने लगता है। इस विष-वमन के साथ ही साथ वे अपने बच्चों के चरित्र-विकास का इतना अहित करती हैं कि वे भी छली, प्रपंची, चुगलखोर, झूठे तथा फरेबी बन जाते हैं। घर में दलबन्दी जोर पकड़ जाती है। जिसमें विमाता के पीहर वाले और भी मजबूती पैदा करते रहते हैं। गृहस्वामी अपने पहले बच्चों से तो बुरा बन ही जाता है, दूसरे बच्चे तथा पत्नी भी उसे केवल धन कमाने की मशीन मात्र समझ, प्रेम का अभिनय रचते हैं। इस दलदल में फँसा हुआ पुरुष जीवन की किचकिच से ऊब जाता है। जैसे-जैसे उसकी उम्र बीतती है वह अपने को अकेला पाता है। पत्नी उसकी सेवा करती है, प्रेम दिखाती है, किस लिए ? क्योंकि उससे उसे धन प्राप्ति होती है। जायदाद और धन हथियाने के लिए वह पहली पत्नी की



सन्तान के प्रति विष-वमन करने में ही अपना हित समझती है। धीरे-धीरे पति पर भी उसका रंग चढ़ता जाता है, फलस्वरूप पहले वाले बच्चे बाप के लिए भी पराए हो जाते हैं। अपना बुढ़ापा और अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए वह स्वार्थी बन जाती है। गृह-स्वामी की यह दुर्दशा ही दूसरे विवाह की विडम्बना है। थोड़ी-बहुत विडम्बना तो प्रत्येक पुरुष को जो कि दूसरा विवाह करने की जोखिम उठाता है, सहनी ही पड़ती है। इस

विडम्बना से पुरुष तभी मुकाबिला कर सकता है जब कि पहली पत्नी की सन्तान का विश्वास और सहयोग वह अपने पति बनाये रखे।

विवाह के बाद पत्नी और सन्तान दोनों के प्रति पुरुष सच्चाई और समदृष्टिकोण रखे। युवती पत्नी के रूप और यौवन पर मुग्ध होकर न तो अपनी नकेल उसके हाथ में पकड़ा दे और न ही उसके व्यवहार को सन्देह की दृष्टि से ही देखे। पत्नी और बच्चों को एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट



होने दें। इस प्रकार की प्रेरणा दें कि वे एक दूसरे को सहज रूप में स्वीकार कर लें। आपका बार-बार उनके बीच दखल देना दोनों के मन में एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष पैदा कर देगा। आप उन दोनों को उसी प्रकार सम-

झायें जैसा कि पहली माँ के सामने समझाते थे ।

पहली पत्नी की सन्तान के प्रति अगर गृहस्वामी कर्तव्यनिष्ठ रहेगा तो समाज में उसको यश तो मिलेगा ही, साथ-ही-साथ उसकी न्यायपरायणता तथा सत्यनिष्ठा की छाप उसकी दूसरी पत्नी पर भी पड़ेगी और वह घर में फूट नहीं डाल सकेगी। मातृहीन बच्चे अपने पिता के इस त्याग और अनुगृह से प्रभावित होकर स्वयं दब जायँगे, और अपने पिता के जीवन को सुखी बनाने के लिए सर्वदा सहयोग देंगे। मुसीबत तो तब असहनीय है, जब मनुष्य अपनों को भी परायों सदृश व्यवहार करते देखता है।

इस विषय में एक अनुभवी भाई का कहना है कि—

'दूसरी माँ वास्तव में बुरी नहीं होती बल्कि पति, घर वालों एवं मौहल्ले वालों का व्यवहार उसे बुरा बना देता है। बात-बात में सौतेली माँ का ताना देना अथवा लम्बी साँस खीचकर पड़ौस वालों का यह कहना कि 'राम, राम, इसकी माँ यदि जिन्दा होती तो बेचारे की यह दशा क्यों होती !' उसे इस बात को सोचने पर मजबूर कर देता है कि वह सौतेली माँ है और यह कलंक उसके माथे पर से कभी नहीं मिटेगा, और उसके यही विचार उसे बच्चों का शत्रु बना देते हैं। वह सोचने लगती है कि यदि बच्चे न होते तो क्यों उसे ये ताने सुनने को मिलते ?

कोई भी पड़ौसी अथवा नाते-रिश्तेदार यदि आपके बच्चों की दूसरी माँ होने पर दुःख प्रकट करे तो आप उसे दूर से ही नमस्कार करके कहिए—"भाईसाहब, कृपा करके आप मेरे अभाग्य के बारे में सोचकर अपने मस्तिष्क को कष्ट न दीजिए।" याद रखिए वह आपका शुभचिन्तक नहीं, अपितु, सबसे बड़ा दुश्मन है। उससे आप स्वयं भी बचिए और अपनी पत्नी व बच्चों को भी बचाइए।

बार-बार सगा और सौतेला शब्द सुनते-सुनते स्त्री को एक चिढ़-सी पैदा हो जाती है और बच्चे भी सोचते हैं कि वह अपनी थी और यह शायद पराई है, आप कभी ऐसा अवसर ही न आने दीजिए।

सच पूछिए तो यह कहना ही गलत है कि सौतेली माँ बच्चों की दुश्मन होती है। असली दोस्त या दुश्मन तो पिता है, पिता का व्यवहार ही स्त्री को बच्चों का दोस्त या दुश्मन बना देता है। अतएव अपना व्यवहार संयत रखिए, अच्छा तो यह है कि माँ और बेटों को आपस में ही सुलझने दीजिए,

आप कभी भी उनके मध्यस्थ बनने की कोशिश मत कीजिए। यदि बनना ही पड़े तो पक्षपातरहित हो कर व्यवहार कीजिए; ठीक उसी प्रकार जैसे आप उन बच्चों की पहली माँ के सामने करते थे।'

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यदि पिता अपनी पूर्व पत्नी के बच्चों का हित व सम्मान की रक्षा करने में सफल हो सके, तो विमाता के प्रति बच्चों की सद्भावनाएँ बनी रह सकती हैं और वृद्धावस्था में ये ही बड़े बच्चे अपने छोटे भाई-बहिनों के अभिभावक और पथ-प्रदर्शक सहर्ष बने रहेंगे तथा पिता के स्वर्गवास होने पर अपनी माता की मदद करने को तत्पर रहेंगे। जो विमाताएँ अपने बच्चों को सौतेले बहन-भाईयों के प्रति द्वेष रखना सिखाती हैं वह अपने परिवार का बहुत अहित करती हैं। एक सच्ची कहानी आपको संक्षेप में सुनाती हूँ—

हमारे पड़ौस में एक जज साहब रहते थे। उनके एक लड़का और दो लड़की पहली पत्नी से थीं और दूसरी पत्नी से दो लड़के और एक लड़की थी। बड़े बच्चे तो अच्छे पढ़-लिख गये। वे यह भली प्रकार समझ गए थे कि अगर भविष्य अच्छा बनाना है तो पढ़-लिखकर योग्य बनें। पर विमाता ने अपने बच्चों को अधिक लाड़-दुलार में ऐसा बिगाड़ा कि उनका पढ़ने में मन ही नहीं लगा। उनकी बुराइयों को वह झूठ बोलकर छिपाती रही। झूठी प्रशंसा और ईर्ष्या ने उसके बच्चों को आलसी, दम्भी और फिजूलखर्ची बना दिया। जब उसके दोनों लड़के बड़े हुए और उन्हें यह पता चला कि इन्कम टैक्स आदि से बचने के लिए पिता ने पचास-पचास हजार रुपये तथा एक-एक कोठी हम दोनों भाईयों के नाम कर दी है और शेष सम्पत्ति सब हमारी माँ के ही नाम है, तो उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया। विमाता ने पहली के बच्चों को सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं देने दिया। उसका यह कहना था कि 'बड़ा लड़का तो पढ़-लिखकर कमा रहा है—लड़कियों का विवाह हो गया, अब इन्हें क्यों कुछ दिया जाये?' इस प्रकार वह अपने बड़े बच्चों की सद्भावना भी खो बैठी।

कुछ साल बाद जब उसके अपने दोनों लड़कों का विवाह हो गया तो उनकी बहुओं ने सास का सारा जेवर ही दबा लिया। इससे सास बहुओं में परस्पर मनोमालिन्य बढ़ गया। बहुओं ने अपने-अपने पति के कान भरने शुरू किये। अब लड़के धन-सम्पत्ति के मद में माँ-बाप से लड़ने को उतारू हो गये।

वे दोनों हाथों से पैसा लुटाने लगे। बाप अपनी मेहनत की कमाई को इस प्रकार लुटते देख, कुढ़-कुढ़ कर बीमार पड़ गया। बेटे और माँ में मुकदमेबाज़ी छिड़ गई। इससे परिवार की जो बदनामी हुई सो अलग और धन की बरबादी ऐसी हुई कि किसी के पास कुछ भी नहीं रहा। मकान बिक गये। छोटी बहन का ब्याह की जिम्मेदारी सिर पर थी। ऐसे समय में पहली पत्नी के बच्चे



ही काम आये। उन्होंने मिलकर बहन की शादी की और पिता की मृत्यु के बाद माँ को सौतेले लड़के के घर ही आश्रय मिला।

देखने में आता है कि अधिकांश विमाताएँ अधिक लाड़-प्यार में अपने बच्चों का भविष्य ही बिगाड़ कर धर देती हैं। वे गुणों की अपेक्षा धन को अधिक महत्व देने लगती हैं। फलस्वरूप बच्चों की शिक्षा की उपेक्षा कर देती हैं। सारी सम्पति अपने नाम करवाने में ही वह अपने भविष्य को सुरक्षित समझती हैं। अपनी माता के सिखाये में आकर छोटे बच्चे अपने सौतेले भाई बहनों के प्रति अशिष्ट हो जाते हैं, उनकी चुगलियाँ जड़ते रहते हैं, माँ के कान भर कर उनको हकों से वंचित करते हैं। बचपन में ऐसे संकुचित वातावरण में पलकर बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य बहुत घटिया किस्म का बनता है। और बड़े होकर वह समस्यापूर्ण बन जाते हैं जिसके कारण माता-पिता का

बुढ़ापा बिगड़ जाता है, पारिवारिक शान्ति नष्ट हो जाती है और कलप-कलप कर उनके दिन गुजरते हैं। वह यह भूल जाते हैं कि ये काँटे तो उनके खुद के बोये हुए हैं। ममता-मोह से अन्धे होकर वह कर्तव्य भूल बैठे थे, वे माँ के बच्चों को उन्होंने जाने-अनजाने में सताया था, उसका पश्चाताप तो करना ही पड़ेगा।

विषम परिस्थितियों में—

बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए न केवल माँ का बल्कि पिता का भी सहयोग वांछनीय है, घर और बाहर का वातावरण यदि अनुकूल हो और बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो, तो उसका विकास स्वाभाविक रूप से होता है। पर कभी-कभी ऐसी विषम परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं कि बच्चे को कई सुविधाओं से वंचित होना पड़ता है। धनाभाव के कारण यदि माँ को भी जीविका उपार्जन के लिए बाहर जाना पड़े, या माता-पिता दोनों में से किसी एक का देहान्त हो जाए, अथवा पिता अधिक समय के लिए परदेश चला जाए, या माता-पिता का सम्बन्ध-विच्छेद हो जाए, तो ऐसी सूरत में बच्चे के पालन-पोषण विषयक कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इनके अतिरिक्त अंगहीन या दत्तक सन्तान की भी अपनी कुछ समस्याएँ होती हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में बच्चे के अभिभावकों को विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। अगर इसमें चूक हो जाए तो बच्चे का विकास अधूरा रह जाता है या वह समस्यापर्ण वन कर परिवार और समाज दोनों के सिर दर्द का कारण बन जाता है। विषम परिस्थितियों में माँ पर विशेष जिम्मेदारी आ पड़ती हैं, देखने में आता है कि माँ के सहयोग से कभी-कभी कठिन परिस्थितियाँ भी बच्चे के चरित्र को निखारने में सफल होती हैं।

यदि माँ नौकरी करती हो—

अगर आर्थिक कारणों से माँ को नौकरी करनी पड़ी हो, तो कम-से-कम जब तक बच्चा छः महीने का न हो जाए छुट्टी लेनी उचित है, इसी बीच किसी पड़ौसिन अथवा आया से बच्चे को धीरे-धीरे हिला देना ठीक होगा। बच्चे की दिनचर्या ऐसी बना दी जाए कि जब माँ काम पर जाए उससे पहले बच्चे का नहलाना-धुलाना और एक बार दूध पिलाना हो जाए, ताकि माँ की अनुपस्थिति में वह दो-तीन घंटे आराम से सोया रहे। बच्चे को रोते-बिलखते या बीमार छोड़ कर जाने से न तो माँ का काम में मन लगेगा और न ही बच्चे

को चैन पड़ेगा। अगर बच्चे के कल्याण के लिए थोड़े से धन की हानि भी उठानी पड़े, तो अफसोस की बात नहीं है। इसलिए जो माताएँ नौकरी करने की इच्छा रखती हैं, उन्हें बच्चे की सुविधा का पहले ध्यान रखना चाहिए। आर्थिक अभाव को वे गृहोद्योग अथवा पार्ट टाइम कार्य द्वारा भी पूरा कर सकती हैं।

अगर आया या नर्स रखने की गुँजाइश है तो ऐसी स्त्री रखी जाए जो बच्चे के प्रति प्रेमालु हो। तभी वह अपना कर्त्तव्य उसके प्रति ठीक से निभा सकती है। तुनकमिजाज, असहनशील स्त्री चाहे वह बाल मनोविज्ञान की कितनी भी बातें जानती हो, बच्चे को कभी भी ठीक से नहीं सँभाल सकती। ऐसी स्त्री से बच्चा भी घुल-मिल नहीं सकता। बच्चों को पालने के लिए सहज बुद्धि, स्नेह, समझदारी और बाल मनोविज्ञान—इन चारों बातों की आवश्यकता है। जो स्त्री इन बातों को समझती है उसके साथ बच्चे जल्दी हिल-मिल जाते हैं। हर समय रोकने-टोकने, नकारात्मक आदेशों से बाँधने तथा कटु आलोचना और धमकी से हतोत्साहित करने वाला व्यक्ति, चाहे वह माँ हो या आया, पिता हो या गुरु, बच्चों के लिए हौआ बन जाता है। इसलिए जब आप अपने बच्चे को किसी दूसरे की देख-रेख में छोड़ें तो इस बात का बराबर ध्यान रखें कि बच्चा उस व्यक्ति की संगति में खुशी से रहना चाहता है या नहीं और उस व्यक्ति को भी बच्चे को रखना अखरता तो नहीं ?

आप का जो फुरसत का समय बच्चे की संगति में बीते उसे अधिक-से-अधिक मनोरंजक और हितकारक बनाएँ। काम करने वाली माताओं को चाहिए कि जब उनका बच्चा दो-ढाई वर्ष का हो जाए तो उसे किसी पास के नर्सरी स्कूल में दाखिल कर दें, ताकि अन्य साथियों के साथ खेल-कूद में उसका समय भली प्रकार कट जाए।

पिता की अनुपस्थिति में—

पिता के अधिक समय के लिए परदेश जाने पर माँ पर अधिक जिम्मेदारी आ पड़ती है। उसे चाहिए कि बच्चे को उसके पिता के चित्र से परिचित करवाए, उसे घर के अन्य सम्बन्धियों से हिलने-मिलने दे, ताकि जब पिता परदेश से लौटे तो ऐसा न हो कि वह उससे परिचय बढ़ाने में हिचके, इधर माँ पिता को बच्चे के विकास तथा उसकी बाल-क्रीड़ाओं के विषय में भी सूचित करती रहे और बीच-बीच में बच्चे का चित्र भी पिता को भेजती रहे।

अगर माँ शिक्षा अथवा पालन-पोषण विषयक कुछ आवश्यक सुधार करे तो उससे भी पिता को परिचित रखा जाए। कहीं ऐसा न हो कि बाप जब लौट कर आए तो माँ की प्रणाली को रद्द करके अकस्मात् परिवर्तन करने का तकाजा करे। इस प्रकार के अकस्मात् परिवर्तन से बच्चे पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा और वह पिता से कतराने लगेगा।

अगर किसी बच्चे का पिता मर गया है तो माता को चाहिए कि उस पर अपने जीवन के सूनेपन की छाप न पड़ने दे। पिता का अभाव बाबा, नाना, चाचा, मामा आदि के प्रेम तथा सहयोग से पूरा हो सके, इसकी चेष्टा की जाए। 'हाय, हमारा तो बाप नहीं! हमें कौन पूछने वाला है!'—यह विचार अगर बच्चे के हृदय में घर कर जाता है तो उसके स्वस्थ विकास में रुकावट पैदा हो जाती है। मुसीबतों से बच्चे को लड़ना सिखाया जाए। परन्तु पिता के अभाव के कारण उस के हृदय में हीनता की भावना नहीं आनी चाहिए। अगर बच्चा कभी ऐसे उद्‌गार प्रकट भी करे, तो माता को चाहिए कि उसे साहस बँधाए और कहे कि 'घबराने की क्या बात है? मैं हूँ, तेरे चाचा और मामा भी तुझे सहारा देंगे। संसार में अनेक व्यक्ति अपने प्रयत्नों से ही महान हो गए हैं।'

आज से पन्द्रह-बीस साल पहले यह सवाल ही नहीं उठता था कि माँ बाप के अलग होने पर बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार हो। परन्तु अब सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन होने तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और अधिकारों को अधिक महत्त्व मिलने पर यह मान लिया गया है कि रोज-रोज की किटकिट से सम्बन्ध-विच्छेद करके सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना अधिक श्रेष्ठ है। सम्बन्ध-विच्छेद का अधिकार समाज के लिए कल्याणकर है या नहीं, यह विचार करना हमारा विषय नहीं है, परन्तु बच्चों के विकास की दृष्टि से रोज़मर्रा की किट-किट से अलग घर करके रहना अधिक बुरा नहीं है। ऐसी स्थिति में छोटे बच्चों का माँ के पास ही रहना उचित है और बड़े बच्चे बोर्डिंग हाऊस में पढ़ने भेजे जा सकते हैं।

परस्पर मनोमालिन्य होने पर भी माता-पिता को चाहिए कि एक-दूसरे के प्रति बच्चों को न भड़काएँ। बच्चों के लिए इतनी जानकारी ही काफी है कि जिस प्रकार लड़ाई झगड़ा होने पर उनकी अपने दोस्तों से कुट्टी हो जाती है, उसी प्रकार माता-पिता के परस्पर मतभेद हो जाने से वे अलग

हो गए हैं। परन्तु अलग होने पर भी वे बच्चों के माँ और बाप हैं। अपने माँ-बाप के प्रति उन का व्यवहार और स्नेह वैसा ही रहना चाहिए जैसा कि पहले था, वे जब चाहें अपने पिता से जाकर मिल सकते हैं। अलग हो जाने पर भी माता-पिता को बच्चों के कान भर कर उनको अपनी-अपनी ओर करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार उनके हृदय में दोनों के प्रति सम्मान नहीं रहेगा और वे प्रतिक्रियावादी हो जाएँगे। बड़े होकर बच्चे स्वयं सही निर्णय कर लेते हैं कि माँ-बाप में से कौन अधिक दोषी था ?

अंगहीन बच्चे—

कोई बच्चे जन्म से ही अंगहीन होते हैं, कोई बाद में दुर्घटना या बीमारी से अंगहीन हो जाते हैं। गूँगे, अन्धे, लूले बच्चे के प्रति माँ-बाप अधिक दयालु हो जाते हैं। जिसने जो इलाज बताया वे उसी को आजमाने लगते हैं, इसमें उनका बहुत-सा धन खर्च हो जाता है और अन्य बच्चों को आवश्यक सुविधाओं से भी वंचित रहना पड़ता है। जब दो-चार डाक्टरों को दिखा कर यह निश्चय हो जाए कि यह अंगदोष सुधर नहीं सकता, तो उस बच्चे की योग्यता और शक्ति का इस प्रकार विकास किया जाए कि वह अपनी अंगहीनता की कमी को किसी और तरह तरक्की करके पूरा कर ले। देखने में आया है कि अन्धे बहुत अच्छे गायक होते हैं। गूँगे और बहरे दस्तकारी के कामों में बड़े होशियार होते हैं। अतएव गंडे-तावीज़ों में पैसा खराब न करके और किस्मत को बुराई न देकर माँ-बाप को ऐसे बच्चों का जीवन उपयोगी बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। ऐसे अंगहीनों और अपाहिजों के लिए विशेष स्कूल भी हैं। बच्चे को बचपन से ही अपनी अंगहीनता को या उसके प्रति की गई किसी साथी की आलोचना या मजाक को सहज रूप से सह लेना सिखाएँ। अंगहीनता से अधिक कष्ट उन्हें उसके विषय में सोच-सोच कर होता है। वे अपने संगी-साथियों से कटे-कटे से रहते हैं, कुढ़ने लगते हैं। इसलिए कोई उन के साथ मिलना-जुलना नहीं चाहता। अगर वे खुशदिल हों तो उन्हें साथियों की सहानुभूति और प्रेम मिल सकता है।

दत्तक सन्तान—

जब पति-पत्नी दोनों की इच्छा हो तभी बच्चा गोद लेना उचित है। जो बच्चा गोद लिया जाए उसके प्रति पति-पत्नी दोनों की रुझान होनी चाहिए। अच्छा है कि किसी शिशु को ही गोद लिया जाए। इससे बच्चे और

माता-पिता दोनों के लिए एक-दूसरे को अपनाना सरल हो जाता है। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाए, तो उससे यह बात विशेष रूप से गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं है कि वह उनकी गोद ली गई सन्तान है। आखिरकार इधर-उधर से सुन कर उसे पता चल ही जाता है। अगर वह इसके बारे में पूछे, तो यह कह कर उसका समाधान करें—'हाँ, बेटा, मुझे एक सुन्दर सा प्यारा सा बच्चा चाहिए था। मैं बहुत दिनों से उसकी खोज में थी। बस, जब मैंने तुम्हें देखा तो मेरा मन खुश हो गया और मैं तुम्हें ले आई।' यह सुन कर बच्चे को भी आनन्द और सन्तोष होगा कि मैं अपनी धर्म माँ का चहेता और मन पसन्द बच्चा हूँ।

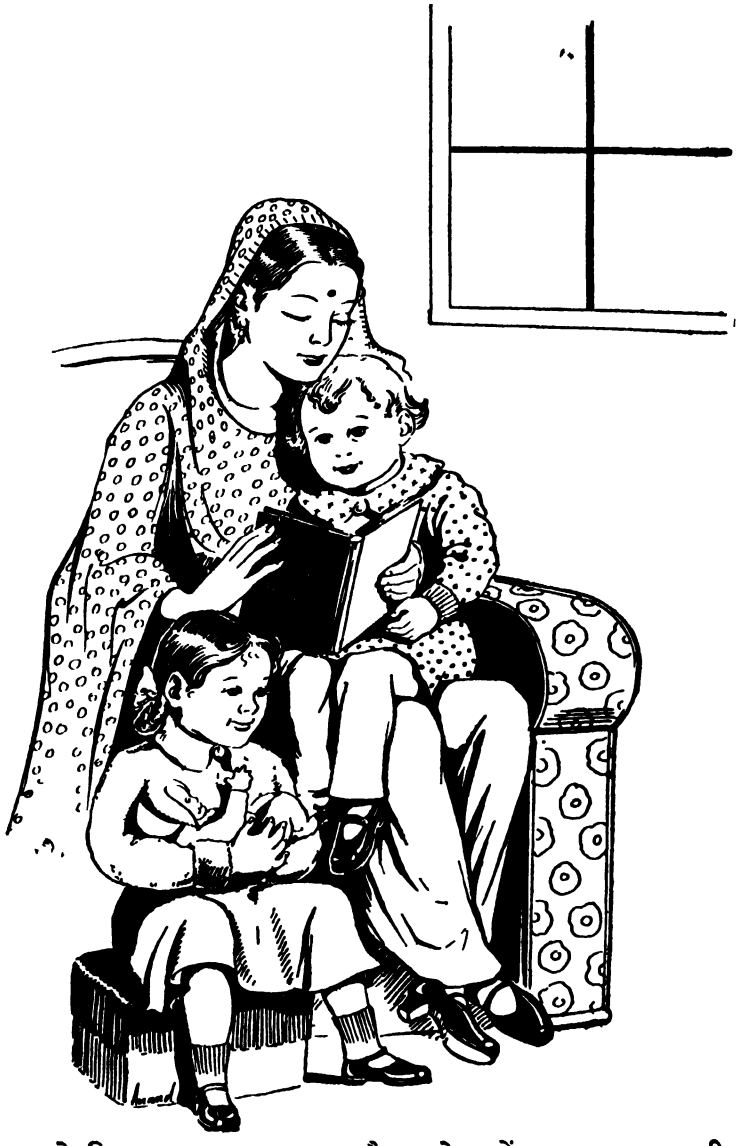
इस विषय में एक घटना मुझे याद है कि एक गोद लिए हुए बच्चे को एक दूसरे बच्चे ने चिढ़ा कर कहा—"अरे श्याम, तू अपने इन माँ-बाप का बेटा नहीं है, इन्होंने तो तुझे गोद लिया है।" बुद्धिमान श्याम यह सुन कर बोला—"हाँ मुझे तो मेरे माता-पिता ने अपनी खुशी से स्वीकार किया है। मैं तो उनका मन पसन्द बेटा हूँ। पर तुम तो अपने माता-पिता पर जबरदस्ती लाद दिये गए हो। तभी तो तुम से तंग आ कर तुम्हारी माँ रोज चिल्लाती रहती है—दूर हट, कमबख्त!"

यह विज्ञान का युग है। लोगों के दृष्टिकोण बदल रहे हैं, समाज अधिक सहनशील हो रहा है, बच्चों के अधिकार और सम्मान को महत्त्व देने की आवश्यकता अनेक माता-पिता और गुरु महसूस करने लगे हैं। उनकी समस्याओं को सहजबुद्धि और विज्ञान का सहारा लेकर धैर्य के साथ सुलझाने की चेष्टा की जा रही है। जमाना करवट बदल रहा है, और बहुत जल्दी ही ऐसा युग आने वाला है जब बच्चों की प्रधानता रहेगी। देश, समाज और घरों में जो कुछ भी कार्य किया जाएगा बच्चों की सुविधा का ध्यान रख कर किया जाएगा। फलस्वरूप मनुष्य मात्र की अनेक शारीरिक और मानसिक समस्याएँ बचपन में ही सुलझ जाएँगी और आगे जाकर उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन अधिक सुलझा हुआ तथा आनन्दप्रद होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं।

बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व—

हमारे देश में अधिकाँश घरों में बच्चों के पालन-पोषण का स्तर बहुत निम्न कोटि का है। इसके लिए परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ इतनी

दोषी नहीं हैं, जितनी कि बच्चों के प्रति माता-पिता की उपेक्षा, उनके प्रति अपने कर्तव्य की अज्ञानता तथा बाल-मनोविज्ञान से अनभिज्ञता। बच्चे का



जन्म उनके लिए एक अकस्मात् घटना है, मानो इसमें उनका कुछ हाथ ही नहीं है। वह उनके लिए एक पवित्र धरोहर न होकर ईश्वर की ओर से भेजा हुआ

एक खिलौना मात्र है। जिससे वे अपने ढंग से खेलते हैं। अधिकांश माताएँ शारीरिक और मानसिक रूप से इस गौरवशील भार को संभालने में असमर्थ और अयोग्य होती हैं कि वे माँ बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में शिशु-पालन का कार्य एक आनन्द का हेतु न होकर गले पड़ा ढोल बन जाता है। फलस्वरूप बच्चे की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास सुचारु रूप से नहीं हो पाता। पौधा पनपने से पहले ही अपने थाले में ही मुरझा जाता है या फिर उसकी शक्तियाँ बहुमुखी होकर विकसित नहीं हो पातीं। उदाहरणार्थ सेठ-महाजनों के बच्चों अथवा सोसाइटी की तितली कहलाने वालियों के 'डार्लिंग बेबी' को देखिये। एक ओर ज़हाँ सेठ-महाजनों के बच्चे केवल सहज-बुद्धि और परम्परागत रीति-रिवाजों के अनुसार पाले गये हैं तथा माताओं के आलस और मोह वश वे हर तरह से एक समस्या बने हुए हैं, दूसरी ओर इससे विपरीत तितली माताओं के बच्चे आया और नौकरों की देखभाल में अथवा माता के अत्यधिक सावधानी के कारण, स्वाभाविक सुविधाओं से वंचित, जन्म ही से डाक्टरों के मरीज़ बने हुए हैं। बच्चों के लिए ये दोनों परिस्थितियाँ हानिकारक और अप्राकृतिक हैं।

बच्चे के व्यक्तित्व को समझें—

पशुओं और पक्षियों के बच्चों का पालन-पोषण मनुष्य के बच्चों से अधिक सन्तोषजनक ढंग से होता है। यही कारण है कि उनके बच्चों में अपनी जाति के स्वाभाविक गुण और संस्कार प्राकृत रूप में चले आ रहे हैं। परन्तु मनुष्य का बच्चा अपने माता-पिता के आडम्बर, आलस्य, स्वार्थ तथा अज्ञान का शिकार बन जाता है। बहुत कम माता-पिता बच्चे की शक्ति रुचि और योग्यता का अध्ययन करके उसके अनुरूप प्रेरणा देते और वातावरण पैदा करने की चेष्टा करते हैं। अधिकांश माता-पिता तो बच्चे को अपनी सुविधा और रुचि तथा जरूरत के अनुसार ही ढालने का प्रयत्न करते हैं, यही कारण है कि बच्चा प्रतिक्रियावादी बन जाता है। माता-पिता को यह बात भूल नहीं जानी चाहिए कि जिस प्रकार क्यारी का प्रत्येक पौधा विकास सम्बन्धी अपनी विशेषता रखता है, उसी प्रकार प्रत्येक बच्चा अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति में एक-दूसरे से भिन्न हो सकता है। यही कारण है कि कोई विशेष वस्तु या तरीका किसी बच्चे को माफिक बैठ जाता है और किसी को नहीं। कोई बच्चा जल्द दाँत निकाल लेता है, छः महीने की आयु

में बैठने लगता है, साल भर की आयु में चलने लगता है और जल्द ही बोलना भी सीख जाता है, जब कि कई बच्चे इन कामों को जरा देर से करते हैं, पर



केवल इन्हीं बातों पर किसी बच्चे को स्वस्थ और तेज अथवा उससे विपरीत समझना उचित नहीं। बच्चे का ढाँचा, पाचन-शक्ति, घर का वातावरण तथा खानदानी गुण-दोषों का भी बच्चे के विकास पर काफी प्रभाव पड़ता है। माता-पिता को चाहिए कि बच्चे की व्यक्तिगत विशेषताओं का ध्यान रख कर उसका पालन-पोषण करें।

प्राय: बच्चे का जन्म एक अस्वाभाविक वातावरण में होता है। पुरुष कठिनाई से दो जनों का पेट भर पाता है कि वह बाप बनने की भूल भी कर बैठता है। स्त्री पूर्ण रूप से बच्चे का भार सम्भालने और उसे पालने-पोसने के लिए तैयार नहीं हो पाती कि माँ बनने के लिए उसे वाध्य होना पड़ता है। 'हाय अभी तो खाने-खेलने के दिन थे, यह मुसीबत कहाँ से खड़ी हो गई, मुझे क्या मालूम बच्चे कैसे पाले जाते हैं ? यह हर समय होता ही रहता है, आये दिन बीमार ही रहता है। इसके मारे मेरी नींद और चैन हराम हो गई है। इधर घर का धन्धा सिर पर है, बच्चे की चिन्ता अलग खाये जा रही है।' प्रथम बच्चे की माँ होकर प्राय: अधिकाँश नवयुवतियाँ ऐसे ही उद्‌गार प्रकट

करती हैं। मातृ-विज्ञान या शिशु-मनोविज्ञान का उन्हें कोई शिक्षा ही नहीं मिलती है। एक दो बच्चों को खोकर, अपना स्वास्थ्य बिगाड़ कर तब कहीं वह दो-चार बच्चों की माँ बन पाती हैं। और तब तक अपने कटु अनुभव तथा बच्चे की समस्याओं की इतनी आदी हो जाती हैं कि उसे सुधारने की चेष्टा भी नहीं करतीं। इसी प्रकार पुरुष भी बाप बनने के बाद परेशान हो जाता है। बच्चे के कारण माँ को अस्वस्थ तथा चिन्तित पाकर उसे बच्चे का जन्म वैवाहिक जीवन की खिलखिल खेला में व्यवधान डालने वाला लगता है। उसकी बोमारियाँ, समय बे समय रोना, अपनी माँ पर अधिकार जमाने की चेष्टा बाप को बिल्कुल नहीं भाती। वह बच्चे पर झुंझलाता है, उसे अपनी सुविधानुसार ढालने की कोशिश करता है इससे एक प्रकार की कटुता उत्पन्न होती।

अधिकांश घरों में बच्चों की अनसुलझाई हुई समस्याएँ, पारिवारिक सुख-शान्ति को नष्ट कर देती हैं। माँ-बाप में परस्पर गलतफहमी पैदा हो जाती है। वे एक-दूसरे को दोष देकर खुद बरी होना चाहते हैं। अधिकांश बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ ही जन्मते हैं, पर माँ-बाप की भूलें, बेपरवाही, अधिक लाड़-प्यार तथा अधीरता उन्हें बिगाड़ देती है। वे समस्या पूर्ण बन जाते हैं। केवल धन ही पारिवारिक जीवन को सुखी नहीं बनाता। असल में धन है सुसन्तान। आप कल्पना करें किसी धनी माँ-बाप की परेशानियों की जोकि अपने कपूतों के कारण चिन्ता सागर में गोते खाते रहते हैं। अच्छे बच्चे घर के रत्न हैं। पर उन रत्नों को घड़ने और बनाने का श्रेय माता-पिता रूपी जौहरी को ही जाता है। बच्चों के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने पर प्रत्येक माता-पिता अपने इन



रत्नों की अधिक-से-अधिक सम्भाल करना और परखना सीख जाएँगे।

एक अनुभवी पिता ने माता-पिता को बहुत सुन्दर सलाह दी है कि—आप यह भी याद रखिए कि आपके बच्चे समाज के अनिवार्य अंग हैं। आपका सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह होता है कि उन्हें समाज में खपने लायक व्यक्ति बनाएँ। अपनी इच्छा के अनुसार अपने बच्चों को चला कर उनके विकास में बाधा न डालिए। उनके भविष्य की योजनाएँ भी आप न बनाइए—उन्हें स्वयं अपना भविष्य निश्चित करने दीजिए। स्वार्थ में अन्धे होकर उनके मन और मस्तिष्क का विकास न रोकिए।

एक और बात याद रखिए जो कटु तो है, पर है सच। 'आप अपने बच्चे को चाहे जितना परावलम्बी बनाएँ, बड़ा होकर वह एक समाज की एक इकाई—एक पुरुष या स्त्री बनेगा ही। इससे आप उसे नहीं रोक सकते। इसलिए आपका और उसका दोनों का कल्याण इसी में है कि आप उसे जल्द से जल्द एक स्वतन्त्र और स्वावलम्बी व्यक्ति बना दें। तभी वह आपको अपना मित्र समझेगा, और आपके प्रति सदा एक सच्चे मित्रवत व्यवहार करेगा।'*

---

* शिशु-पालन और बच्चों की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से सुलझाने और उनको सही ढंग की शिक्षा देने की जानकारी प्राप्त करने के लिए लेखिका की पुस्तक 'आप का मुन्ना' भाग १, २, ३, अवश्य पढ़ें।

३१. ये भूले भटके !

'विवाहित जीवन की सफलता योग्य साथी के चुनाव पर इतनी नहीं, जितनी कि स्वयं को सफल जीवन-साथी बनाने की योग्यता पर निर्भर करती है। साथी कैसा है, इस पर नहीं, बल्कि हम कैसे हैं इस प्रश्न के उत्तर पर। लोग प्राय: सारी शक्ति चुनाव पर लगा देते हैं। वे ये भूल जाते हैं कि विवाह दो साथियों का सम्बन्ध है, जिनमें से एक वे स्वयं हैं।'

उपरोक्त कथन कितना सत्य और सुन्दर है ! कभी-कभी जरा-जरा सी भूलें, बेपरवाही, उपेक्षा, असावधानी, गैर-जिम्मेदारी, असहनशक्ति, ना-समझी आदि भूलें दम्पति को ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती हैं, मन में ऐसी कड़ुवाहट उत्पन्न कर देती हैं कि सारी जिन्दगी का सुख नष्ट हो जाता है। जीवन साथी कोई चल सम्पत्ति नहीं है कि जो एक बार अपना हो गया तो उसकी चाहे जो गत बनाई जाय। शरीर के स्वामी होकर भी बहुत से पुरुष अपनी पत्नी के प्रेम को पाने में असफल रहते हैं। इसी तरह अनेक स्त्रियाँ भी गृहस्वामिनी बन कर भी पति के मन को नहीं जीत पातीं। कई दम्पतियों की प्रौढ़ावस्था तक तो ठीक से निभ जाती है पर वृद्धावस्था में वे एक-दूसरे से बहुत दूर जा पड़ते हैं। दिलों की दूरी बढ़ जाती है। वे परस्पर दिलचस्पी लेना छोड़ देते हैं, इससे वृद्धावस्था में उन्हें जीवन में अकेलापन अनुभव होने लगता है। इस बढ़ती हुई दूरी को रोकने के लिए यह आवश्यक है पति-पत्नी की 'कॉमन हौबीज़' हों। इतने दिन साथ रह कर वे एक-दूसरे की रुचि और दिलचस्पी के विषयों से परिचित हो जाते हैं। इस उम्र में एक दूसरे की प्रशंसा, प्रेरणा, सहयोग और हमदर्दी की माँग अधिक बढ़ जाती है।



जो दम्पत्ति इस माँग को पूरा नहीं करते वे जीवन साथी के कर्त्तव्य को पूरा करने में भी पिछड़ जाते है।

देखने में आता है कि कई दम्पतियों के कुछ साल तो ठीक से बीत जाते हैं, पर जब बच्चे बड़े होकर माँ-बाप से धन या अधिकार के लिए झगड़ा करते हैं तब स्थिति को सँभालने में असफल होने के कारण उनका जीवन कटु हो जाता है। अपने ही बच्चों से जलील व अपमानित होकर माता-पिता कट कर रह जाते हैं। जिन बच्चों को लाड़ से पाला-पोसा, बड़े होकर जब वे ही माँ-बाप से मुँह जोरी करते हैं, यहाँ तक कि मुकदमेबाजी तक करने पर उतारू हो जाते हैं तो दम्पति का शेष जीवन कुढ़-कुढ़ कर बीतता है। कभी-कभी कन्याएँ ऐसा कदम उठा लेती हैं कि जिससे उनका भविष्य सुरक्षित नहीं रह पाता। इससे भी माता-पिता को बड़ा क्लेश होता है।

कई गृहस्वामी अपनी आर्थिक स्थिति और व्यवसाय के विषय में अपनी पत्नी को बिल्कुल अन्धकार में रखते हैं और न ही अपना वसीयत नामा ही समय रहते करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उनकी मृत्यु के बाद पत्नी और बच्चे निराधार रह जाते हैं या परिजन उनके नाम इतना कर्ज़ा दिखा देते हैं कि उन्हें कुछ नहीं मिल पाता। गृहस्थ-जीवन में ऐसी भूलें समस्त सुख-शान्ति और सुरक्षा को नष्ट कर देती हैं।

आखिर ऐसा होता क्यों है ? यही सोचने की बात है। इन भयंकर भूलों की शुरूआत मामूली-सी बात से ही होती है। यथा जुकाम कहने को है मामूली-सा रोग, पर बेपरवाही से यदि बिगड़ जाए तो निमोनिया या तपेदिक तक का कारण बन सकता है। इसी तरह गृहस्थ-जीवन में छोटी-छोटी भूलों और गलतियों की यदि पति-पत्नी उपेक्षा करते जाते हैं तो दाम्पत्य सम्बन्ध कटु हो जाते हैं। नीचे कुछ उदाहरण देती हूँ।

मनमोहन पुलिस में एक ऊँचे पद पर है। वह अच्छा खिलाड़ी और हँसमुख बाँका नौजवान है। समाज में बहुत लोकप्रिय भी है। जब उसकी नौकरी लगी तो कई माता-पिता अपनी कन्या का सम्बन्ध उससे करने के लिए उत्सुक थे। पर मनमोहन जरा नई रोशनी का था, वह लड़की से परिचित हुए बिना विवाह नहीं करना चाहता था। जिन लड़कियों से वह परिचित था वे अधिक आजाद तबियत की थीं। इसी तरह करते-कराते छः सात साल बीत गए। उसके सब मित्रों की शादी हो गई। अब उसे यह दुष्शंका

हुई कि शायद मेरी शादी की उम्र बीत गई है। इसी मनोस्थिति में एक मित्र के घर एक इंजीनियर की लड़की से वह परिचित हुआ। लड़की बी० ए० पास थी, पर रूप रंग में बिल्कुल साधारण। दबाव पड़ने पर लड़के ने शादी कर ली। लड़का समझदार था, उसने शादी को यथा शक्ति सफल बनाने की कोशिश की। यहाँ तक कि घर गृहस्थी के काम में हाथ बटाने, बच्चे को सँभालने तक में उसने जरूरत से अधिक सहयोग दिया। पर उसकी पत्नी का मिजाज अजीब ही था। वह ईर्ष्यालु प्रकृति की थी। और मानसिक प्रौढ़त्व का उसमें अभाव था। मनमोहन की पूर्व परिचित जितनी भी मित्रों की पत्नियाँ, बहनें, भावजें थीं उसे उन सब से ईर्ष्या थी। हर एक की वह नुक्सें निकाला करती। इस आदत से उसका पति बड़ा खिजता था। एक तो पत्नी सुन्दर न थी, ऊपर से हर दम माथे पर त्यौड़ियाँ चढ़ाए रखती, इससे मनमोहन के लिए घर में समय काटना मुश्किल हो गया। वह ग़मगीन रहने लगा। और अधिकांश समय घर से बाहर रहा करता।

अब यह हाल है कि यद्यपि पति-पत्नी परस्पर दिखावटी व्यवहार करते हैं, पर मन-ही-मन में दोनों असन्तुष्ट हैं। यदि पत्नी ने पति के सहयोग की सराहना की होती, उसकी विनोद प्रियता की दाद दी होती और उसके सामाजिक जीवन को सफल बनाया होता तो आज दोनों के जीवन में यह असन्तुष्टि और उदासी न छाई रहती। अब तो किस्सा ही दूसरा है, पति इस बात को महसूस करता है कि यह स्त्री मुझसे कई बातों में कम है, फिर भी अपनी पत्नी और अपने बच्चे की माँ समझ कर मैं इसका मान करता हूँ, इसको प्रसन्न करने के लिए मैंने क्लब में आना-जाना भी कम कर दिया है, बहुत-सी बातें मैंने इसे समझाई भी पर यह बहुत ही संकुचित हृदय की है। मुझे किसी स्त्री से हँसते-बोलते देखकर इसके दिमाग में सन्देह का विष घुलने लगता है। मुझसे तो मुँह फुला कर बैठा नहीं जाता। स्त्री का कहना है कि मेरे संग भारी अन्याय हुआ। मैं इसकी रसिक प्रियता व लोकप्रियता से तंग आ गई हूँ।

मनोरमा का पति शशांक स्वभाव से बहुत भोला-भाला सीधा-साधा हँसमुख व्यक्ति है, पर उसके स्वभाव में एक बात बहुत खटकने वाली है। वह गलती करके भी गलती नहीं मानता, न अपनी भूल को सुधारना चाहता है। उसके मित्र तथा जान-पहिचान वाले उसके सीधेपन की मज़ाक उड़ाते

हैं। यद्यपि वह इंगलैंड हो आया है, पर अंग्रेज़ी बोलनी उसे आती नहीं। जब कि उसकी पत्नी की योग्यता को सब मानते हैं। इससे पति के मन में हीनता की भावना घर कर गई है। उसकी प्रतिक्रिया यह है कि शशांक मनोरमा को सबके सामने शर्मिन्दा करने का मौका ढूंढ़ता रहता है। उसकी गलतियाँ निकालेगा, यदि वह कोई अच्छी सलाह भी देगी तब भी उसे काटेगा, मामूली सी बात पर चिढ़कर पत्नी को बुरी-भली सुनाएगा। मनोरमा बहुत व्यवस्था प्रिय है, पर शशांक आलसी है। वह अपनी चीजें इधर-उधर पटक देगा, चाहे बाद में इस बेपरवाही के कारण उसे काफी नुकसान उठाना पड़े। समय पर कहीं नहीं पहुँचेगा, किसी के पत्र का महीनों जवाब नहीं देगा। मनोरमा ने आरम्भ में शशांक के कैरियर को सफल बनाने में बहुत दिलचस्पी दिखाई, इससे उसका काम चमक गया, पर जब लोगों ने इस सफलता के लिए मनोरमा की प्रशंसा करनी शुरू की तब तो शशांक इतना चिढ़ गया कि उसने जानबूझ कर ढील डाल दी और चला-चलाया व्यवसाय चौपट कर दिया। मनोरमा यदि अब कुछ कहती है तो बिगड़ कर कहता है—"तुम चुप रहो, अपनी अक्ल अपने पास रखो, मेरे कामों में दख़ल देने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारे कहने से मैं अपनी आदतें नहीं बदल दूंगा।"

कई पुरुषों की ऐसी आदत होती है कि यदि उनकी पत्नी उनसे किसी बात में श्रेष्ठ समझी जाने लगे तो उनके लिए यह बात असहनीय हो जाती है। श्यामलाल और उसकी पत्नी कमला दोनों ही वकालत करते हैं। कमला मिलनसार है, समाज-सेवा में भी भाग लेती है, इससे उसकी वकालत अधिक चलती है। पति को इससे बहुत चिढ़ लगी। उसने कमला की चली-चलाई वकालत का कुछ भी ख्याल न करके हरदोई छोड़ कर लखनऊ जाकर प्रेक्टिस करने का तय किया।

सुशीला ने कहा—"एक अपरिचित जगह में प्रेक्टिस चलानी कठिन होगी। यहाँ हम दोनों मिल कर एक हजार कमा लेते हैं। मजे में गुजर हो जाती है। जमी-जमाई गृहस्थी तोड़ने से क्या लाभ ?"

श्यामलाल को उसकी अच्छी सलाह भी बुरी लगी। वह बिगड़ कर बोला—"तुम्हें मेरे कैरियर की तो परवाह है नहीं। मैं तुम्हारे कारण इस छोटे से शहर में पड़ा सड़ना नहीं चाहता। तुम चाहे यहाँ रहो पर मैं तो जाता हूँ।"

खैर, हार कर कमला को भी लखनऊ आना पड़ा। उसने यहाँ आकर भी काफी जान पहिचान पैदा कर लो और साल भर में उसकी प्रैक्टिस हरदोई से भी अच्छी हो गई। पर श्यामलाल ने अपना काम चलाने का कुछ यत्न नहीं किया अतएव वह यहाँ भी असफल रहा। यद्यपि कमला की कमाई से गृहस्थी चलती थी, इसकी प्रशंसा करने या एहसान मानने के बदले श्यामलाल कंमला से चिढ़ने लगा। बात-बात पर उसे लथाड़ता, सन्देह करता, उसकी गृह-व्यवस्था में दोष निकालता। कमला ने बहुतेरा चाहा कि श्यामलाल समाज सेवा में दिलचस्पी लेने लगे, इससे धन न सही पर लोकप्रियता, यश और सन्तोष तो मिलेगा। पर श्यामलाल ने कुछ यत्न करने के बदले दिल की धड़कन की बीमारी का स्वाँग रचा और अब वह दिन भर घर में पड़ा रहता है। उसकी इस नासमझी और असहिष्णुता के कारण पारिवारिक जीवन की शान्ति नष्ट हो गई।

चन्द्रा अपने माँ-बाप की इकलौती लड़की है। उसने लेना अधिक पर देना कम सीखा है। माँ-बाप के घर से काफी दान-दहेज मिला, इस बात का उसे बड़ा घमंड है। वह अपनी सास-नन्द की भी परवाह नहीं करती। पति के खान-पान या आराम सुविधा की ओर उसने कभी ध्यान ही नहीं दिया। नौकरों पर सब काम छोड़ रखा है। उसका पति सुभाष एक कवि है। दाम्पत्य जीवन के विषय में उसकी कल्पना बहुत ही सुन्दर और कोमल है। वह बहुत ही भावुक है, जब कि चन्द्रा अपनी बातचीत और व्यवहार में बहुत ही कोरी और शुष्क है। वह उसकी कविता और कल्पना की मज़ाक उड़ाती है, इससे सुभाष को बहुत चोट पहुँचती है। वह खोया-खोया सा रहता है। सब सुख-साधन होते हुए भी उसे अपना जीवन बहुत अधूरा प्रतीत होता है।



सेठ पूनममल अपने शहर के नामी रईस हैं। उनकी पत्नी कलावती एक धर्म भीरु समझदार और नेक स्त्री है। पति की विलासता और अर्थ प्रधान दृष्टिकोण से वह बहुत परेशान है। चोर बाजार, लम्पटता, धोखेधड़ी

और स्वार्थसिद्धि के हथकंडे देख कर कलावती को अपने पति से नफरत-सी हो गई है। वह मन-ही-मन बड़ी दुखी रहती है। उसे विलासता की सामग्रियों से घृणा है। शराब पीकर सेठ पत्नी को कभी-कभी खूब मारता भी है, पर बाद में जब जेवर कपड़ों से उसे खुश करना चाहता है तो कलावती कहती है—"इन जेवरों व कपड़ों से मेरा घायल मन तो स्वस्थ नहीं हो सकता।"

सेठ चिढ़ कर कहता—"तेरे भाग्य में गरीबी है। तेरा मेरे घर गुजारा नहीं, तू तो जाकर काशी वास कर।"

और सचमुच में जब एक दिन सेठ ने किसी गरीब पड़ौसिन की नव-युवति कन्या को घर में डाल लिया, कलावती से यह नहीं देखा गया और वह अरविन्द आश्रम में चली गई।

विवाह के २५ वर्ष तक तो बृजभूषण और स्नेह की अच्छी तरह निभ गई। युवावस्था में दोनों परस्पर प्रेम से रहे। जैसे-जैसे उमर बढ़ती गई बृजभूषण काम में अधिक व्यस्त रहने लगे। वह अपने व्यवसाय में ऐसे लिप्त हो गए, धन कमाने की लालसा इतनी प्रबल हो उठी कि उन्हें अपनी पत्नी की ओर ध्यान देने का अवकाश ही न मिला। परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे पति-पत्नी में दूरी बढ़ती गई। पत्नी स्वयं को उपेक्षित समझने लगी। यदि उसने कभी पति को उलाहना दिया भी तो यही जवाब मिला—'अब उम्र का भी तो तकाज़ा है। शारीरिक शक्ति अब वैसी कहाँ रही ? फिर अवकाश भी कहाँ मिलता है ?'

पत्नी ने लाख समझाया—"स्त्रियों को इस उम्र में शारीरिक भूख नहीं, मानसिक तृप्ति की आवश्यकता होती है। बुढ़ापे में मन का मीत तो चाहिए। तुम्हारी सब दिलजोई जवानी के साथ ही खतम हो गई क्या ? पति-पत्नी का प्रेम अनुभव और मधुस्मृतियों से बुढ़ापे में और अधिक स्थायी हो जाता है। तुम मित्रों की पत्नियों से चुहलबाज़ी करते हो, पर मेरे पास ही तुम्हारा मुँह सिल जाता है ?"

लोगों को क्या मालूम कि जिन दम्पति को वे लोग हंसों की स्नेही जोड़ी समझते थे आज पति की नासमझी से वह अपनी आखिरी मंजिल में आकर एक-दूसरे के साथ कदम मिला कर चलने में असमर्थ हो रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुढ़ापे में यदि पति-पत्नी का परस्पर आकर्षण या मित्र-भाव नहीं बना रहता, वे एक-दूसरे के कामों में दिलचस्पी नहीं लेते, प्रेरणा

नही देते तो वे एक-दूसरे से दूर-दूर होते जाते है। देखने मे आता है कि पति नौकरी से अवकाश ग्रहण कर परिवार मे दिलचस्पी लेना छोड देता है या फिर आलोचक बन कर परिजनो के प्रत्येक कार्य मे मीन-मेख निकालता रहता है, जब कि पत्नी अपने नाती-पोतो तथा गृहस्थी के कामो मे व्यस्त रहती है। इससे उसकी प्रधानता रहती है, पति का व्यक्तित्व गौण बन जाता है। रास्ते भिन्न हो जाने से पति-पत्नी का साथ छूट जाता है, इससे भी बुढापा बीतना कठिन हो जाता है।

बाज पुरुष यह समझते है कि ५५ वर्ष की उम्र तक कमा लिया अब आराम करने का वक्त है। बस वह ठाले-निट्ठले-बैठे रहते है। परन्तु यदि इस आयु मे कार्यशक्ति बनी हुई है तो निठल्ले बैठना उचित नही है। गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ बढी होने के कारण पत्नी घबडाती है। वह जब स्वयं दिन भर काम मे लगी रहती है तो उसे पुरुष के आलसी जीवन पर चिढ उठती है।

हरीराम वैसे तो दिन भर शतरज बिछाए रखते है, बैठक मे दोस्तो का जमघट लगा रहता है। उनकी पत्नी देवकी को भोजन की इन्तजार मे दोपहर के तीन और रात के ग्यारह बजते है। उसे अपने पति के इस दुर्व्यसन से बडी चिढ है, जब वह रोकती-टोकती है तो जवाब मिलता है—"लो, अब तो सरकार ने भी पेशन दे दी, फिर तुम हमे छुट्टी क्यो नही मनाने देती ? अब क्या सारी उम्र हल मे ही जुता रहूँ ?"



देवकी का कहना है—"अवकाश के समय का सदुपयोग करो। कभी बच्चो को पढाने-लिखाने के लिए ही अपने पास बिठा लिया करो। कुछ सामाजिक सेवा करो, अच्छी-अच्छी पुस्तके पढो, कथा-पुराण बाँचो। बडो-बूढो ने गलत बात नही कही कि 'ताश करे नाश, शतरज करे रज'। तुम्हारे देखादेखी बच्चे भी

छुट्टी के रोज दिन भर ताश पीटते रहते हैं। तुम्हारी अनियमित दिलचस्पी के कारण मुझे जरा आराम नहीं मिल पाता। जब इतने दिन तुम्हारी सेवा की तो अब बुढ़ापे में तुम्हारे खाने-पीने और आराम की फिक्र किए बिना मुझ से रहा भी तो नहीं जाता। पर एक तुम हो कि परिवार की चिन्ता भुलाकर इस निगोड़ी शतरंज में ही मस्त रहते हो।

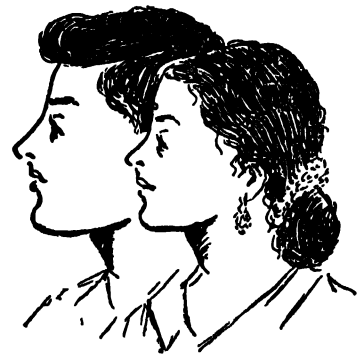
देवकी कह-कह कर थक गई पर हरीराम जी पर कुछ असर नहीं हुआ। उनकी गृहस्थी की गाड़ी भी उसी रफ्तार से चल रही है। सोचने की बात है कि इसी तरह से कई महिलायें अपने पति की बेपरवाही, दुर्व्यसन और आलसी स्वभाव से परेशान रहती हैं।

युवावस्था में तो पशुओं के जोड़े भी साथ-साथ रह लेते हैं, बुढ़ापे में ही जीवन साथी की अधिक जरूरत महसूस होती है। यदि पत्नी दिन भर पूजा-पाठ, सतसंग और बिरादरी के उत्सवों में शामिल होने में अधिकांश समय गुजार दे, तो गृहस्वामी को ड्योढ़ी पर अकेला बैठे-बैठे ऊँघते हुए ही समय गुजारना पड़ता है। वह सोचता है जीवन के तीन भाग तो मजे में गुजर गए, अब बहू-बेटों का राज है, पत्नी को अपना परलोक सुधारने से अवकाश नहीं। रह गया एक मैं निठल्ला। इतने साल साथ गुजरे पर पत्नी मेरे मानसिक स्तर तक पहुँच ही न सकी। यही कहना पड़ेगा कि शरीर का साथी तो सब को मिल जाता है, पर मन का मीत, जो कि सच्चे अर्थ में जीवन साथी प्रमाणित हो सके, किसी बिरले ही भाग्यशाली को मिल पाता है।

हमारे यहाँ पति-पत्नी आत्मसात् होने की कोशिश ही नहीं करते। एक दूसरे को समझकर अपनाए बिना, रुचि व विचार सादृश्यता लाए बिना मित्रता चिरस्थायी नहीं हो पाती। इस असफलता का एक कारण यह भी है कि पति-पत्नी बच्चों के पालन-पोषण, गृहस्थी की व्यवस्था, अर्थोपार्जन आदि कामों में एक-दूसरे का हाथ नहीं बटाते। अपना-अपना क्षेत्र बटा होने के कारण उनकी जिम्मेदारियाँ, अनुभव, जानकारी और दिलचस्पी का दायरा भी बट जाता है अतएव साथ रहते हुए भी वे एक-दूसरे के सच्चे अर्थ में सहायक और पूरक नहीं बन पाते।

भुवन और गौरी का विवाह हुए बीस वर्ष हो गए हैं। गौरी जब ब्याही आई थी बड़ी सुन्दर और आकर्षण प्रतीत होती थी। भुवन भी गोरा-चिट्टा, कद-काठ से बहुत सजीला जवान था। दो-चार बच्चों की माँ बन कर गौरी

अपने रूप-रंग की ओर से बेपरवाह हो गई। भुवन ने इस ओर उसका ध्यान कई बार आकृष्ट किया पर उसका एक ही जवाब था—'क्या यौवन हमेशा बना रहेगा ? इस उम्र में भी तुम्हारी आँखें रूप ढूंढ़ती हैं !'



भुवन का कहना था—'पति-पत्नी के जीवन भर परस्पर आकर्षण बनाए रखना चाहिए। वे बच्चों के माँ-बाप के अतिरिक्त एक-दूसरे के लिए प्रेमी-प्रेमिका का रिश्ता भी तो रखते हैं।' पर नीरस गौरी रसिक भुवन के मन की बात नहीं समझ सकी। भुवन अपने ख्यालों की दुनियाँ में खोया रहता है। वह आँख मीच कर कल्पना सुन्दरी को साकार करने की चेष्टा करता है, परन्तु आँख खुलने पर जब वह अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाली अपनी श्रीहीन पत्नी को देखता है तो मन मसोस कर रह जाता है।

इस प्रकार अनेक दम्पति कराहते, सिसकते, शिकायतें करते, अरमानों को कुचल कर उसाँसे भरते हुए अपनी जिन्दगी काट रहे हैं। सब कुछ होते हुए भी वे सुखी और सन्तुष्ट नहीं है। जो खटकने वाला अभाव है वह काँटे की कसक की तरह स्वस्थ जीवन को भार रूप बनाता रहता है। काशकर ये दम्पति अपनी भूल समझते, गलतियों को सुधारते, परस्पर समझौता कर सकते तो इनका जीवन भी रंगीन और सरस होता, इसमें सन्देह नहीं।

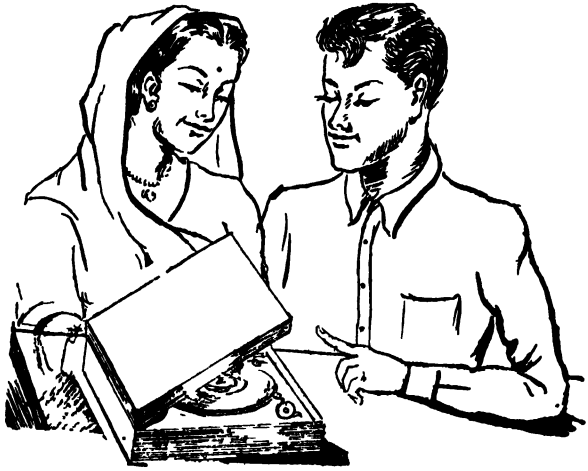
कुछ अन्य समस्यायें—

यह तो हुई पति-पत्नी के भूलों की राम-कहानी। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य ऐसी भूलें हैं जिनसे बच्चों और अन्य परिजनों का सम्बन्ध है। बहुत कम माँ-बाप इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि उनके जमाने से बच्चों का जमाना काफी बदल गया है अतएव रीति-रिवाज, समाज का दृष्टिकोण, परख और फैशन का भी उसी रफ्तार से बदलना बिल्कुल स्वाभाविक है।

अलका देखने में सुन्दर है, पढ़ने में भी तेज है, उसकी बड़ी इच्छा थी कि आगे कॉलिज में पढ़ूं, पर माँ-बाप पुराने ख्याल के हैं, इस कारण उन्होंने कन्या को आगे नहीं पढ़ाया। भाई ने उसके विवाह की दो-एक जगह बात

चलाई और यह समझा दिया कि आजकल लड़के लड़की को देख कर विवाह करते हैं, पर अलका के माता-पिता इसे बहुत बुरा मानते हैं। उनका कहना है कि कन्या को यदि कोई लड़का 'न' कर जायेगा तो फिर उसका ब्याह नहीं हो सकेगा। माता-पिता के दकियानूसी ख्यालातों के कारण अलका का विवाह एक मामूली घर में हुआ।

अलका का भाई मदन बहुत समझदार था। उसने जब यह देखा कि माता-पिता बहू के चुनाव में भी ऐसी गलती करेंगे और उसका ब्याह एक ऐसे धनी घराने में कर रहे हैं जिसकी लड़की कुरूप और अनपढ़ है, तो उसने ब्याह से इन्कार कर दिया। इससे बाप बेटे में काफी कहा सुनी हुई। लड़का जब नौकरी पर लग गया, उसने अपने एक मित्र की सुन्दरी व पढ़ी लिखी बहन से शादी कर ली। माँ-बाप ने बहू का स्वागत नहीं किया। नतीजा यह हुआ कि अब मदन और उसकी पत्नी कभी घर नहीं आते। अपनी इस जिद्द के कारण मदन के माता-पिता कुढ़ते रहते हैं। आजकल की पढ़ाई को कोसते हैं। उनकी दृष्टि में पढ़ाई व फैशन ने जमाने को चौपट कर दिया है।



गिरिधारी लाल जी की बजाजी की दूकान है। उन्होंने अपने बेटे मुरारी को भी बी० ए० पास करा कर उसी दूकान में लगा लिया। काम बढ़ गया तो दूकान की एक शाखा नई दिल्ली में भी खोलनी पड़ी। इसी साल मुरारी की शादी भी कर दी गई। मुरारी की माता जी बहुत कड़ाई के साथ बहू पर शासन करने में विश्वास करती हैं।

मुरारी ने एक दिन अपने पिताजी से कहा—"नई दिल्ली में काम ज्यादह है। दूकान का ऊपरवाला हिस्सा खाली हुआ है। वह ले लिया जाए तो वहाँ

रहने की सुविधा रहेगी।"

खैर फ्लेट ले लिया गया। अब मुरारी अधिकांश समय वहीं रहता। वह चाहता था कि पत्नी को भी वहीं ले जाऊँ। एक दिन उसने अपनी माताजी से इस बात की चर्चा की। माँ चिढ़ कर बोली—"मालूम पड़ता है बहू तुझे अलग रहने का सबक रटा रही है। तू रहना चाहे तो रहे, पर बहू यहीं रहेगी।"

खैर दो-एक साल इसी तरह बीत गए। एक बार बहू को मोतीझरा निकल आया। सास हकीमी इलाज में ही विश्वास करती थी। बेपरवाही से बीमारी बढ़ गई। अन्त में मुरारी ने जिद् करके उसे नर्सिंग होम में दाखिल करवा दिया। डाक्टर ने मुरारी से कहा कि यदि तुम अपनी पत्नी को स्वस्थ रखना चाहते हो तो उसे शहर से बाहर अपने पास रखो, नियमित रूप से उसे टानिक और पूरा आराम दो। मुरारी जानता था कि अम्माँ के घर में यह सब हो सकना असंभव है। अतएव वह बहू को नई दिल्ली के फ्लेट में ले आया। अपने पिता जी से भी उसने एक दिन सब बात खोल कर कह दी कि वहाँ अम्माँ के कारण मैं उसे शहर वाले घर में नहीं भेजूँगा।

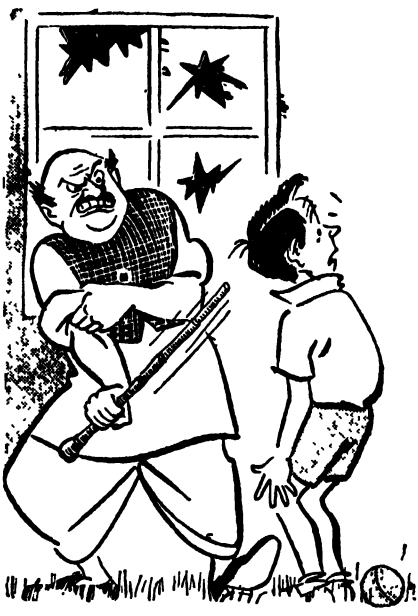
अम्माँ ने जब यह सुना तो जल-भुन गई। बाप के कान भरे और लड़के का खर्चा बन्द करवा दिया। लाचार होकर मुरारी ने दूकान के हिसाब में उल्ट-फेर कर अपना खर्चा निकालना शुरू किया। जब बाप को यह पता चला तो उसने नई दिल्ली की दूकान बन्द करवा दी। बेटे ने जब अपना हिस्सा माँगा तो बोले—"तूने क्या कमाया है। पूँजी तो मेरी लगी थी। मेरी साख से दूकान चलती थी, तुझे कौन पूछता है? टके की तो औकात नहीं तेरी।" मुरारी बिगड़ा कि क्या सात-आठ साल से मैंने जो मेहनत की उसका हिस्सा मुझे नहीं मिलेगा?

कुछ समझौता न हो सकने पर बाप-बेटों में मुकदमा छिड़ गया। परिणामस्वरूप बाप का सारा व्यवसाय चौपट हो गया। कुछ लोग बाप को बुरा कहते हैं कुछ बहू-बेटे को दोष देते। पर बरबादी व बदनामी दोनों कुलों की हुई। यदि माता-पिता ने स्वेच्छा से बहू-बेटे को आत्मनिर्भर बनने में सहयोग दिया होता तो यह नौबत न आती।

लोग बच्चों की कामना भी करते हैं और जब हो जाते हैं तो उनको संभाल सकने में असमर्थ होने के कारण उन्हें कोसना शुरू करते हैं, अपनी

नासमझी के कारण उनको समस्यापूर्ण बना देते हैं और स्वयं अपना जीवन भी कटु बना लेते हैं। गुप्ता साहब अपने बच्चों से इसलिए परेशान हैं कि वह महा उधमी हैं। पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता। आये दिन प्रोफेसरों व मास्टरों की शिकायत व अड़ौस-पड़ौस के उलाहने सुनने पड़ते हैं। यह सब इसलिए होता है कि गुप्ता साहब का चरित्र भी बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद नहीं है, फिर भला बच्चे सदाचारी कैसे बनें ?

आज घरों, स्कूलों, कालिजों और समाज में बालकों और नवयुवकों के चरित्र की उच्छृङ्खलता खटकने लगी है। इसी से समाज की मर्यादा टूटती नजर आती है, घरों में शान्ति भंग हो रही है। स्कूलों में मास्टर परेशान हैं, कालिजों में प्रोफेसर की पगड़ी न उछाल दी जाय इस डर से चुप हैं। बच्चों व नवयुवकों को डिसीप्लिन में रखना मुश्किल इसलिए हो रहा है क्योंकि उनमें सहन-शक्ति और सदाचार का अभाव है। यदि बच्चों के चरित्र का विकास ठीक से नहीं होता, उनमें सद्गुणों का बीज नहीं बोया जाता तो वे बड़े होकर अवश्य ही उच्छृङ्खल हो जाएँगे। आत्मसन्तुष्टि, साहस, परोपकारवृत्ति, दया और सहानुभूति, उत्साह, आत्मविश्वास और शील-सौजन्यता ये ऐसे गुण हैं जो कि चरित्र को विकसित करने, जीवन को उपयोगी बनाने और बच्चों को सामाजिक बनाने के लिए जरूरी हैं। पर यह गुण चाहने मात्र से आपके बच्चों में नहीं आ जाएँगे। उसके लिए आपको अपने चरित्र को भी कसौटी पर कसना होगा।



पारिवारिक सुख के लिए एक यह बात भी बहुत जरूरी है कि दम्पति परिवार नियोजन का महत्व समझें। खाते-पीते घरों में भी अधिक बच्चों के जन्म के कारण गरीबी आ जाती है। घर की सुविधाएँ, माता-पिता का प्यार,

पालन-पोषण और शिक्षा के साधन अधिक बच्चों में बँट जाने से एक के साथ भी न्याय नहीं हो पाता। अधिक बच्चे अभाव तो पैदा करते ही हैं, उनके कारण माता के स्वास्थ्य और पिता की कार्यशक्ति पर भी जरूरत से अधिक दबाव पड़ जाता है। वृद्धावस्था तक उनके पालन-पोषण, शिक्षा व ब्याह आदि के लिए दम्पति को जुता रहना पड़ता है।

वृद्धावस्था में जब कि कार्य व उपार्जन शक्ति कम हो जाती है, इस बात की और भी अधिक जरूरत होती है कि मनुष्य चैन से, बेफिक्री से रह सके। अपने स्वास्थ्य सुधारने और आराम करने के लिए उसके पास अवकाश होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब कि आपको अनावश्यक पारिवारिक चिन्ताओं से छुटकारा मिल जाए, आर्थिक रूप से आप सुरक्षित हों और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आपको दबोचे न रहें। इसके लिए यह जरूरी है कि आपके बच्चों की संख्या सीमित हो और वे आपके अवकाश ग्रहण करने से पूर्व अपने पाँवों पर खड़े हो जायें।

आपका यह कर्त्तव्य है कि बच्चों को आत्मनिर्भर होने में मदद दें। पर उनकी पढ़ाई के लिए या ब्याह-शादी के लिए कर्जा निकालकर या अपने



बुढ़ापे के लिए सुरक्षित रकम को खर्च कर अपने को मुसीबत में कभी मत डालें। यथा-शक्ति चेष्टा करने का यह अभिप्राय कभी नहीं है कि अपना बुढ़ापा असुरक्षित बना लेना। सब बच्चों के साथ एक-सा व्यवहार करें। अधिक सुन्दर या कमाऊ बच्चे पर अधिक अनुग्रह रखने से अन्य बच्चों के मन

में द्वेष उत्पन्न होता है, उनका मन माता-पिता से विरक्त हो जाता है और वह परस्पर सहयोग करना छोड़ देते हैं। कई माता-पिता अपना मतलब साधने के लिए एक भाई को दूसरे से भिड़ा देते हैं इससे भाइयों-भाइयों में लड़ाई-झगड़ा होता है।

रायबहादुर रासबिहारी जो के चार बेटे व एक बेटी है जिस-जिस बेटे का भी ब्याह हुआ, एक साल के अन्दर ही श्रीमती रायबहादुर ने उस बेटे व बहू के नाम ऐसी-ऐसी कहानियाँ रटाई कि उनको नालायक, मनहूस और जोरू का गुलाम आदि प्रमाणित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। यहाँ तक कि समधियाने तक से लड़ आई, उन्हें बुरा-भला कहा। विवाहित लड़कों के विरुद्ध अपने कुआरे बेटों व बेटी को गवाह बनाया, उन्हें भाभी भावज से लड़ने को उभारा। अन्त में जब चारों बेटे ब्याहे गए तो उन्हें अपनी कर्कशा माँ की चाल का ज्ञान हुआ, अब वे सब अलग-अलग हैं। इस ट्रेनिङ्ग का बेटी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। वह महा कर्कशा और छल-प्रपंचप्रिया निकली। ससुराल जाकर उसने बड़े-बड़े तूफान खड़े किए, सास-ससुर के नाम झूठी-झूठी कहानियाँ गढ़ीं। आज ऐसी बहू के कारण उसका सारा कुनबा दुखी हो रहा है।

बहुत से पारिवारिक झगड़े वसीयतनामे को लेकर होते हैं। यदि गृहस्वामी समय रहते वसीयतनामा नहीं करते या वसीयतनामे में अपनी सम्पत्ति के बँटवारे के विषय में स्पष्ट रूप से नहीं लिख जाते, तब बाद में भाई-भाई, भाई-बहनों, माँ-बेटे और देवर-भावज में काफी झागड़ा खड़ा हो जाता है। स्त्रियों को कानून-कायदे का अधिक पता नहीं होता, विधवा को असहाय पाकर देवर, भाई, बेटे, या साझेदार नोचते-खसोटते हैं। इससे पारिवारिक एकता छिन्न-भिन्न हो जाती है।

मृत्यु कर से बचने के लिए या कन्याओं को सम्पत्ति न चली जाए इसलिए कई पिता अपनी सम्पत्ति दिखावे के लिए लड़कों के नाम 'गिफ़्ट' (gift) कर देते हैं। नालायक लड़के उस 'गिफ्ट' का नाजायज़ फायदा उठा, उस रकम या मकान को खर्च कर या बेच कर खतम कर देते हैं। ऐसी बातों से भी पारिवारिक कलह बढ़ती है और मेहनत से अर्जित सम्पत्ति को बुढ़ापे में इस तरह बरबाद होते देख माता-पिता को बहुत क्लेश होता है। सोचने-समझने की बात तो यह है कि बच्चों का दृष्टिकोण धर्म-प्रधान बना कर

उन्हें अच्छे नागरिक बनाया जाये। धन जीवन का साध्य नहीं अपितु साधन समझा जाना चाहिए। जीवन को सुखी बनाना एक कला है। अपनी लाचारियों से मनुष्य को समझौता करना आना चाहिए। यदि मनुष्य अपने तई सच्चा है तो उसका जीवन सन्तोष से कट जाता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि—'मनुष्य अपूर्ण है, अपनी प्रवृत्तियों की तृप्ति चाहता है, उसके लिये प्रयत्न करता है; यही तो मनुष्य जीवन है। इस तलाश में, अतृप्ति में और अनवरत प्रयत्न में ही मनुष्य का जीवन व्यतीत होता है। विवेक द्वारा इस प्रयत्न को सार्थक और सुविधा पूर्ण बनाना ही मनुष्य के अधीन है। पूर्णता न तो मनुष्य का आदर्श है और न ही सम्भव है।'

सम्मिलित परिवार की समस्याएँ—

देखने में आता है कि पुरातन ढङ्ग के सम्मिलित पारिवारिक जीवन प्रणाली जिन घरानों में है, वहाँ नवीन विचारधाराओं के दम्पति की गुजर होनी कठिन होती है। विरोधी विचारों और आदर्शों के होने के कारण भी गृह-कलह होती रहती है।

एक विद्वान लेखक ने भारतीय सम्मिलित पारिवारिक जीवन की जो प्राचीन पद्धति है, उसके थोथेपन का विवेचन करते हुए कहा है कि—'भारतीय समाज में विवाह एक प्रश्न है—एक समस्या है। आज के हमारे सम्पूर्ण मानसिक असन्तोष का कारण भी यही है, माँ-बाप पिछली-पीढ़ी की मनोवृत्तियों के अनुसार आनेवाली सन्तान के लिए उसका जीवन साथी खोजते हैं, जब कि आने वाली पीढ़ी नये विचारों के साथ, जमाने के साथ चलने की हामी भरती है। मैं इससे पूर्ण सहमत हूँ कि माँ-बाप बच्चे के मनोविज्ञान से भली-भाँति परिचित होते हैं, पर अपने ही बच्चे के विकास से, न कि दूसरे के बच्चों की प्रगति एवं मनोविज्ञान से। कौन जानता है कि लड़का और लड़की के व्यक्तिगत विचारों एवं मूल्याँकन के मापदण्डों में कितने का अन्तर है। पर पुरानी पीढ़ी की विचारधारा में पले हुए हमारे अग्रज बीच में खड़े होकर दो जिन्दगी का सौदा दहेज के रूप में करते हैं। दो व्यक्तियों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में पली हुई मनोवृत्तियाँ खुले आम नीलाम कर दी जाती हैं और परिणाम यह होता है कि नवदम्पति में ही असन्तोष का विस्फोट होता है, जिसे दबाते-दबाते भी वे हार जाते हैं और जिन्दगी का अधिकाँश भाग सिसक-सिसककर काट देते हैं। हो सकता है; आज से ५० वर्षों पूर्व नारी की अन्ध भक्ति एवं समझौता करने

की विशेष प्रवृत्ति के कारण इस प्रकार का वैवाहिक सम्बन्ध सफल रहा हो, पर आज के ऐसे विवाहों में तो बहुधा रस्सा-कसी ही हुआ करती है। प्रेम क्या वस्तु है इसे अन्त तक दोनों नहीं जान पाते और नारी पुरुषों के लिए शारीरिक आवश्यकता एवं मनोरंजन का साधन बन जाने के सिवाय और आगे नहीं आ पाती ! रूढ़ियों एवं बन्धनों में जकड़े हुए समाज के इन सतर्क नागरिकों को जानबूझ कर अपने व्यक्तित्व की हत्या करनी पड़ती है।

आदर्श परिवार—

'नये प्रकार की परिवार-व्यवस्था से सचमुच अनेक लाभ भी हैं जिन पर भारत को ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले तो माँ-बाप अपने उत्तरदायित्व से अलग रहते हैं और दूसरे, दोनों व्यक्तियों में मानसिक असन्तोष नहीं आने पाता। इस प्रथा का सबसे स्पष्ट प्रभाव देश के आर्थिक सन्तुलन पर पड़ता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। पति-पत्नी, अधिकाँशतः जब तक कोई सन्तान न होगी, दोनों कार्य करते रहेंगे और कन्धे-से-कन्धे मिलाकर अपने भविष्य का निर्माण करेंगे जिसे अपना कहने का उन्हें पूर्ण अधिकार है। भारतीय सम्मिलित परिवार प्रणाली में यही सबसे बड़ा दोष है कि घर के प्रधान पर ही सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सौंप दिया जाता है। कमानेवाले एक या दो होते हैं, खाने वाले कम-से-कम सामान्यतः ८ से १५ तक होते हैं। ऐसी दशा में देश का आर्थिक स्तर एवं परिवार का रहन-सहन किसी भी भाँति ऊपर नहीं उठ सकता। इस प्रकार के एकाकी परिवार एवं व्यक्तिगत चयन से भारतीय दहेज प्रथा का सौदा प्रत्येक व्यक्ति की क्रियाशीलता एवं रोजगार, तथा व्यक्तिगत विवाह प्रथा सम्मिलित परिवार प्रणाली में भी सम्भव हो सकता है। पर इसकी सम्भावना १० प्रतिशत ही की जा सकती है। साथ ही, आज की परिस्थिति एवं समाज में एक बात का और ध्यान देना है कि कभी भी दो व्यक्ति एक ही समय और परिस्थिति में होने पर भी एक प्रकार नहीं सोच सकते और जहाँ १०-१२ व्यक्ति होंगे वहाँ उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि वे दो व्यक्ति जिन्हें अपनी जिन्दगी अपने आप देखनी है किसी न किसी प्रकार समझौता कर ही लेंगे, अपेक्षाकृत १० या १२ व्यक्तियों के। दूसरी बात एकाकी परिवार प्रणाली के विषय में यह कही जा सकती है कि इन स्वतः विभाजित पारिवार में पारस्परिक

प्रेम भी उससे कहीं अधिक बना रहता है जितना कि हमारे यहाँ के विभाजित परिवार में विभाजन के बाद ही द्वेष का प्रसार होता है। योरोप में प्रत्येक पिता के बच्चे वहाँ के सामाजिक एवं पारिवारिक पर्वों पर उसके यहाँ एकत्र होते हैं और पर्व को हमारे पर्वो से कहीं दस गुने उत्साह के साथ सफल बनाते हैं। एक दूसरे की आवश्यकता में सहायतार्थ खड़े होते हैं और भाई-बहन का पारस्परिक सम्बन्ध भली भाँति निभा सकने में एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। निष्पक्ष होकर हमें अपनी कमी को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि हमारे सम्मिलित परिवार में हम एक होकर भी अपनी-अपनी विचारधाराओं, आवश्यकताओं एवं रुचि के अनुसार अलग-अलग होते हैं और वे अलग-अलग होकर भी मन से एक होते हैं।'

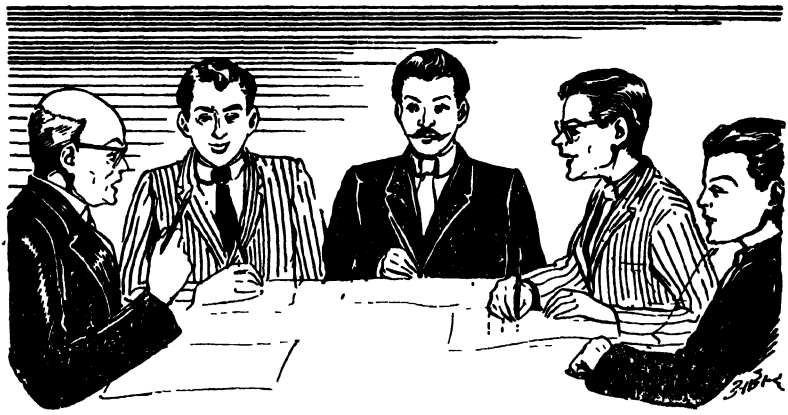
इस में कोई सन्देह नहीं कि बदली हुई सामाजिक परिस्थिति और विचारधारा भी संयुक्त परिवार की हिलती हुई दीवारों को चोट पहुँचा रही है। एक समूचे परिवार की जिम्मेदारी परिवार का मुखिया भला कैसे सँभाल सकता है ? आय कम और व्यय अधिक होने तथा बेरोजगारों की संख्या परिवार में बढ़ जाने से परिवार में असन्तोष और मनमुटाव पैदा हो जाता है। रोज की तू-तू मैं-मैं से परिजनों का पारस्परिक प्रेम, बड़ों का अदब कायदा टूट जाता है। बच्चों के विकास में भी ऐसा असन्तुष्ट वातावरण हानिकारक प्रमाणित होता है। पहले व्यक्ति से अधिक प्रमुखता समाज को दी जाती थी—पर अब व्यक्ति समाज से ऊपर उठ रहा है। उस के उन्मुख विकास की आवश्यकता को भुलाया नहीं जा सकता। स्वस्थ्य वातावरण और स्वतन्त्रता के लिए प्रत्येक दम्पति लालायित है। सामूहिक उत्तरदायित्व निभाना कठिन प्रतीत हो रहा है। पारिवारिक कलह को कम करने के लिए भी छोटे परिवारों को मान्यता देनी जरूरी है। एक अनुभवी बहन का कहना है कि—

स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में जो कुछ क्राँतिकारी परिवर्तन जन्म ले रहे हैं उनके कारण भी इस प्रथा का मूल्य घटता जा रहा है। स्त्री-पुरुष की समानता के कारण यह बहुत कठिन हो गया है कि बड़े-बड़े परिवार संगठित रीति से चलते रहें। स्त्रियों को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हो रही है, वे भी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने की अधिकारिणी हैं। तो फिर यह नहीं सम्भव है कि एक बड़े परिवार में सब अपनी अलग-

अलग राह पर चलते जायँ और साथ ही घर के दैनिक कार्यों में भी उतना ही योग दें। एक छोटे परिवार में यह समानता निभ सकती है, बड़े संयुक्त परिवारों में तो इसके आधार पर नित्य नयी झंझटें ही खड़ी होंगी। बड़े घर में तो स्त्रियों-स्त्रियों में ही इस तरह आपसी शान्ति नहीं रह पाती। उस का मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि प्रतिभा-संपन्न सदस्याएँ अपना जो योग परिवार को देती हैं उसे प्रायः अन्य अपेक्षाकृत कम योग्य स्त्रियाँ मान्यता नहीं देना चाहतीं। पग-पग पर गृह-कार्यों को लेकर एक झगड़ा खड़ा हो जाता है क्योंकि जो स्त्रियाँ बाहर के कामों में अधिक लगी होंगी स्पष्ट है वे उतनी सक्रियता से गार्हस्थिक बोझ नहीं उठा सकेंगी, इस लिए छोटी-छोटी बातों पर भावनात्मक विस्फोट हो जाता है। इस तरह प्रतिभाएँ भी कुंठित होती हैं, मन भी दुखते हैं। इस प्रकार के संघर्ष को बचाये रहने का सबसे सरल तरीका है, समर्थ सदस्यों का पृथक होकर रहना।

३२. इनकी भी जानकारी रखें

हो सकता है कि भविष्य में हिन्दू कोड बिल या सम्पत्ति अधिकार के कारण कुछ और नई पारिवारिक समस्याएँ पैदा हों। ऐसी सूरत में यह



आवश्यक है कि स्त्री-पुरुष इस के व्यवहारिक रूप को समझ लें। इससे वह उलझनों में पड़ने से बच सकेंगे।

मैं नीचे श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल जी की पुस्तक 'स्त्रियों की स्थिति में हिन्दू कोड बिल' और सम्पति अधिकार के विषय में सार पूर्ण अंश सधन्यवाद उद्धृत करती हूँ—

१. इनकी आवश्यकता क्यों ?—

हमारे सामाजिक-विधान में पिछले एक-डेढ़ हजार साल से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आज की और हजार साल पहले की दुनिया में जमीन आसमान का अन्तर हो गया है। फिर भी वही पुरानी सामाजिक व्यवस्था जो अब से हजार साल पहले थी, आज भी प्रचलित है। परिस्थितियाँ बदल गयीं, किन्तु कानून नहीं बदला। यही कारण है कि वर्तमान कानून हमारे समाज की ज्वलन्त समस्याओं को हल करने में असमर्थ सिद्ध हो रहा है। उदाहरणार्थ, उस स्त्री के सम्मुख, जिसका पति उसके जीते-जी दूसरा विवाह

कर लेता है, परित्यक्ता के रूप में दुःखी तथा अपमान पूर्ण जीवन बिताने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं। वह स्त्री जिसका पल्ला एक बार किसी व्यक्ति से बँध गया, चाहे वह पागल या हद् दर्जे का मूर्ख ही क्यों न हो, उससे आजन्म छूट नहीं सकता। एक लखपति की कन्या यदि विधि के विधान से किसी गरीब घर में ब्याह कर चली गई तो अपने पिता की सम्पत्ति से उसे कोई हिस्सा नहीं मिल सकता, क्योंकि कानून के अनुसार केवल पुत्र ही सम्पत्ति का मालिक हो सकता है, पुत्री नहीं। एक विधवा पत्नी को अपने पति की कमाई पर भी पूरा अधिकार नहीं मिलता। इस प्रकार हमारी वर्तमान व्यवस्था ने हमारे समाज की नयी समस्यायें खड़ी कर दी हैं। ये समस्यायें पिछले सौ डेढ़-सौ सालों से तो इतनी उग्र हो चुकी हैं कि लगभग सभी समाज शास्त्रियों का ध्यान अपने-अपने समय में इनकी ओर जाता रहा है। पिछले तीस सालों में तो हमारे विधान निर्माताओं ने नयी परिस्थितियों के अनुकूल एक नया हिन्दू कोड बनाने के अनेक संगठित प्रयत्न किये। वर्तमान हिन्दू कोड विधेयक इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम है। यह कोड समाज की अधिकांश ज्वलन्त समस्याओं को, जिनमें से कुछ की ओर ऊपर संकेत किया गया है, हल करने का प्रयत्न करता है। इसके द्वारा हमारे सामाजिक प्रश्नों को किस प्रकार सुलझाया जायेगा तथा हमारे जीवन पर इसका व्यावहारिक रूप में क्या प्रभाव पड़ेगा। इस सम्बन्ध में विचार करने का हम यहाँ कुछ प्रयत्न करेंगे।

हिन्दू कोड बिल को छः भागों में बांटा गया है। जो इस प्रकार है—१—विवाह तथा तलाक, २—उत्तराधिकार, ३—अभिभावकता, ४—गोद लेना, ५—निर्वाह, ६—संयुक्त परिवार। इनमें पहले दो पर कानून बन चुके हैं और वास्तव में 'विवाह' तथा 'उत्तराधिकार' ही हिन्दू कोड के महत्वपूर्ण भाग हैं। इनका हमारे क्रियात्मक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ने वाला है। अतः इनकी समाज पर व्यावहारिक रूप में प्रतिक्रिया की दृष्टि से हम उपरोक्त दोनों कानूनों पर यहाँ कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

२. विवाह—

विवाह सामाजिक जीवन का आधार है। विवाह ही पारिवारिक जीवन की सुख तथा शान्ति का वास्तविक स्रोत है। प्राचीन काल में हमारे यहाँ विवाह की एक आदर्श प्रथा का जन्म हुआ था, जिनके अनुसार स्त्री

और पुरुष को विकास की समान सुविधाएँ प्राप्त थीं, दोनों के लिए समान नियम, समान कर्त्तव्य तथा समान अधिकार थे। इसलिए उस समय का समाज अत्यन्त उन्नत अवस्था में था। कालान्तर में हमारी विवाह की प्रथा विकृत तथा दूषित हो गयी। स्त्री तथा पुरुष दोनों के लिए भिन्न-भिन्न नियम बनाये गये। दोनों को एक ही मापदण्ड मापने के स्थान में भिन्न-भिन्न पैमाने से मापा जाने लगा। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में प्रचलित इस दोहरे मापदण्ड ने समाज में अनेक गम्भीर बुराइयाँ उत्पन्न कर दीं जिनका निराकरण इस विवाह-अधिनियम का उद्देश्य है।

(क) एक विवाह—

सबसे बड़ी बुराई जो पैदा हुई वह थी पुरुष के लिए बहु-विवाह की छूट। अब तक इस अधिनियम के बनने से पूर्व यह अवस्था थी कि पुरुष एक स्त्री के जीते-जी दूसरी शादी कर सकता था। पुरुष चाहता तो अनेक विवाह करता चला जा सकता था। और अनेक स्त्रियों को अकारण घोर नारकीय जीवन बिताने के लिए बाध्य कर सकता था। कौन नहीं जानता कि किसी भी स्त्री के लिए अपनी आँखों के सामने अपने पति को दूसरा विवाह करते देखना विष पी लेने से भी अधिक दुखदायी है ? सहपत्नी के घर में आते ही पहली पत्नी को घोर अपमानजनक जीवन बिताना पड़ता है। पुरुष के दूसरे विवाह का प्रभाव पहली पत्नी के बच्चों पर भी इतना बुरा पड़ता है कि उनका सारा जीवन ही विशृङ्खलित और कुण्ठित हो जाता है। समस्त पारिवारिक जीवन को अव्यवस्थित तथा कड़ुवा बना देने वाली बहु-विवाह की प्रथा दो वर्ष पूर्व मई, १९५४ में विवाह विधेयक के स्वीकृत हो जाने के साथ समाप्त हो गई। इसके अनुसार पुरुष के ऊपर भी वही प्रतिबन्ध लग गया जो स्त्री पर था। जिस प्रकार स्त्री के लिये पति के जीवित रहते दूसरा विवाह अमान्य माना जाता था उसी प्रकार पुरुष के लिए भी पहली पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह करना त्याज्य हो गया। अब एक पत्नी के रहते यदि दूसरी शादी करेगा तो वह कानून की दृष्टि में अपराधी और दण्डनीय माना जायेगा। इस प्रकार यह कानून स्त्री और पुरुष दोनों के लिये एक विवाह की अनिवार्यता को राजकीय नियम का रूप दे देता है। बहु-विवाह की प्रथा समाप्त होने से समाज में स्त्री और पुरुष के बीच जो विषमता थी और उस विषमता के कारण स्त्री को जिन कठिनाइयों का सामना करना

पड़ता था, उन सबका अब अन्त हो गया। स्त्री के वैवाहिक जीवन में एक सुरक्षा की भावना पैदा होगी और उसका जीवन पहिले से अधिक महत्वपूर्ण और सुखी बनेगा। इस नियम का परिणाम यह भी होगा कि हमारे समाज में अब तक जो अनमेल विवाह होते थे वे बहुत हद तक रुक जायेंगे। पुरुष को क्योंकि अनेक शादियाँ करने का अधिकार था, उसे छोटी आयु की कुमारी कन्याओं से भी शादी कर लेने की भी छूट थी, जो अब भी है, इसलिए अक्सर साठ वर्ष के बूढ़े अठारह वर्ष की कुमारी लड़कियों से विवाह करते पाये जाते थे। इन अनमेल विवाहों से भी समाज के अन्दर भाषण बुराइयाँ पैदा होती थीं। अब इस एक विवाह सम्बन्धी कानून का परिणाम यह होगा कि समाज बहुत से दोषों से मुक्त होकर उन्नति के मार्ग पर तीव्र गति से बढ़ सकेगा।

(ख) अन्तर्जातीय विवाह—

विवाह अधिनियम के द्वारा अन्य जो सुधार हुए उनमें से एक यह है कि अब हिन्दुओं के अन्तर्गत एक जाति के लोगों को दूसरी जाति में विवाह करना अधिक सुविधापूर्ण हो जायेगा। अभी तक कानून 'अनुलोम' विवाहों को तो मान्यता देता था 'प्रतिलोम' विवाहों को नहीं। ब्राह्मण का लड़का यदि क्षत्रिय की लड़की से शादी कर लेता तो वह वैधानिक तथा शास्त्र सम्मत माना जाता था, किन्तु यदि ब्राह्मण की लड़की क्षत्रिय या वैश्य के लड़के से विवाह कर लेती तो कानून उसे अवैध मानता था। इस प्रकार के 'प्रतिलोम' विवाह जब होते थे तो उन्हें वैधानिक रूप देने के लिए सिविल मैरिज ऐक्ट की शरण लेनी पड़ती थी। अब जो परिवर्तन हुआ है उससे 'प्रतिलोम' विवाह भी वैधानिक माने जायेंगे, अर्थात् यदि ब्राह्मण जाति की लड़की का विवाह क्षत्रिय के साथ या क्षत्रिय कन्या का विवाह वैश्य लड़के के साथ हो जाये तो ऐसे विवाह की सन्तान को सम्पत्ति सम्बन्धी सभी अधिकार प्राप्त होंगे। इससे अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन मिलेगा और जाति-प्रथा के, जो राष्ट्र की एकता में आज सबसे अधिक बाधक है, उन्मूलन का मार्ग खुल जायेगा।

(ग) बाल विवाह पर रोक—

बाल विवाहों को रोकने के लिए अब तक शारदा ऐक्ट सबसे प्रगतिशील कानून माना जाता था। शारदा ऐक्ट के अनुसार विवाह की न्यूनतम

सीमा लड़की के लिए १४ वर्ष और लड़के के लिए १६ वर्ष थी। किन्तु वर्तमान विवाह अधिनियम के अनुसार यह सीमा लड़की के लिए १५ और लड़के के लिए १८ कर दी गई है। इसके अनुसार १५ वर्ष से कम आयु की कन्या या १८ वर्ष से कम आयु के लड़के की शादी होती है तो वह दण्डनीय समझी जायगी और ऐसी शादी के कराने वाले अभिभावक अपराधी माने जायेंगे। हमारी दृष्टि से तो आयु की यह सीमा भी कम ही रक्खी गयी है। विवाह की न्यूनतम आयु लड़की की १८ वर्ष से और लड़के की २५ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। विवाह की आयु जितनी ऊँची होगी शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से हमारी भावी सन्तति उतनी ही स्वस्थ तथा विकसित होगी। इसके अतिरिक्त आजकल की दिनोंदिन बढ़ती जनसंख्या पर भी वह प्रतिबन्ध का काम करेगी। हमें आशा है, हमारे विधान-निर्माता इस अधिनियम द्वारा निर्धारित विवाह की उपरोक्त न्यूनतम आयु से ही सन्तुष्ट न हो जायेंगे, अपितु शीघ्र ही इसमें उचित परिवर्तन करने के लिए उपयुक्त संशोधन लायेंगे।

इस प्रकार वर्तमान 'विवाह अधिनियम' विवाह के क्षेत्र में उठती हुई अनमेल तथा बाल विवाह जैसी अनेक ज्वलन्त समस्याओं का समाधान कर सकेगा। किन्तु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इस क्षेत्र में जिन सुधारों की आवश्यकता थी वे सभी इस कानून से पूरे हो जायेंगे। इसके उपरान्त भी हमारी दृष्टि में अभी सुधार की काफी गुँजाइश है। उदाहरणार्थ, विधुर के कुमारी कन्या से विवाह की प्रथा जो इस समय शिक्षित समाज तक में प्रचलित है, समाज के अन्दर कई जटिलताएँ उत्पन्न कर देती हैं, इस समय ४०-५० वर्ष का विधुर यदि चाहे तो १८-२० वर्ष की कुमारी कन्या से विवाह कर सकता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका परिणाम न तो कुमारी कन्या पर ही अच्छा पड़ता है और न ही विधुर के बच्चों पर। इसके अतिरिक्त समाज में जो विधवाएँ हैं उनके लिए पुनर्विवाह करना एक विषम समस्या बन जाती है, क्योंकि विधुर को जब कुमारी कन्या सरलता से मिल जाती है तो वे विधवा से विवाह करना नहीं चाहते। इन सब विषम परिणामों का निराकरण करने का यही उपाय था कि कानून द्वारा विधुर के कुमारी कन्या से विवाह पर कोई प्रतिबन्ध लगा दिया जाता। जिस समय विवाह विधेयक पर संसद् में विचार हो रहा था तब हमने इस आशय का एक संशोधन प्रस्तुत

भी किया था जिसका अभिप्राय यह था कि विधुर केवल विधवा से और विधवा केवल विधुर से ही विवाह कर सके। ऐसी एक शर्त और विवाह की शर्तों में जोड़ दी जाये। किन्तु इस प्रकार की शर्त व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कड़ा प्रतिबन्ध होगा। ऐसा कह कर सदन में यह संशोधन गिरा दिया गया। यदि उपरोक्त संशोधन मान लिया जाता तो इस अधिनियम में जो अधूरापन रह जाता है वह न रहता। हमें विश्वास है कि निकट भविष्य में ही वह समय आयेगा जब कि विवाह कानून के इस दोष को निकाल दिया जायेगा।

३. सम्बन्ध-विच्छेद (तलाक)—

विवाह एक अटूट और धार्मिक सम्बन्ध है यह विचार परम्परा हमारे समाज में बहुत दिनों से चली आ रही है। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक सुन्दर और ऊँची कल्पना है, किन्तु अपने समाज में इस सिद्धान्त का पालन गत कई शताब्दियों से एक पक्ष की ओर से ही हुआ, दूसरा पक्ष तो निरन्तर उल्लंघन ही करता रहा। जहाँ तक स्त्री का सम्बन्ध रहा वहाँ तक तो विवाह एक पवित्र सम्बन्ध माना जाता रहा, किन्तु पुरुष ने चाहा तो एक के बाद एक विवाह करता रहा और एक नहीं अनेक बार विवाह के 'अटूट' कहे जाने वाले सम्बन्ध को तोड़ता रहा। इसके विपरीत स्त्री को किसी भी भयंकर-से-भयंकर परिस्थिति में हमारा कानून पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं देता रहा। इस एकपक्षीय आदर्शवादिता का परिणाम समाज के लिए अत्यन्त हानि-कारक हुआ। एक ओर पुरुष की इस स्वेच्छाचारिता से तथा दूसरी ओर स्त्री पर कठोर प्रतिबन्धों के लगाने से समाज का शान्त वातावरण विक्षुब्ध तथा दूषित हो उठा। इस सारी परिस्थिति में विवाह सम्बन्ध की पवित्रता की रक्षा के हेतु ही यह आवश्यक हो गया कि विवाह के कानून में समया-नुकूल परिवर्तन और संशोधन किये जायें। यह वह पृष्ठभूमि है जिनमें 'विवाह अधिनियम' सम्बन्ध-विच्छेद या तलाक की व्यवस्था करता है।

तलाक सम्बन्धी धारा इस अधिनियम की सबसे अधिक विवादास्पद धारा है, किन्तु जितना भी विवाद है वह भ्रम के कारण है। यह समझा जाता है कि तलाक की छूट मिलते ही हर कोई अपने जीवन साथी को तलाक देने चल पड़ेगा। ऐसी स्थिति में विवाह की संस्था का नाश हो जायेगा। समाज में अव्यवस्था छा जायेगी, धर्म का लोप हो जायेगा। किन्तु यह सब भ्रम है क्योंकि इस अधिनियम के अनुसार किन्हीं विशेष ही परि-

स्थितियों में और कठोर प्रबन्धों के अन्दर तलाक का अधिकार दिया गया है। सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यहाँ उन अवस्थाओं तथा परिस्थितियों का वर्णन कर देना उचित प्रतीत होता है जिनमें इस कानून के अनुसार सम्बन्ध-विच्छेद की व्यवस्था की गयी है। वे अवस्थाएँ निम्न हैं :—

क—यदि पति-पत्नी दोनों में से कोई व्यभिचारपूर्ण जीवन बिता रहा हो, तो दूसरा उसे तलाक दे सकता है।

ख—दोनों में से एक यदि हिन्दू धर्म छोड़ कर अन्य धर्मावलम्बी हो जाये, तो दूसरे को उससे सम्बन्ध-विच्छेद करने का अधिकार होगा।

ग—यदि पति या पत्नी दोनों में से कोई एक तलाक की अर्जी देने के समय पिछले तीन साल से असाध्य रूप से पागल रहा हो, तब भी दूसरे पक्ष को तलाक की आज्ञा मिल सकती है।

घ—यदि पति या पत्नी में से कोई भयंकर और असाध्य कुष्ट रोग से अथवा संक्रामक यौनि रोग से पीड़ित हो और लगातार तीन वर्ष तक इलाज करने पर भी ठीक न हुआ हो, तो दूसरे पक्ष को तलाक का अधिकार होगा।

ङ—यदि दोनों पक्षों में से कोई एक सांसारिक जीवन छोड़ कर वैरागी हो गया हो, तो दूसरे पक्ष को तलाक माँगने का अधिकार होगा।

च—दोनों पक्षों में से यदि एक कोई सात साल तक लापता रहे, तो उस स्थिति में दूसरा पक्ष तलाक का प्रस्ताव कर सकेगा।

छ—इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व यदि किसी पुरुष ने दूसरी शादी कर ली है और उसकी पहिली स्त्री जीवित है तो पहिली स्त्री को अधिकार होगा कि वह अपने पति को तलाक देकर अपने दुखी जीवन से मुक्त हो जाये।

ज—विवाह हो चुकने के तीन साल बाद ही तलाक के लिए आवेदन-पत्र दिया जायेगा। इससे पूर्व नहीं। तलाक मिल जाने के भी एक साल बाद तक कोई पुनर्विवाह न कर सकेगा।

उक्त अवस्थाओं को देखते हुए यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि तलाक की जो शर्तें रखी गयी हैं वे काफी कठोर हैं और इनके रहते सम्बन्ध-विच्छेद करना कोई हँसी-खेल न होगा, स्त्री-पुरुष बहुत विवशता की हालत में ही इस अधिकार का प्रयोग करेंगे, क्योंकि जो लोग विवाह करते हैं वे एक साथ रह कर सुखमय जीवन बिताने के विचार से ही इस बन्धन में

बंधते हैं। विवाह की संस्था को तलाक से किसी प्रकार का खतरा नहीं है, क्योंकि विवाह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति पर आधारित है और इसलिए वह किन्हीं बाह्य साधनों से नष्ट नहीं हो सकता।

तलाक की प्रथा अपने देश के लिए बिल्कुल नयी चीज भी नहीं है, इस समय भी ७५ प्रतिशत जनता में यह प्रचलित है। यह बात दूसरी है कि इस समय यह अधिकतर वर्ण रहित जातियों तक ही सीमित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों में इस प्रथा का समावेश प्रथम बार इस अधिनियम द्वारा ही होगा। इस समय निम्न जातियों के अन्दर तलाक भिन्न-भिन्न रूपों में प्रचलित है। कहीं "छूट" की शकल में और कहीं दूसरे किसी रूप में। वर्तमान कानून तलाक के भिन्न रूपों में एकरूपता लायेगा, उन्हें एक दृढ़ सुव्यवस्था में बाँध देगा और जहाँ अब छोटी जातियों में मामूली-सी बातों पर तलाक हो जाता है, वैसा न होकर ऊपर वर्णित की हुई कठोर अवस्थाओं में ही छोटी तथा बड़ी जातियों में तलाक हो सकेगा।

सम्बन्ध-विच्छेद को कानूनी स्वीकृति मिल जाने का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर स्वास्थ्यकर पड़ेगा, अब स्त्री को व्यभिचारी, पागल, घृणित रोगों से पीड़ित पति के साथ इच्छा के विरुद्ध रहने को मजबूर न होना पड़ेगा। आत्मनिर्णय का मानवोचित अधिकार स्त्री को प्राप्त हो जाने पर उसके अन्दर मानवीय गुणों का विकास हो सकेगा। स्त्री और पुरुष के बीच विषमता की खाई को पाटने में भी यह अधिक सहायक सिद्ध होगा। अभी तक तराजू का एक पलड़ा ऊँचा और एक नीचा था, अब यह दोनों पलड़े बराबर के स्तर पर आ जायेंगे। समाज में विषमता का लोप होने से सुख तथा शान्ति का उदय होगा।

४. उत्तराधिकार—

उत्तराधिकार का कानून विवाह कानून से भी अधिक महत्वपूर्ण है, स्त्री 'विवाह अधिनियम' द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं का लाभ आर्थिक अधिकारों को प्राप्त करके ही उठा सकती है। 'उत्तराधिकार अधिनियम' स्त्री को सम्पत्ति-सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण अधिकार देता है, अभी तक स्त्री को सम्पत्ति में किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं था। वह आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया पराधीन थी। जीवन के हर क्षेत्र में उसे अपने भरण-पोषण के लिए पुरुष का आश्रय लेना पड़ता था। "पिता रक्षति कौमार्ये, भर्ता रक्षति यौवने,

पुत्राः रक्षति वार्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्य मर्हति"। अर्थात् स्त्री को स्वतन्त्र नहीं रहना है, उसे सदा पिता, पति तथा पुत्र के अधीन ही रहना उचित है। इस शास्त्र-वाक्य पर ही हमारा अब तक का उत्तराधिकार कानून आधारित था। इस पराधीनता से स्त्री की परिवार तथा समाज में स्थिति बहुत नीचे गिर गई, उसका सामाजिक ही नहीं नैतिक अधःपतन भी हुआ। अधःपतन के इस गर्त से स्त्री को निकालने का एक ही मुख्य उपाय था। वह उपाय यही था कि स्त्री को आर्थिक स्वतन्त्रता मिले। यह उत्तराधिकार कानून सम्पत्ति सम्बन्धी इस आवश्यक अधिकार को स्त्री को प्रदान करके उसकी बहुमुखी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अनुसार स्त्री को पुत्री, पत्नी तथा माता के रूप में सम्पत्ति विषयक जो अधिकार मिले हैं वे निम्न हैं :—

(क) पत्नी के रूप में—

स्त्री को उसके पति की सम्पत्ति में अधिकार देने का पहला कानून १९३७ में बना जिसके अनुसार पति की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र और पुत्रियों के साथ उसकी विधवा स्त्री को भी बराबर का हिस्सा मिलता था किन्तु इस कानून के अनुसार विधवा का अपने हिस्से पर पूर्ण स्वत्व नहीं था। वह इस प्रकार प्राप्त की हुई अपनी जायदाद को अपनी इच्छानुसार नहीं बर्त सकती थी, दान में या उपहार में उसे नहीं दे सकती थी। इस सम्पत्ति को बेचने का भी उसे अधिकार न था। अब यह उत्तराधिकार कानून विधवा स्त्री को अपनी जायदाद पर सीमित नहीं, पूर्ण अधिकार प्रदान करता है, अब वह जिस प्रकार चाहेगी अपने हिस्से की जायदाद का उपयोग कर सकेगी। सन्तान न होने की दशा में वह पूर्ण जायदाद की मालिक होगी, अगर वह पुनर्विवाह कर लेगी तो वह सम्पत्ति उसकी न रह कर यदि सम्पत्ति पति से मिली थी तो पति के परिवार को और अगर पिता से मिली थी तो पिता के परिवार को लौट जायेगी।

(ख) माता के रूप में—

भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में प्रचलित मरूमकटय्यम कानून को छोड़कर भारत की अन्य किसी भी दाय प्रणाली के अनुसार माता का पुत्र की सम्पत्ति में अब तक कोई भाग नहीं था। पुत्र की मृत्यु के बाद माता को अपनी पुत्रवधू की दया पर आश्रित रहना पड़ता था। सास-बहू के सम्बन्ध थोड़े ही परिवारों में स्नेहपूर्ण होते हैं। परिस्थिति में उसका जीवन बहुधा

दुःखमय बन जाता है। माता को पुत्रवधू और पौत्र-पौत्रियों की दृष्टि में एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करने की दृष्टि से माता को भी पुत्र की सम्पत्ति में उसके पुत्र-पौत्रियों तथा पत्नी के समान एक भाग यह अधिनियम देता है।

(ग) पुत्री के रूप में—

इस समय भारत में मुख्यतया दो दाय प्रणाली प्रचलित हैं। 'दाय भाग' बंगाल में तथा पंजाब के कुछ हिस्सों में चलता है और भारत के शेष लगभग दो-तिहाई भाग में 'मिताक्षरा' प्रचलित है। किन्तु इन दोनों में से किसी में भी पिता की सम्पत्ति में पुत्री का अधिकार नहीं माना जाता है। हाँ, भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर ट्रावनकोर-कोचीन आदि में जहाँ 'मरूमकटय्यम' का कानून प्रचलित है वहाँ पुत्री को पिता की सम्पत्ति में पुत्र के बराबर ही हिस्सा मिलता है, किन्तु देश के शेष भागों में जहाँ 'दाय भाग' तथा 'मिताक्षरा' प्रणाली प्रचलित है, अभी तक पिता की सम्पत्ति में पुत्री का अधिकार कानून नहीं मानता। अब यह अधिनियम मिताक्षरा तथा दाय भाग प्रणाली के क्षेत्रों में भी पुत्री को पिता की 'पुश्तैनी' तथा 'स्वार्जित' दोनों प्रकार की सम्पत्ति में हिस्सा देता है। पिता की स्वार्जित सम्पत्ति में तो लड़की को लड़के के बराबर हिस्सा मिलेगा। लेकिन पुश्तैनी जायदाद में लड़की को अपने पिता के हिस्से में से ही एक हिस्सा मिलेगा। कुल जायदाद में से नहीं, यह हिस्सा जो उसे पुश्तैनी जायदाद में अपने पिता के भाग में से मिलेगा, लड़के के बराबर ही होगा। फिर भी मिताक्षरा के अनुसार कुल मिलाकर पैत्रिक सम्पत्ति में लड़की को लड़के की अपेक्षा बहुत कम मिलेगा। हाँ, दाय भाग में जहाँ पुश्तैनी तथा स्वार्जित जायदाद का कोई भेद नहीं किया जाता लड़की को लड़के के बराबर ही हिस्सा मिलेगा, परन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि 'दाय भाग' की प्रणाली मुश्किल से देश के एक-चौथाई हिस्से में प्रचलित है।

वर्तमान उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार मिताक्षरा तथा दाय-भाग प्रणाली के अन्तर्गत लड़की, लड़के, विधवा पत्नी तथा माता को किस प्रकार हिस्सा मिलेगा यह नीचे के उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगा :—

(१) मिताक्षरा के अनुसार—

मान लीजिये 'क' कुल २०,००० रु० की सम्पत्ति छोड़कर मरता है। इसमें १५,००० रु० की पैतृक (पुश्तैनी) सम्पत्ति है और ५,००० रु० उसकी

अपनी कमाई या स्वार्जित सम्पत्ति है। उसके दो पुत्र 'ख' और 'ग' हैं, एक पुत्री 'च' है, जीवित विधवा पत्नी 'प' है और जीवित माता 'म' है। अब मृत व्यक्ति 'क' की जो अपनी कमाई हुई स्वार्जित सम्पत्ति ५,००० रु० है, वह तो 'ख' 'ग' 'च' 'प' और 'म' पाँचों में बराबर बँट जायेगी और दोनों लड़कों, लड़की, विधवा तथा माता को प्रत्येक को १,००० रु० मिल जायगा। लेकिन मृत व्यक्ति 'क' की पैतृक पुश्तैनी जायदाद में ऐसा नहीं होगा। १५,००० रु० की जो पुश्तैनी जायदाद है वह पहिले केवल लड़कों और पिता में बँटेगी अर्थात् उसके तीन हिस्से होंगे, क्योंकि अपने अलावा उसके दो पुत्र हैं इस प्रकार 'क' 'ख' 'ग' में से हरेक को ५,००० रु० मिलेंगे। अब मृत पिता 'क' के हिस्से जो ५,००० रु० पड़ा उसमें से लड़की, उसकी पत्नी और उसकी माता को हिस्सा मिलेगा, परन्तु स्मरण रखने की बात यह है कि उसके दोनों लड़कों को यदि वे पिता से अलग नहीं हो चुके हैं तो पिता के इस ५,००० रु० में से दूसरों के बराबर का हिस्सा इन्हें और मिलेगा, इस प्रकार इस पुश्तैनी १५,००० रु० में से दोनों पुत्रों 'ख' और 'ग' को ६,००० रु०, पुत्री 'च' को १,००० रु० जीवित विधवा 'प' को १,००० रु० तथा जीवित माता 'म' को १,००० रु० मिलेगा। यह भी ध्यान रखने की बात है कि यदि 'ख' या 'ग' पिता से अलग हो चुका है तो विभक्त हुए 'ख' या 'ग' को मृतक पिता 'क' के हिस्से में से दुबारा कोई भाग न मिलेगा।

(२) दायभाग के अनुसार—

दाय भाग में जहाँ पैतृक और स्वार्जित सम्पत्ति दोनों में एक ही नियम लगता है, मृतक पिता 'क' की १५,००० रु० पुश्तैनी तथा ५,००० रु० स्वार्जित जायदाद को एक साथ मिलाकर 'ख' 'ग' 'च' 'प' तथा 'म' में बराबर बाँट दिया जायेगा अर्थात् दाय भाग में लड़के, लड़की, विधवा और माँ सबको बराबर-बराबर ४,००० रु० मिल जायेगा।

उपरोक्त उदाहरण से ज्ञात होगा कि मिताक्षरा के अन्तर्गत पुश्तैनी जायदाद में लड़की को लड़के से काफी कम हिस्सा मिलता है। इसके अतिरिक्त मिताक्षरा में लड़की के हिस्से पर कुछ और भी प्रतिबन्ध लगाये गए हैं, जिनका आशय यह है कि पुश्तैनी जायदाद का अनावश्यक विभाजन न हो पाये। उदाहरणार्थ लड़की अपनी ओर से जायदाद के अपने हिस्से का प्रश्न नहीं उठा सकती। लड़के जायदाद का बँटवारा करेंगे, तभी उसको

अपना हिस्सा अलग मिल सकेगा। वह अपना हिस्सा किराये पर नहीं उठा सकेगी, उसे बेच नहीं सकेगी, सिर्फ स्वयं रह भर सकेगी। यहाँ यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि पुत्री को पैतृक सम्पत्ति में जो अधिकार मिला है वह केवल उस सम्पत्ति में मिला है, जिसको उसका पिता बिना वसीयत किये छोड़ गया है। पिता वसीयत द्वारा पुत्री को कुछ भी हिस्सा न दे यह भी उसे अधिकार है। पिता की सम्पत्ति में पुत्री के अधिकार पर जो प्रतिबन्ध लगाये हैं, उनका मुख्य अभिप्राय संयुक्त परिवार प्रथा की रक्षा करना है, परन्तु मिताक्षरा परिवार रूपी भवन में आज जगह-जगह तरेड़ आ चुकी है, उसे अब बचाया नहीं जा सकता। आज से सौ साल पहिले जो आर्थिक और सामाजिक अवस्थाएँ थीं, वे आज बदल चुकी हैं। १०० साल पहिले "परिवार" समाज की इकाई था आज 'परिवार' नहीं 'व्यक्ति' समाज की इकाई है। आज यदि कोई भी प्रथा व्यक्ति के विकास को रोकती है तो उस प्रथा को व्यक्ति के हित की रक्षा के लिए खतम कर देना होगा। आज की हमारी परिस्थितियों में मिताक्षरा प्रणाली जो स्त्री-पुरुष के भेद पर खड़ी है मेल नहीं खाती। इसी कारण अधिकांश विधान-निर्माताओं के विचार से दाय-भाग-प्रणाली ही अपने देश के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए हिन्दू कोड-बिल जब प्रथम बार संविधान सभा में पेश हुआ था, तो उसमें मिताक्षरा को समाप्त ही कर दिया गया था और समस्त देश में दाय-भाग-प्रणाली को प्रचलित कर देने की सिफारिश की गई थी। दुर्भाग्य से यह बात स्वीकृत न हो सकी। हमें आशा है कि शीघ्र ही हमारे विधान निर्माता इस अधिनियम में या दूसरा कोई विधेयक लाकर स्त्री तथा पुरुष के उत्तराधिकार सम्बन्धी इस भेद को मिटाने का सफल प्रयत्न करेंगे।

५. उपसंहार—

हिन्दू कोड का मुख्य उद्देश्य स्त्री को सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार देकर उसकी सम्पूर्ण अवस्था को समुन्नत करना है। यद्यपि इस समय स्त्री को राजनीतिक क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त हो चुके हैं तथापि जब तक उसे सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुष के समान अधिकार नहीं मिल जाते, तब तक वह पूर्ण रूप से विकास तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकती और जब तक स्त्रियों के रूप में देश की आधी जनता पिछड़ी और पराधीन रहती है तब तक हमारे नेताओं का समाजवादी समाज को

स्थापित करने का प्रश्न मूर्तरूप नहीं ले सकता। इसी भूमिका में विवाह तथा उत्तराधिकार अधिनियमों का असली महत्व है, क्योंकि ये इस समय तक पिछड़ी हुई अत्याचारों से पीड़ित तथा अधिकार शून्य स्त्री को शक्ति सम्पन्न बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हैं। विवाह कानून से स्त्रियों के पारिवारिक जीवन में एक सुरक्षितता की भावना आयेगी। और साथ ही स्त्रियों को भी विशेष अवस्थाओं में सम्बन्ध-विच्छेद की सुविधा मिल जाने से वे भी पुरुषों के साथ समान स्तर पर आ खड़ी होंगी। वैवाहिक जीवन की सफलता जीवन क्षेत्र में दोनों के समकक्ष होकर प्रवेश करने में है। विवाह कानून स्त्री को जो स्वतन्त्रता सामाजिक क्षेत्र में प्रदान करता है, वही स्वतन्त्रता उत्तराधिकार कानून स्त्री को आर्थिक क्षेत्र में देता है। आज हजारों सालों बाद इस कानून के द्वारा प्रथम बार स्त्री के सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारों को मान्यता मिली है। इन अधिकारों को प्राप्त करने के साथ स्त्री इतिहास के एक सुनहरे युग में प्रवेश करती है। इन अधिकारों के सीमित रहते हुए भी इन्हें "स्त्री के अधिकारों का घोषणा-पत्र" कहा जा सकता है।